I

हमामतुल बुश्रा
(शुभ सन्देश का प्रतीक)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: हमामतुल बुश्रा (शुभ सन्देश का प्रतीक)
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक	: फ़रहत अहमद आचार्य
टाइप, सैटिंग	: फ़रहत अहमद आचार्य
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) जुलाई 2021 ई०
संख्या	: 500
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book	: Hamamatul Bushra (Beautiful Invitation)
Author	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator	: Farhat Ahmad Aacharya
Type Setting	: Farhat Ahmad Aacharya
Edition	: 1st Edition (Hindi) July 2021
Quantity	: 500
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक 'हमामतुल बुश्रा' मूल रूप से अरबी भाषा में लिखी गई थी, इसका प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य ने किया है। इसके प्रारम्भिक कुछ पृष्ठों का हिन्दी अनुवाद आदरणीय सैयद मुहियुद्दीन फ़रीद एम.ए. ने किया है। तत्पश्चात आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन एम. ए., आदरणीय नसीरुल हक़ आचार्य, आदरणीय इब्नुल मेहदी लईक एम. ए. और आदरणीय सैयद मुहियुद्दीन फ़रीद एम.ए., ने इसका रिव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़्दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

नोट

पुस्तक के अंत में पारिभाषिक शब्दावाली दी गई है पाठकगण उसकी सहायता से पुस्तक में प्रयोग किए गए इस्लामिक शब्दों को सरलतापूर्वक समझ सकते हैं।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

(1835 ई० - 1908 ई०)

संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने वास्तविक स्वरूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से स्थापित कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत* लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में

---

* **बैअत**- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना- अनुवादक

स्थापित हो चुकी है।

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन तथा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अत: इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद (अल्लाह उनकी सहायता करे) आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

पुस्तक परिचय

अरब के एक प्रतिष्ठित विद्वान मुहम्मद बिन अहमद मक्की, जो शअब-ए-आमिर, पवित्र मक्का के निवासी थे और वह भारत के दौरे पर आए हुए थे। जब उन्हें मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे की सूचना मिली तो वह क़ादियान पधारे और हुज़ूर अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत की और कुछ समय क़ादियान में आप की संगत में रहकर पवित्र मक्का वापस चले गए। जब वहाँ पहुंचे तो आप ने 20 मोहर्रम 1311 हिजरी (अर्थात 4 अगस्त 1893 ई) को हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ओर एक पत्र लिखा जिसमें अपने सकुशल मक्का पहुंचने और विभिन्न लोगों से हुज़ूर अलैहिस्सलाम की चर्चा करने और उनकी विभिन्न प्रतिक्रियाओं का वर्णन करके बाद में यह शुभ संदेश लिखा कि मैंने अपने मित्र "अली ताएअ" को जो शअब-ए-आमिर के रईस और व्यापारी हैं, हुज़ूर अलैहिस्सलाम के दावे के बारे में विस्तार पूर्वक बताया तो वह बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने मुझे कहा कि मैं हुज़ूर की सेवा में यह निवेदन करूं कि हुज़ूर अपनी पुस्तकें उनके पते पर भेजें और वह उन्हें मक्का के शरीफों तथा विद्वानों में वितरित करेंगे। इस पत्र के मिलने पर आप अलैहिस्सलाम ने इसे प्रचार-प्रसार का एक परोक्षीय माध्यम समझते हुए "हमामतुल बुश्रा" नामक पुस्तक अरबी भाषा में लिखी। यह पुस्तक आप ने 1893 ईस्वी में लिखी थी परन्तु इसका प्रकाशन फरवरी 1894 ईस्वी में हुआ। इस पुस्तक में आपने अपने मसीह होने के दावे और उसके तर्क विस्तार पूर्वक लिखे इसी प्रकार दज्जाल के प्रकट होने, ईसा मसीह की मृत्यु और मसीह के नुज़ूल (अवतरण) और उनसे संबंधित मामलों पर पूर्ण रूपेण चर्चा की। और काफिर कहने वाले उलमा की ओर से आप की आस्थाओं तथा आपके दावे पर जो ऐतराज़ किए जाते थे उनके विस्तारपूर्वक उत्तर दिए। अत: यह पुस्तक अरब देशों के लिए एक अत्यंत लाभकारी पुस्तक सिद्ध हुई।

विनीत; जलालुद्दीन शम्स

प्रथम संस्करण अरबी का टाइटल पृष्ठ

ٹائیٹل بار اوّل

प्रथम संस्करण अरबी के टाइटल का अनुवाद

यह पुस्तक क़ुरआन के ज्ञान तथा गूढ़ रहस्यों पर आधारित है

इसका नाम

हमामतुल बुश्रा

अर्थात्

(शुभ सन्देश का प्रतीक)

जो कि मक्का के निवासियों तथा उस बस्ती के सदाचारी लोगों की ओर भेजा गया है

حَمَامَتَنَا تَطِيْرُ بِرِيْشِ شَوْقٍ وَ فِيْ مِنْقَارِهَا تُحَفُ السّلَامِ

हमारा कबूतर अपनी चोंच में शांति के उपहार लिए हुए मुहब्बत के परों के साथ उड़ने में लीन है

اِلى وَطْنِ النّبيّ حَبِيْبِ رَبِّيْ وَ سيّد رُسُلِهٖ خَيْرِ الانَامِ

मेरे रब के प्रिय और नबियों के सरदार, ब्रह्मांड में सर्वश्रेष्ठ प्रतिष्ठावान नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देश की ओर

यह पुस्तक मुंशी ग़ुलाम क़ादिर फसीह सियालकोटी की प्रेस में रजब के पवित्र महीने तथा 1311 हिजरी के पवित्र साल में प्रकाशित हुई

مَن عادى أولياء الرَّحْمٰنِ
فقد نبَذ الإيمانَ بِالمَجَّان

जिसने ख़ुदा के पवित्र अवतारों से दुश्मनी की तो उसने ईमान मुफ्त में खो दिया

मैंने अपनी किसी पुस्तक में कहा था कि अल्लाह उन लोगों के ईमान को नष्ट कर देता है जो उसके पवित्र अवतारों से शत्रुता रखते हैं। इस पर कुछ लोगों ने मुझ से इसके नष्ट होने के कारणों के बारे में पूछा और कहा कि ईमान तो अल्लाह की पुस्तक और उसके रसूल की सुन्नत का अनुसरण करने से पूर्ण हो जाता है इसलिए हम समझ नहीं सके कि किसी मुसलमान की शत्रुता से ईमान को क्या हानि है? बल्कि हम कहते हैं कि ये निराधार बातें हैं और भ्रमियों का केवल एक भ्रम है। अत: याद रखो कि यह एक तुच्छ राय है जो तकली के धागे से अधिक बारीक और कबूतर के नवजात बच्चे से अधिक कमज़ोर है। और यह सोच स्वाभाविक रूप से ऐसी नासमझी की पैदावार है कि जिससे उसकी सही सोच का जौहर गुम हो गया हो और (उस सोच का मालिक) लालची हृदय के साथ इस संसार पर औंधे मुंह गिर चुका हो और वह धार्मिक अध्यात्मज्ञान से पूर्णत: अनभिज्ञ हो गया हो।

इस विषय में असल बात यह है कि समस्त मानवजाति, एक व्यक्ति के समान है। उनमें से कोई तो सर, कोई हृदय, कोई जिगर, कोई मेदे, कोई गुर्दे और कोई फेफड़े के समान है और वे मनुष्य प्रजाति के सरदार हैं। और उनमें से कुछ दूसरे अंगों की भांति हैं अत: वे लोग जिनको अल्लाह ने सिर या हृदय तथा अन्य मुख्य अंगों के समान बनाया है उन्हें अल्लाह ने हर उस के लिए जिसे इंसान का नाम दिया गया है जीवन का आधार बनाया है और जिस प्रकार कोई व्यक्ति इन अंगों के बिना जीवित नहीं रह सकता, उसी प्रकार लोग उन सरदारों अर्थात रसूलों, नबियों, सिद्दीक़ों, मुहद्दसों, शहीदों और सालिहों के बिना अपना

आध्यात्मिक जीवन नहीं व्यतीत कर सकते। इसलिए इससे यह ज़ाहिर हुआ कि औलिया से ईर्ष्या रखना ही आध्यात्मिक मृत्यु है। अत: इस सानिध्यप्राप्त समूह से जिस व्यक्ति की ईर्ष्या और झगड़ा अत्यधिक बढ़ जाए और वह इस प्रिय समूह से निरंतर मुक़ाबला करे और पीछे न हटे, न तौबा करे और न उसके निवारण के लिए अल्लाह तआला से दुआ करे और न ही गाली-गलौज, लानतान और झगड़ों को छोड़े तो उसका अंतिम प्रतिफल अल्लाह के निकट ईमान का नष्ट होना है और उसे अहंकार, झूठ और नाफ़रमानी की आग में छोड़ देना है।

यहाँ तक कि वह शैतान के दल में सम्मिलित हो जाता है और नुकसान उठाने वालों में से हो जाता है और भेद इसमें यह है कि अल्लाह के मित्र वह लोग हैं जिनसे अल्लाह प्रेम करता है और वे उससे प्रेम करते हैं। उनका अपने रब से बहुत मज़बूत संबंध होता है और उन पर उसके आश्चर्यजनक रहस्य और अत्यधिक उपकार होते हैं और उन के तथा अल्लाह के बीच ऐसे रहस्य होते हैं जिन को केवल उनका प्रेमी (अल्लाह) ही जान सकता है। इसलिए अल्लाह उनसे विचित्र ढंग से प्यार करता है और जो उन से दुश्मनी करता है वह उन का दुश्मन बन जाता है और जो उन का मित्र बन जाता है उन से मित्रता करता है और कोई नहीं जानता कि वह उन से इतना प्रेम क्यों करता और उनके लिए प्रेम की समस्त आवश्यकताओं को पूरा करता है और वे क्यों उसके प्रेमी हो जाते हैं?

यह अल्लाह तआला की पुरातन परंपरा है कि वह उन के दिलों को सच्चाई का नूर और उत्तम ज्ञान के रहस्य प्रदान करता है और उनकी सोच को पवित्र और उनके ज्ञान में वृद्धि प्रदान करता है और उन्हें अंजाम को ध्यान से देखने और तबाही के स्थानों से बचने का ज्ञान प्रदान करता है और वह हर भलाई उन तक पहुँचाता और हर बुराई उनसे दूर करता है।

और उन्हें अपनी पुस्तक के गूढ़ रहस्य और अपने नबी के ज्ञान प्रदान करता है और स्वयं उनका प्रशिक्षण करता है और अपने मार्ग की ओर मार्गदर्शन करता है और उन्हें अपनी आंतरिक और बाह्य नेअमतें प्रदान करता है और उनको ठोकर के स्थानों से बचाता है और उन्हें सुरक्षित लोगों में से बनाता है। उन्हें

इस्लाम के राज्य का संरक्षक बना देता है और उनके सीनों को खोलता है और उन्हें उनका ध्यान अपनी और फेर देता है जो समस्त बरकतों का स्रोत है जिस के परिणामस्वरूप उन्हें हर दिन ताज़ा लाभ पहुंचता है और उस ख़ुदाई बरकत से उनके सीनों में विभिन्न प्रकार के प्रकाश उत्पन्न होते हैं। लोग तो बनावटी नेकियाँ करते हैं परन्तु वे स्वाभाविक रूप से नेक कार्य करते हैं। वे नेक कार्य बनावटी तौर पर नहीं होते बल्कि उनकी सतप्रवृति इस की मांग करती है और उसमें नेकी के इरादे जोश में आए हुए झरने की भांति बहते हैं। उन्हें कठिन कार्यों के करने से वह उकताहट नहीं होती जो दूसरों को होती है। भय के अवसरों पर तू उन्हें पहाड़ों की तरह मज़बूत पाएगा। खतरों के आने के समय उनकी बहादुरी प्रकट होती है। वे उत्तम शिष्टाचार से सुशोभित होते हैं।

और आचरण को ख़राब करने वाली बातों से अलग-थलग रहते हैं वे तक़दीर के फ़ैसले जारी होने के समय (ख़ुदा के) प्रेम और उस की रज़ामंदी से सहमत रहते हुए धैर्य रखते हैं न कि अपनी शान की बुलन्दी के लिए। ख़ुदा की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए वे रूह क़ुर्बान करते हुए और ख़तरों में पड़ते हुए अपने रब का आज्ञापालन करते हैं न कि अपनी शान-शौकत को बढ़ाने के लिए। वे लोगों से अधिक मेल-मिलाप रखना पसंद नहीं करते। तू उन को दुष्ट और बुरे आचरण वाला नहीं पाएगा। वे अल्लाह के बन्दों पर दया और उपकार करने वाले हैं। वे आस लगाने वालों के लिए शरणस्थली और अनाथों तथा विधवाओं की फ़रियाद सुनने वाले हैं। वह हर प्रकार के छल-कपट, अंधकार और अन्याय से दूर रहते हैं। वे नूरों तथा ईमान के जौहरों से भर दिए जाते हैं उनके हृदय पटल आध्यात्मिक पक्षियों का घोंसला बना दिया जाता है और वे ख़ुदा के समक्ष दुआ करते हैं और उनकी रूहें ख़ुदा के समुद्रों में सजदा करते हुए डूब जाती हैं। वे अपनी सांसारिक इच्छाओं को त्याग देते हैं वे भौतिक आनंदों को नहीं जानते। अल्लाह अपनी इच्छा से उन्हें दाएँ बाएँ पलटता है।

और सांसारिक इच्छाओं के पूर्ण रूप से समाप्त हो जाने के बाद उन के इरादों का नवीनीकरण करता है फिर वह अपनी रहमत से उन्हें अपने बन्दों की ओर

भेजता है। अत: वे लोगों को भलाई, शान्ति और सौभाग्य और सफलता की और बुलाते हैं। अत: वह लोग जो उन्हें स्वीकार कर लेते हैं और उनका अनुसरण करते हैं और समस्त करनी तथा कथनी और चलने तथा रुकने में उनके साथ कदम से कदम मिला कर चलते हैं और उनकी छत्रछाया से दूर नहीं रहते और जिन बातों का वे उन्हें आदेश देते हैं उन से बाहर नहीं निकलते तो वे नेकी को पा लेते हैं और सौभाग्यशाली लोगों जैसी सफलता प्राप्त कर लेते हैं और अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी कर लेते हैं और पवित्र लोग बन जाते हैं।

सरांश यह कि इन सम्मानीय बुजुर्गों की सेवा, सौभाग्यशाली होने की नशानी है और इनसे प्रेम करना अध्यात्म ज्ञान का फल पाना है और इनसे मित्रता अल्लाह से मित्रता है और इनकी प्रशंसा तथा विशेषताओं का गुणगान करना सफलता की कुंजी है और इनके दोषों की खोजबीन करना दुर्भाग्य की निशानियों में से है और उनकी कमियों को ढूंढना नेकियों को नष्ट करने वाला है और उन के कष्ट अपने सर लेना अपनी बुराइयों को दूर करने का बदला है अत: वे लोग जो उनकी लड़ी में नहीं पिरोए गए और उनकी जमाअत से जुड़े नहीं और उनके समूह में सम्मिलित नहीं हुए बल्कि उन्होंने उनसे दुश्मनी रखी और उनका विरोध किया और तर्क वितर्क के समय उनसे नाराज़गी रखने में हद से बढ़ गए और आपस में बात करते समय शिष्टाचार की सीमा लाँघ गए। तो अल्लाह ने उनके अमल को नष्ट कर दिया और उन्हें तबाह कर दिया और वह अल्लाह की नाराज़गी लेकर लौटे और अल्लाह की ओर से दण्ड और क्रोध उन पर पड़ा। अत: अल्लाह ने उनके दिलों से ईमान की प्रत्येक मिठास और ज्ञान की रोशनी छीन ली और उन्हें अंधकार में नाकाम और नामुराद छोड़ दिया।

फिर जान लो कि जो कुछ हमने वर्णन किया है वह सब विरोधियों के ईमान नष्ट होने के आध्यात्मिक कारण हैं और जहां तक उनके घाटा पाने और उनके सच्चाई से दूरी के बाह्य कारणों का संबंध है तो यह वह कारण हैं जो उन्होंने स्वयं अपनी ओर से अपने लिए तैयार किए हुए हैं और वह यह कि वे समय के इमाम और युग के ख़लीफ़ा के प्रत्येक कथनी-करनी और आस्था का

विरोध करते हैं जबकि वह सच्चाई पर होता है और अल्लाह से सहायता प्राप्त होता है। फिर जब भी वे उसका विरोध करते और उसके मार्ग को छोड़ते हैं तो वे सौभाग्य और सच्चाई के मार्गों से दूर हो जाते हैं।

और उनका दुर्भाग्य उन्हें नुकसान और अंधकार के वीरानों में फेंक देती है। अत: वह हलाक होने वालों में से हो जाते हैं। और यह बात स्पष्ट है कि वस्तुत: जो व्यक्ति भी सच्चाई का और सच्चाई की ओर पूर्ण विश्वास के साथ बुलाने वाले व्यक्ति का विरोध करेगा तो वह अवश्य अंधकार के गड्ढे में गिर जाएगा क्योंकि उसने निष्कलंक ब्रह्मज्ञानी और ख़ुदा से सहायता प्राप्त (व्यक्ति) का विरोध किया था। फिर यह भी स्पष्ट है कि जब विरोध अपने चरम को पहुंच जाता है, तो उस विरोधी के दुर्भाग्य को दिन प्रति दिन बढ़ाता जाता है और वह प्रत्येक उस सच्ची बात और रहस्य और सच्चाई को जो समय के उस अवतार को प्रदान की जाती है उसे झूठलाने के लिए तत्पर रहता है बल्कि यह घोर शत्रुता का आवश्यक और अनिवार्य परिणाम होता है, अत: जब शत्रुता अपने चरम को पहुंच जाती है तो शत्रु अपने विरोध के चरम के कारण दिन प्रतिदिन विरोध पर साहस दिखाता है यहां तक कि वह एक दिन ऐसे घोर विरोध में ग्रस्त हो जाता है जो उसको तबाह कर देता है और उसके ईमान को खत्म कर देता है और वह असहाय लोगों में शामिल हो जाता है। क्या तुझे मालूम नहीं कि जब तू किसी मार्ग को पूर्ण विश्वास के साथ अपनाता है और तुझे यह मालूम ही है कि वह ऐसा सीधा मार्ग है जो तुझे तेरी मंज़िल और तेरे घर तक सही सलामत पहुंचा देगा और तेरी इस यात्रा में एक ऐसा अभागा शत्रु भी सम्मिलित हो जिसकी तेरे साथ शत्रुता उसे इस बात के लिए प्रेरित करे कि वह अपने लिए कोई दूसरा मार्ग चुने जो तेरे मार्ग के विपरीत है बावजूद इसके कि इस (मार्ग) में डाकू, जानवर और सांप और दूसरी कठिनाइयाँ भी हों तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसने अपने आप को तबाही में डाल लिया फिर यदि वह तबाह हो गया तो उसकी तबाही का कारण केवल तेरा विरोध ही होगा इसलिए विचार कर और अल्लाह से डर और केवल और केवल सच्चों के साथ हो जा और किसी सच्चे को कष्ट न दे और

न ही उस की सहायता कर जिसने उससे लड़ाई करने का साहस किया बल्कि तू उस लड़ाई का तमाशा देखने वालों में से भी न हो जो भाला और तलवार चलाने पर तैयार हो गए और रुचि रखते हुए उन बातों को सुनने लगे जिनमें उसका तिरस्कार था और तू तौबा करने वालों के साथ तौबा कर क्योंकि नेक वे लोग हैं कि जब अल्लाह उनकी सहायता करना चाहता है तो वह अपनी ओर से साधन पैदा कर देता है और चमत्कार प्रकट करता है। और वह दुश्मनों के पास वहां से आता है जहां से उनको कल्पना भी नहीं होती और वह अपने प्यारे बन्दों को निराश नहीं करता। अत: मैं तुम्हें ज़ोर देकर कहता हूं कि तू उनसे मत झगड़ और अपनी मंदबुद्धि के कारण उनके वचनों के विरुद्ध न कर। क्योंकि तू उनके ज्ञान तक कदापि नहीं पहुंच सकता। चाहे तेरे पास किताबों का पहाड़ भी हो क्योंकि उन्हें अपने रब की ओर से ज्ञान तथा विवेक प्रदान किया जाता है और उनकी बुद्धि तीक्ष्ण की जाती है और उनकी कर्म एवं ज्ञान इंद्रियों को शक्ति प्रदान की जाती है और अल्लाह का हाथ उन्हें प्रत्येक ग़लती से बचाता है। कभी कभी तू उनके मुख से ऐसे शब्द सुनता है जो तेरे निकट कुफ्र और धर्मविमुखता की बातें होती हैं परन्तु यदि तू और तेरे जैसे दूसरे लोग उन बातों पर निष्कपट और साफ दिल के साथ विचार करें और तू अल्लाह से यह दुआ करे कि वह तुझे समझ प्रदान करे तो (तुझे यह ज्ञात हो जाएगा कि) वह तो हिकमत और ज्ञान के मोती हैं फिर यदि तू भाग्यशाली होगा तो तू उन्हें समझने के बाद स्वीकार कर लेगा और यदि तू अभागा होगा तो तू अपने इन्कार पर डटा रहेगा तथा हठ करेगा और झुठलाएगा और इस तरह तू स्वयं अपने हाथों से ईमान का खून करेगा और तू उन लोगों में सम्मिलित हो जाएगा जिन्होंने जानबूझ कर अपने ईमान को नष्ट कर दिया और हिदायत प्राप्त नहीं की।

हे असहाय! जल्दबाज़ी न कर और एक ऐसे व्यक्ति को काफ़िर न ठहरा जिसे अल्लाह ने चुन लिया है, और तू उसे देखता है कि वह नमाज़ पढ़ता है, रोज़े रखता है और खाना काबा की ओर मुंह करके उपासना करता है और तू उस में नेकों और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत का अनुसरण

करने वालों की शैली पाएगा, और जिन कमालात और अध्यात्मज्ञानों का वह दावेदार है उसके इन्कार में जल्दबाज़ी न कर क्योंकि इस्लाम में ऐसे लोग हैं जिनको अपने रब की ओर से रूहानियत (अध्यात्म) का ज्ञान प्रदान किया जाता है। हर एक मंदबुद्धि उनकी बातों को समझ नहीं सकता, उनकी दूरदर्शिता यथार्थ से भर दी गई है और उनका ज्ञान तमाम जमाअत के ज्ञान पर प्रभुत्व रखता है और उनकी बुद्धि प्रत्येक गुत्थी को सुलझा देती है और उनका तीर निशाने से खाली नहीं जाता, शैतान उनको हानि नहीं पहुंचा सकता क्योंकि (आग का) शोला उसका पीछा करता है और कोई तीर उन तक नहीं पहुंच सकता चाहे तरकश खाली हो जाएं। उन्हें ज्ञान के सूक्ष्म रहस्य प्रदान किए जाते हैं और उन्हें वर्णन में महारत प्राप्त होती है और उनका संकेत अन्य लोगों की व्याख्या से बढ़कर मार्गदर्शन करने वाला होता है और उनकी बातें विभिन्न रंगों में प्रकट होती हैं और उनके दिलों को अध्यात्मलाभ पहुंचाने में निपुणता प्रदान की जाती है और वे सांसारिकता तथा धर्म के स्तम्भ होते हैं और लोगों के लिए उनका अस्तित्व आध्यात्मिक जीवन की भांति होता है और जो उन से शत्रुता रखता है अल्लाह उन से मुक़ाबला करने के लिए युद्ध के मैदान में निकल आता है। फिर कभी तो वह उसे मोहलत दिए बिना पकड़ लेता है और कभी कुछ समय तक मोहलत दे देता है और उसकी रस्सी लंबी कर देता है यहां तक कि जब उसका समय आ जाता है तो अज़ाब की बिजली उसकी जमा पूंजी को जला डालती है और उसे ऐसा कर देती है कि मानो वह कभी जीवित था ही नहीं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हे जीवित और सर्वशक्तिमान ख़ुदा! मैं तुझ से तेरी रहमत की प्रार्थना करता हूँ

समस्त प्रशंसाएं उस ख़ुदा के लिए जिस ने कलम से सिखाया और जो कुछ कि इन्सान नहीं जानता था वह उसको बताया और ज्ञान तथा विश्वास के स्थान तक पहुंचाया और उसके रसूल अनपढ़ नबी पर दरूद और सलाम हो जो कि समस्त नबियों, रसूलों तथा अवतारों का मार्गदर्शक और सभी वह्यी द्वारा बात करने वालों और हिकमत तथा धर्म के रहस्यों के लिखने वालों के पेशवा (अगुआ) हैं जिस ने न कभी कलम को बनाया और न उस की नोक तैयार की और न तख्ती को हाथ लगाया और न लिखा, ख़ुदा ने उसको सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ बनाया और वह संसार के समस्त लोगों से आगे बढ़ गया। और उसके सहचरों (सहाबियों) पर (दरूद और सलाम हो) जो हिदायत प्राप्त और सन्मार्ग को बताने वाले हैं तथा उसके अनुयायियों पर।

इसके पश्चात स्पष्ट हो कि पवित्र मक्का से (अल्लाह उसको प्रतिष्ठा और सम्मान प्रदान करे) मेरे पास एक पत्र पहुंचा और उस्को पढ़ने के पश्चात मुझे ज्ञात हुआ कि वह मेरे किसी मुरीद का है। और मैंने मालूम किया कि वह चाहता है कि मक्का वालों को मैं अपने कुछ हालात बताऊं परन्तु मेरा हृदय इस पर राज़ी न हुआ कि मैं उनकी ओर संक्षिप्त और जटिल बात लिखूं बल्कि मैंने चाहा कि ऐसा लेख लिखूं जिससे उनके हृदय संतुष्ट हो जाएं और उनको अच्छा अध्यात्मज्ञान प्राप्त हो जाए। और इस वर्णन से उनकी राय, बुद्धि तथा विवेक मज़बूत हो जाए और यह इच्छा मेरे हृदय में प्रबल होती रही और मेरे हृदय में मक्का के लोगों के लिए कुछ रहस्य डाले गए यहां तक कि मेरा हृदय तथा आत्मा उनसे भर गए और मैंने उनको एक पत्र में लिख कर भेज दिया। फिर मुझे यह उचित प्रतीत हुआ कि इसको पुस्तक के रूप में संकलित करके, प्रकाशित कराने के पश्चात लोगों में प्रसारित किया जाए ताकि लोग इससे लाभ उठाएं और

सच्चाई की तलाश करने वालों के लिए प्रकाशमान दीपक का काम दे। अब हम वास्तविक उद्देश्य को आरंभ करते हैं और पहले उस पत्र को लिखते हैं जो मक्का वालों की ओर से हमारे पास आया था फिर हम उस पत्र को लिखेंगे जो हमने उनकी ओर भेजा और अल्लाह के अतिरिक्त हमें कोई सामर्थ्य प्रदान करने वाला नहीं, जो अपने बन्दों का सहायक और सर्वाधिक कृपालु है।

वह पत्र जो मक्का *(जिसको ख़ुदा ने प्रतिष्ठा दी और वहां के रहने वालों को सम्मान दिया)* **से आया**

अल्लाह के नाम के साथ जो अनन्त कृपा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है। हम उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके पवित्र रसूल पर दरूद भेजते हैं।

अल्लाह का सलाम और रहमतें और बरकतें प्रशंसा हमारे मार्गदर्शक, समय के मसीह मौलाना हज़रत ग़ुलाम अहमद पर हों और अल्लाह सदैव उनकी सहायता करे। **आमीन या रब्बल आलमीन**

तत्पश्चात निवेदन यह है कि मैं मक्का में सकुशल पहुंच गया हूँ और जब कभी मैं किसी सभा में बैठता हूं आपका और आपके दावों का जो आप ने आयतों तथा हदीसों के आधार पर किए हैं, वर्णन करता हूं। कुछ लोग आश्चर्य करते हैं और कुछ सत्यापन करते हैं और कहते हैं कि हे अल्लाह! हमें उसका बाबरकत मुख दिखा और जब हज का पवित्र महीना गुज़र चुका और मुहर्रम के महीने का आरंभ हुआ तो मैं एक दिन अपने एक मित्र 'अली ताएअ' नामक से मिला और उसके पास बैठा तो (उसने) मुझसे मेरी यात्रा तथा हिंदुस्तान के हालात पूछे तो मैंने समस्त हालात और घटनाएं सुना दीं और आप के दावे की भी उसको सूचना दी और अच्छी तरह उसको समझाया। तो वह इससे बहुत प्रसन्न हुआ और मैंने उसको यह भी कहा कि वह बड़े विनम्र और महान व्यक्ति हैं जब मोमिन उनको देखता है तो अवश्य उनका सत्यापन करता है। जो बातें उसको समझाई थीं उसने प्रत्येक के पास उनको वर्णन करना आरंभ कर दिया और मुझसे यह भी पूछा कि

वह मक्का में कब आएँगे? मैंने कहा कि जब अल्लाह चाहेगा तो तुरंत आ जाएंगे। और अब हज़रत ने कुछ अरबी पुस्तकें अपने दावे के सबूत में लिखी हैं जो यहां भेजना चाहते हैं (यदि ख़ुदा ने चाहा)। यह वह बातें हैं जो अली ताएअ से हुईं। फिर जब मैंने यह पत्र भेजना चाहा तो मैंने कहा कि मैं हुज़ूर की सेवा में यह पत्र भेजना चाहता हूं तो उसने कहा कि पत्र में यह भी वर्णन कर दो कि अपनी लिखी हुई पुस्तकें तुरंत भिजवाएं और स्वयं भी अति शीघ्र मक्का पधारने की कृपा करें। मैंने उसको कहा कि यह अल्लाह की इच्छा पर आधारित है और यदि उपद्रव का भय न होता तो मैं हुज़ूर की पुस्तकों को भी न छोड़ता बल्कि अवश्य साथ लाता। उसने कहा कि क्यों डर गए? काश तुम अपने साथ लाते तो अच्छा होता।

फिर उसने कहा कि हुज़ूर की सेवा में लिख दो कि पुस्तकें मेरे नाम-पते पर भिजवा दें। मैं स्वयं उनको बाटूँगा और मक्का के सज्जनों और विद्वानों और समस्त लोगों को अवगत करूंगा और मैं किसी की परवाह नहीं करता। और (उसने कहा मैं जानता हूं) मोमिन जब उस व्यक्ति के बारे में सुनता है तो प्रसन्न होता है और मुनाफिक़ गुस्सा होता है। यह अली ताएअ जिसका मैंने वर्णन किया है शएब-ए-आमिर (आमिर नामक घाटी) का रहने वाला है और धनाढ्यों में से एक अच्छा व्यक्ति है और बहुत से घरों और संपत्तियों वाला बड़ा व्यापारी है। अत: हुज़ूर उसके नाम पर, इस पते पर किताबें भेज दें। यदि ख़ुदा ने चाहा तो उसे मिल जाएंगी।

सेवा में, अली ताएअ, व्यापारी हशीश,

हारतुल-शएब अर्थात शएब-ए-आमिर, स्थान मक्का शरीफ।

और मौलाना नूरुद्दीन, सैयद हकीम हुस्सामुद्दीन और समस्त छोटे बड़े भाईयों पर, विशेषत: फज़लुद्दीन और उनके भतीजे मौलवी अब्दुल करीम की सेवा में हमारी ओर से सलाम पहुंचे। और हम बैतुल हराम (खाना का'बा) में उनके लिए दुआ करते हैं और विशेष कर हुज़ूर पर हज़ारों सलाम हों।

लेखक- निस्पृह ख़ुदा का विनीत बन्दा,

मुहम्मद बिन अहमद निवासी शएब-ए-आमिर।

20 मुहर्रम 1311 हिजरी।

उत्तर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

सेवा में प्रिय और निष्ठावान मुहम्मद बिन अहमद मक्की!

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू

तत्पश्चात स्पष्ट हो कि आपका पत्र मुझे मिला और मैंने उसको आरंभ से अन्त तक पढ़ा और जो विषय आपने अपने पत्र में लिखे हैं उनसे मुझे प्रसन्नता हुई और आपके सही सलामत अपने देश तथा घर पहुंचने पर और अपने लोगों तथा निकट सम्बन्धियों से मिलने पर मैंने अल्लाह का धन्यवाद किया। और जो कुछ आप ने प्रतापी और सदाचारी सैयद अली ताएअ के अच्छे आचरण और नेक स्वभाव और प्रिय गुणों का वर्णन करके और उनका मेरे हालात सुनकर उनकी ओर प्रेम पूर्वक ध्यान देने (और उससे उनकी प्रसन्नता) का वर्णन किया है, इस पर भी मैं आपका और उस भाग्यशाली नेक सज्जन सैयद का धन्यवादी हूं और मैं आपके लिए तथा सैयद साहब के लिए सदैव ख़ुदा के समक्ष भलाई, बरकत और रहमत की दुआ करता हूँ।

मेरे दिल में डाला गया कि वह नेक और पवित्र आदमी है। आशा है कि हमारे उद्देश्य में लाभदायक सिद्ध हो, और अल्लाह तआला हमारे कुछ कार्यों को उसके ध्यान देने और अच्छे इरादे से उसके हाथों द्वारा पूर्ण करेगा और अल्लाह जैसा चाहता है अपने (धर्म के) कार्यों हेतु उपाय करता है और जिसको चाहता है इस्लामी अभियानों की पूर्णत: का साधन बना देता है और जिसे चाहता है अपने धर्म का सच्चा सेवक बना देता है और मैंने अपनी दूरदर्शिता से मालूम कर लिया है कि जिस भाग्यशाली व्यक्ति का आपने अपने पत्र में वर्णन किया है अल्लाह के मार्ग में ऐसा बहादुर है कि सच्ची बात करने में और (उसके) प्रचार प्रसार और सहायता और दृढ़ता में किसी आलोचक की आलोचना से नहीं डरता और वीरता, बहादुरी, हार्दिक संतुष्टि, दरियादिली और संयम के (साथ-साथ)

अल्लाह तआला ने उसमें समस्त प्रशंसनीय विशेषताएँ और उच्चतम शिष्टाचार इकट्ठे कर दिए हैं और उस को निष्ठा का सामर्थ्य और अल्लाह के आदेशों को समझने की दूरदर्शिता के साथ वैसा ही उपकार किया है जैसा कि धन दौलत और नि:स्पृहता के द्वारा उस पर एहसान किया है और उसको लोक-परलोक में इनाम पाने वाला बना दिया है।

और अल्लाह तआला की ऐसी ही आदत है कि जब वह किसी व्यक्ति के लिए अच्छाई चाहता है तो अपनी ओर से उसको भलाई और नेकी का सामर्थ्य प्रदान कर देता है। धार्मिक कार्यों की सेवा तथा इस्लामी उम्मत को जीवित करने की चिंता और उसकी पुस्तकों का प्रकाशन और लानती शैतान के कार्यों का अंत करना उसकी आदत बना देता है। अत: वह अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरता और यदि वह धर्म की बेहतरी, अपनी जान कुर्बान करने में और रक्त बहाने में देखता है तो खुशी से शहीद होने के लिए खड़ा होता है और अपनी समझ और बुद्धि और शारीरिक क्षमता (और हृदय) और शारीरिक अंगों के साथ ख़ुदा तआला की रस्सी से संरक्षण प्राप्त करता और उसके समस्त कण ख़ुदा तआला की आज्ञापालन और उसके आदेशों पाबन्दी करने में लग जाते हैं और एक पल भर के लिए भी अपने ख़ुदा से ग़ाफिल नहीं होता और हर समय घात में लगा रहता है। और वह ख़ुदा के आदेशों के फैलाने और उनकी बुलंदी के लिए कमर कस कर बहादुरों की तरह निकलता है यद्यपि उसमें अत्यधिक ख़तरा और बहुत बड़ा अज़ाब क्यों न हो और वह बहादुरों की तरह युद्ध के मैदान में निकल खड़ा होता है और कायरता और (पीठ दिखा कर) भागने का प्रभाव उसके निकट भी नहीं आता और न किसी डरने वाले मामले से पीछे हटता है और न किसी बेहोश करने वाले भय से। और धर्म के लिए अपनी सवारी को तैयार करता है और समस्त उतार-चढ़ावों को केवल ख़ुदा की रज़ामंदी प्राप्त करने के लिए तय करता है ताकि उसका प्रिय बन जावे।

और मैं उचित समझता हूँ कि उस शरीफ जवान के लिए मैं अपने कुछ हालात वर्णन करूँ और उस हिदायत को भी जो मैं अपने रब से लाया हूँ। और

ख़ुदा ने जो कुछ मुझ पर एहसान किया है उस पर खोल दूँ और अपने जीवन के भी हालात कुछ बता दूँ ताकि मेरे बारे में उसका परिचय बढ़ जाए और विचार-विमर्श करके अल्लाह की इच्छा को प्राप्त कर ले।

हे भाइयो! अल्लाह तुम पर रहमत करे और तुम्हारी रक्षा करे। स्पष्ट रहे कि अल्लाह तआला ने इस युग में धरती को देखा कि कुफ्र और शिर्क और झूठ और नए-नए आडम्बरों और भिन्न-भिन्न प्रकार के गुनाहों और ईसाइयों के तरह तरह के छल-कपट से भरी हुई है, और देखा कि दिल बिगड़ गए हैं और हर एक शहर तथा गाँव आबाद तो हैं परन्तु उनकी योग्यताओं के खेत बेकार पड़े हैं और समाज के हर वर्ग पर गुमराही छा गई है और फ़ित्नों की फ़ौजें हर ओर अपना आधिपत्य जमा रही हैं और नेकों के प्रभाव बहुत कम हो गए हैं और देखा कि लोग बहुत सी व्यर्थ तथा झूठी आस्थाओं पर आकर्षित हैं, अद्वितीय ख़ुदा की ओर ऐसी बातें मनसूब कर रहे हैं जिन से उसका पवित्र और अलग होना अनिवार्य है। और यह भी देखा की ईसाइयों ने एक कमज़ोर मनुष्य को ख़ुदा बना रखा है और उसकी ख़ुदाई साबित करने के लिए तौरात और इंजील से मनगढ़त कहानियाँ भी गढ़ लीं हैं और धरती पर वे झूठों के सरदार बन गए हैं और बहुत सारे लोगों को गुमराह कर दिया और प्रत्येक झूठे का उनके साथ ऐसा संपर्क हो गया कि जैसे शैतान का उसकी औलाद से होता है और वह अपने अत्यंत सूक्ष्म छल-कपट से जादू का काम ले रहे हैं। विभिन्न प्रकार के षडयंत्रों से अपने धर्म की ओर लोगों को खींच रहे हैं और मूर्ति पूजकों, नादानों और अज्ञानी मुसलमानों में से बहुत लोग उनकी ओर आकर्षित हो गए हैं और मुर्तद उन पर मुग्ध हो कर उन के झूठ की पुष्टि करते हैं और उनकी बनावटी बातों पर ईमान लाए हैं और उनके झूठे धर्म में सम्मिलित हो गए हैं और अपने शरीर से इस्लाम का पवित्र वस्त्र उतार दिया है और कुटिलता ने भयानक सैलाब की भांति उनको घेरा हुआ है और तबाही ने महामारी के समान उनको पकड़ लिया है और मुर्दों के साथ वह भी तबाह हो गए हैं। और हिन्द में ऐसी कोई क़ौम और क़बीला नहीं है जिस में से कुछ लोग ईसाई न बने हों। और इस्लाम पर

यह ऐसी बड़ी विपदा है कि जिसका कोई उदाहरण पहले ज़माने में नहीं मिलता। और अगर हम उनके रंग बिरंगे फ़ित्नों, अजीब ग़रीब छलों की व्याख्या करें तो तू ऐसी बात देखेगा जिस को जान कर तू डर जाएगा और तू भय तथा दुख में डूब कर इस्लाम की विपत्तियों पर अवश्य रोएगा।

और मसीह की ख़ुदाई पर इसके अतिरिक्त उनके पास और कोई प्रमाण नहीं कि उनकी आस्था है कि मसीह ने अपनी क़ुदरत से बहुत सृष्टि को पैदा किया और अपनी ख़ुदाई शक्ति से मुर्दों को जीवित किया और वह आसमान पर अपने भौतिक शरीर के साथ जीवित और स्थित है और दूसरों के लिए क़य्यूम है और वह हूबहू ख़ुदा है और ख़ुदा हूबहू वह है, जैसा कि जब एक वस्तु के दो नाम हों तो हम कह सकते हैं कि वह यह है और यह वह है और उन दोनों में यदि कोई अंतर है तो वह केवल भरोसे का है और वह अनादि, अनन्त और अनश्वर है और वह आश्वस्त हैं कि ख़ुदा भौतिक शरीरों में उतरता है और फिर अज्ञानता और मूर्खता से कहते हैं कि यह मसीह के सशरीर उतरने से विशिष्ट है और इस बात पर उनके पास कोई प्रमाण नहीं।

और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियाँ देते हैं और आप के सम्मान में विभिन्न प्रकार के झूठे आरोप लगाते हैं और आपके सम्बन्ध में जब कोई बात करेंगे तो तिरस्कार और अपमान का ढंग अपनाते हैं और कई हज़ार पुस्तकें इस्लाम के इन्कार में और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अपमान में लिखीं और छाप कर देशों में प्रसारित कीं और लानती शैतान के बिल्कुल साथ-साथ चले और जब उनका उपद्रव इस सीमा तक पहुंच गया और बहुत से लोगों को गुमराह कर चुके तो दयालु तथा कृपालु ख़ुदा की रहमत ने चाहा कि अपने बन्दों की सुरक्षा करे और काफ़िरों के छल से उनको बचाए। तो अपने बन्दों में से एक बन्दे को अवतरित किया ताकि उसके धर्म की सहायता और नवीनीकरण करे और उसकी दलीलों को पुनः रोशन कर दे और उसके बागों को पानी दे और अपने वादे को पूरा करे। और अपने प्यारे अमानतदार रसूल के सम्मान को प्रकट करे और दुश्मनों को असफल कर दे तो

(उसने) अपनी कृपा से मुझे चुन लिया और अपने इल्हामों द्वारा मुझे आदेशित किया और अपनी असीम कृपा से मेरा पोषण किया और विलक्षण रूप से मेरी सहायता की और अपनी ओर से ख़ुदाई ज्ञान, सूक्ष्म रहस्य और बिंदू समझाए और इसके अतिरिक्त बड़े-बड़े चमत्कार और निशान दिए ताकि लोग बुद्धिमता और विश्वास का प्याला मुझसे पिएं।

मेरी क़ौम पर अफसोस कि उन्होंने मुझे नहीं पहचाना और मुझे झुठलाया और मुझे गालियां दीं और काफ़िर कहा और काफ़िर की तरह मुझे लानती कहा। और उनमें से प्रत्येक व्यक्ति कठोर हृदय और व्यर्थ की बातों और सख्त गुस्से तथा मूर्खता के साथ खड़ा हुआ। और हमने भलाई से बुराई को दूर किया परन्तु वे मूर्खतापूर्ण कार्यों से न रुके और समझाने वाले की बात न मानी और अल्लाह की उस चेतावनी को भुला दिया जो मुजरिमों के लिए निर्धारित है। और अल्लाह के मार्ग से उसकी सृष्टि को रोका और सच्चाई के नूर को अपने मुख की फूंकों से बुझाना चाहा। और जिस मार्ग का मैंने इरादा किया उसमें वह रोक बने और उनकी शरारतों के कारण मैं तकलीफ़ से थक गया और बावजूद इसके मैं मित्रता पूर्वक उनको नरमी से समझाता रहा और उत्तम सदुपदेश करता रहा और उनको ढील देता रहा और धैर्य के साथ उनको क्षमा करता रहा क्योंकि वे सच्चाई की चमकारों और बारीक रहस्यों और उनके स्रोत को नहीं जानते और एक सोए हुए व्यक्ति की भांति अपनी करवट नहीं बदलते हैं।

और रहस्यात्मक बातों पर विचार करने तथा उनकी वास्तविकता की जांच करने से पहले ही मुझसे झगड़ते हैं। और बौद्धिक और उदाहृत प्रमाण प्रस्तुत करने में असमर्थ हो गए हैं और मूर्ख बुद्धिहीन की भांति मुझ पर टूट पड़ते हैं और चाहते हैं कि गाली-गलौज, काफ़िर ठहराने और झूठे आरोप लगा कर विजयी हो जाएं। वे जिस बात की वास्तविकता को नहीं जानते उसका अनुसरण करते हैं और संयमी के मार्ग को छोड़ा करते हैं और उन्होंने सच्चाई के विरोध में कुधारणा और अपमान और झूठ गढ़ने का कोई अवसर जाने नहीं दिया और झूठ के अतिरिक्त न कोई गवाही दी और न शैतानी चालों के अतिरिक्त किसी और

बात के साथ मुक़ाबला किया। जब उनके उपद्रव की आग अत्यधिक भड़क गई और उनके पैर झगड़ों के धुएं की ओर चल पड़े तो फिर मैंने अपने अल्लाह से दुआ की कि- हे मेरे रब! तू अपने पास से मेरी सहायता कर (और मेरी मदद फ़रमा) और हमारे तथा हमारी क़ौम के मध्य सच्चा फैसला कर और तू ही अच्छा निर्णय करने वाला है।

फिर तो ख़ुदा ने बड़े-बड़े निशानों द्वारा मेरी मदद की और बहुत सी बरकतों के साथ मेरी शान को रोशन कर दिया और सत्यभिलाषियों के लिए समझाने के अंतिम प्रयास को पूर्ण कर दिया। परन्तु विरोधी मेरे मार्ग से न हटे और न शरारत से रुके। हिदायत तथा गुमराही में अंतर स्पष्ट होने और सच्चाई के प्रकट होने के बाद भी उन्होंने हिदायत से इन्कार किया और उनके इन्कार और उस कठोर हृदयता से मैं अत्यधिक अचंभित हुआ कि उन्होंने मेरी सच्चाई और स्वीकृति के निशान देख भी लिए और फिर भी न तो सच्चाई की ओर लौटे और न लौटने की आशा दिलाई। उन पर खेद कि न तो वे घटनाओं की वास्तविकता समझते हैं और न निशानों को स्वीकार करते हैं। बल्कि उनको देखकर बहाने बनाते हैं और आंखें होने के बावजूद अंधे बनते हैं और मुझ पर भिन्न-भिन्न प्रकार के झूठे आरोप लगाते हैं और इस्लाम के नूर को बुझाना चाहते हैं और इन्कार करने वालों के मददगार बन गए हैं। और सत्य तो सूर्य की भांति चमक रहा था परन्तु उनको सम्मान के विचार और ईर्ष्या और कंजूसी ने पकड़ लिया तो अल्लाह ने (दंड स्वरूप) उनके दिलों पर मुहर कर दी और उनकी आंखों पर पर्दा डाल दिया तो सुजाखों की भांति सच्चाई देखने की शक्ति उनसे छिन गई। वह यहूदियों की भांति हो गए और अपनी कथनी-करनी तथा नियतों में उनके समान हो गए और उनके स्थान पर जा ठहरे और यह ऐसी समानता है जैसे कि एक पाँव दूसरे पाँव के समान होता है और कदापि रुके नहीं बल्कि धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए।

और जिन लोगों को ख़ुदा ने हिदायत दी और सच्चाई का मार्ग बताया वे सुधारणा से मुझे देखते हैं और दिल के नूर से मेरे बारे में विचार करते हैं तो उनका नूर मेरी सच्चाई के रहस्यों की उनको सूचना देता है और जो मैं उनको

कहता हूं वे स्वीकार करते हैं और उन मूर्ख अज्ञानियों के समानता नहीं हैं बल्कि वे संयमियों के मार्ग पर चलते हैं और नेक कल्याणकारी लोगों का अनुसरण करते हैं और सदाचारियों का मार्ग अपनाते हैं और ख़ुदा ने अपनी ओर से उन को सांत्वना देकर विश्वास करने वाला बना दिया है। वे संयम धारण करते तथा ख़ुदा से डरते हैं और उनकी तरह नहीं हैं जो परलोक को छोड़ते और संसार को पसंद करते हैं और उसको पाने की इच्छा रखते हैं और नेक लोगों के समूह पर अत्याचार करते और उनको कष्ट देते हैं और धरती में उपद्रव फैलाते और लोगों को गुमराह करते और मोमिनों पर कुफ्र के फ़तवे लगाते हैं।

और मेरे समस्त मित्र संयमी हैं परन्तु उन सब से अधिक विवेकी और ज्ञानी और अत्यधिक विनम्र और सहनशील और इस्लाम तथा ईमान में सर्वाधिक पूर्ण और प्रेम, अध्यात्मज्ञान, ख़ुदा के भय और विश्वास और दृढ़ता वाला एक पवित्र व्यक्ति, बुज़ुर्ग, संयमी, ज्ञानी, धार्मिक विषयों का ज्ञाता, अत्यंत प्रतिष्ठित मुहद्दिस महान वैद्य, हकीम हाजी-उल-हरमैन (मक्का तथा मदीना की यात्रा करने वाला) क़ुरआन का हाफ़िज़, क़ौम का क़ुरैशी और फारूकी वंश का है। जिसका शुभ नाम उपाधि सहित मौलवी हकीम नूरुद्दीन भैरवी है। अल्लाह तआला उसको धर्म तथा सांसारिकता में उत्तम प्रतिफल दे। और सच्चाई, पवित्रता, श्रद्धा, प्रेम और वफादारी में मेरे समस्त मुरीदों में से वह प्रथम नंबर पर है। और अल्लाह के अतिरिक्त प्रत्येक चीज़ से विमुखता में और स्वार्थत्याग तथा धार्मिक सेवा में वह विचित्र व्यक्ति है। उसने ख़ुदा के धर्म की सरबुलंदी के लिए विभिन्न कारणों से बहुत सा धन खर्च किया है और मैंने उसको उन सच्चे मित्रों में से पाया है जो प्रत्येक इच्छा पर और पत्नी तथा बच्चों पर अल्लाह की प्रसन्नता को प्राथमिकता देते हैं और सदैव उसकी प्रसन्नता पाना चाहते हैं और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए जान-माल खर्च करते हैं और हर परिस्थिति में शुक्रगुज़ारी का जीवन व्यतीत करते हैं। और वह व्यक्ति विनम्र हृदय, स्वच्छ प्रकृति वाला, सहनशील, अत्यंत कृपालु और बहुत से गुणों से युक्त, शरीर की प्रतिज्ञाओं तथा उसके आनन्दों से बहुत दूर है, भलाई और नेकी के अवसर उसके हाथ से कभी नहीं

निकलते और वह चाहता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के धर्म की बुलंदी और समर्थन में पानी की तरह अपना रक्त बहा दे और अपनी जान को भी ख़ातमुन्नबिय्यीन के मार्ग में न्योछावर कर दे और प्रत्येक भलाई के पीछे चलते हैं और उपद्रवियों के खण्डन हेतु प्रत्येक समुद्र में गोता लगाते हैं।

मैं अल्लाह का धन्यवाद करता हूं कि उसने मुझे ऐसा उत्तम श्रेणी का मित्र दिया जो सत्यनिष्ठ और महान ज्ञानी है और गंभीर चिन्तन तथा सूक्ष्म दृष्टि रखने वाला, अल्लाह के लिए कठिन प्रयास करने वाला और पूर्ण निष्ठा से उसके लिए ऐसा उत्तम स्तर का प्रेम रखने वाला है कि कोई प्रेमी उससे आगे नहीं बढ़ सका। और मैं अल्लाह का इस बात पर भी धन्यवाद करता हूं कि उसने अन्य सत्यनिष्ठों और संयमियों की भी मुझे जमाअत दी है जो ज्ञानी, नेक और ख़ुदा को पहचानने वाले हैं कि उनकी आंखों से पर्दे उठाए गए और उनके हृदय में सच्चाई भर दी गई है, वे सच्चाई को देखने और पहचानने वाले हैं और अल्लाह के मार्ग में प्रयास करते हैं और अंधों की तरह नहीं चलते और सच्चाई के यश पहुंचाने से मारिफ़त की बारिश के लिए विशेष किए गए हैं और उनको मारिफ़त का दूध पिलाया गया और उनके हृदय में अल्लाह की रज़ामंदी और क्षमा याचना के मार्गों का प्रेम पिलाया गया है और उनको संतुष्ट किया गया और उनकी आंखें तथा कान खोले गए हैं और उनको वह प्याला पिलाया गया है जो आरिफ़ों को पिलाया जाता है।

और उन्हीं में मेरा एक सम्माननीय भाई है जो बड़ा ज्ञानी, मुहद्दस (हदीसविद) फ़क़ीह (धर्मशास्त्र का ज्ञाता) है। जिनका नाम सैयद मौलवी मुहम्मद अहसन है। अल्लाह तआला हर स्थान पर उसके साथ हो और हर मैदान में उसकी सहायता करे। वह नेक, संयमी मर्द इस्लाम के लिए स्वाभिमानी है। उसने अपने लेखों द्वारा विरोधी उलमा के अज्ञान की इमारत को गिरा दिया है। और उनकी आग को बुझा दिया है और खुला-खुला नूर लाया है और उपद्रव के उड़ते हुए अंगारों को स्वच्छ स्रोत के जल से बुझा दिया है। और ख़ुदा ने धार्मिक ज्ञान और नबी की हदीसों का उसको बड़ा ख़जाना दिया है और हदीसों के निखारने, परखने और

कुछ को कुछ से विशिष्ट करने में उनको अजीब महारत है। और मुक़ाबले के मैदान में पलक झपकते ही दुश्मन उससे भाग जाता है और बावजूद इसके कि विरोधियों के क्रोध की कोशिशें भी बहुत होती हैं और मुक़ाबले के लिए बहुत आतुर होते हैं परन्तु फिर उससे ऐसे भागते हैं जैसे कि शेर को देख कर गधा भागता है और यह ख़ुदा तआला की सहायता के बिना नहीं जो सदैव सच्चों के साथ होता है, और बावजूद इन विशेषताओं के वह साधक, संयमी और अल्लाह के भय से बहुत रोने वाला है और ख़ुदा के समक्ष खड़ा होने से डरता है और असहाय लोगों की भांति जीवन व्यतीत करता है।

यह वह है जो मैंने अपने दोस्तों के आचरणों का कुछ भाग आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहा है और यह केवल मेरे रब की कृपा और उसकी रहमत है वह बचपन और जवानी में मुझ पर मेहरबान रहा और सदैव मेरा संरक्षक रहा और प्रत्येक कार्य में सहायक हुआ है और इसी प्रकार उसने मूल अरबों में से कुछ लोग मेरे पास भेज दिए जिन्होंने सच्चाई और सफाई से मेरी बैअत की और मैं उन में निष्ठा का नूर और सच्चाई का निशान और सौभाग्य की क़िस्मों के लिए एक सम्पूर्ण सच्चाई का सारांश देखता हूं और वे सदविवेक से परिपूर्ण थे बल्कि उनमें से कुछ ज्ञान तथा साहित्य के विद्वान और क़ौम की दृष्टि से प्रसिद्ध थे। और कुछ ने मेरी सच्चाई तथा समर्थन में पुस्तक★ लिखी और मेरे विरोधियों का खण्डन किया और मैंने देखा कि वह मुझसे प्रेम रखते हैं और वे (कुछ एक) हिन्दुस्तानी उलमा जैसे नहीं हैं और समझने के बाद इन्कार पर हठ नहीं करते। अत: यही कारण है जिसने अरबी पुस्तकों के लिखने की ओर मेरा ध्यानाकर्षण किया तथा उन भाग्यशाली सज्जनों को बुलाने पर मुझे विवश किया।

और मैं चाहता हूं कि ये पुस्तकें आप लोगों के पास भेजूं परन्तु मैंने सुना

★ वह 'ईक़ाज़ुन्नास' नामक एक पुस्तक है जिसको मेरे मित्र ने लिखा है जो निष्ठा तथा सच्चाई में सीरिया देश से सर्वप्रथन बैअत करने वाला है और वह मौलवी सैयद मुहम्मद सईदी अत्तराबलसी अश्शामी अन्निशारुल हमीदानी मैंने इस पुस्तक को अपने इस पत्र से संलग्न कर दिया है ताकि प्रत्येक समझदार देखने वाला उससे लाभ उठा सके। इसी से

है कि बादशाह के कुछ सेवक मार्ग में जांच-पड़ताल करते और पुस्तकों को पढ़ते हैं और तनिक भी संदेह हो तो वापस कर देते हैं। अब आप बताएं कि किस प्रकार भिजवाऊँ और किस युक्ति से तुम्हारे पास पहुंच सकती हैं और मैं यहां बहुत प्रयास करता हूं और अनुभवी लोगों से विचार-विमर्श करता रहता हूं और हे अरब के सज्जनो! मैं दिल और जान से तुम्हारे साथ हूं और मेरे रब ने अरब के बारे में मुझे खुशखबरी दी और इल्हाम किया है कि मैं उनको सचेत करूं और सही मार्ग बताऊं और उनकी हालत सुधारूँ और इंशाअल्लाह तुम मुझे इस बारे में सफल पाओगे।

हे मेरे प्रिय मित्रो! इस्लाम के समर्थन और उसके पुनरुत्थान के लिए ख़ुदा तआला मुझ पर विशेष चमकार के साथ चमका है। और बरकतों की बारिशें मुझ पर बरसाईं और तरह-तरह के इनाम मुझ पर किए हैं और इस्लाम की तंगी के समय और मुसलमानों की दरिद्रता के समय में ख़ुदा ने मुझे बहुत सी कृपा और विजय तथा सहायता की ख़ुशख़बरी दी है। अत: आप लोगों को इन नेअमतों में शामिल करने का मुझे बहुत शौक पैदा हुआ और अब तक मुझे यही शौक है। तो क्या तुम्हारी भी इच्छा है कि अल्लाह के लिए मेरे साथ मिल जाओ।

और इस देश के कुछ उलमा सदैव मुझे मुसीबतों मे डालने तथा कष्ट पहुंचाने के लिए तत्पर रहते हैं और मेरे लिए कठिन दिनों के प्रतीक्षक हैं और चाहते हैं कि मुझसे ग़लतियां हों और कुफ़्र के फ़तवे लिखते रहते हैं और मैं अपने दिल में कहता था कि - हे अल्लाह धरती और आकाश के पैदा करने वाले! भविष्य तथा वर्तमान के ज्ञाता! अपने बंदों के मतभेदों का तू ही निर्णय करने वाला है। इस पर ख़ुदा ने ख़ुशख़बरी देते हुए अपनी कृपा से मुझे इल्हाम किया और फरमाया कि- "निश्चित रूप से तेरी सहायता की जाएगी" और यह भी फ़रमाया कि- "हे अहमद अल्लाह ने तुझ में बरकत भर दी है। जब तूने फेंका था तो तूने नहीं फेंका था बल्कि अल्लाह ने फेंका ताकि तू उस क़ौम को डराए जिन के बड़ों को नहीं डराया (गया) और ताकि मुजरिमों का मार्ग स्पष्ट हो जाए। और फ़रमाया कह दे कि यदि यह मेरा मनगढ़त झूठ है तो इसका बुरा

बदला मुझे दिया जाएगा। ख़ुदा वह है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ इसलिए भेजा ताकि सब धर्मों पर विजयी कर दे और अल्लाह की बातों को कोई बदल नहीं सकता। और तेरी ओर से हम स्वयं हंसी-ठठ्ठा करने वालों के लिए पर्याप्त हैं और फ़रमाया तू अपने रब की ओर से उत्तम स्तर की गवाही के साथ खड़ा है (उसकी ओर से रहमत के तौर पर) और तू उसकी कृपा से पागल नहीं है। वे अल्लाह के अतिरिक्त तुझे औरों से डराते हैं हम स्वयं तेरी निगरानी करने वाले हैं। मैंने तेरा नाम भरोसा करने वाला रखा है। अल्लाह अपने अर्श से तेरी प्रशंसा करता है। और यहूदी और ईसाई तुझसे कभी प्रसन्न न होंगे तथा षड्यन्त्र करते रहेंगे और अल्लाह भी योजना बनाएगा और योजना बनाने में अल्लाह सबसे उत्तम है। अत: ख़ुदा ने यहूद के शब्द में इस्लाम के उन उलमा को सम्मिलित किया है जिन पर यहूदियों की भांति यह मामला संदिग्ध हो गया है और जिनके हृदय, आदतें, भावनाएं, छल-कपट, गलत आरोप और झूठ गढ़ना यहूदियों के समान हो गए हैं। और उन उलमा ने देखने वालों पर (यहूदियों से) अपनी समानता, अपनी बातों से, कर्मों से, सच्चाई से मुंह फेरने से, दुश्मनी और बेईमानी से, खैरुल अनाम (सृष्टि में से सर्वश्रेष्ठ) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वसीयत से भागने और हदों से आगे बढ़ने के द्वारा सिद्ध कर दी है।

और मैं इस नाम के रखने के पश्चात भी यही समझता था कि मसीह मौऊद आने वाला है और कभी यह गुमान न करता था कि वह मैं हूं, यहां तक कि ख़ुदा ने इस गुप्त रहस्य को प्रकट कर दिया जिसको आज़माइश के तौर पर बहुत से लोगों पर प्रकट नहीं किया था और मेरा नाम अपने इल्हाम में ईसा बिन मरियम रख दिया और फ़रमाया- "हे ईसा मैं तुझे मृत्यु देने वाला हूं और अपनी ओर उठाने वाला हूं और इन्कार करने वालों के आरोपों से पवित्र करने वाला हूं और तेरे अनुयायियों को तेरे इन्कार करने वालों पर क़यामत तक प्रबल रखने वाला हूं। हमने तुझको ईसा बिन मरियम बना दिया। तू मेरे निकट उस स्थान पर है जिसको लोग नहीं जानते और तू मुझसे मेरी तौहीद और एकत्व की भांति है और अब तू हमारे निकट रहने वाला तथा अमन में है।

अत: यह वह दावा है कि जिसमें मेरी क़ौम मुझसे झगड़ रही है और मुझे मुरतद (धर्म विमुख) समझती है। और पुकार-पुकार कर बातें करने लगे और ख़ुदा से इल्हाम पाने वाले का कुछ सम्मान न किया और कहने लगे कि वह काफ़िर और झूठा दज्जाल है और यदि सरकारी दण्ड का भय न होता तो मुझे क़त्ल कर देते। और हर छोटे-बड़े को मुझे और मेरे लोगों को कष्ट देने के लिए तैयार करते हैं। और अत्याचारियों की करतूतों को ख़ुदा खूब जानता है। और क़सम है मुझे अल्लाह के सम्मान और प्रताप की कि मैं मोमिन मुसलमान हूं। अल्लाह पर और उसकी किताबों और रसूलों और फरिश्तों पर और मौत के बाद उठाए जाने पर ईमान लाता हूं और इस बात पर भी ईमान लाता हूं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समस्त रसूलों से श्रेष्ठ तथा ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं। और यह लोग झूठ कहते हैं कि मैं नबुव्वत का मुद्दई (दावा करने वाला) हूं और इब्ने मरियम★ के बारे में तिरस्कृत तथा अपमानजनक वाक्य बोलता हूं और यह भी कि मैं कहता हूं कि इब्ने मरियम मृत्यु को प्राप्त हो गया है और शाम (सीरिया) की धरती में दफ़न है। और यह कि मैं उसके चमत्कारों पर और पक्षियों के पैदा

★**हाशिया-** और कहते हैं कि मुस्लिम इत्यादि सिहाह की हदीस में ईसा और कथित दज्जाल का वर्णन ऐसे रूप में हुआ है जिससे स्पष्ट प्रकट होता है कि ईसा बिन मरियम दज्जाल के वध के लिए उतरेगा और दज्जाल जिसका वादा किया गया एक आंख वाला व्यक्ति है जिसकी दाहिनी आंख फूले हुए अंगूर के दाने के समान है और उसके माथे पर क फ़ र लिखा हुआ होगा और उसके साथ स्वर्ग और नर्क होंगे। अत: जिसको वह स्वर्ग कहेगा वास्तव में वह नर्क होगा और वह मिटी हुई आंख वाला है और उस पर मोटा सा नाखुना[1]⁂ होगा और वह जवान तथा घुंघराले बालों वाला है वह रेत के टीले से निकलेगा जो शाम (सीरिया) और इराक के मध्य है और दाएं-बाएं फिरेगा और वह पृथ्वी में 40 दिन ठहरेगा एक दिन साल के बराबर होगा, एक दिन महीने के बराबर होगा, एक दिन सप्ताह के बराबर और बाक़ी दिन सामान्य दिनों के बराबर होंगे। और पृथ्वी के अंदर ऐसा तेज़ फिरेगा जैसे कि बादल जिसको तेज़ हवा उड़ाती है और आसमान उसके आदेश से बारिश

⁂**नाखुना-** आंख का एक रोग जिसमें सफेद गोश्त की तरह आंख के कूए में पैदा हो जाता है। (जामे लुग़ात, प्रकाशित उर्दू साइंस बोर्ड लाहौर)

करने और मुर्दों को जीवित करने वाला होने पर और परोक्ष का ज्ञाता होने और आसमान में अब तक जीवित और स्थापित होने पर ईमान नहीं रखता और यह भी कि मैं इस बात पर ईमान नहीं लाता कि विशेष रूप से मसीह तथा उसकी माता ही को शैतान के स्पर्श और उससे संबंधित बातों से पूर्ण पवित्रता ख़ुदा ने दी है और मैं इस बात को स्वीकार नहीं करता कि वे दोनों उस मासूमियत में

शेष हाशिया- बरसाएगा और ज़मीन भी उसके आदेश से उगाएगी और शहद की मक्खियों की तरह ज़मीन के ख़ज़ाने उसके पीछे चलेंगे और वह एक पूरे जवान को बुलाएगा और तलवार से उसके दो टुकड़े करके उनको तीर की मार पर फेंक देगा फिर उसको बुलायेगा और वह ख़ुश-ख़ुश हंसता हुआ आ जाएगा। इसी बीच मसीह इब्ने मरियम पैदा होकर दमिश्क के पूर्वी सफ़ेद मिनार के निकट उतरेगा और उसने दो पीली चादरें ओढ़ी होंगी और अपनी दोनों हथेलियां दो फरिश्तों के कन्धों पर रखी होंगी। जब सर झुकाएगा तो बूंदें गिरेंगी और जब उठाएगा तो मोतियों की भांति बूंदें नीचे गिरती हुई मालूम होंगी। अत: जिस काफ़िर तक उसकी सांस (बददुआ) पहुंचेगी वह मर जाएगा और उसकी सांस देखने की सीमा तक पहुंचेगी। फिर वह दज्जाल की तलाश करता हुआ उसको बाबे **लुद** में जाकर वध करेगा। फिर ईसा के पास वे लोग आएंगे कि जिनको ख़ुदा ने बचाया होगा और वे उनके मुंह पोंछेंगे और उनको जन्नत के दरजात की ख़बर देंगे फिर इसी बीच ख़ुदा तआला ईसा पर वह्यी भेजेगा कि मैंने ऐसे व्यक्ति निकाले हैं जिन से लड़ने की किसी को शक्ति नहीं। मेरे बंदों को तूर (एक पहाड़ जिस पर मूसा अ० को वह्यी हुई थी-अनुवादक) पर ले जाकर सुरक्षित रख और ख़ुदा याजूज-माजूज को भेजेगा और वह प्रत्येक बुलंदी से उतरेंगे फिर उनकी प्रथम जमाअत बहीरा ए तिबरिया (एक समुद्र) के निकट से गुज़रेगी तो समस्त पानी पी जाएगी और जब पीछे आने वाली जमाअत वहां (से) गुज़रेगी तो कहेगी कि यहां कभी पानी हुआ करता था। फिर वह ख़मर पहाड़ तक पहुंच जाएंगे और वह बैतुल मुक़द्दस में एक पहाड़ है। फिर वह कहेंगे कि पृथ्वी वालों को तो हमने मार दिया है आओ अब हम आकाश वालों को मारें। तो वे आकाश की ओर तीर फेंकेंगे और ख़ुदा उनके तीरों को खून से लथपथ कर के वापस करेगा और अल्लाह के नबी ईसा तथा उसके सहाबा (अनुयायी) घिर जाएंगे यहां तक कि प्रत्येक बैल का सर सौ अशर्फी से अधिक पसंद करेगा फिर अल्लाह का नबी ईसा और उसके सहाबा ख़ुदा से दुआ करेंगे तो ख़ुदा उन पर ताऊन (महामारी) भेजेगा जिससे उनकी गर्दनों में गिल्टी निकलेगी और एक जान की भांति मरे पड़े होंगे। फिर अल्लाह का नबी ईसा और उसके असहाब ज़मीन पर उतर आएंगे परन्तु उनकी

अकेले हैं और अन्य कोई रसूल या नबी इसमें उनका भागीदार नहीं है।

और कहते हैं कि यह व्यक्ति न फरिश्तों पर ईमान रखता है और न उनके उतरने और चढ़ने पर। और इसकी यह आस्था है कि सूरज और चांद और सितारे फरिश्तों के शरीर हैं और न यह आस्था रखता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समस्त रसूलों से अन्तिम और ख़ातम हैं और आपके बाद

शेष हाशिया- बदबू और गंदगी से हथेली जितनी भी कोई जगह खाली न होगी। फिर अल्लाह का नबी ईसा और उसके सहाबा मिलकर दुआ करेंगे तो ख़ुदा ऊंटों की गर्दनों की भांति परिंदे भेजेगा जो उन को उठाकर जहां ख़ुदा चाहेगा फेंक देंगे और सात वर्ष तक मुसलमान उनके तीर, कमान और तर्कश जलाते रहेंगे। फिर ख़ुदा ऐसी बारिश बरसा देगा जिसके आगे कोई तंबू और मिट्टी का घर नहीं ठहर सकेगा यहां तक कि ज़मीन एक हौज़ या चमकदार पत्थर की बनती हो जाएंगे। फिर ज़मीन को आदेश दिया जाएगा कि अब तू अपने फल निकाल और बरकत वाली हो जा तो फिर उन दिनों में एक अनार को बड़ी जमाअत खा लेगी और उसके छिलके की छाया में आराम करेगी और जानवरों में ऐसी बरकत डाली जाएगी कि एक दूध देने वाली ऊंटनी बड़ी क़ौम के लिए पर्याप्त होगी। और दूध देने वाली गाय एक मध्यम स्तर के खानदान के लिए और दूध देने वाली बकरी एक छोटे परिवार के लिए। फिर इसी बीच ख़ुदा तआला एक पवित्र हवा भेजेगा जो उन की बग़लों में लगते ही सब मुसलमानों की रूहों को क़ब्ज़ कर लेगी और उपद्रवी गधों के समान आपस में मिलजुल जाएंगे फिर उन्हीं पर क़यामत आएगी। और एक हदीस में आया है कि मसीह दज्जाल पूर्वी ओर से आएगा और मदीना में आना चाहेगा यहां तक कि वह उहद के पीछे जा उतरेगा परन्तु फरिश्ते उसका मुंह शाम (सीरिया) की ओर फेर देंगे और वहीं नष्ट हो जाएगा और मदीना में उसका रोब नहीं पड़ेगा। और उन दिनों मदीना के सात दरवाज़े होंगे और हर एक पर दो फरिश्ते होंगे और धरती में 40 साल ठहरेगा और वह ऐसे चितकबरा गधे पर सवार होगा जिसके दोनों कानों के मध्य 70 हाथ (140 गज़) की दूरी होगी और ईसा हकम अदल होकर उतरेगा, सलीब को तोड़ेगा और सूअरों को मारेगा और लड़ाई छोड़ देगा और मज़बूत ऊंटनियां ऐसे छोड़ी जाएंगी कि उनसे काम न लिया जाएगा। और सदा मुसलमानों की एक जमाअत सच्चाई पर लड़ती रहेगी और क़यामत तक विजय रहेगी। फिर ईसा नाज़िल होगा और निकाह करेगा फिर उसको औलाद होगी और हदीसों में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में दज्जाल मौजूद था और तमीम दारी ने उसे देखा।

और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समक्ष इस प्रकार घटना वर्णन

कोई नबी न होगा। अत: यह सब कुछ उनके झूठे आरोप और अक्षरांतरण हैं मेरा ख़ुदा पाक है मैंने कभी ऐसी बात नहीं कही (यह केवल झूठ है) अल्लाह तआला जानता है कि यह दज्जाल हैं और वे ऐसे ही मुझ पर टूट पड़े हैं हालांकि मेरी बातों के रहस्य और सच्चाई को नहीं समझा और न उनके अर्थ तक पहुंचे हैं। और उन्होंने बेईमानी की है और बयान को बदलकर झूठे आरोप लगाए हैं

शेष हाशिया- की कि मैं लखम और जुज़ाम के कबीलों के 30 आदमियों के साथ एक जहाज़ पर सवार हुआ और लगातार एक महीने तक लहरों में चक्कर खाते रहे उसके बाद सूर्यास्त के निकट एक टापू में उतरे और (जहाज़ की छोटी कश्तियों) में हम सवार होकर एक टापू में गए तो वहा हमें एक जानवर मिला जो बड़े गुंजान और बहुत बालों वाला था। बालों की अधिकता के कारण उसके आगे-पीछे की पहचान नहीं हो सकती थी हमने उसे कहा कि तू नष्ट हो, तू कौन है? उसने उत्तर दिया कि मैं जस्सासा हूं। उस गिरजाघर में उस मर्द के पास जाओ कि वह तुमसे मिलने का बहुत इच्छुक है। जब उसने हमें उस व्यक्ति का पता दिया तो हम डरे कि यह कोई शैतान महिला न हो। फिर हम जल्दी-जल्दी गिरजाघर में गए तो वहां क्या देखते हैं कि एक बड़ा भारी आदमी बंधा पड़ा है जिसके समान हमने कभी नहीं देखा और उसकी मुश्कें कसकर दोनों घुटनों तथा टखनों के बीच लोहे की ज़ंजीर से जकड़ा हुआ था। हमने उसे कहा कि तुझ पर लानत हो तू कौन है? उसने उत्तर दिया कि अब तुम मेरी ख़बर को तो सुन सकते हो पहले तुम अपना पता दो? हमने कहा कि हम कुछ लोग हैं जो जहाज़ पर सवार हुए थे और लगातार एक महीने तक भँवर में फंसे रहे। और जब इस टापू में उतरते तो हमें एक बहुत घने बालों वाला जानवर मिला जो अपना नाम जस्सासा बताता था उसने कहा तुम गिरजा में उसके पास जाओ फिर हम तेरे पास आए। तो फिर उसने कहा मुझे बतलाओ कि क्या **बीसान**★ के बाग में फल लगते हैं? हमने कहा- हां। उसने कहा एक समय आने वाला

★**हाशिये का हाशिया :-** यह बातें कुछ कारणों से बताती हैं कि यह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस नहीं है क्योंकि यह क़ुरआन की स्पष्ट आयतों के विपरीत हैं और दज्जाल भविष्य की बातों को कैसे बता सकता था जबकि ख़ुदा ने अपनी सदैव रहने वाली पुस्तक में फ़रमा दिया था कि-

فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۔ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ

(अल जिन्न - 72/ 27,28)

(अर्थात ख़ुदा अपने भविष्य की बातों पर पवित्र रसूल के अतिरिक्त और किसी को सूचना नहीं देता।) फिर दज्जाल ने कैसे यह भविष्यवाणियां सही और वास्तव में बता दीं? और दज्जाल ने

और इधर-उधर की बातों में पड़ गए हैं और कुधारणा करते हैं अत: बुरा हो इन कुधारणा करने वालों का। और अल्लाह खूब जानता है कि मैंने जीवन भर कभी ऐसा शब्द नहीं बोला और न लिखा है जो अल्लाह के कथन के विरुद्ध हो परन्तु उनका यह कहना कि मसीह ने अल्लाह की भांति पक्षियों को पैदा किया है और बिल्कुल उसके जीवित करने की तरह मुर्दों को जीवित किया है

शेष हाशिया- है कि फल नहीं लगेंगे। फिर उसने **बहीरा-ए-तिबरिया** के संबंध में पूछा कि क्या उसमें पानी है? तो हमने कहा कि उसमें बहुत पानी है। उसने कहा कि वह जल्द सूख जाएगा। फिर उसने ज़गर के स्रोत के विषय में पूछा कि उसमें पानी है और उसके इर्द-गिर्द के लोग उससे अपने खेतों की सिंचाई करते हैं? हमने कहा- हां, उसमें पानी बहुत है और खेतों की भी सिंचाई होती है। फिर उसने कहा कि अनपढ़ लोगों के नबी का हाल सुनाओ कि उसने क्या किया? हमने कहा वह मक्का से हिजरत करके मदीना चला गया।

इस पर उसने पूछा क्या अरबों ने उससे लड़ाई की है? हमने कहा- हां। फिर उसने कहा तो फिर उनसे क्या मामला हुआ? हमने कहा कि उसने अरबों पर विजय प्राप्त कर ली और वे लोग उस (नबी) का आज्ञापालन करने लगे हैं। तो फिर उसने कहा कि उनके लिए यही उचित है कि सब उनका आज्ञापालन करें। और मैं तुम को बताता हूं कि मसीह दज्जाल मैं हूं और मुझको शीघ्र बाहर निकलने की अनुमति मिल जाएगी और मैं निकलकर समस्त धरती पर फिरुंगा और चालीस दिन के भीतर मक्का-मदीना के अतिरिक्त सब बस्तियों में उतरूंगा और वह दो स्थान मेरे लिए हराम होंगे और मैं उन में प्रवेश करने का इरादा करूंगा तो फ़रिश्ता तलवार निकालकर और सामने आकर मुझे रोक देगा और उनके हर एक सुराख पर फरिश्ते पहरा दे रहे होंगे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

शेष हाशिये का हाशिया- यह क्यों कहा कि लोगों की भलाई इसी में है कि वह उस अनपढ़ और अरबी नबी का अनुसरण करें क्योंकि वह सच्चा है। हालांकि दज्जाल काफ़िर और ख़ुदा का नाफ़रमान है? अत: वह क्योंकर ख़ुदा के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञाकारिता का आदेश दे सकता है? और विचित्र यह कि वह लोगों के विचार में तो अपने अस्तित्व के अतिरिक्त और किसी ख़ुदा का कायल नहीं है तो वह यह बात कब कह सकता है कि जल्द मुझे निकलने का आदेश दिया जाएगा तो फिर मैं निकलूंगा। बल्कि यह शब्द साफ दलालत करता है कि वह सिवाए इल्हाम और ख़ुदाई वह्यी के गिरजा से न निकलेगा। अत: इससे अनिवार्य ठहरता है कि दज्जाल भी एक नबी हो हालांकि सब मानते हैं कि वह बड़ा उपद्रवी है। अत: विचार करो और लापरवाही को छोड़ दो। इसी से।

बिना किसी अंतर के, और वह शैतान के स्पर्श से पूर्णत: पवित्र और सुरक्षित था। और इस पवित्रता में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उसके समान नहीं। अत: यह तो मेरे निकट अत्याचार और झूठ है, उनके मुख से यह वाक्य बहुत ही बुरा निकला है और निश्चय वे इन बातों में झूठे हैं। और मेरे बारे में उनका यह झूठ गढ़ना कि मैं मानो फरिश्तों पर ईमान नहीं रखता,

शेष हाशिया- फ़रमाया- सावधान होकर सुनो! वह शाम (सीरिया) के समुद्र या यमन के समुद्र में है। नहीं बल्कि वह पूर्व की ओर से निकलेगा और अपने हाथ से पूर्व की ओर इशारा किया। इस हदीस को मुस्लिम ने रिवायत किया है। मैं कहता हूं कि यह वह बातें हैं जो मतभेद और विरोधाभास के साथ हदीस में आईं हैं अत: कुछ बल्कि अधिकतर इसी मत की ओर गए हैं कि उनसे ज़ाहिरी अर्थ अभिप्राय हैं। और सच्चाई यह है कि उन्होंने बड़ी ग़लती की है और यह ख़ुदा तआला की ओर से सब्र करने वाले मोमिनों और जल्दबाज़ झुठलाने वालों में अंतर करने के लिए एक आज़माइश थी। और तुझको मालूम है कि ख़ुदा तआला कभी अपने नबियों और रसूलों की ओर लाक्षणिक, रूपक और सानुप्रास के रूप में वह्यी करता है और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह्यी में इसके बहुत से उदाहरण मौजूद हैं। उनमें से एक अनस की हदीस है वह बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने एक रात स्वप्न में देखा कि हम उक़्बा बिन राफे की हवेली में हैं और इब्ने ताब की खजूरें हमें दी गई हैं, तो मैंने ताबीर की कि संसार में हमारे लिए सम्मान है और आखिरत में भलाई है और हमारा दीन पवित्र हो गया है और उन्हीं में से अबू मूसा अश्अरी के हदीस है उसने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया- कि मैंने स्वप्न में देखा कि मैंने तलवार निकाली है और उसकी धार टूट गई है तो इसकी ताबीर वह मोमिन हैं जो (जंग-ए-) उहद के दिन शहीद हुए। फिर मैंने दोबारा निकाली तो पहले की अपेक्षा बहुत अच्छी हो गई तो उसकी ताबीर जीत और मोमिनों का एकत्र होना था। अत: देख कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने अध्यात्मिक अर्थों को किस प्रकार भौतिक रूपों में देखा है। और तुझ पर छुपा नहीं है कि नबियों के स्वप्न वह्यी होते हैं अत: इससे प्रमाणित हुआ कि नबी की वह्यी कभी लाक्षणिक और रूपक की क़िस्मों में से होती है और उस वह्यी की ताबीर की भांति आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की और बहुत सी ताबीर हैं कि सोने के कंगनों और कमीज़ और गाय इत्यादि को स्वप्न में देखा और यह स्वप्न क़ौम में प्रसिद्ध हैं, तुम्हारे सम्मुख वर्णन करने की कोई आवश्यकता नहीं है और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक और स्वप्न में

अत: मैं इन झूठे विचारों के संबंध में जिनकी कुछ वास्तविकता और प्रभाव नहीं है सिवाए इसके और कुछ भी नहीं कहता कि मैं अपने अल्लाह के समक्ष गिड़गिड़ा कर दुआ करता हूं कि हे ख़ुदा! यदि मैंने यह कहा है तो मुझ पर लानत भेज अन्यथा इन झूठ गढ़ने वालों पर लानत हो जो बिना किसी ज्ञान के मुझ पर झूठ गढ़ते हैं। और अकारण मुझे काफ़िर कहते हैं और अल्लाह तआला

शेष हाशिया- दज्जाल को देखा दो व्यक्तियों के कंधों पर हाथ रखे हुए बैतुल्लाह का तवाफ (ख़ाना का'बा की परिक्रमा) करता है। अत: यदि इस वह्यी को हम ज़ाहिरी रूप में समझें तो मानना पड़ेगा कि दज्जाल मोमिन मुसलमान हो क्योंकि बैतुल्लाह का तवाफ मुसलमानों की इबादतों में से है फिर यह हदीस स्पष्ट बताती है कि दज्जाल नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में मौजूद था और तमीमदारी ने उसको देखा भी था। और लोग कहते हैं कि वह आख़री ज़माने में निकलेगा और प्रत्येक बस्ती में प्रवेश करेगा और समस्त शहरों पर विजय प्राप्त करेगा और मक्का-मदीना के अतिरिक्त अन्य समस्त धरती ले लेगा परन्तु और हदीसें इन घटनाओं को झुठलाती हैं। पहले तो बुद्धि और इंसाफ से मुस्लिम की हदीस पर नज़र डालो जो जाबिर से मरवी है कि वह कहते हैं कि मैंने मृत्यु से एक माह पहले आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह कहते हुए सुना है कि तुम मुझसे क़यामत के विषय में पूछते हो इसका ज्ञान तो अल्लाह को ही है और मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि इस समय समस्त पृथ्वी पर जो लोग जीवित हैं, सदी के गुज़रने तक उनमें से एक व्यक्ति भी जीवित नहीं रहेगा।

और इब्ने मसूद से मरवी है कि सदी के गुज़रने तक वर्तमान लोगों में से समस्त पृथ्वी पर कोई भी न होगा और बुख़ारी ने भी अपनी सहीह में ऐसा ही वर्णन किया है और क्योंकि विषय एक है इसलिए पुन: दोहराने की आवश्यकता नहीं। अत: इस से प्रत्येक मोमिन पर अनिवार्य है कि वह इस पर ईमान लाए कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय के बाद सदी के अंदर-अंदर दज्जाल अवश्य मर गया है। क्योंकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऐसे आदेश के विपरीत कैसे हो सकता है जो ख़ुदा की वह्यी से और ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहा गया हो। और क़सम स्पष्ट बताती है कि यह ख़बर वास्तविक अर्थों पर आधारित है न इसमें कोई तावील है और न अपवाद है अन्यथा क़सम में कौन सा लाभ है? अत: खोज करने वालों तथा जांच पड़ताल करने वालों की तरह खूब सोच समझ ले और उन दो हदीसों में सिवाए इसके एकरूपता संभव ही नहीं कि दज्जाल वाली हदीस को क़सम का रूपक ठहरा कर उसमें तावील की जाए। (अत: हम कहते हैं) कि

से नहीं डरते और सच तो यह है कि मैंने कोई ऐसी बात नहीं कही जो वास्तव में अहले सुन्नत की आस्था के विरुद्ध हो और न कभी ऐसा शब्द ज़बान पर लाया हूं और न कभी ऐसे विचार मेरे हृदय में आए हैं बल्कि उन्होंने विवेक की कमी, ग़लत सोच और दिल की गंदगी के कारण मेरी बातों को नहीं समझा और सरसरी नज़र से ही मुझे झुठलाने के लिए प्रत्येक जल्दी से आगे बढ़ा।

शेष हाशिया- दज्जाल के निकलने की हदीस 'ईसाइयों के एक झूठे गिरोह' के अंतिम ज़माने में निकलने पर दलील है और हदीस में इस बात की ओर संकेत है कि धोखों और छल-कपट और भिन्न-भिन्न प्रकार के उपद्रवों और लोगों को गुमराह करने के लालच में वह अपने पूर्वजों के इस प्रकार समान होंगे कि मानो यह अब वही हैं जो बेड़ियों और ज़ंजीरों में क़ैद थे। परन्तु क़ैदों से निकल आए हैं और ख़ुदा ने उनकी बेड़ियों को दूर कर दिया है और वे निकलने के बाद दाएं-बाएं फिरेंगे और पृथ्वी में उपद्रव मचाएंगे और उनका निकलना लोगों के लिए एक बड़ी विपत्ति होगा। अत: जिस प्रकार कि 'तमीमदारी' ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में सच्चे तथा कश्फ़ी स्वप्न में दज्जाल को देखा था जो उदाहरण की क़िस्म में से था कि उसके हाथ कन्धों तक बांधे हुए, दोनों घुटनों और टखनों के बीच ज़ंजीर से जकड़ा हुआ उपासना घर में पड़ा हुआ है और ईसाइयों की हालत भी इस्लाम की बुलंदी के समय में ऐसी थी कि वह पराजित, क्रोध की अवस्था में हाथ पैर बंधे अपने गिरजाघरों में बैठे हुए थे। फिर 12वीं सदी के बाद वह निकाले गए और अल्लाह तआला ने उनकी ज़ंजीरें और बेड़ियाँ उतार दीं। और उनको तुच्छ ज्ञान की चादर ओढ़ा दी और यह अल्लाह तआला की ओर से आज़माइश थी फिर तो उन्होंने दिल खोलकर संसार में उपद्रव फैलाए और यह ख़ुदा की ओर से निश्चित था और इन्हीं के निकलने का इस हदीस में संकेत है कि निशान दो सदियों अर्थात 12 सौ वर्ष गुज़रने के पश्चात प्रकट होंगे और इसी में मसीह के आने की ओर संकेत है जो इन्कार करने वालों के मुख बंद करने वाला है। फिर जब हम अल्लाह के कलाम (क़ुरआन) पर नज़र डालते हैं तो उसको भी दज्जाल वाली हदीस के वास्तविक अर्थों के विरुद्ध पाते हैं और इसमें कोई कमज़ोर सा संकेत या आशंका इन अर्थों की नहीं पाते बल्कि वह तो इन विचारों को पूर्णत: खण्डन करता है। क्या सच की तलाश करने वालों के लिए ख़ुदा के यह शब्द पर्याप्त नहीं हैं कि मैं तेरे अनुयायियों को तेरे विरोधियों पर क़यामत तक विजयी रखूँगा। और विचार करने वाले जानते हैं कि यह आयत इस बात का अकाट्य तर्क है कि मुसलमान और ईसाई क़यामत तक पृथ्वी के वारिस रहेंगे क्योंकि मुसलमान तो मसीह के वास्तविक अनुयायी हैं और ईसाई

अत: ईर्ष्यालुओं को मैं कैसे समझ सकता हूं। हां, मैंने यह कहा है और अब भी कहता हूं कि ईसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम निश्चित रूप से मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं जैसा कि पवित्र क़ुरआन और रसूले करीम स अ व ने ख़बर दी है। अत: हम ख़ुदा और रसूल की बात में किस प्रकार सन्देह करें। और उनकी बातों पर अन्य बातों को कैसे प्राथमिकता दें। क्या अल्लाह की हिदायत

शेष हाशिया- दावे के तौर पर अनुयायी हैं और व्यावहारिक रूप से भी ख़ुदा के कथन के अनुसार देखा गया है क्योंकि धरती पर प्रभुत्व प्राप्त करने की बारी पहले मुसलमानों को मिली और इस युग में अब ईसाइयों का प्रभुत्व हो गया है और वे प्रत्येक बुलंदी से उतरते हैं जैसा कि पवित्र आयत में स्पष्ट पाया जाता है कि प्रभुत्व क़यामत तक मुसलमानों और ईसाइयों तक ही सीमित है और मुसलमानों का काल्पनिक दज्जाल न तो ईसाइयों की आस्था के अनुसार होगा और न मुसलमानों की आस्था के अनुसार। बल्कि वह तो उनके विचार में ख़ुदा होने का दावा करने वाला होगा और कहेगा मैं ही ख़ुदा हूं और मक्का-मदीना के अतिरिक्त समस्त धरती पर प्रबल हो जाएगा। अत: यह क़ुरआन की आयात का स्पष्ट विरोध है क्योंकि जैसा कि हमने अभी वर्णन किया है कि ख़ुदा तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयायियों से पक्का और स्थाई वादा किया है और फ़रमाया है कि-

وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

(आले इमरान - 3/56)

(अर्थात- तेरे अनुयायियों को तेरे विरोधियों पर क़यामत तक प्रबल रखूंगा) और स्पष्ट है कि हमारी क़ौम का आने वाला दज्जाल तो उनके विचार में भी न ईसा अलैहिस्सलाम का अनुयायी होगा और न उन पर और न उनकी इंजील पर ईमान लाएगा और कोई (मुसलमानों का आलिम) इस ओर नहीं गया कि वह मसीह पर ईमान लाएगा बल्कि वे तो कहते हैं कि वह कहेगा कि मैं स्वयं ख़ुदा हूं। और न ख़ुदा पर ईमान लाएगा और न किसी नबी पर। अत: क़ुरआन-ए-मजीद तो इसके लिए किसी युग में भी क़दम रखने की जगह नहीं देता बल्कि यही बताता है कि क़यामत तक या तो मुसलमान प्रबल रहेंगे या ईसाई। अत: काल्पनिक दज्जाल के खण्डन और उसके अनुयायियों के झूठ को प्रमाणित करने के लिए इससे बढ़कर और कौन सा स्पष्ट प्रमाण चाहिए। और तुम यह भी जानते हो कि क़ुरआन ऐसा अकाट्य और विश्वसनीय है कि निरंतरता और कंठस्थ और पवित्रता में हदीस कदापि उसके समान नहीं हो सकती यदि तू सच्चाई को तलाश करने वाला है तो समझ ले।

और कुछ उलमा का यह कहना कि दज्जाल यहूदी होगा यह प्रथम बात से भी अधिक

के बाद भी मैं गुमराही को अपना सकता हूं। और मेरे तथा मेरे विरोधियों के मध्य क़ुरआन ही निर्णय करने वाला है। और वे अल्लाह तथा उसकी आयतों के बाद और किस बात पर ईमान लाएंगे? क्या ख़ुदा तआला का कथन उनके लिए पर्याप्त नहीं ? परन्तु वह क़ुरआन की गवाही को स्वीकार नहीं करते और अन्य बातों पर भरोसा करते हैं कि जिनकी कुछ वास्तविकता नहीं समझते।

शेष हाशिया- आश्चर्यजनक है। क्या वे क़ुरआन की यह आयत नहीं पढ़ते कि-

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَ الْمَسْكَنَةُ (अल बक़र: - 2/62)

(अर्थात- उन पर अपमान और रुसवाई का मार मारी गई है।) अत: जिन यहूदियों पर ख़ुदा ने क़यामत तक के लिए अपमानित कर डाला है और अपनी पूर्ण तथा पवित्र किताब में बता दिया है कि वे सदैव किसी और बादशाह के अधीन अपमानित और रुसवा रहेंगे और कदापि उनका अपना देश नहीं होगा, उनसे वह दज्जाल कहां पैदा हो सकता है जो समस्त पृथ्वी का स्वामी हो जाए। असल बात तो यह है कि ख़ुदा की बातें सच्ची और अटल हैं परन्तु हमारी क़ौम ने हदीस के अर्थ को ढंग से नहीं समझा और ख़ुदा जिस पर अपनी कृपा करता है उसको वह बातें बता देता है जो अन्य लोगों पर रहस्य रखता है।

और मैंने सुना है कि कुछ लोग जब मसीह के नाज़िल होने की घटना में नुज़ूल का शब्द देखते हैं और इस रहस्य को समझने से उनकी बुद्धि असफल हो जाती है और इससे उनकी शक्तियां ख़त्म हो जाती है और उनके विचार टेढ़े हो जाते हैं तो अपनी साधारण राए से समझ लेते हैं कि मसीह आसमान से उतरेगा। और यह नहीं देखते कि क़ुरआन ने विभिन्न स्थानों पर नुज़ूल का शब्द प्रयोग किया है। जैसा कि फ़रमाया है- اَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ (अर्थात- हमने लोहा उतारा। अल हदीद- 57/26) وَ اَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ (अर्थात- और हमने तुम्हारे लिए पशु उतारे। अज़्ज़ुमर- 39/7) قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا (अर्थात-और हमने तुम्हारे लिए वस्त्र नाज़िल किए। अल आराफ़- 7/27) और ज़ाहिर है कि लोहा आसमान से नहीं उतरता बल्कि खदानों से निकलता है और गधा-गधी से घोड़ा-घोड़ी से पैदा होता है और किसी ने नहीं देखा कि यह पशु आसमान से उतरते हों और वस्त्र, रूई, ऊन और चमड़े और रेशम इत्यादि से बनाए जाते हैं और यह सब चीज़ें होती तो पृथ्वी में हैं परन्तु (आसमानों के रब) ख़ुदा के आदेश से। और यदि समस्त लोग चाहें कि अपनी शक्ति और विवेक से यह वस्तुएं पैदा करें तो कभी नहीं कर सकते। अत: मानो कि सब आसमान से उतरे हैं और फिर ख़ुदा ने फ़रमा दिया है कि-

وَ اِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ ۫ وَ مَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ

काश! मुझको ज्ञान होता है कि वे मुझे किस बात की और बुलाते हैं। क्या मेरे देखने-भालने के पश्चात मुझे गुमराही और अंधेपन की और बुलाते हैं। अल्लाह की क़सम में अपने रब की ओर से पूर्ण सच्चाई पर हूं और मेरे पास अल्लाह की और उसकी किताबों और उसके इल्हाम तथा कश्फ़ की गवाहियाँ हैं। क्या कोई सत्याभिलाषी है जो मुझसे अपनी हिदायत का हिस्सा ले और कंजूसी

शेष हाशिया- (अर्थात- सब वस्तुओं का खज़ाना हमारे ही पास है और हम उनको एक विशेष अनुमान से उतारते हैं। अल हिज्र - 15/22) अत: समस्त चीज़ें एक विशेष अनुपात में, पृथ्वी तथा आकाशीय आवश्यकता के अनुसार, आसमान से उतरती हैं जैसा कि उसकी हिकमत चाहती है। अत: अल्लाह बहुत बरकतों वाला है जो सर्वश्रेष्ठ सृष्टा है।

और नुज़ूल के एक और अर्थ भी हैं अर्थात एक स्थान से यात्रा करके दूसरे स्थान पर उतरना जैसा कि मुस्लिम की हदीस में आया है कि दज्जाल उहद पहाड़ के पीछे उतरेगा और ईसा सफ़ेद मीनार के पास उतरेगा जो दमिश्क के पूर्वी ओर होगा। और फिर इस क़ौम पर अत्यंत आश्चर्य है कि नुज़ूल मसीह से यही समझती है कि वह आसमान से उतरेगा और आसमान का शब्द अपनी ओर से बढ़ा देते हैं। और किसी सहीह हदीस में इसका कोई संकेत और निशान नहीं। नुज़ूल मसीह की घटना में जो यह वर्णन आया है कि वह फरिश्तों के कंधों पर हाथ रखे हुए उतरेगा तो इससे यह प्रमाणित नहीं होता कि वह आसमान से उतरेगा क्योंकि विद्यार्थियों की विशेषताओं के बारे में भी हदीस में ऐसा ही आया है जबकि वे धार्मिक ज्ञान को सीखने के लिए घर से निकलते हैं और इसकी हदीस में बहुत से उदाहरण हैं और यदि लेख लंबा होने का भय न होता तो मैं सबको लिख देता बल्कि सच यह है जो ख़ुदा ने मुझ पर प्रकट किया है और प्रत्येक सत्याभिलाषी मोमिन इसको स्वीकार कर सकता है। हां जो हिदायत के मार्ग का इंकार करने वाला हो वह इससे भी इन्कार कर सकता है, वह यह है कि फरिश्तों के कंधों पर हाथ रखे हुए सफ़ेद मीनार के निकट दमिश्क के पूर्वी ओर मसीह के उतरने से यह अभिप्राय है कि उसकी बात केवल आकाशीय माध्यमों से शाम देश में फैल जाएगी और उसमें पृथ्वी के उपकरण और बादशाहत और लश्कर और फ़ौज और योजनाओं का कुछ भी हस्तक्षेप नहीं होगा। बल्कि वह अल्लाह की सहायता और आसमानी लश्कर के साथ विजयी हो जाएगा मानो कि वह फरिश्तों के परों पर उतरा है और दज्जाल सांसारिक छल-कपट और मनगढ़त षड्यंत्रों और उन धोखों के साथ निकलेगा जो समय-समय पर नए गढ़े जाते हैं।

और मैंने सुना है कि इस देश के कुछ उलमा कहते हैं कि वाक्य يٰعِيْسٰى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ

(और ईर्ष्या) से दूर रहे और सन्मार्ग की तलाश करने वालों की तरह सच्चाई को स्वीकार करे। और मैं तो किसी ज्ञान के अनुसार कर्म करने वाले के बारे में कुधारणा नहीं कर सकता कि वह क़ुरआन के अतिरिक्त किसी की बातों को क़ुरआन पर प्राथमिकता दे और बावजूद विरोधाभास के क़ुरआन को हदीस के नीचे डाल दे। और अपने लिए पसंद करे कि उन आसार का अनुयायी (रसूल

शेष हाशिया- वाक्य رَافِعُكَ اِلَيَّ के बाद में है और وَ مُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا तथा وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ से पहले है। परन्तु हे मेरे भाई! तुम जानते हो कि यह अर्थ स्पष्ट रूप से ग़लत हैं, वह इसलिए कि यदि ऐसा होता तो आवश्यक था कि मसीह रफ़ा के पश्चात तथा उन घटनाओं से पहले मरता जो रफ़ा के बाद क़ुरआन ने वर्णन की हैं। अर्थात यहूद के झूठे आरोपों से उनको पवित्र करने और अनुयायियों के विरोधियों पर विजय प्राप्त करने से पहले मरते। और वे आस्था रखते हैं कि मसीह अब तक नहीं मारा और यह सब वादे पूरे हो चुके हैं। अत: उनकी बुद्धि पर आश्चर्य है कि वे अपनी आस्था के विरुद्ध क्यों कहते हैं जबकि वे सब सहमत हैं कि मसीह केवल रफ़ा के पश्चात न मरेगा बल्कि खातमुन्नबियीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने के साथ जब यहूद के झूठे आरोपों से पवित्र किया जाएगा और उसके अनुयायी उसके विरोधियों पर विजय प्राप्त कर लेंगे फिर वह मरेगा। अत: इसी आधार पर उन पर आवश्यक है कि वे यह आस्था रखेंगे कि وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ के बाद में आता है। अत: उन पर अनिवार्य है कि वे यह कहें कि आयत का क्रम वास्तव में इस प्रकार था कि हे ईसा! मैं तुझे अपनी ओर उठाने वाला हूं और यहूद के झूठे आरोपों से पवित्र करने वाला हूं और फिर तेरे अनुयायियों को तेरे विरोधियों पर क़यामत तक विजयी करने वाला हूं। फिर क़यामत के बाद आसमान से तुझको उतारने वाला हूं और इसके बाद फिर तुझे मारने वाला हूं। अत: अपनी इच्छानुसार आयतों में बदलाव करने और आगे पीछे करने से उनको कुछ लाभ नहीं होगा जब तक कि वे यह स्वीकार न करें कि मसीह क़यामत के बाद आसमान से उतरेंगे और क़यामत ही के बाद मरेंगे और यह खुला खुला झूठ है। अत: उन पर अफसोस कि जब ख़ुदा तआला के शब्दों को अन्य स्थान पर रखने में असमर्थ हैं तो फिर उनको अपने स्थान से क्यों बदलते हैं। अत: क़ुरआन के चमत्कारों में से एक यह भी है कि कोई फेरबदल करने वाला इसमें फेरबदल नहीं कर सकता क्योंकि जब वह उसके सुदृढ़, सुसज्जित तथा उत्तम क्रम को बदलेगा तो प्रतिष्ठित उलमा तो अलग महिलाओं तथा बच्चों पर भी उसका झूठ प्रकट हो जाएगा। अत: पवित्र है वह ख़ुदा जिसने क़ुरआन को

की सुन्नत का अनुसरण करके) जो **अहाद**✷ हैं क़ुरआन के स्पष्ट प्रमाणों को छोड़ दे और सन्देह को विश्वास पर प्राथमिकता दे और ज्ञान होने के पश्चात

शेष हाशिया- स्पष्ट चमत्कारों के साथ उतारा है। और हमारी क़ौम पर आश्चर्य है कि वे बुख़ारी इत्यादि में पढ़ते थे कि मसीह मौऊद इसी उम्मत में से होगा और उन्हीं में से उनका इमाम होगा, फिर आश्चर्य यह कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई रसूल भी नहीं आ सकता क्योंकि वह ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं और क़ुरआन के पूर्ण होने के बाद उसको कोई मन्सूख़ (रद्द) भी नहीं कर सकता। परन्तु उन्होंने जो कुछ पढ़ा, सीखा और माना हुआ था सब भुला दिया और स्वयं भी गुमराह हुए और बहुत से अज्ञानियों को भी गुमराह किया।

और उन हदीसों में जो मतभेद हैं उनकी व्याख्या इस विषय के माहिरों पर छुपी नहीं है और हमने कुछ-कुछ अपनी पुस्तक 'इज़ाला औहाम' (भ्रांतियों का निवारण) में वर्णन किया है। सच्चाई की तलाश करने वाले को चाहिए कि इसका अध्ययन करे। कुछ हदीसों में आया है कि मसीह और महदी एक ही युग में आएंगे और कुछ में है कि ईसा के अतिरिक्त और कोई महदी नहीं है और कुछ में आया है कि मसीह और महदी परस्पर भेंट करेंगे और मतभेद के बारे में महदी, मसीह से परामर्श लेंगे और उन दोनों का एक ही युग होगा और कुछ में इस प्रकार है कि महदी तो इस उम्मत के मध्य युग में और मसीह इसके अंत में आएगा। और हदीस बुख़ारी में आया है कि मसीह हकम-अदल (निर्णायक-न्यायकर्ता) होकर आएगा और सलीब को तोड़ेगा अर्थात ईसाइयों के प्रभुत्व के समय आएगा और ईसाइयत के प्रभुत्व को तोड़ेगा और ईसाइयों के सूअरों का वध करेगा। और दूसरी हदीस में आया कि वह उस समय आएगा जब दज्जाल समस्त पृथ्वी पर हावी हो जाएगा और उसका अपने हथियार से वध करेगा।

अत: जान ले कि पाठकों के लिए आश्चर्य का स्थान है और इसका विवरण यह है कि ईसाइयों की सलीब तोड़ने और उनके सूअरों का वध करने के लिए मसीह का आना स्पष्ट रूप से गवाही देता है कि मसीह मौऊद उस समय आएगा जब ईसाई समस्त पृथ्वी पर विजयी और प्रबल हो जाएंगे और ईसाई धर्म अपने पूरे बल और शक्ति और हुकूमत और दौलत के साथ ज़मीन के किनारों तक फैल जाएगा। फिर जब हम दज्जाल के निकलने की हदीसों पर नज़र डालते हैं तो उन से स्पष्ट ज्ञात होता है कि मसीह उस समय नाज़िल होगा

✷ **हदीस-ए-अहाद-** वह हदीस-ए-नबवी जिस की रिवायत केवल किसी एक व्यक्ति से एक व्यक्ति तक होती हुई पहुंची हो, ऐसी हदीसों के विपरीत जिन्हें एक रावी ने कई आदमियों से वर्णन किया हो। अनुवादक

गुमराही को अपनाए।

और समस्त मुसलमानों और सुदृढ़ उलमा को यही आदेश दिया गया था कि स्पष्ट निशानों का अनुसरण करें और सन्देहों को छोड़ दें। और वे जानते हैं कि स्पष्ट निशान ही अनुसरण के योग्य हैं और खुले-खुले निशान ही वह अर्थ हैं जो सद्बुद्धि के निकट खुले और स्पष्ट हैं और क़ुरआन में बार-बार आए

शेष हाशिया- कि जब दज्जाल समस्त धरती पर विजयी होगा। और यदि हम स्वीकार कर लें कि (समस्त धरती पर) ईसाइयों के प्रभुत्व के समय मसीह के आने की हदीस सही है और हम मान लें कि मसीह सलीब के तोड़ने और उनके (धर्म का) ज़ोर जड़ से उखाड़ने के लिए आएगा तो इससे निश्चित रूप से यह अनिवार्य ठहरता है कि हम उस हदीस को झुठलाएं जो बताती है कि वह दज्जाल का वध करने के लिए आएगा जबकि वह मक्का मदीना के अतिरिक्त समस्त धरती पर विजयी हो जाएगा क्योंकि दज्जाल का समस्त धरती पर विजयी होना और उसी ज़मीन में ईसाइयों का भी समस्त धरती पर विजयी होना यह दोनों एक दूसरे के विरुद्ध और उलट हैं और ज़ाहिर है कि दोनों विरोधी वस्तुएं न तो एक समय में जमा हो सकती हैं और न दोनों ख़त्म हो सकती हैं। अत: स्पष्ट रूप से सिद्ध हुआ कि इन दोनों हदीसों में से एक सच्ची है और एक झूठी। फिर जब हम वर्तमान समय की घटनाओं पर दृष्टि डालते हैं तो हम देखते हैं कि एक चक्र के समान ईसाइयों की हुकूमत दुनिया पर छा गई है।

और हम देखते हैं कि समस्त बादशाह उनके भय से कांपते हैं और भय से उनके हृदयों पर मदहोशों जैसी अवस्था हो गई है और उनको विश्वास हो गया है कि यह लोग हम पर प्रबल हैं परन्तु क़ौम के वह्मी और दज्जाली विचार से हम कोई अलामत और निशान नहीं पाते और हम यह भी देखते हैं ईसाइयों के फ़ित्ने बहुत बढ़ गए हैं और पृथ्वी उनके छल-कपट से भर गई है तो यह इसका स्पष्ट प्रमाण है कि मसीह का आना ईसाइयों के प्रभुत्व के समय होगा। और इन विरोधाभासी हदीसों की एकरूपता का इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं कि ईसाइयों के विद्वान ही नि:सन्देह मौऊद (वादा किए गए) दज्जाल हैं और हम पर अनिवार्य है कि हम हदीसों की व्याख्या ऐसी करें जैसे कि वह वास्तव में प्रकट हुई हैं क्योंकि जिन हदीसों का हमने अभी वर्णन किया है उनमें से कुछ तो इस ओर खींचती हैं कि ईसाइयों के प्रभुत्व और उनके सलीबी आस्था की शौकत के समय मसीह उतरेगा और कुछ इस ओर खींचती है कि दज्जाल के ज़ाहिर होने और उसके समस्त धरती पर प्रभुत्व प्राप्त करने के समय उतरेगा। अत: हमने प्रथम प्रकार की हदीसों के प्रभाव तो देख लिए

और सद्विवेक के निकटतर और विरोधाभास से दूरतर हैं और अल्लाह की सुन्नत तथा पुरातन क़ानून-ए-क़ुदरत में सम्मिलित और अन्य अर्थों से अधिक स्पष्ट हैं। फिर यह (मुसलमानों और सुदृढ़ उलमा का) समूह इस पवित्र कानून को ऐसे भूले मानो वे इससे अज्ञान और अपरिचित थे और मैं निश्चित रूप से जानता हूं कि वे क़ुरआन को जीवित पुस्तक और सच्चा मार्गदर्शक और सच्चाई

शेष हाशिया- और उनको इस युग में सच्चा पाया है और हमने ईसाइयों की शौकत की ख़बरों को पूरी होते देख लिया जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी थी यहां तक कि हमने अपनी आंखों से देख लिया और दज्जाल के आने की हदीसें जो इनके विपरीत और विरोधाभासी हैं उन का कुछ प्रभाव अब तक ज़ाहिर नहीं हुआ। अत: दो अर्थों में जो ज़ाहिर हो गई हैं वही सच्ची हैं और जो उनमें से ज़ाहिर नहीं हुई वह झूठी हैं कि जिन में समझने वालों की नज़रों ने ग़लती की है। और (इस बारे में वर्णित) हदीसों में एक भारी मतभेद यह भी है कि कुछ तो बताती हैं कि मसीह, महदी के अधीन और उसका अनुयायी होकर आएगा क्योंकि समस्त इमाम क़ुरैश (वंश से) होने चाहिए और मसीह क़ुरैशी नहीं है। अत: यह वैध नहीं कि ख़ुदा उसको इस उम्मत का ख़लीफा बनाए। और कुछ (हदीसें) बताती हैं कि मसीह हकम, अदल इमाम और ख़लीफ़तुल्लाह हो कर आएगा और समस्त मामले उसके नियंत्रण में होंगे और सिवाए उस वह्यी के जो 40 वर्ष तक उस पर नाज़िल होती रहेगी अन्य किसी का अनुसरण नहीं करेगा और उस वह्यी से क़ुरआन के कुछ आदेश मंसूख (निरस्त) कर देगा और कुछ बढ़ोतरी करेगा और अल्लाह तआला नबुव्वत तथा वह्यी उस पर ख़त्म करेगा और उसको ख़ातमुन्नबिय्यीन बनाएगा। और इसके साथ यह भी कहते हैं कि उसकी वह्यी क़ुरआन की वह्यी के विरुद्ध नहीं होगी। और वह मुसलमानों की तरह नमाज़-रोज़ा अदा करेगा। परन्तु वे यह कहते हुए अपनी पहली बात को भूल जाते हैं जिसमें इस बात की व्याख्या मौजूद है कि वह क़ुरआन के कुछ आदेशों को निरस्त कर देगा अत: जिज़या ख़त्म कर देगा, जिसको क़ुरआन ने ख़त्म नहीं किया यहां तक कि वह (क़ुरआन) पूर्ण हो गया। और यह आयत भी नाज़िल हो गई कि "आज हमने तुम्हारा दीन पूर्ण कर दिया।" और इसी प्रकार यह भी कहते हैं कि मसीह सूअरों को क़त्ल करेगा जबकि क़ुरआन में लोगों के द्वारा सूअरों का वध करने का कहीं आदेश नहीं बल्कि क़ुरआन में ज़िम्मियों के धन को नष्ट करने और उनकी संपत्ति छीनने से रोका गया है जबकि वह अपमान पूर्वक जिज़या अदा करें।

और इन उलमा पर अत्यधिक आश्चर्य है कि यह ईमान लाते हैं कि मसीह पर चालीस

का संरक्षक और सम्पूर्ण कसौटी नहीं समझते बल्कि उसका अपमान करते हैं और हदीसों के पैरों के नीचे डालते हैं और हदीसों को क़ुरआन पर निर्णायक बनाते हैं पूर्व इसके कि वे उसकी जांच-पड़ताल कर लेते जैसा कि जांच-पड़ताल करने का हक था। सन्देहहीन की सन्देहहीन से तुलना कर लेते। बल्कि वे तो बलपूर्वक और अत्याचार करते हुए आदेश देते हैं कि हदीसें अपनी समस्त

शेष हाशिया- वर्ष तक अल्लाह तआला वह्यी नाज़िल करता रहेगा जबकि पहले इस बार पर विश्वास रखते थे कि नबूव्वत की वह्यी ख़त्म हो चुकी है। अत: उन पर अफसोस कि अपनी आस्थाओं के नुकसानों को खूब जानते हैं और फिर भी उनको नहीं छोड़ते। और मैं उनको सोया हुआ समझता हूँ और इस बात ने मुझे अत्याधिक आश्चर्य में डाल रखा है कि उन्होंने अपनी आस्थाओं में विचित्र मतभेद इकट्ठे कर रखे हैं और उनमें से कोई भी इन विरोधाभासों पर ध्यान नहीं देता। कभी एक आस्था पर ईमान लाते हैं और फिर उसके विपरीत और विरुद्ध दूसरी आस्था को स्वीकार कर लेते हैं उदाहरणतया वे पूर्ण विश्वास और ईमान रखते हैं कि मसीह हकम और अदल होकर आएगा और लोग उसको अपना हकम (मध्यस्थ) बनाएंगे और अपने मुकद्दमों को उनके पास ले जाएंगे और अल्लाह तआला उनको धरती में ख़लीफा बनाएगा, फिर कहते हैं कि ईसा महदी के अधीन होगा और हकम और अदल महदी होगा न कि ईसा, जो क़ुरैशी नहीं है। और यह भी कहते हैं कि यह निश्चित और सच्ची बात है की मसीह ईसाइयों के प्रभुत्व, प्राबल्य और प्रत्येक बुलंदी से उनके उतरने के समय नाज़िल होगा और उनकी सलीब को तोड़ेगा और उनके सूअरों को क़त्ल करेगा और फिर स्वयं की कहते हैं कि मसीह दज्जाल के आने के समय आएगा और कहते हैं कि न तो दज्जाल ईसाइयों की इंजीलों पर आस्था रखेगा और न उनके नबियों और उनकी पुस्तकों और (उनके) धर्म पर ईमान रखेगा बल्कि वह न ईसा का अनुसरण करेगा और न किसी अन्य नबी का अनुयायी होगा। और ख़ुदाई के दावे के साथ निकलेगा और मक्का-मदीना के अतिरिक्त समस्त धरती का मालिक बन जाएगा और वह कहेगा कि मैं ही ख़ुदा और रब्बुल आलमीन हूं। अत: देख कि कैसे नशे मे धुत लोगों की तरह चलते हैं और न किसी एक बात पर तथा न किसी एक आस्था पर डटे रहते हैं और बुद्धिमानों के समान विचार नहीं करते।

और मैं विश्वास रखता हूँ कि उनकी निर्णय करने की शक्ति और सही राए की ताकत ख़ुदा ने छीन ली है और टेढ़ेपन के अंधकार में भटकता छोड़ दिया है और इस में यह भेद है कि ख़ुदा ने देखा कि यह इलाही रहस्यों के योग्य नहीं रहे और उनके सिर समझने-बूझने की ताकत से खाली हो गए हैं तो उनसे इंसानियत का लिबास उतार लिया और चौपायों

ज़न्नी और सन्देहयुक्त अवस्थाओं के साथ क़ुरआन की अपेक्षा स्वीकार करने से अधिक योग्य हैं और वे क़ुरआन पर निर्णायक हैं और यह ऐसा अत्याचार और झूठ है कि निकट है कि आसमान इससे फट जाए। और क़ुरआन तथा हदीस में इन आरोपों की ओर कोई संकेत नहीं पाया जाता बल्कि सहाबा हर हाल में क़ुरआन को प्राथमिकता देते थे और किसी ऐसी हदीस के द्वारा उस

शेष हाशिया- और दरिंदों और सांपों की शक्ल में बदल दिया और निचले दर्जे के जीवों के साथ मिला दिया।और जिन लोगों को अध्यात्म ज्ञान के ताज़ा निशान दिए जाते हैं और सच्चे ज्ञान से अत्यधिक हिस्सा दिए जाते हैं तो वे सन्मार्ग और पवित्र घाट को नहीं भूलते और वे निशानों को समझने में सही रहे और रूहानियत के ज्ञान उन के हाथों से नष्ट नहीं हुए। यह अल्लाह की कृपा है जिस को चाहता है दे देता है और जिस को चाहे गुमराह करता है और जिस को चाहे असीमित समुद्र की ओर सीधी राह बताता है और अल्लाह अपनी कृपा के स्थान को भली-भांति जानता है और उस पर कोई दिल और कोई स्वभाव छुपा नहीं और उसी ने लोगों को पैदा किया है और समस्त संसार की वास्तविकता अच्छी तरह जानता है।

और हम फिर हदीसों की तरफ लौट कर कहते हैं कि जिन्होंने बावजूद क़ुरआन के विरुद्ध होने के फिर भी भविष्यवाणियों के ज़ाहिरी अर्थ लिए हैं उन्होंने बड़ी ग़लती की है इसका यही कारण था कि वे हदीसों में डूब गए और ख़ुदा के कलाम (क़ुरआन) को भूल गए। अत: उनकी नज़रें हदीसों में दब गईं और उन्हीं के खरा करने और विशिष्ट करने में अपने दिमाग खर्च कर दिए और अपनी उमरें उन्हीं में खत्म कर दीं और अपनी जानों को उन्हीं के गली-कूचों में समाप्त कर दिया और ख़ुदाई किताबों की तरफ ध्यान भी न दिया और न उनसे मसले-मसाइल का हल निकाला। अत: क़ुरआन उनकी नज़रों से छिपा रहा और उसके रहस्य दुर्लभ मोतियों तथा गुप्त खज़ानों के समान उनसे छिपे रहे। और न उनको जाना न उनकी पूरी रियायत की तथा विमुख होने वालों के समान अन्य पुस्तकों पर झुके रहे और यदि उसकी ओर ध्यान देते तो अल्लाह तआला उन पर प्रत्येक वास्तविकता का भेद खोल देता और सन्देहों के बियाबान जंगल से उनको मुक्ति देता परन्तु उन्होंने तेजस्वी बनना न चाहा और अंधेपन को पसंद कर लिया और तेजस्वी लोगों के शत्रु बन गए। अत: उनके बड़े गुनाहों में से एक यह है कि उन्होंने मसीह मौऊद की हक़ीक़त न समझी कि जिसकी उनको ख़बर दी गई थी और कहने लगे कि ईसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम आसमान से उतरेंगे, हालांकि वे क़ुरआन में पढ़ते थे कि वह मर कर अपने उन भाइयों से जा मिला है जो उससे पहले मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे। अत: वे जो कुछ जानते थे

को न छोड़ते थे जो अहाद★ की क़िस्म में से है। क्या उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाह अन्हा को तू नहीं देखता की उन्होंने क़ुरआन ए करीम के कारण हदीसों की कैसी तावील (सामान्य से हटकर व्याख्या करना,

★**अहाद** - मआज़ की उस हदीस पर भी ध्यान दो जिसमें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वसीयत है। इसी से।

शेष हाशिया- उसे भूल बैठे और जो दो शताब्दियों के बाद बातें कही गई थीं उनके अनुयायी बने और अल्लाह की आयतों को ऐसे पीठ पीछे डाल दिया कि मानो क़ुरआन में मसीह की मृत्यु के बारे कोई नामो-निशान नहीं पाया और मानो कि वे उससे पूर्णत: अनभिज्ञ हैं। और जब उनको कहा जाता है कि ख़ुदा तआला ने अपनी सुदृढ़ आयतों में मसीह की मृत्यु की सूचना दी है, जैसा कि फ़रमाया- يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ अर्थात- "हे ईसा मैं तुझे मृत्यु देने वाला हूँ" (आले इमरान-3/56) और फिर ईसा से हिकायत के तौर वर्णन किया है कि-

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ

अर्थात - "हे ख़ुदा जब तूने मुझे मृत्यु दे दी तो तू ही उनका निगरान था" (अल माइदह- 5/118) और फ़रमाया कि

وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ

अर्थात- "मुहम्मद तो एक रसूल है और उससे पहले समस्त रसूल गुज़र गए हैं" (आले इमरान- 3/145) तो कहते हैं कि हम क़ुरआन के क़िस्सों पर ईमान तो लाते हैं परन्तु क़ुरआन पर तथा उसके क़िस्सों पर हदीस निर्णायक और हाकिम है। देखो तो सही कि मुसलमान कहला कर क़ुरआन को कैसे त्याग बैठे हैं।

उन पर आश्चर्य है वे समझते हैं कि हदीसें गवाही देती हैं कि मसीह आसमान से उतरेगा हालांकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बार-बार मसीह की मृत्यु की सूचना दी है। अत: **तिबरानी** और **मुस्तद्रक** में हज़रत आयशा से रिवायत है वह कहती हैं कि- आंहज़रत ने अपनी मृत्यु की बीमारी में फातिमा से कहा कि जिब्राईल प्रतिवर्ष एक बार मेरे साथ क़ुरआन का पाठ पूर्ण किया करते थे और इस वर्ष दो बार किया है और उसने मुझे सूचना दी है कि हर एक नबी अपने से पूर्व नबी की आधी आयु पाता है और उसने मुझे बताया है कि ईसा 120 वर्ष जीवित रहे हैं। अत: मैं समझता हूं कि 60 वर्ष के ऊपर मैं इस संसार से गुज़र जाऊंगा।

भाइयो! विश्वास कर लो कि यह हदीस बिल्कुल सही है और उसके समस्त रावी भरोसेमंद और विश्वसनीय हैं और उसकी बहुत सी सनदें हैं और यह सही तौर पर मसीह

अनुवादक) की है और हदीसों के कारण क़ुरआने करीम की तावील नहीं की और जब कोई हदीस क़ुरआन के विरुद्ध होती तो उस हदीस की ओर ध्यान नहीं दिया। और वह बड़ी फ़क़ीह (धर्मशास्त्र की ज्ञानी) और समझ-बूझ रखने वाली, सामर्थ्य प्राप्त और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रिय थीं और प्रत्येक गंभीर विषय सहाबा उनसे पूछा करते थे। और यदि तुझे सन्देह है तो

शेष हाशिया- की मृत्यु की गवाही देती है। और यह नहीं कह सकते कि रफ़ा भी तो मौत है क्योंकि मौत तो यह है कि पार्थिव शरीर से रूह निकल जाए। अत: यदि मसीह पार्थिव शरीर के साथ उठाया गया है तो फिर वह अब तक जीवित है और अगर मसीह को इतने लंबे ज़माने तक जीवित माना जाए तो अनिवार्य ठहरता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस लंबे ज़माने के आधे तक जीवित हों और यह बिल्कुल ग़लत है। अत: हिसाबदानों से पूछ ले। इसी प्रकार एक और हदीस में आंहज़रत ने मसीह की मृत्यु की सूचना दी है। अत: फ़रमाया है कि जब मेरा ख़ुदा मेरी उम्मत के बिगाड़ के बारे में मुझसे पूछेगा तो मैं कहूंगा कि "जब तूने मुझे मार दिया तो फिर तू ही उन पर निगरान था" जैसा कि नेक बंदे अर्थात ईसा ने मुझसे पहले कहा था। देखो आंहज़रत ने मसीह की मृत्यु की ओर क्या ही विचित्र संकेत किया है कि अपने पवित्र अस्तित्व के बारे में 'फलम्मा तवफ्फैतनी' का वाक्य ऐसा ही प्रयोग किया है जैसा कि ईसा ने अपने लिए प्रयोग किया था और तुम जानते हो कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं और आपकी पवित्र क़ब्र मदीना में मौजूद है। अत: जबकि आंहज़रत ने मसीह के वृत्तांत को अपने वृत्तांत के समान ठहरा दिया है तो इससे आयत 'फलम्मा तवफ़्फ़यतनी' में 'तवफ्फा' के अर्थ और स्पष्ट हो गए कि सिवाए मौत के और कोई अर्थ नहीं, और जो मनगढ़त अर्थ बनाए जाते हैं अरबी शब्दकोष में उनकी कोई वास्तविकता नहीं। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का देहांत हो चुका है और यदि शरीर सहित जीवित उठाया जाना उसके अर्थ होते जैसा कि क़ौम ने समझा है तो उससे अनिवार्य ठहरता कि आंहज़रत स० भी पार्थिव शरीर के साथ जीवित आसमान पर उठाए जाते क्योंकि आप ने स्वयं को ईसा के साथ तवफ्फी शब्द में सम्मिलित किया है जो आयत 'फलम्मा तवफ़्फ़यतनी' में है जैसा कि बुख़ारी की हदीस में आया है और यदि हम अपनी ओर से मसीह के लिए आयत में कोई विशेष अर्थ कर लें और कहें कि आंहज़रत के लिए तवफ्फी के अर्थ मृत्यु हैं और ईसा के लिए उसके अर्थ पार्थिव शरीर के साथ उठाए जाने के हैं और यह अर्थ ईसा से विशिष्ट हैं और दूसरा कोई उनमें भागीदार नहीं है तो यह घोर अत्याचार और झूठ और बहुत ही बुरी ख़यानत है

ध्यानपूर्वक बुख़ारी को पढ़, तू अधिकतर स्थानों पर उन क़िस्सों को पाएगा। अत: उन उलमा को क्या हुआ है कि वे क़ुरआन को सोए हुए बेपरवाहों की भांति पढ़ते हैं और उसको पूरे तौर पर नहीं समझते बल्कि क़ुरआन तो उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरता और न वे उसका अनुसरण करते हैं और न उसके नूर को चाहते हैं बल्कि जनाज़ा के समान उसको उठाते हैं और लाभ उठाने,

शेष हाशिया- और संदर्भ के बिना वरीयता है और आंहज़रत स० के उच्च गौरव का अपमान है और यह एक दावा है जिसकी न कोई स्पष्ट दलील है और न कोई चमकती हुई हुज्जत है और न कोई स्पष्ट गवाही है।

और जो कहते हैं कि मसीह के ज़माने में याजूज-माजूज निकलेंगे और हर एक बुलंदी से उतरेंगे और समस्त धरती के मालिक हो जाएँगे जैसा कि पवित्र क़ुरआन में वर्णन हुआ है तो यह सच्चाई है हम इसका विरोध नहीं करते। और वे कहते हैं कि मसीह उनसे लड़ेगा नहीं बल्कि उनके लिए बद्दुआ (अभिशाप) करेगा और उससे उनके गले में कीड़ा पैदा होगा जिससे वे सब मर जाएँगे। यह भी सच्ची बात है हम इसे भी स्वीकार करते हैं परन्तु उन्होंने इसमें ग़लती की है कि याजूज-माजूज सब के सब ईसा के समय में मर जाएँगे क्योंकि याजूज-माजूज से अभिप्राय वे ईसाई हैं जो रूस और ब्रिटेन क़ौमों★ से संबंध रखते हैं और ख़ुदा ने सूचना दे दी है कि ये यहूदी और ईसाई क़यामत तक रहेंगे जैसा कि फ़रमाया है-

فَاَغۡرَیۡنَا بَیۡنَهُمُ الۡعَدَاوَةَ وَ الۡبَغۡضَآءَ اِلٰی یَوۡمِ الۡقِیٰمَةِ (अल माइदा - 5/15)

(अर्थात- "कि हमने क़यामत तक उन के बीच मतभेद डाल दिया है") अत: क़यामत से पहले वे सब के सब किस प्रकार मर सकते हैं? यदि मौत से शारीरिक मौत अभिप्राय हो तो हदीस, क़ुरआन की विरोधी हो जाती है क्योंकि क़ुरआन तो बताता है कि वे तथा उन दोनों की नस्लें क़यामत तक शेष रहेंगी बल्कि क़ुरआन तो इस बात का संकेत करता है कि आसमान उन्हीं पर टूटेंगे और क़यामत उन्हीं उपद्रवियों पर आएगी और यहां से यह भी

★ यह न कहा जाए कि यह व्याख्या इजमाअ (सर्वसम्मति) के विपरीत है क़ौम ने उस पर सहमति व्यक्त की है कि याजूज-माजूज मनुष्यों के समान नहीं हैं और उनके लंबे-लंबे कान हैं इसलिए कि क़ौम ने इस पर सहमति व्यक्त की है कि वह चौथी अक्लीम में क़ैद हैं और हर एक क़ौम की अपेक्षा वे संख्या और वंश में अधिक हैं, और यह पूर्णत: असत्य है क्योंकि हम चौथी अक्लीम में उनका और उनके शहरों और लशकरों का कुछ नामों निशान नहीं पाते हालांकि धरती की समस्त आबादियाँ प्रकट हो चुकी हैं। अत: इस अध्याय में सब रिवायतें ग़लत हैं। अत: उन पर उनके समान अन्य रिवायतों का भी अनुमान कर ले और शोधकर्ता बन जा। इसी से।

ज्ञान और विवेक हासिल करने की नियत से उस पर दृष्टि नहीं डालते मानो कि उनको इसमें बड़ा सन्देह है। और उसके जीवन और बरकतों की चमकारों को नहीं देखते और न उसकी पूरी क़दर करते हैं और न उसकी शानो शौकत को जानते हैं और न उसके तर्कों को और अल्लाह की पुस्तक को पीठ पीछे फेंकते हैं और कमज़ोर हदीसों की ओर लपकते हैं चाहे वे क़ुरआन के विरुद्ध

शेष हाशिया- स्पष्ट हो गया कि बुख़ारी की कुछ प्रतियों में जो यह वाक्य पाया जाता है कि वह जिज़िया (अर्थात टैक्स) त्याग देगा, यह सही नहीं है और सही वह है जो अन्य प्रतियों में आया है कि मसीह (धार्मिक) जंग को स्थगित कर देगा और ईसाइयों से जंग नहीं करेगा। और इसके सही न होने का कारण स्पष्ट है इसलिए कि अगर हम अनुमान कर लें कि मसीह ईसाइयों से इस्लाम स्वीकार करने की शर्त पर लड़ेगा और कदापि जिज़िया (अर्थात टैक्स) स्वीकार न करेगा बल्कि उनको इस्लाम की ओर बुलाएगा। तो यदि वे स्वीकार कर लेंगे तो उचित अन्यथा उनका वध कर देगा, तो इससे अनिवार्य ठहरेगा कि धरती से ईसाइयों का पूर्णतया सफाया हो जाएगा। कुछ तो मुसलमान होने से और कुछ क़त्ल होने से और यह क़ुरआन के विपरीत है क्योंकि उसने तो बता दिया है कि वे क़यामत तक मौजूद रहेंगे। इस जांच-पड़ताल से सिद्ध हुआ कि बुख़ारी की कुछ प्रतियों में जो आया है कि वह जिज़िया को त्याग देगा, सही नहीं है बल्कि लिपिकों की ग़लती से यह खराबी और परिवर्तन हुआ है।

इस जांच-पड़ताल से उन हदीसों का झूठा होना भी सिद्ध हो गया कि जिन में ऐसी जंगों का वर्णन है और चूंकि क़ुरआन अल्लाह की सुरक्षा और पवित्रता से सुरक्षित है तो जो हदीस उसके क़िस्सों के विपरीत हो वह कदापि स्वीकार करने योग्य नहीं यद्यपि बुख़ारी इत्यादि पुस्तकों में ऐसी हज़ारों हदीसें क्यों न हों। और हमारा यह कथन कि याजूज-माजूज ईसाइयों से हैं कोई अन्य क़ौम नहीं तो यह भी क़ुरआन के प्रमाणों से सिद्ध है। इसलिए कि पवित्र क़ुरआन ने बता दिया है कि वे समस्त धरती पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगी जैसा कि फ़रमाया- "और प्रत्येक बुलंदी से उतरेंगे" (अंबिया - 97) अर्थात धरती की हर ऊंचाई तक पहुँच जाएंगे और सम्मानितजनों को अपमानित कर देंगे और समस्त हुकूमतों और रियासतों और सल्तनतों और दौलतों को उस बड़ी मछली के समान निगल जाएंगे जो छोटी-छोटी मछलियों को निगल जाती है। और हमारा आंखों देखा है कि वे ऐसा ही कर रहे हैं और मुसलमानों की रियासतें मुरझा गई हैं और उनकी दौलत और शानो-शौकत में कमज़ोरी आ गई है और ईसाई राजाओं को अपने इर्द-गिर्द खूंखार पशुओं के समान देखते हैं और डरते-डरते रात काटते हैं। और क़ुरआन के मज़बूत तथा अकाट्य तर्कों से सिद्ध हो गया है कि

ही क्यों न हों और बाज़ नहीं आते।

और ख़ुदा की क़सम मैंने मसीह की मृत्यु, आकाश से न उतरने और अपने मसीह मौऊद होने के विषय में कभी कोई बात नहीं कही परन्तु जब बारिश की भांति निरंतर इल्हाम हुए और सुबह के सूर्य समान खुली-खुली कशफ़ दिखाए गए और इल्हामों को क़ुरआन और नबी स० की सहीह हदीसों से मिलाकर देखा

शेष हाशिया- सल्तनत और प्रभुत्व का प्याला क़यामत तक ईसाइयों और मुसलमानों ही के बीच चलता रहेगा और कभी उनसे बाहर न जाएगा जैसा कि ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है कि-

وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

(अर्थात- मैं तेरे अनुयायियों को तेरे इन्कार करने वालों पर क़यामत तक विजयी रखूंगा। आले इमरान- 3/56) और स्पष्ट है कि मसीह के वास्तविक अनुयायी मुसलमान हैं और दावा करने वाले तथा लाक्षणिक (अनुयायी) ईसाई हैं और यह आयत शब्द **अनुसरण** की ओर संकेत करती है चाहे वह वास्तविक हो या लाक्षणिक या दावे के तौर पर। और सच्चाई यह है कि वास्तविक अनुसरण बहुत कठिन है चाहे अनुसरण का दावेदार मुसलमान बादशाह ही क्यों न हो क्योंकि नबियों का वास्तविक और पूर्ण अनुसरण कोई सरल बात नहीं है। अत: ये समस्त राजे केवल दावे के लिए हज़रत ईसा के अनुयायी हैं यद्यपि उसमें वास्तविकता की भी कुछ गंध हो, सिवाय कुछ के। हां मुसलमान आस्थागत अनुसरण में अन्यों पर प्राथमिकता ले गए हैं और उन्होंने ठीक-ठीक मसीह की शिक्षा को समझा है और मसीह की मृत्यु के बाद भी वह उनकी एकेश्वरवाद की आस्था के वारिस ठहरे हैं और ईसाई तो बहुत बड़ी गुमराही में पड़ गए हैं और सिवाय दावे के उनके हाथ में कुछ नहीं। उनकी गुमराही और खराबी को देखो तो सही कि वे मानते हैं कि ईसा भोजन करता और पानी पीता था और बहुत बार बीमारियों और दर्दों में घिरा रहा था और उस पर दु:ख और भय और बेचैनी और व्याकुलता और भूख और प्यास हावी हुई थी और वह परोक्ष का ज्ञाता न था और वह कहा करता था कि मैं एक बंदा हूं सिवाय ख़ुदा के सामर्थ्य के मुझ में कोई शक्ति नहीं है और वह पकड़ा गया और सूली पर लटकाया गया और मर गया और बावजूद इसके फिर भी वे अपने अनुमान में उसको ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा समझते हैं। उन पर ख़ुदा की मार! वे यह आस्था रखते हैं कि वह एक इंसान और नबी था, उसमें भूल-चूक, ग़लती और कमज़ोरी और अज्ञानता थी और मौत ने उसको पकड़ा और वह उसको कमज़ोरी और भूल-चूक और ग़लती से बरी नहीं मानते और फिर भी कहते हैं कि वह ख़ुदा था। अत: अफसोस है उन काफ़िरों पर! परन्तु वे यह नहीं कहते कि हम ईसा से बरी हैं

गया और इस्तखारे (ख़ुदा से मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना) किए गए और विनम्रता पूर्वक रब्बुल आलमीन के दरबार में प्रार्थनाएं की गईं। फिर भी मैंने जल्दी नहीं की बल्कि दस वर्ष से भी अधिक इस मामले को लंबित रखा और ख़ुदा के खुले खुले आदेश की प्रतीक्षा करता रहा और उस ज़माने में मैंने "बराहीने अहमदीया" के नाम से एक पुस्तक लिखी जिसको अब दस वर्ष बीत गए और उसमें मैंने अपने वह इल्हाम भी दर्ज किए हैं जो उसके लिखने से पूर्व हो चुके थे और उन सब में से यह इल्हाम भी दर्ज है कि -

يٰعِيْسٰى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَىَّ وَ مُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ (आले इमरान-56)

(अर्थात - हे ईसा! मैं तुझे मृत्यु दूंगा और तुझे अपनी ओर उठाऊंगा और इन्कार करने वालों के आरोपों से तुझे पवित्र करूंगा और तेरे अनुयायियों को विरोधियों पर क़यामत तक विजयी रखूँगा) और अल्लाह ने इसमें मेरा नाम ईसा रखा है। और उन्हीं में से एक और इल्हाम भी दर्ज है जिसमें अल्लाह मुझे

शेष हाशिया- और हम उसका अनुसरण नहीं करते बल्कि वे उनकी नबूवत और किताब पर ईमान लाते हैं और बनी इस्राईल के नबियों और उनकी पुस्तकों और फरिश्तों और स्वर्ग और नर्क पर ईमान लाते हैं इसी कारण ख़ुदा ने उनको गुमराह अनुयायियों में सम्मिलित किया है और मुसलमानों के समान उनको भी प्रभुत्व की ख़ुशख़बरी दी है। सारांश यह है कि यह आयत अर्थात -

وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ

स्पष्ट दलील और अकाट्य तर्क है कि धरती पर प्रभुत्व और शक्ति और शानो-शौकत और पूर्ण प्रभुत्व ईसाई और मुसलमानों की क़ौम से बाहर न जाएगा और पूरी हुकूमत क़यामत तक उन्हीं के हाथों में फिरेगी और किसी और को इससे हिस्सा न मिलेगा बल्कि उनके शत्रुओं पर अपमान और दरिद्रता हावी कर दी जाएगी और वे दिन-प्रति-दिन पिघलते जाएंगे यहां तक कि बर्बाद क़ौम के समान हो जाएंगे। अत: जब आयत का यह अर्थ है तो निश्चित है कि हकूमत और शक्ति हमेशा उन्हीं दो क़ौमों में फिरती रहे और उन्हीं से विशिष्ट रहे और इस आधार पर आवश्यक है कि याजूज-माजूज या तो मुसलमानों में से हों या ईसाइयों में से परन्तु याजूज-माजूज एक उपद्रवी और झूठी क़ौम है अत: वह मुसलमानों में से नहीं हो सकती।

संबोधित करके कहता है कि मैंने तुझको ईसा के जौहर पर पैदा किया है और तू और ईसा एक ही जौहर से और एक ही वस्तु के समान हो। और एक अन्य इल्हाम वर्णित है जिसमें मेरे विरोधी उलमा को यहूदी और ईसाई कहा गया है। फिर दस वर्ष तक ऐसा कोई इल्हाम न हुआ और मुझे कदापि मालूम न था कि इतने लंबे समय के बाद में मामूर (ख़ुदा की ओर से आदेशित) किया जाऊंगा। और ख़ुदा की ओर से मेरा नाम मसीह मौऊद रखा जाएगा जैसा कि क़ौम के विचार में गड़ा हुआ है मैं भी समझता था कि मसीह आसमान से उतरेगा। हां, मैं आश्चर्यचकित होकर अपने हृदय में कहता था कि ख़ुदा ने अपने निरंतर इल्हामों में मेरा नाम ईसा बिन मरियम क्यों रखा है? और क्यों कहा है कि तू तथा वह एक ही जौहर से हो और मेरे विरोधियों को यहूदी और ईसाई के नामो से नामित किया है? फिर दस वर्ष के बाद इन इल्हामों के अर्थ मुझ पर खुले जबकि यह इल्हाम बहुत से मुसलमानों और मुश्रिकों में प्रकाशित किए गए और बराहीन अहमदिया में भी छप कर हज़ारों लोगों में फैलाए गए।

शेष हाशिया- निस्सन्देह सिद्ध हुआ कि वह ईसाई क़ौम में से हैं और ईसाई धर्म पर हैं। और सही मुस्लिम की हदीस में है कि मसीह याजूज माजूज से न लड़ेगा, और बुख़ारी में है कि मसीह जंग को स्थगित कर देगा अर्थात ईसाइयों से जंग न करेगा। तो सिद्ध हो गया कि ईसाई ही याजूज माजूज हैं और मसीह मौऊद उनसे नहीं लड़ेगा बल्कि कठिनाई के समय ख़ुदा से सहायता मांगेगा जो अच्छी सहायता करने वाला है। और यहां से सिद्ध हो गया कि मसीह मौऊद ईसाइयों के धरती पर प्रभुत्व पाने के समय आएगा और जिस प्रकार कि उन्होंने उपद्रव के लिए नरमी के द्वार से प्रवेश किया है उसी प्रकार मसीह मौऊद सुधार के लिए नरमी के द्वार से प्रवेश करेगा। और चूंकि उन्होंने धर्म के लिए तलवार नहीं उठाई इसलिए मसीह भी तलवार नहीं उठाएगा और युक्ति तथा सदुपदेश के साथ उन से लड़ेगा और तलवार से नहीं बल्कि तर्कों द्वारा लापरवाहों और अत्याचारियों का वध करेगा।

और जो मुस्लिम की हदीस में आया है कि मुसलमान याजूज-माजूज के तीरों तथा कमानों को ईंधन के समान जला देंगे। यह एक और तहरीफ (हस्तक्षेप) है क्योंकि तीर कमान तो नष्ट हो गए हैं और उनका समय बीत गया और उनके बदले आग्नेयास्त्र आ गए। यदि तू चाहे तो स्वीकार कर या इन्कार करने वालों के समान मुंह फेर ले। इसी से।

अत: जो लोग कुधारणा करते हुए कहते हैं कि यह मनगढ़त झूठ है उनसे यह तो पूछो कि क्या ये झूठों के लक्षण हैं? और जो बातें अब मैंने विस्तार से कहीं हैं उनको संक्षेप में पहले से मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया में पढ़ते थे और इस पुस्तक से प्यार करते थे और वर्णित इल्हामों का सत्यापन करते थे न कि इन्कार करने वालों के समान विमुखता का प्रदर्शन। और जब कि ख़ुदा का निर्धारित किया हुआ समय आ गया और जिस नाम से वर्णित पुस्तक में मैं नामित किया गया था उसके साथ खड़ा होने का मुझे आदेश दिया गया तो इन्कार करने वाले और काफ़िर कहने वाले बन कर विमुख हो गए मानो कि उन्होंने विचित्र बात सुनी है या उनके पास नई बात आई है। और जो कुछ मैंने बराहीन अहमदिया में लिखा था मानो उस की उनको कुछ भी सूचना न थी। और यदि वे बुद्धिमान और न्यायप्रिय और सत्याभिलाषी और वास्तविकता की खोज करने वाले होते तो अवश्य इस बात पर विचार करते जो पहले से बराहीन अहमदिया में लिखित रूप से छप कर उस समय में प्रकाशित हो चुकी थी कि जिसमें उन दावों का कुछ प्रभाव और निशान न था। और मेरे जीवन पर भी विचार करते कि मैं इससे पहले लम्बी आयु उन के बीच व्यतीत कर चुका हूं। और सदी के प्रारंभ में और अल्लाह तथा रसूल के वादे के अनुसार मुजद्दिद की आवश्यकता पर भी विचार करते और फिर समय के फ़सादों तथा बिदअतों को और ईसाइयों की सन्तान की उन्नति पर विचार करते। अत: उन पर अफ़सोस है कि उन्होंने बिना सोचे-विचारे और बिना छानबीन तथा गंभीर चिन्तन के कुधारणा की और उनके लिए उचित न था कि एक मोमिन के बारे में सुधारणा के अतिरिक्त कोई बात करते और मुझ पर अत्याचार करने में जल्दबाज़ी करते अत: यही जल्दबाज़ी और कुधारणा और कंजूसी और दुश्मनी और विचार-विमर्श की कमी उनके इन्कार का कारण हैं। अत: अफ़सोस है उन ईर्ष्यालुओं और शत्रुओं और कुधारणा करने वालों और बुरा-भला कहने वालों पर।

और जो कुछ मैंने मसीह की मृत्यु के बारे में कहा है वह मैंने अपनी ओर से नहीं कहा बल्कि मैंने अल्लाह की बातों का अनुसरण किया है और उसके

इस कथन पर ईमान लाया हूँ कि -

يٰعِيْسٰى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَيَّ وَ مُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ (आले इमरान-56)

(अर्थात - हे ईसा! मैं तुझे मृत्यु दूंगा और तुझे अपनी ओर उठाऊंगा और इन्कार करने वालों के आरोपों से तुझे पवित्र करूंगा और तेरे अनुयायियों को विरोधियों पर क़यामत तक विजयी रखूँगा)

तू देख ख़ुदा ने अपनी प्रकाशमान पुस्तक में उसकी मृत्यु पर कैसे प्रमाण दिए हैं और स्पष्ट है कि मसीह का रफ़ा और उसके दामन को यहूद के झूठे आरोपों से पवित्र करना और सच्चों की विजय और यहूदियों का अपमानित होना और ईसाइयों तथा मुसलमानों के नीचे पराजित और प्रताड़ित होना यह समस्त वादे अपने क्रम और अवस्था पर पूरे तथा प्रकट हो चुके हैं। और उनके प्रकटन पर लम्बा समय गुज़र चुका है। अत: कोई समझदार नौजवान जो सद्बुद्धिमान और सद्विवेक रखता हो कैसे स्वीकार कर सकता है कि तवफ़्फ़ी का वादा जो इस आयत के क्रम में समस्त वादों से पहले है और वह अब तक पूरा न हुआ और ईसा इब्ने मरयम इस समय तक भी न मरे जो उनकी उम्मत की गुमराहियों से दूषित हो चुका है बल्कि किसी विशेष समय पर अवतरित होने के बाद मरेगा और विचार करने वालों पर इस मत की कमज़ोरी और फसाद छुपा नहीं।

और मसीह को जीवत मानने वालों ने जब देखा कि उपरोक्त आयत उनकी मृत्यु को स्पष्ट रूप से वर्णन करती है जिस को छुपाना सम्भव नहीं तो कमज़ोर और व्यर्थ व्याख्या करने लगे और कहते हैं कि यह आयत يٰعِيْسٰى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ में शब्द तवफ्फा वास्तव में उन सब घटनाओ के अंत में था अर्थात ईसा के रफ़ा और आंहज़रत के प्रादुर्भाव के साथ झूठे आरोपों से उनको पवित्र करने और यहूद पर मुसलमानों के विजयी होने और उनके पराजित होने के बाद में है परन्तु ख़ुदा ने वाणी को काव्य रूप देने के लिए विवश होकर उसको आगे कर दिया है और बावजूद इसके कुछ आवश्यक वाक्य काट दिए हैं और चूंकि

काव्य रूप देने के लिए विवश होकर ख़ुदा ने शब्द "तवफ़्फ़ी" को आगे किया है जो वास्तव में पीछे था, अत: इस आगे-पीछे करने में ख़ुदा निर्दोष है क्योंकि उसने विवश होने के कारण शब्दों को अनुचित स्थान पर रखा है और क़ुरआन को टुकड़े-टुकड़े किया है। और यह पवित्र आयत उनके विचार में वास्तव में यों थी- हे ईसा मैं तुझे अपनी ओर उठाऊंगा और तुझको इन्कार करने वालों के आरोपों से पवित्र करूंगा। और तेरे अनुयायियों को तेरे विरोधियों पर क़यामत तक प्रभुत्व प्रदान करूंगा। फिर आसमान से तुझे उतारुंगा फिर उसके बाद तुझे मृत्यु दूंगा। अत: देखो कि किस प्रकार ख़ुदा की वाणी को बदलते हैं और उसके शब्दों को अपने स्थान से हटाते हैं जबकि ऐसा करने के लिए उनके पास कोई दलील नहीं है। वे केवल अपनी इच्छाओं का अनुसरण करते हैं हालांकि उनके लिए उचित न था कि पवित्र क़ुरआन की व्याख्या करते परन्तु डरते-डरते। और तुम जानते हो कि अल्लाह ऐसी विवशता से पवित्र है और उसके समस्त शब्द हीरे-जवाहिरात के समान क्रमबद्ध हैं और उसकी शान में ऐसी बात कहना बड़ी जहालत और मूर्खता है। और ऐसे भ्रम में सिवाए ऐसे व्यक्ति के कोई भी नहीं पड़ता कि जो उसकी क़ुदरत और उसकी शक्ति और उसकी सुरक्षा को भुला दे और उसे तिरस्कृत समझे और उसकी पूरी क़दर न करे और उस की वाणी की शान से अनभिज्ञ हो तथा उसको शायरों की बातों से मिला दे। और किसी मुसलमान के लिए कैसे वैध हो सकता है कि वह ऐसी बात मुंह पर लाए और अल्लाह की वाणी को अपनी ओर से बदले जबकि ख़ुदा और रसूल की ओर से उसके पास (ऐसा करने के लिए) कोई सनद न हो और ख़ुदा की बातों को उनके स्थान से इधर-उधर करे। क्या तहरीफ़ (अर्थात शब्दांतरण) करने वालों पर ख़ुदा की लानत नहीं है? और अगर वह सच्चाई पर हैं तो क्यों इस शब्दांतरण पर कोई आयत या हदीस या सहाबी का कथन या इमाम का कथन दलील के तौर पर प्रस्तुत नहीं करते? अगर सच्चे होते तो अवश्य प्रस्तुत करते। और हम किस प्रकार ऐसे शब्दांतरण को स्वीकार कर लें जिन पर क़ुरआन और हदीस से कोई दलील नहीं? और हम उनको पूरी तरह से उन शब्दांतरणों के समान पाते

हैं जो शैतान के धोखे में आकर यहूदियों ने किए थे। और पहले नेक लोगों ने इस विषय पर विस्तृत रूप से कुछ नहीं कहा बल्कि संक्षिप्त रूप से ईमान लाते थे कि मसीह मर गया है जैसा कि पवित्र क़ुरआन में आया है और इस बात पर कि अंतिम युग में जब कि ईसाइयों का समस्त धरती पर प्रभुत्व हो जाएगा तो इसी उम्मत में से एक मुजद्दिद (धर्म सुधारक) आएगा जिसका नाम ईसा बिन मरियम होगा P75 और उस की व्याख्या उन्होंने ख़ुदा तआला के सुपुर्द कर दी और उसके घटित होने से पूर्व उस की व्याख्या के पीछे नहीं पड़े जैसा कि आने वाली भविष्यवाणियों में उनका स्वभाव था और समस्त नेक लोगों का यही स्वभाव है। फिर उनके बाद ऐसी नस्ल आई जिन्होंने उनकी आदत और स्वभाव को छोड़ दिया और अल्लाह के कथन तथा रसूल के कथन की अपनी इच्छा अनुसार व्याख्या की और फिर ऐसा हठ किया कि मानो ख़ुदाई भेदों को उन्होंने निश्चित रूप से जान लिया है और उनको पूरा विश्वास प्राप्त है। क्या वे नहीं जानते कि ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुरआन मैं स्पष्ट कर दिया है कि ईसाई लोग, ईसा मसीह की मृत्यु के बाद ही मुश्रिक बने हैं जैसा कि इस आयत-

(فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ)

से समझा जाता है। अत: जब कि तूने मुझे मार दिया तो फिर तू ही उनका निगरान था। तो अगर मसीह ने अब तक मृत्यु नहीं पाई तो इस लिहाज़ से अनिवार्य होगा कि ईसाई अब तक सत्य पर स्थित हैं और मोमिन तथा एकेश्वरवादी भी हैं।

उन पर अफसोस! यह क्यों इन आयतों पर विचार नहीं करते? क्या उनमें कोई भी समझदार और बुद्धिमान और अमानतदार नहीं है? और तुम भली-भांति जानते हो कि बड़ी स्पष्टता से यह आयत दलालत करती है कि ईसाइयों का गुमराह होना और एक मनुष्य को ख़ुदा बनाना मसीह की मृत्यु से सशर्त है और उससे वही इन्कार कर सकता है जो अपनी अज्ञानता से सत्य का शत्रु हो और {अपनी मूर्खता और नासमझी से} अहंकार तथा बल को प्रयोग करे और जानबूझ कर सन्मार्गप्राप्ति से इन्कार करे। और जब उनको कहा जाता है जिस प्रकार ख़ुदा ने अपनी किताब में स्पष्ट तौर पर वर्णन किया है कि मसीह मृत्यु को प्राप्त हो

गया और उनकी मृत्यु के बाद ईसाई गुमराह हुए न कि उसके जीवनकाल में, (इस बात को) तुम भी मान लो। तो कहते हैं क्या हम ऐसे अर्थ स्वीकार कर लें जो हदीसों के विपरीत हैं? हालत यह है कि पहले ये स्वयं लोगों को पढ़ाया करते थे कि एक ख़बर जब अल्लाह की किताब के विपरीत हो तो वह ख़बर रद्द की जाती है। तो जो (पहले) लोगों को सुनाते थे अब स्वयं भूल गए और ज्ञानी होने के बाद अज्ञानी हो गए। और हम किसी हदीस में नहीं पाते कि मसीह पार्थिव शरीर के साथ जीवित आसमान पर उठाया गया है बल्कि बुख़ारी और तिब्रानी आदि पुस्तकों में मसीह की मृत्यु का ही वर्णन पाते हैं और जिस को सन्देह है वह उन पुस्तकों का अध्ययन करे।

और जो ईसा इब्ने मरियम के अवतरित होने का वर्णन है तो किसी मोमिन के लिए वैध नहीं कि हदीसों में वर्णित इस नाम को व्यवहारिक रूप से किसी पर चरितार्थ करे क्योंकि ख़ुदा तआला के इस कथन के विपरीत है कि -

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ

(अल अहजाब- 33/41)

(अर्थात- हमने मुहम्मद को किसी मर्द का बाप नहीं बनाया, हां वह अल्लाह के रसूल और नबियों के *ख़ातम* हैं)

क्या तू नहीं जानता कि उस परोपकारी रब ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम ख़ातमुल अंबिया रखा है और किसी को अपवाद नहीं किया और आंहज़रत स० ने अभिलाषियों के लिए स्पष्ट बयान के द्वारा उसकी व्याख्या यह की है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं है। और अगर हम आप के बाद किसी नबी का प्रादुर्भाव वैध समझें तो यह अनिवार्य होगा कि नबुव्वत की वह्यी के द्वार का बंद होने के बाद खुलना भी वैध समझें और यह ग़लत है जैसा कि मुसलमान जानते हैं और आंहज़रत के बाद कोई नबी कैसे आए हालांकि आप के देहांत के बाद नबुव्वत की वह्यी समाप्त हो गई है और आपके साथ नबियों को ख़तम कर दिया है। क्या हम आस्था रख लें कि हमारे नबी ख़ातमुल अंबिया नहीं बल्कि ईसा जो इंजील लाया था, वह ख़ातमुल अंबिया है या हम यह आस्था रखें कि इब्ने

मरियम आकर क़ुरआन के कुछ आदेशों को निरस्त और कुछ में बढ़ोतरी करेगा और न टैक्स लेगा और न जंग का त्याग करेगा। हालांकि अल्लाह का आदेश है कि टैक्स ले लो और टैक्स लेने के बाद जंग छोड़ दो। क्या तू यह आयत-

يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّ هُمْ صٰغِرُوْنَ (सूरः तौबा - 9/29)

नहीं पढ़ता कि अपमान के साथ अपने हाथ से टैक्स दें। अतः क़ुरआन की सुदृढ़ आयतों को मसीह कैसे निरस्त करेगा और महान किताब में कैसे परिवर्तन करके कुछ आदेशों को पूर्ण होने के बाद नष्ट कर देगा? मैं आश्चर्य करता हूं कि वह कैसे **फ़ुरक़ान*** के कुछ आदेशों का मसीह को निरस्तकर्ता बनाते हैं और इस आयत -

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ (अल माइदा - 5/4)

को नहीं देखते कि "आज मैंने तुम्हारे धर्म को तुम्हारे लिए पूर्ण कर दिया है" और वह विचार नहीं करते। यदि इस्लाम धर्म की पूर्णता के लिए कोई हालत बाद में आने वाली होती जो कई हज़ार साल के गुज़रने के बाद उसके प्रादुर्भाव की आशा हो सकती तो क़ुरआन (के अवतरण) के साथ धर्म का पूर्ण हो जाना, ग़लत हो जाता। और ख़ुदा का यह कहना कि 'आज मैंने तुम्हारे धर्म को तुम्हारे लिए पूर्ण कर दिया है' झूठ और असत्य हो जाता बल्कि इस अवस्था में तो अनिवार्य था कि यह कहता कि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क़ुरआन को पूर्ण नहीं उतारा बल्कि अंतिम युग में ईसा इब्ने मरियम पर इसकी कुछ आयतें उतारुंगा तब उस दिन क़ुरआन पूर्ण होगा, अभी पूर्ण नहीं।

और तुम जानते हो कि यह बात पूर्णतः ग़लत है और ऐसा विचार वही कर सकता है जो बड़ा अत्याचारी हो। हां, कुछ हदीसों में ईसा इब्ने मरियम के उतरने का शब्द पाया जाता है परन्तु किसी हदीस में यह नहीं पाओगे कि उसका उतरना आसमान से होगा बल्कि क़ुरआन में उसकी मृत्यु का वर्णन मौजूद है और उचित नहीं कि यह मृत्यु, उतरने के बाद हो क्योंकि जिन फ़ित्नों (उपद्रवों) की ओर आयत 'फलम्मा तवफ़्फ़यतनी' में संकेत है उसका धरती पर प्रकटन

* **फ़ुरकान**- सत्य और असत्य के बीच अंतर करने वाली पुस्तक अर्थात क़ुरआन्।

और प्रभुत्व तो एक लंबे समय से हो चुका है और जैसा ख़ुदा ने फ़रमाया ऐसा ही पूरा हो चुका है। और तू देख रहा है कि ईसाइयों ने अपने लिए एक ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा बना लिया है और आयत - "या ईसा इन्नी मुतवफ्फ़ीक" भी स्पष्ट रूप से दलालत कर रही है कि ईसा मृत्यु को प्राप्त हो गया है और क़यामत तक अल्लाह उसका निगरान है। अत: मरने के बाद उनका उतरना कैसे हो सकता है हालांकि ख़ुदा ने फ़रमा दिया है कि -

فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ (ज़ुमर- 24/43)

(अनुवाद- जिसके लिए अल्लाह मृत्यु का आदेश कर दे उसको रोक रखता है") और फ़रमाया-

وَ حَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ

(अंबिया- 21/96)

(अनुवाद - जिस गांव को हम नष्ट करते हैं वह दोबारा नहीं लौटता।)

और किसी हदीस में नहीं आया कि ईसा मरने के बाद (पुन:) आएगा और उसका शरीर क़ब्र से निकलेगा। और जो शरीर क़ब्र में दफन हुआ वह भला आसमान से क्या उतरेगा? अत: यह संदर्भ स्पष्ट रूप से बताते हैं कि उतरने का कुछ और अर्थ है अन्यथा कैसे संभव है कि ख़ुदा पहले तो सूचना दे कि मसीह की मृत्यु हो गई और उसकी मृत्यु के बाद ख़ुदा स्वयं उसका ख़लीफ़ा और उसके उद्देश्यों का पूरा करने वाला और उनके अनुयायियों को क़यामत तक विरोधियों पर प्रभुत्व देने वाला है, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अवतरित करने और मुहद्दसों और मुलहमों के भेजने के साथ कि मसीह का सत्यापन करते रहेंगे फिर उस पहले कथन के विपरीत यह कह दे कि उसने मृत्यु नहीं पाई बल्कि आसमान से उतरने वाला है, मानो कि वह अपनी पहली बात तथा आयतों को भूल गया। परन्तु उसका कथन तो मतभेद से पवित्र है। अत: तुम उसकी ओर ऐसे कथन कदापि मंसूब न करो जो अत्यंत विरोधाभासी और अंतरविरोधी हैं। और हम पर अनिवार्य है कि यदि कल्पना तथा अनुमान के तौर पर ऐसे कथन हदीसों में मौजूद हों तो हम उनको ज़ाहिरी अर्थों से फेर

कर उनकी ऐसी व्याख्या करें जो क़ुरआन के विपरीत न हो। अब देख अल्लाह तआला ने अपनी किताब में मसीह की मृत्यु को किस प्रकार वर्णन किया है फिर सोच कि उस से बढ़कर और क्या व्याख्या और विस्तार हो? फिर देखो ख़ुदा ने यह नहीं फ़रमाया कि- मैं आसमान की ओर तुझे उठाऊंगा बल्कि यह फ़रमाया है कि- अपनी तरफ उठा लूंगा और यह ख़ुदा के उस कथन के समान है कि-

ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً (अल फ़ज्र - 89/29)

(अनुवाद- हे संतुष्ट आत्मा! अपने रब की ओर राज़ी और प्रिय लौट आ) और उसके अर्थ मौत के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं। अत: जागृत हो कर विचार करो।

हे मेरे प्रिय! बताओ तो सही ऐसी आस्था को हम कैसे स्वीकार कर सकते हैं जो क़ुरआनी आयतों और क़ुरआन के वर्णन के विपरीत और विरोधी हो? और न उसका कोई औचित्य हो और न उसके साथ कोई दलील हो और न ही वह कोई स्पष्ट हुज्जत पेश करती हो? मैं आशा करता हूं कि यदि आपने न्यायपूर्वक विचार किया तो समझ जाएंगे। और मैंने अपनी पुस्तकों में यह सब कुछ दलीलों के साथ लिखा हुआ है और इस पत्र में (बात को) अधिक लंबा करना नहीं चाहता क्योंकि यह खेद का कारण होता है इसलिए इसी पर समाप्त करता हूं और मैं विश्वास रखता हूं कि जो व्यक्ति क़ुरआन को भली-भांति पढ़ेगा वह इस बात में विश्वास के उच्चतम स्तर पर पहुंच जाएगा और उसकी राय मेरी राय से सहमत हो जाएगी और जो कुछ मैंने कहा है उस पर स्पष्ट हो जाएगा। अत: तुम अवश्य विचार करो, ख़ुदा तुम्हारी बुद्धि को प्रकाश दे और विश्वास प्रदान करे। अल्लाह तुम पर रहम करे! आपके लिए उचित है कि क़ुरआन का सम्मान करो और उसको प्राथमिकता दो क्योंकि वह विश्वसनीय है और उसके हर एक आयत अकाट्य और निरंतरता से सिद्ध है और उसको इंसानी हाथों ने नहीं छुआ और उसके साथ कोई इंसानी बात नहीं मिली और वह निश्चित रूप से ख़ुदा की वाणी है और उसकी आयतें निश्चित रूप से ख़ुदाई आयतें हैं। और हदीस का हाल तू जानता है कि सिवाय उस थोड़ी संख्या के जो नायाब के समान

हैं, सब की सब अहाद* हैं। अत: उसमें पवित्र मन और सही नीयत और सही दिल के साथ विचार कर और मैं भी तेरे लिए दुआ करता हूं कि अल्लाह अपने इल्हाम से तेरी सहायता करे और तुझे सूक्ष्म दृष्टि और गंभीर चिंतन प्रदान करे और तेरा समर्थन करे और तुझे अध्यात्मज्ञानी बनाए।

और हमारी क़ौम तथा उलमा की जो फरिश्तों इत्यादि के बारे में आस्था (अक़ीदे) हैं, हम उन आस्थाओं के बारे में उनसे नहीं झगड़ते और उनको ग़लती पर नहीं समझते हैं बल्कि हम उन आस्थाओं को स्वीकार करते हैं। हां मसीह के आसमान से उतरने में हम अवश्य उनसे मतभेद रखते हैं और हम नहीं मानते कि यह क़ुरआन और हदीस से सिद्ध है। और अगर यह सिद्ध होता तो न हमारे लिए और न किसी और के लिए उचित था कि उसके स्वीकार करने से इन्कार करे क्योंकि सच्चाई से कोई इन्कार नहीं करता सिवाय ऐसे अत्याचारी के जो सच्चाई का शत्रु हो या ऐसा गुमराह मूर्ख जो सच्चाई की क़द्र करने वाला न हो। और यदि यह अप्रमाणित है फिर तो किसी सज्जन के लिए इतना भी वैध नहीं कि वह उसको अपने लिए धारण करे, तो फिर सीधे रास्ते पर चलने वाले को उसकी तरफ बुलाना या उसको काफ़िर समझना कैसे सम्भव है। और धर्म का मामला जो अत्यंत महत्त्वपूर्ण चीज़ है उसमें तो किसी के लिए जल्दबाज़ी उचित नहीं बल्कि हर एक मोमिन मुसलमान पर अनिवार्य है कि वह अपने अंदर से कृपणता और अहंकार को दूर करके शालीनता और विनम्रता से गिड़गिड़ा कर ख़ुदा तआला से मार्गदर्शन चाहे क्योंकि उसके अतिरिक्त कोई हिदायत नहीं दे सकता और वह अच्छा मार्गदर्शक है। और जो अच्छी तरह क़ुरआन में विचार-विमर्श करेगा और सूक्ष्म दृष्टि से चिंतन करेगा उस पर पूर्णत: स्पष्ट हो जाएगा कि यह सब उन उलमा के दिलों का धोखा है और वह अहंकार में हद से बढ़ गए हैं और उन्होंने सच्चाई के दुश्मन बन कर झूठ को फैलाया। और सच तो यह है कि अगर सच्चाई

* **हदीस-ए-अहाद** वह हदीस-ए-नबवी जिस की रिवायत केवल किसी एक व्यक्ति से एक व्यक्ति तक होती हुई पहुंची हो, ऐसी हदीसों के विपरीत जिन्हें एक रावी ने कई आदमियों से वर्णन किया हो। अनुवादक

को धरती के नीचे दफन करें तब भी वह अवश्य बुलंद हो जाएगी।

अब हम उनके वर्णन को छोड़कर पुन: अपने दावे का वर्णन करते हैं ताकि न्यायप्रिय लोग समझ लें कि उसका स्वीकार करना आवश्यक है या रद्द करना। तो हम कहते हैं कि ख़ुदा ने नहीं चाहा कि हमारे धर्म इस्लाम को बेकार छोड़ दे और शत्रुओं के हाथों से उसको ख़राब कराए बल्कि उस ने फ़रमाया और वह बात कहने में सबसे बढ़कर सच्चा है कि

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ (अन्नूर - 24/56)

(अर्थात - अल्लाह ने तुम में से उन पक्के मुसलमानों से वादा किया है जो अच्छे कर्म करेंगे, कि अवश्य उनको उसी प्रकार धरती में ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाएगा कि जिस प्रकार पहले लोगों को बनाया है।) और फ़रमाया-

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (अल हिज्र-15/10)

(अर्थात- हमने ही क़ुरआन को उतारा है और हम भी उसकी सुरक्षा करेंगे) और फ़रमाया -

وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (जुम्आ- 62/4)

(अर्थात - रसूलों के अनुयायी अंतिम युग के भी कुछ लोग हैं जो सहाबा से अभी नहीं मिले) और फ़रमाया कि -

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۔ وَ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ (अल वाक़िआ- 56/40,41)

(अर्थात- एक समूह पहलों में से और एक समूह बाद वालों में से) अत: इस्लाम की सहायता के लिए यह सब वादे हैं, उपद्रवों के प्रकटन और गुनाहों के प्रभुत्व के समय और जो फ़ित्ने कि इस समय धरती पर प्रकट हो रहे हैं उन से बड़ा फ़ित्ना कौन सा है? और ईसाई सूक्ष्म द्वार से (लुभावने मार्गों से) लोगों के पास आए हैं और अपने अत्यंत सूक्ष्म छल-कपटों के द्वारा लोगों की आंखों और कानों और दिलों पर जादू कर दिया है और बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया है और खुले-खुले जादू से काम लिया है।

फिर जानना चाहिए कि जैसा कि हदीस में आया है मसीह मौऊद की तीन निशानियां हैं:-

प्रथम- यह कि वह उस समय आएगा कि जब ईसाई और उनके धोखे प्रबल हो जाएंगे और वे ईसाई धर्म को फैलाने के लिए बहुत दौड़-धूप करेंगे। मसीह उस समय उनमें उतरेगा और उनकी सलीब को तोड़ेगा और उनके सूअरों का वध करेगा और जंग तथा जिहाद नहीं करेगा बल्कि यह सब आसमानी और आध्यात्मिक शक्ति और आसमानी हथियार के साथ करेगा और जंग त्याग कर मिस्कीनों (विनम्र लोगों) के समान प्रकट होगा।

दूसरी यह निशानी है कि वह निकाह (विवाह) करेगा और यह एक बड़े निशान की ओर संकेत है जो उसके विवाह के समय अद्वितीय ख़ुदा की इच्छा और शक्ति से प्रकट होगा। और मैंने अपनी दो पुस्तकों 'तबलीग' और 'तोहफा' में उसका विस्तृत वर्णन किया है और सिद्ध करके दिखा दिया है कि यह निशान शीघ्र मेरे हाथ पर प्रकट होने वाला है और यदि यह निशान न होता तो विवाह की निशानी क़रार देने का कोई उचित कारण न होता क्योंकि विवाह करना कोई असंभव और कठिन कार्य नहीं है, जिससे यह कहा जाए कि सिवाए सच्चे मसीह के जो रब्बुल आलमीन (समस्त ब्रह्मांड के पालनहार) की ओर से आएगा और कोई झूठा मसीह विवाह करने पर समर्थ न होगा। बल्कि विवाह तो ऐसी चीज़ है जो हर एक मालदार कर सकता है चाहे वह काफ़िर और पापी ही क्यों न हो, नबी या वली होना तो दूर की बात है। अत: सिद्ध हुआ कि यह एक महान निशान की ओर संकेत है जो उसके विवाह के समय प्रकट होगा। और हमने अपनी पुस्तक में इसका विस्तृत रूप से वर्णन किया है।

तीसरी निशानी यह है कि उसका बेटा होगा और यह भी विवाह के समान इस बात की ओर संकेत करता है कि उसका एक नेक बेटा होगा जिसके गुण उसके गुणों के समान होंगे। और यदि यह अभिप्राय न हो तो फिर शब्द औलाद में तो मसीह मौऊद की कोई विशेषता नहीं है। क्या मसीह के अतिरिक्त किसी और के लिए औलाद का होना कोई कठिन बात है? बल्कि वह हर एक क़ौम

और सच्चे और झूठे की होती है। अत: यह सच्चे मसीह की निशानियां हैं जिनकी सच्चे मुखबिर (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ख़बर दी है और यह सब की सब मुझ पर चरितार्थ होती हैं और उन्हीं निशानियों से मेरी सच्चाई मालूम हो सकती है। और मेरी सच्चाई की निशानियों में से यह भी है कि मेरे हाथ से बहुत से चमत्कार प्रकट हुए हैं और समय से पूर्व बहुत सी परोक्ष की बातों के बारे मे मुझे सूचित किया गया है। और मेरी बहुत सी दुआएं स्वीकार हुई हैं और हर एक मैदान में ख़ुदा ने मेरी सहायता की है और मैं 40 वर्ष का था जब इल्हाम का द्वार मुझ पर खोला गया और मुझे न छोड़ा तथा न नष्ट किया बल्कि अपने वार्तालाप से प्रतिष्ठित किया और ईसाइयों पर हुज्जत पूरी करने के लिए मुझे अवतरित किया। और यदि क़ौम के विचार के अनुसार ईसा दूसरे आसमान पर पार्थिव शरीर के साथ जीवित होता तो निश्चित था कि इस समय उतरता क्योंकि ईसाइयों के छल-कपट से क़ौमें नष्ट हो रही हैं और फसाद अपने चरम को पहुंचे हुए हैं। अत: लोगों के गुमराह हो जाने और उसकी उम्मत के फसादों के बावजूद फिर भी आसमान पर बैठे रहना अजीब बात है। और हम नहीं जानते कि इस बैठे रहने और आयु को व्यर्थ गंवाने में कौन सा लाभ है? और ख़ुदा की शान के विपरीत है कि आसमान के किसी कोने में उसकी आयु को नष्ट कर दे और स्वयं देख रहा हो कि उसकी उम्मत तबाही के गड्ढे में पड़ी हुई है और पहले दज्जालों से बढ़ चढ़कर धरती में उपद्रव फैला रही है और आदम से लेकर इस समय तक उनके झूठ और शिर्क के फैलाने का कोई उदाहरण नहीं मिलता। क्या तूने नहीं देखा कि जब मूसा ने ख़ुदा से तूर नामक पहाड़ पर बातचीत की। और उसके जाने के बाद उसकी क़ौम ने गाय के बछड़े की उपासना आरंभ कर दी जो धिक्कृत ध्वनि करने वाला शरीर था, तो ख़ुदा ने उन सब घटनाओं की मूसा को किस प्रकार सूचना दी और फ़रमाया कि शीघ्र अपनी क़ौम की ओर जा कि वह बछड़े की उपासना से नष्ट हो गई है। अत: मूसा क्रोध तथा अफसोस की अवस्था में वापस लौटा और अपने भाई की दाढ़ी पकड़ ली और वह घटनाएं घटीं जो तू क़ुरआन में पढ़ता है। और बछड़ा का

फ़ित्ना ईसाइयों के फ़ित्ने से बड़ा न था।

और तू भली-भांति जानता है कि ईसाइयों का फ़ित्ना बावजूद अत्यंत भयानक, गुमराह करने वाला होने तथा समस्त धरती पर फैल जाने के, मसीह की मृत्यु से लेकर 2000 वर्ष तक फैलता गया और ठहरा रहा और ईसा इस समय तक नहीं उतरा कि जिसके बारे में समस्त अहले कश्फ (सच्चे स्वप्न देखने वालों) ने सूचना दी थी और उसके उतरने के कोई लक्षण दिखाई नहीं देते। अत: यह वह बातें हैं कि इन उलमा के पास उनका कोई उत्तर हमें नज़र नहीं आता और आश्चर्य यह कि मुझसे बहुत से निशान देख चुके परन्तु उनकी ओर कोई ध्यान न दिया और कहने लगे कि यह इस्तदराज या रमल* है। और अत्यधिक आश्चर्य के कारण हैरान हो गए हैं। और उनके दिल तो विश्वास कर चुके हैं परन्तु अत्याचार और अहंकारवश इन्कार कर रहे हैं और उनके दिलों और आंखों में उनकी महानता बैठ चुकी है परन्तु अपनी व्यक्तिगत और अकारण ईर्ष्या के कारण झुठलाते हैं। अत: हम इन ईर्ष्यालुओं से अल्लाह की शरण मांगते हैं। और उन्होंने खुली-खुली सच्चाई से इन्कार किया है और कमज़ोर बातों को पकड़ लिया है। क्या नहीं सोचते कि जो कोई बड़ी घटना घटने वाली है क़ुरआन में ख़ुदा तआला ने अवश्य उसका वर्णन किया है तो फिर क्यों मसीह के नुज़ूल (आसमान से उतरने) की घटना को त्याग दिया, बावजूद इसके कि वह बहुत महान और चमत्कारों पर आधारित घटना थी। अत: यदि वह सत्य होता तो ख़ुदा उसको क्यों छोड़ देता हालांकि उसने यूसुफ का क़िस्सा वर्णन किया और फ़रमाया कि- "हम तेरे समक्ष अच्छा किसका वर्णन करते हैं" (सूर: यूसुफ -4) और असहाब-ए-कहफ़ का क़िस्सा वर्णन किया और फ़रमाया - "वे हमारे विचित्र निशानों में से थे" (कहफ़ -10) परन्तु मसीह के बारे में सिवाय मृत्यु के उसके आसमान से उतरने का कोई वर्णन तक नहीं किया। अत: यदि उतरना सत्य होता तो क़ुरआन

* **इस्तदराज** - वह करामात या चमत्कार जो किसी नास्तिक द्वारा प्रकट हो।
रमल- एक विद्या जिससे भविष्य में होने वाली घटनाएं बता दी जाती हैं, इस विद्या का मूलाधार नुक्ते (शून्य) या बिंदियाँ हैं। अनुवादक

उसको कदापि न छोड़ता बल्कि अवश्य उसको एक बड़ी लंबी सूरत में वर्णन करता और उसको सब से अच्छा क़िस्सा क़रार देता क्योंकि उसके चमत्कार उससे विशिष्ट हैं। और उसका उदाहरण किसी अन्य क़िस्से में कदापि नहीं है। और अंतिम युग की उम्मत के लिए उसको एक बड़ा निशान बनाता। अत: यह स्पष्ट दलील है कि इन शब्दों से वास्तविक अर्थ अभिप्राय नहीं हैं बल्कि हदीसों में उनसे एक महान मुजद्दिद (धर्म सुधारक) अभिप्राय है जो मसीह के पद चिन्हों पर आएगा और उस जैसा और उसका समरूप होगा और मसीह का नाम उस पर बोला जाएगा जैसा कि स्वप्न लोक में एक पर दूसरे का नाम बोला जाता है। और वह्यी तथा स्वप्न में यह सुन्नत हमेशा से जारी है और हदीस की पुस्तकों तथा ताबीर (स्वप्न का अर्थ बताने) की पुस्तकों में अधिकता से उनके उदाहरण पाए जाते हैं। अत: इस से अभिप्राय एक समरूप है जो अत्यधिक समानता के कारण बिल्कुल मसीह ही होगा और वह ईसाइयों के प्रभुत्व के समय प्रकट होगा और उसके हाथ पर अल्लाह की हुज्जत पूरी होगी और इस्लाम का बोलबाला करेगा और दलीलों के साथ इस्लाम को समस्त धर्मों पर विजयी करेगा। और बावजूद इसके हम क़ुरआन में भी पाते हैं कि अंतिम युग में धरती पर ईसाई प्रबल हो जाएंगे और हर एक बुलंदी से उतरेंगे और बहुत से उपद्रव फैलाएंगे और अपने छल कपट से इस्लाम पर आक्रमण करेंगे। और अपने प्यादों तथा सवारों के साथ इस्लाम पर चढ़ाई करेंगे और इस्लाम के प्रकाश को बुझाने में कोई कसर न छोड़ेंगे। अत: ऐसे समय में कृपालु ख़ुदा इस कमज़ोर उम्मत पर कृपादृष्टि करेगा कि जिसका कोई बचाव और कोई शक्ति नहीं। अत: वह तुरही फूंकेगा और उनमें से (किसी) एक को ज्ञान तथा विवेक देगा और उसको बहुत से निशान प्रदान करेगा और उसको ईसा बिन मरियम जैसा बनाकर सच्चाई को स्पष्ट करेगा और विश्वासघातियों की योजनाओं को असफल करेगा और उसका मसीह के स्थानापन्न होना और उसका हमनाम होना दो कारणों से है- **प्रथम** यह कि हर एक मुजद्दिद (धर्म सुधारक) उस क़ौम की हालत के अनुकूल आता है जिस पर सर्वज्ञानी ख़ुदा हुज्जत पूरी करना चाहता है। तो चूंकि शत्रु ईसाई

क़ौम थी तो इसलिए ख़ुदा ने चाहा कि उस मुजद्दिद का नाम मसीह रखा जाए। और **दूसरा** कारण यह कि हर एक मुजद्दिद किसी ऐसे नबी के पद चिन्हों पर आता है कि जिस के ज़माने से उसका ज़माना समांतर हो और हमारी क़ौम का ज़माना मसीह के ज़माने के समान है। क्योंकि मसीह ऐसे समय में आया था कि यहूदियों की सत्ता नहीं रही थी और रोमी हुकूमत का उन पर राज्य था और इसके अतिरिक्त उस ज़माने में यहूदी उलमा के दिल भ्रष्ट और विकृत हो गए थे और धोखा, अनैतिकता, सांसारिक मोहमाया, हानि, पाखण्ड, दोगलापन और झगड़ा और बाकी निकृष्ट आचरण उनमें अधिकता से फैल गए थे और हमारी क़ौम का हाल भी इस समय ठीक ऐसा ही था। अत: ख़ुदा की युक्ति ने चाहा कि समर्थकों और विपक्षियों को देखते हुए उस मुजद्दिद का नाम ईसा बिन मरियम रखा जाए।★

और उन्होंने कहा कि मसीह आसमान से उतरेगा, दज्जाल का वध करेगा और ईसाइयों से जंग करेगा। यह समस्त विचारधाराएं बुद्धि के विकार और हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों पर चिंतन की कमी से पैदा हुई हैं। और रही आसमान से उतरने की बात तो तू उसकी वास्तविकता को समझ चुका है और मैंने विस्तार पूर्वक तुझ पर स्पष्ट कर दिया है कि आसमान से उतरना न तो पवित्र क़ुरआन से सिद्ध होता है और न ही नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की किसी हदीस से। और उन पर आश्चर्य तो यह है कि वे ईमान रखते हैं कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन में कुछ ऐसी आयतें उतारी हैं जिनमें मसीह की मृत्यु का वर्णन है, फिर वे यह भी समझते हैं कि वह दूसरे आसमान पर अपने मौसेरे भाई शहीद नबी यह्या के साथ जीवित बैठे हैं। हमारे नबी और उन सब पर अल्लाह की सलामती हो। वे विचार विमर्श नहीं करते कि यह्या अलैहिस्सलाम तो क़त्ल हुए और मुर्दों से जा मिले, फिर अल्लाह

★हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय में 27 जुलाई 1930 ईस्वी में जो अनुवाद प्रकाशित हुआ था, वह यहां तक था। इससे आगे आदरणीय मोहम्मद सईद साहब अंसारी रहमतुल्ला अलैहि का अनुवाद है जिसकी चेकिंग अरेबिक बोर्ड रब्वा आने की है। प्रकाशक

ने जीवित को मुर्दे के साथ कैसे इकट्ठा कर दिया? मुर्दों का जीवितों से भला आपस में क्या सम्बन्ध? आश्चर्य की हद है कि यह लोग अपनी आस्थाओं में बहुत से मतभेद इकट्ठे कर देते हैं और समझते नहीं और न उन रद्दी और विरोधाभासी कथनों का त्याग करते हैं और नशे में मस्त लोगों या पागलों के समान बातें करते हैं।

हम मुफस्सिरों (क़ुरआन के व्याख्याकारों) के कथनों में नहीं पाते कि वह ईसा के जीवित होने के बारे में सहमत हैं बल्कि इस विषय में उनके अंदर बहुत से मतभेद हैं उनमें से कुछ तो इस मत की ओर गए हैं कि वह मृत्यु को प्राप्त हो गए फिर वह जीवित किए गए परन्तु यह सब उनके मुंह की बातें हैं। वे मसीह के जीवित होने का क़ुरआन तथा हदीस का कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सके। और उनमें से कुछ (व्याख्याकार) इस मत की ओर गए हैं कि वह मृत्यु से पूर्व अपने पार्थिव शरीर के साथ आसमान पर चढ़ गए हैं। अत: उन्होंने अपने इस कथन में बिना किसी हुज्जत तथा तर्क और बगैर किसी संतुष्टि दायक और स्पष्ट दलील के पवित्र क़ुरआन के वर्णन का विरोध किया है। सारांश यह कि उन्होंने इस मामले में अपने-अपने विचार के अनुसार इस प्रकार बात की है मानो कोई व्यक्ति बिना किसी उद्देश्य के घाटी में भ्रमण कर रहा हो। और वे उसके आसमान पर जाने के बारे में किसी एक बात पर सहमत नहीं हुए और वे पार्थिव शरीर के साथ आसमान पर चढ़ जाने की आस्था को सही सिद्ध करने हेतु कोई आयत या हदीस या किसी सहाबी का कथन प्रस्तुत नहीं कर सके। फिर वे उस महान सिद्धांत को सिद्ध करने से पहले "नुज़ूल" की आस्था की ओर घूम गए और उनकी समझ में यह न आया कि नुज़ूल (उतरना) सऊद (चढ़ने) की एक शाखा है। और उस (नुज़ूल) का प्रमाण इस (सऊद) के प्रमाण के लिए बतौर शाखा के है। और जब यह सिद्ध हो गया कि क़ुरआन हज़रत ईसा के पार्थिव शरीर के साथ आसमान पर जाने का सत्यापन नहीं करता बल्कि उसका विरोध करता है और उसकी मृत्यु को अपनी बहुत सी आयतों से वर्णन करता है। और कभी कहता है कि - يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ (अर्थात हे ईसा! निस्सन्देह मैं तुझे

मृत्यु देने वाला हूं। (आले इमरान - 3/56) और कभी वह अपने इस कथन से उसकी मृत्यु की ओर संकेत करता है कि -

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ (मायदा - 5/118)

(अर्थात अत: जब तूने मुझे मृत्यु दे दी तो केवल एक तू ही उन पर निगरान रहा) और कभी फ़रमाता है कि-

وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (आले इमरान- 3/145)

(अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो केवल एक रसूल है और उनसे पहले रसूल मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं) अर्थात वे सब के सब मर चुके हैं। (यदि हम इस अंतिम आयत में इस अर्थ को न अपनाएं तो अभीष्ट अर्थ व्यर्थ हो जाता है) अत: हम क़ुरआन और उसकी गवाहियों को कैसे त्याग दें और कौन सी गवाही इस किताब की गवाही से बढ़कर हो सकती है कि ग़लत बात जिसके आगे से आ सकती है और न उसके पीछे से। अल्लाह तेरा भला करे क्या तू इससे अधिक स्पष्ट कोई और दलील चाहता है? तो अधिक उचित और अधिक सही यह है कि क़ुरआन के अतिरिक्त किसी बात को क़ुरआन के सम्मुख प्रस्तुत किया जाए चाहे वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस हो या किसी वली का स्वप्न या किसी क़ुतुब का इल्हाम ही क्यों न हो क्योंकि क़ुरआन ऐसी पुस्तक है जिस की प्रमाणिकता की स्वयं अल्लाह ने ज़मानत दी है। और उसने फ़रमाया है कि-

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (अल हिज्र-15/10)

(अर्थात- निस्सन्देह हमने ही यह ज़िक्र (अर्थात क़ुरआन) उतारा है और निस्सन्देह हम ही इसकी सुरक्षा करने वाले हैं।) और यह युगों के परिवर्तन और बहुत सी सदियों के बीत जाने से भी नहीं बदलता और न उसमें से कोई अक्षर कम हो सकता है और न उस पर कोई नुक्ता अधिक हो सकता है और न मखलूक के हाथ उसे छू सकते हैं और न ही मनुष्यों का कोई कथन इसमें सम्मिलित हो सकता है।

और इसके अतिरिक्त क़ुरआन निस्सन्देह वह्यी-ए-मतलु (ख़ुदा की ओर से

उतरी हुई पुस्तक) है और पूरे का पूरा यहां तक कि बिंदु और अक्षर भी अकाट्य रूप से निरंतर चले आते हैं और अल्लाह ने इसे अत्यंत उत्तम प्रबंध के साथ फरिश्तों की सुरक्षा में उतारा है। फिर इसके बारे में समस्त प्रकार के प्रबंध करने में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई कसर न छोड़ी और आपने अपनी आंखों के सामने एक-एक आयत जैसे वह क़ुरआन उतरता रहा, उसको साथ के साथ लिखवाते रहे यहां तक कि आपने उसे पूर्ण रूप से जमा किया और स्वयं आयतों को क्रम दिया और उन्हें इकट्ठा किया और नमाज़ में तथा नमाज़ के अतिरिक्त निरन्तर उस का पाठ किया, यहां तक कि आप दुनिया से चले गए। और अपने प्रिय ईश्वर से जा मिले।

फिर उसके बाद प्रथम ख़लीफा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह अन्हु ने उसकी समस्त सूरतों को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुने हुए क्रम के अनुसार इकट्ठा करने का प्रबंध किया। फिर (हज़रत) अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह अन्हु के देहान्त के बाद अल्लाह ने तीसरे ख़लीफा (हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हु) को सामर्थ्य प्रदान किया तो आप ने क़ुरैश की भाषा के अनुसार क़ुरआन को एक क़िरत पर इकट्ठा किया और उसे समस्त देशों में फैला दिया। और उसके साथ-साथ समस्त (सम्माननीय) सहाबा क़ुरआन को हाफिज़ों की तरह पढ़ते थे और इस (क़ुरआन) का बहुत सा भाग मोमिनों के दिलों में (सुरक्षित) था और वे उसे नमाज़ में और नमाज़ के अतिरिक्त पढ़ते रहते थे बल्कि उनमें से कुछ तो पूरे क़ुरआन के हाफिज़ थे और वे रात-दिन उसका पाठ करते थे और निरन्तर करते रहते थे।

अत: हे नेक बंदे! विचार कर कि यह उत्तम और श्रेष्ठ स्थान ज़मानों में से किसी ज़माने में हदीस को कहां प्राप्त हुआ? जबकि हदीसें सब की सब अहाद हैं★ और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें इकट्ठा करने

★**हाशिया :-** अल्लाह तुझे हिदायत दे। तुझे ज्ञात हो कि इमाम बुख़ारी हदीसों को सही करने और उन में समानता पैदा करने और उनमें खरे खोटे की परख और उनके रावियों की जांच पड़ताल करने में अत्यंत उत्तम प्रबंध के बावजूद उस विरोधाभास को मरते दम तक दूर नहीं

और उन्हें लिखने की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और न ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र सहाबा ने और न ही अल्लाह ने उनकी ज़िम्मेदारी ली और न ही ज़मानत दी और न ही क़ुरआन की सुरक्षा के वादे के समान उनकी सुरक्षा का वादा किया। इसके अतिरिक्त हदीसें हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहांत के सदियों बाद एक लंबे समय के बाद इकट्ठी की गईं। और फिर यह बात भी है कि उनमें से कुछ में बहुत मतभेद और अत्यधिक विरोधाभास पाया जाता है। अत: यही वह कारण है जिसने इस उम्मत को फिरका-फिरका बना दिया। अत: उनमें से कुछ हनफी, कुछ शाफई, कुछ मालकी और कुछ हंबली हैं। यदि हदीसें सर्वसम्मत और परस्पर एकमत होतीं तो लोग उनमें कभी मतभेद न करते और न फिरको में विभाजित होते। परन्तु उन्होंने हदीसों को एक दूसरे से विपरीत पाया। अत: उनमें से हर फिरके ने अपनी समझ के अनुसार किसी हदीस को ले लिया और मामले को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया। एक पक्ष तो नमाज़ में रफ़ा यदैन (हाथ उठाने) और ज़ोर से आमीन बुलाने और इमाम के पीछे सूरह फ़ातिहा पढ़ने का मत रखने लगा और दूसरे पक्ष ने अपनी समझ में उसके विपरीत किया। दोनों पक्ष हदीस से ही दलील देते हैं। इसी प्रकार हज़ारों हदीसों में फिर्कों का मतभेद पाया जाता है। अत: ऐसी हदीसें जो निरंतर, निश्चितता और विश्वास के मर्तबा से गिरी हों और मतभेद, अंतर्विरोध और विरोधाभास से खाली न हों उन्हें हम क़ुरआन पर निर्णायक कैसे मान सकते हैं? क्या ये हैं निर्णायकों की निशानियां? अत: विचार करो अगर तुम विचार करने वाले हो।

और हम हदीसों को कमतर और तिरस्कार की दृष्टि से नहीं देखते बल्कि हम उन मुहद्दसीन इमामों के धन्यवादी हैं और उनके प्रयत्न की प्रशंसा करते

शेष हाशिया- कर पाए जो उनकी सहीह बुख़ारी की हदीसों मे पाया जाता है। फिर किसी दूसरे के लिए यह संभव न हुआ कि जो काम उनसे रह गया था वह उसकी भरपाई करता। क्या तू मेराज की रिवायतों को नहीं देखता कि उनमें कैसे कैसे बड़े मतभेद पाए जाते हैं यहां तक कि कुछ लोग इस मत की ओर गए हैं कि मेराज जागृत अवस्था में हुआ था और कुछ का यह मत है कि वह एक पवित्र स्वप्न था। अत: विचार विमर्श कर और सोने वालों में से न बन। इसी से।

हैं। निस्सन्देह हदीसों की बहुत शान है और वह इस्लाम के इतिहास, बहुत से धार्मिक विषयों तथा उससे संबंधित बातों की जानकारी देती हैं। हम उनका सम्मान करते हैं और उन्हें दिलो-जान से स्वीकार करते हैं। परन्तु हम उन्हें अल्लाह की किताब (क़ुरआन) पर जो कि पथप्रदर्शक और मार्गदर्शक है, प्राथमिकता नहीं देते। और जब क़ुरआन तथा हदीस में किसी क़िस्से के बारे में परस्पर मतभेद हो जाए तो हम जिन्नों और इंसानों को गवाह ठहराते हैं कि हम क़ुरआन के साथ हैं और हम लानतान करने वालों के तानों की (कोई) परवाह नहीं करते। और हम जानते हैं कि समस्त प्रकार की भलाई और हर प्रकार की सलामती क़ुरआन को इस प्रकार की हदीसों के लिए कसौटी बनाने में है। अत: ग़लती से बचाने वाला सही कानून यही है कि हम हर क़िस्से को क़ुरआन के सम्मुख प्रस्तुत करें फिर यदि उसका या उससे मिलते-जुलते और समान मामलों का वर्णन क़ुरआन में मौजूद हो तो वह स्वीकार कर लिया जाएगा और उस पर ईमान लाया जाएगा और उस पर आस्था रखी जाएगी और अगर क़ुरआन में उसका उदाहरण न पाया जाए, न इस उम्मत में और न दूसरी उम्मतों के वर्णन में बल्कि कोई ऐसी चीज़ पाई जाती हो जो उसके विपरीत है तो फिर अनिवार्य है कि इस प्रकार के क़िस्सों को केवल लाक्षणिक रूप से ही स्वीकार किया जाए। अत: तू ग़लती से बचाने वाले उस कानून का जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वारा हम तक पहुंचा है, अनुसरण करते हुए देख कि क्या तू भौतिक शरीर के साथ मसीह के (आसमान) पर चढ़ने और दो फरिश्तों के परों पर हाथ रखे हुए उसके आसमान से उतरने के क़िस्सों का आधार या निशान या उस क़िस्से के समान कोई क़िस्सा पवित्र क़ुरआन में पाता है? बल्कि क़ुरआन इस संसार में इस प्रकार के कर्मों से अल्लाह की शान को पवित्र क़रार देता है और फ़रमाता है कि तू यह ऐलान कर दे कि -

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا (बनी इस्राईल- 17/94)

(अनुवाद - मेरा रब ऐसा करने से पवित्र है मैं तो केवल एक मनुष्य रसूल हूं।)

और वह (अर्थात क़ुरआन) उतरने के क़िस्से का खुल्लम खुल्ला विरोधी है।

अत: उसने उन शुभ सूचनाओं का वर्णन किया है जिनमें उसने अपनी संकलित और सुसज्जित वाणी में मसीह को शुभ संदेश दिए हैं। अत: यह कलाम अल्लाह के कथन-

يٰعِيْسٰى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَيَّ وَ مُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

तक है और इसमें न तो उसने मसीह के आसमान पर चढ़ने के क़िस्से का कोई वर्णन किया है और न ही उसके उतरने का। यदि यह बात सही होती तो उन शुभ संदेशों के बारे में उसका अवश्य वर्णन होता। अत: यह इस बात की स्पष्ट दलील है कि क़ुरआन ने उन क़िस्सों का सत्यापन नहीं किया बल्कि उसने मसीह के लिए क़यामत तक के वादों तथा शुभ संदेशों का वर्णन करके और उस क़िस्से को छोड़कर उनको झुठलाया है और इसमें सत्य के अभिलाषियों के लिए संतुष्टि जनक कारण उपलब्ध हैं।

तू जान ले कि क़ुरआन किसी के लिए यह वैध क़रार नहीं देता कि वह अपने भौतिक शरीर के साथ आसमान पर चढ़ जाए और फिर क़यामत तक उसमें जीवित रहे। और तुझे यह ज्ञात है कि क़ुरैश के एक समूह ने कुछ मांगें अपनी ओर से बनाकर प्रस्तुत की थीं, उनमें से एक यह थी कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि हम तुझ पर ईमान नहीं लाएंगे जब तक कि तू आसमान पर न चढ़ जाए। उनके उत्तर में यह आयत उतरी -

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا (बनी इस्राईल- 17/94)

(अनुवाद- तू यह ऐलान कर दे कि मेरा रब ऐसा करने से पवित्र है मैं तो केवल एक मनुष्य रसूल हूं।) और तू जानता है कि हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समस्त रसूलों से श्रेष्ठ और उनके ***ख़ातम*** हैं और उनमें से अल्लाह के सबसे अधिक प्रिय हैं। इसलिए जो बात आपके लिए वैध न थी वह किसी दूसरे के लिए कैसे वैध हो सकती है? अत: हे मेरे भाई! विचार कर, अल्लाह स्पष्ट इल्हाम के द्वारा तेरी सहायता करे।

रही बात हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मेराज की तो वह एक विलक्षण मामला था, जो पूरी तरह से सूक्ष्म, आध्यात्मिक जागृत अवस्था में हुआ था। अत: अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जागृत अवस्था में अपने शरीर के साथ आसमान की ओर ले जाया गया इसमें कोई सन्देह नहीं परन्तु इसके बावजूद आपका शरीर चारपाई से गायब नहीं हुआ था जैसा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कुछ पत्नियों[रज़ि०] ने इस बात की गवाही दी है और इसी प्रकार बहुत से सहाबियों[रज़ि०] ने भी। अत: तू जानता और समझता है कि मेराज की घटना एक अलग प्रकार की घटना है जिससे ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान की ओर चढ़ने का क़िस्सा कोई समानता नहीं रखता और यदि तुझे इस बारे में कोई सन्देह हो तो बुख़ारी को पढ़। मुझे विश्वास है कि उसके बाद तू सन्देह करने वालों में से नहीं होगा।

और जहां तक हज़रत इदरीस के क़िस्से में अल्लाह तआला का यह कथन है कि "व रफ़ानाहु मकानन् अलिय्या" (अनुवाद- और हमने उसका एक बुलन्द स्थान की ओर रफ़ा किया था अर्थात उठाया था। मरियम- 58) तो तहक़ीक़ करने वाले उलमा ने इस बात पर सहमति व्यक्त की है कि यहां रफ़ा से अभिप्राय सम्मान के साथ मृत्यु देना और दर्जा बुलंद करना है। और इस बात पर दलील यह है कि अल्लाह तआला के कथन - "कुल्लु मन अलैहा फान" (अनुवाद- हर चीज़ जो इस दुनिया पर है फ़ानी है अर्थात एक दिन समाप्त होने वाली है। अर्रहमान -27) की दृष्टि से हर व्यक्ति के लिए मौत मुक़द्दर है और ख़ुदा तआला के कथन- 'व फीहा नुईदुकुम' (अनुवाद- और उसी में हम तुम्हें लौटा देंगे। ताहा- 56) की दृष्टि से आसमानों में मौत का औचित्य नहीं है। और हम क़ुरआन में (हज़रत) इदरीस अलैहिस्सलाम के उतरने और उनकी मृत्यु और उनके धरती में दफन होने का वर्णन नहीं पाते। अत: निश्चित तौर पर सिद्ध हो गया कि रफ़ा से अभिप्राय मौत है। सारांश यह कि हर वह बात जो क़ुरआन के विपरीत और उसके वर्णित क़िस्सों की विरोधी हो वह ग़लत, झूठ और बातें बनाने वालों की मनगढ़त बातें हैं।

अल्लाह तेरी सहायता करे, तुझे यह ज्ञात हो कि मसीह के आसमान से उतरने की आस्था क़ुरआन के प्रमाणों के अभाव और इस (आस्था) में क़ुरआन के विरोध के कारण तौहीद (एकेश्वरवाद) की आस्थाओं को नुकसान पहुंचाती है। और उस क़ौम की आस्थाओं को मज़बूती देती है जिन्होंने उन जैसे क़िस्सों से लोगों को तबाह किया। अत: यदि यह बात वास्तव में सच्ची होती कि ईसा अपने नबी भाइयों के समान मृत्यु को प्राप्त नहीं हुए बल्कि वह आसमान में जीवित मौजूद हैं और उसके साथ ही यह भी कि वह अल्लाह तआला के पैदा करने के समान पक्षी पैदा करते थे और रब्बुल आलमीन के जीवित करने के समान वह मुर्दों को जीवित करते थे, तो उस से बढ़कर उन लोगों के लिए और कौन सी परीक्षा की घड़ी होगी जिन्हें इस ज़माने में मसीह की ख़ुदाई की ओर दावत दी जाती है जिस (ज़माने) में हर ओर ईसाइयों के फ़ित्ने फैले हैं और वे (ईसाई लोग) अपने मालों तथा समस्त प्रकार के धोखेबाज़ियों के साथ भरपूर प्रयत्न करते हैं कि लोगों को गुमराह करें और उन्हें ईसाई बना लें।

फिर हे प्यारो! यह जान लो कि हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जीवन हदीस के प्रमाणों से सिद्ध है और अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया है, कुछ रिवायतों के मतभेद के साथ कि- मैं अपनी क़ब्र में 3 दिन या 40 दिन तक मुर्दा नहीं रहूंगा, बल्कि मैं जीवित किया जाऊंगा और आसमान की तरफ उठाया जाऊंगा। और तू जानता है कि आप (स०अ०व०) का पार्थिव शरीर मदीना में दफन है। फिर इस हदीस के और क्या अर्थ हो सकते हैं सिवाय उस आध्यात्मिक जीवन और आध्यात्मिक रफ़ा के, जो अल्लाह की सुन्नत अपने चयनित बन्दों के साथ उन्हें मृत्यु देने के बाद निर्धारित है। जैसा कि ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है-

يَاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ (अल फ़ज्र- 28, 29)

(अर्थात हे सात्विक वृत्ति तू अपने रब की ओर लौट जा।

और कथन 'इरजिई इला रब्बिकि' (अपने रब की ओर लौट जा) के वही अर्थ हैं जो कथन 'राफिउका इलैया' (अर्थात मैं तुझे अपनी ओर उठाऊंगा) से समझे जाते हैं क्योंकि 'रुजू इलल्लाह राज़ियतम मर्ज़िय्या' (अर्थात ख़ुदा की ओर

इस अवस्था में लौटना कि वह ख़ुदा से राज़ी हो और ख़ुदा उससे राज़ी हो) और 'रफ़ा इलल्लाह' (ख़ुदा की ओर उठाया जाना) एक ही बात है और यह अल्लाह तआला की प्रचलित सुन्नत है कि वह अपने नेक बन्दों को उनके देहांत के बाद अपनी ओर उठाता है और उन्हें उनके मर्तबा के अनुसार आसमानों में स्थान देता है। यही कारण है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात में अपने से पहले गुज़रे हुए हर नबी से आसमानों में भेंट की। अत: आप ने आदम अलैहिस्सलाम को पहले आसमान में, ईसा अलहिस्सलाम और उनके मौसेरे भाई यह्या अलैहिस्सलाम को दूसरे आसमान में और मूसा अलैहिस्सलाम को पांचवें आसमान में पाया। और यह समस्त हदीसें सही हैं। तू उन्हें बुख़ारी तथा अन्य सिहाह (हदीस की छ: विश्वसनीय पुस्तकें) में पाता है। फिर वे लोग जो सत्याभिलाषी नहीं वे अंधे बन जाते हैं और समस्त नबियों के रफ़ा को भूल जाते हैं और केवल ईसा की ज़िन्दगी और उनके रफ़ा पर हठ करते हैं। वे मेराज की हदीस पढ़ते हैं फिर उसे भूल जाते हैं और अपनी आयु लापरवाही में व्यर्थ कर रहे हैं।

क्या ईसा अ० जीवित और मुहम्मद मुस्तफा स० मृत्यु को प्राप्त हो गए? यह तो एक अन्यायपूर्ण विभाजन है। न्याय करो क्योंकि वह संयम के अधिक निकट है। और जब यह सिद्ध हो गया कि समस्त नबी आसमानों में जीवित हैं तो फिर ईसा मसीह के जीवन की कौन सी विशेषता सिद्ध होती है? क्या वही खाता-पीता है और वे (अन्य नबी) खाते-पीते नहीं बल्कि कलीमुल्लाह (अर्थात मूसा[अ०]) का जीवन तो क़ुरआन की आयतों से सिद्ध है क्या तू क़ुरआन में अल्लाह तआला का कथन-

فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ (सज्द:- 32/24)

(अनुवाद - कि तू उसकी मुलाकात के बारे में सन्देह न कर।) नहीं पढ़ता और तू जानता है कि यह आयत हज़रत मूसा[अ०] के बारे में उतरी है। अत: यह मूसा अलैहिस्सलाम के जीवन पर एक स्पष्ट दलील है। क्योंकि वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिले, और मुर्दे-जीवित लोगों से नहीं मिलते और

तू इस प्रकार की आयतें ईसा अलैहिस्सलाम की शान में नहीं पाएगा। हां बल्कि उनकी मृत्यु का वर्णन विभिन्न स्थानों पर आया है। अत: विचार-विमर्श कर क्योंकि अल्लाह विचार-विमर्श करने वालों को पसंद करता है।

और संभवत: तू यह कहे कि फिर अल्लाह ने ईसा अलैहिस्सलाम के रफ़ा का क़िस्सा विशेष रूप से क्यों वर्णन किया है और इसी प्रकार उनके सूली पर न मरने का वर्णन क़ुरआन में क्यों किया है और इन दोनों बातों के वर्णन में कौन सा भेद और युक्ति है? और उसके वर्णन की कौन सी आवश्यकता थी? तो तुझे जानना चाहिए कि यहूदियों के उलमा (धार्मिक विद्वान) और उनके विश्लेषक (अल्लाह का क्रोध उन पर पड़े) वे ईसा अलैहिस्सलाम की शान में बदगुमानी करते थे और कहते थे कि नाऊज़ुबिल्ला वह मुफ्तरी और महा झूठे हैं और तौरात में लिखा है कि झूठा नबी सूली पर लटकाया जाता है और वह लानती होता है और सच्चे नबियों के समान उसका 'रफ़ा' अल्लाह की ओर नहीं होता। इसलिए उन्होंने मसीह को सूली पर लटका कर मारना चाहा ताकि तौरात के आदेशों के अनुसार वह उनका झूठा होना सिद्ध करें। और लोगों को यह दिखाएं कि वह लानती और महा झूठे हैं और उनका रफ़ा अल्लाह की ओर नहीं होगा। अल्लाह उन (यहूदियों) को नष्ट करे और उन पर लानत करे कि किस प्रकार उन्होंने अल्लाह के एक सानिध्य प्राप्त नबी के बारे में यह षड्यंत्र किया, उन्हें सूली पर लटका कर मारने का पूर्ण प्रयत्न किया और उनके लिए हर बुरे षड्यंत्र को प्रयोग किया कि किसी प्रकार उन्हें सूली पर मार दिया जाए और इस प्रकार उनके झूठा होने और उनका रफ़ा न होने के बारे में अल्लाह की किताब तौरात से उन्हें एक दलील मिल जाए। अत: अल्लाह ने ईसा अलैहिस्सलाम को यह कहते हुए शुभ संदेश दिया कि - या ईसा इन्नी मुतवफ्फ़ीक (अर्थात हे ईसा मैं तुझे स्वाभाविक मृत्यु दूंगा) व राफिउका इलैया' अर्थात सच्चे नबियों के समान मैं अपने सानिध्य में तुझे स्थान दूंगा और अल्लाह की नेमत के कारण तू लानती और महा झूठे लोगों में से नहीं है। तो यह वादे कृपालु ख़ुदा की ओर से ईसा अलैहिस्सलाम की संतुष्टि और यहूदियों के रद्द

के लिए थे। और यह शुभ संदेश था कि अल्लाह ख़यानत करने वालों के षड्यंत्र को सफल नहीं करता और जैसा कि तुझे अभी ज्ञान हुआ है कि 'रफ़ा' केवल ईसा अलैहिस्सलाम के साथ विशिष्ट नहीं बल्कि समस्त नबियों का ही रफ़ा हुआ है। और उनका मर्तबा सामर्थ्यवान बादशाह (ख़ुदा) के पास है और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर नबी को किसी न किसी आसमान पर रफ़ा किया हुआ पाया बल्कि कुछ नबियों को तो ईसा अलैहिस्सलाम से भी बुलंद पाया और आयत- وَ مَا قَتَلُوْهُ وَ مَا صَلَبُوْهُ (अनुवाद- और वे निश्चित रूप से उसका वध नहीं कर सके और न उसे सूली पर चढ़ा (कर मार) सके। अन्निसा- 4/158) में एक और भी संकेत है और वह यह कि ईसाइयों ने यह समझा कि गुनाहों से उन्हें मुक्त करने के लिए ईसा को सूली पर चढ़ाया गया और यह विश्वास कर लिया कि मानो सूली चढ़ने के बाद उसने उनके समस्त गुनाह अपनी जान पर ले लिए और वह उनके लिए कफ़्फ़ारा है और समस्त गुनाहों और दोषों से उन्हें मुक्त करने वाले हैं। अत: सूली के इन्कार में ईसाइयों का खण्डन और कफ़्फ़ारा की आस्था का तोड़ है। और उसके साथ-साथ यहूदियों का खण्डन और उनके उस (अपवित्र) षड्यंत्र का निवारण करना है जो उन्होंने तौरात से लेते हुए किया। और इसमें ईसा अलैहिस्सलाम की इन क़ौमों के आरोपों से बरीयत का इज़हार है। यही वह कारण है जिसके आधार पर अल्लाह ने ईसा अलैहिस्सलाम की सूली की घटना को पवित्र क़ुरआन में वर्णन किया और उसका खण्डन किया। अन्यथा उसका वर्णन करने से क्या लाभ था और कितने ही ऐसे नबी हैं जो अल्लाह की राह में मारे गए परन्तु क़ुरआन में उनके मारे जाने का वर्णन नहीं आया। अत: यह बिंदु मुझसे समझ लो और सत्यापन करने वालों में सम्मिलित हो जाओ।

संभवत: यह बात तेरे दिल में खटके कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मसीह मौऊद के आगमन के वर्णन के समय हर स्थान पर नुज़ूल का शब्द क्यों प्रयोग किया है और 'बिअसत' और 'इरसाल' और अन्य शब्दों को क्यों त्याग दिया। अत: जानना चाहिए कि इसमें एक बहुत बड़ा भेद

है जिसकी ओर क़ुरआन ने भिन्न-भिन्न स्थानों पर संकेत किया है और वह यह है कि अल्लाह के नबी अपनी मृत्यु के बाद इस संसार से अलग होकर अल्लाह की ओर उठाए जाते हैं और उन्हें इस छोड़े हुए संसार के लिए कोई चिंता नहीं होती बल्कि वे खुशी-खुशी अपने रब से जा मिलते हैं और समस्त क़ुदरतों के मालिक ख़ुदा के पास आराम तथा ऐश्वर्य के साथ प्रसन्न अवस्था में बैठ जाते हैं और अल्लाह से मिलने वाले लोगों के समूह में सम्मिलित हो जाते हैं और कभी ऐसा भी संयोग होता है कि उनमें से किसी एक (नबी) की उम्मत धरती में बड़ा उपद्रव मचाती है और अपनी पहली गुमराही की अवस्था बल्कि उससे भी बुरी और निकृष्ट अवस्था की ओर लौट जाती है जिस पर वह नबी अल्लाह तआला से यह ख़बर सुनकर कांप उठता है और अत्यंत दुखी तथा व्याकुल हो जाता है और वह चाहता है कि धरती पर आकर अपनी उम्मत का सुधार करे परन्तु वह आने का कोई मार्ग नहीं पाता क्योंकि पहले ही से अल्लाह तआला यह फ़रमा चुका है कि - اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ (अल अंबिया- 21/96) अर्थात वे लौटाए नहीं जाएंगे। तो अल्लाह तआला धरती पर उस नबी का एक समरूप पैदा करता है और उसके इरादों को उस नबी के इरादे और उसकी तवज्जो को उस नबी की तवज्जो बना देता है और उन्हें एक ऐसी चीज़ बना देता है मानो कि वे दोनों एक ही जोहर से हैं और उस नबी की रूहानियत उसके समरूप पर उतारता है जिसके परिणाम स्वरूप वह समरूप बिल्कुल उसी शान और उन्हीं शिष्टाचार और गुणों के साथ प्रकट होता है जिनसे उसका समरूप नबी विशिष्ट था। अत: यही वह कारण है जिसकी वजह से नुज़ूल का शब्द प्रयोग किया गया ताकि वह इस बात पर दलालत करे कि मसीह मौऊद असली मसीह के क़दम पर आएगा मानो कि वह वही है। बुख़ारी में जो नुज़ूल का शब्द आया है उसके अर्थ यह हैं कि आने वाला मसीह वास्तविक मसीह के स्थान पर अवतरित होगा। फिर चूंकि उपद्रवी तथा गुमराह करने वाला (दज्जाल) भिन्न-भिन्न प्रकार के छलों, बहानों और निकृष्ट सांसारिक कलाओं के साथ धरती से प्रकट होने वाला था अत: इस कारण धरती से प्रकट होने वाले दज्जाल के मुक़ाबले पर मसीह मौऊद के लिए

भी यही नुज़ूल का शब्द प्रयोग किया गया और उसमें यह संकेत है कि दज्जाल निकृष्ट योजनाओं और सांसारिक बहानों से अपने फित्ने को भड़काएगा। और मसीह मौऊद कोई सांसारिक चीज़ (अर्थात) तलवार या तीर या भाला नहीं लाएगा बल्कि वह आसमानी हथियार के साथ आएगा और फरिश्तों के परों पर (सवार होकर) आएगा। उसके साथ कोई भौतिक सामान नहीं होंगे और उसकी सहायता आसमानी निशानों और बरकतों के साथ की जाएगी। मानो एक फरिश्ता है जो सांसारिक अफ़्रीत★ को नष्ट करने और उस की बुराई के अंगारों को बुझाने के लिए आसमान से उतरेगा। जानना चाहिए कि नुज़ूल का शब्द मुसलमानों के लिए आकाशीय शुभ संदेश है ताकि कठिनाइयों के आने और सांसारिक योजनाओं और भौतिक माध्यमों की कमी के समय में उनकी आशा समाप्त न हो जाए। और ईसाइयों के प्रभुत्व, उनके शासन और उनकी ज़बरदस्त शक्ति और उनके धार्मिक पेशवाओं के छल-कपटों की शक्ति को देखकर उनके दिल कांप न जाएं। वे धार्मिक पेशवा जो सबसे बड़े कथित दज्जाल और शैतान के पूर्ण द्योतक हैं और उन जैसे तथा उनके छल-कपट का उदाहरण समस्त संसार में नहीं पाया जाता।

अत: अल्लाह ने अंतिम ज़माने के कमज़ोर मुसलमानों को शुभ संदेश दिया और फ़रमाया कि जब तुम यह देखो कि ईसाई धर्म के पेशवा समस्त पृथ्वी पर हावी हो गए हैं और उन्होंने अपनी भिन्न-भिन्न योजनाओं तथा बहानों और अपने ज्ञान तथा लोगों के दिलों को अपनी ओर खींच कर और अपने धीमे स्वभाव और कोमल वाणी और दोगली प्रवृत्ति की आवभगत द्वारा और कई प्रकार के बहाने प्रयोग करके और शिक्षा, धन, स्त्रियों, पदों, चिकित्सा की सुविधा, लोभ लालच, आशाओं और छलों से लोगों के दिलों को जीत कर और संसारिक हुकूमत और उसका प्रभुत्व दिखाकर और अपनी हुकूमत के सानिध्य और अपने साम्राज्य के शासकों के दरबारों में सम्मान के वादे देकर धरती पर बसने वालों

★**हाशिया :-** कुछ हदीसों में आया है कि दज्जाल मनुष्य प्रजाति में से नहीं होगा बल्कि वह शैतान होगा जो अंतिम युग में अपने अनुयायियों के दिलों में भ्रम पैदा करेगा और उसके अनुयायी उसके और उसके इरादे के द्योतक होंगे। इसी से।

को नष्ट कर दिया है। और तुमने उन्हें समस्त देशों को घेरे हुए पाया और अपनी बातों का जादू जगा कर और फरेब के अजूबे दिखाकर और अपनी सांसारिक कलाओं के द्वारा जो अपनी पराकाष्ठा को पहुंची हुई हैं, बहुत बड़ा उपद्रव पैदा कर दिया है। अत: न तुम डरो और न ही दुखी हो क्योंकि हम वर्तमान समय में तुम्हारी कमज़ोरी और धार्मिक मामलों में तुम्हारे आलस्य, तुम्हारे ज्ञान, तुम्हारी बुद्धि, तुम्हारे साहस, तुम्हारे माल और योजनाओं में कमी को भली-भांति जानते हैं। और हम जानते हैं कि तुम कमज़ोर क़ौम बन चुके हो इसलिए हम इन दिनों में अपनी ओर से आसमान से सहायता भेजेंगे और अपनी ओर से एक व्यक्ति को अवतरित करेंगे और हमारी सहायता पूर्णत: हमारे हाथों और हमारे आदेश से तुम्हारे पास अर्श (हमारी क़ुदरत) से आएगी, जिसमें सांसारिक माध्यमों में से किसी की मिलावट न होगी। अत: (इस प्रकार) हम अत्याचारियों पर अपने धर्म की हुज्जत पूरी करेंगे। और कुछ हदीसों में संकेत किया गया है कि मसीह मौऊद और कथित दज्जाल दोनों पूर्वी देशों में से किसी देश में अर्थात हिंदुस्तान में प्रकट होंगे। फिर मसीह मौऊद या उसके ख़लीफाओं में से कोई ख़लीफा दमिश्क की धरती की ओर यात्रा करेगा। अत: यह भावार्थ है उस कथन का जो (सहीह) मुस्लिम की हदीस में वर्णन हुआ है कि ईसा दमिश्क के मीनार के निकट नाज़िल होगा क्योंकि नज़ील (अरबी भाषा में) उस यात्री को कहते हैं जो किसी दूसरे देश से आया हो और हदीस में अर्थात पूरब के शब्द में संकेत है कि वह किसी पूर्वी देश अर्थात भारत देश से दमिश्क शहर की ओर यात्रा करेगा। और मेरे दिल में डाला गया कि दमिश्क के मीनार के पास ईसा के उतरने वाले कथन में उनके प्रादुर्भाव के ज़माने की ओर संकेत है क्योंकि उसके अक्षरों की संख्या उस हिजरी सन पर दलालत करती है जिसमें अल्लाह ने मुझे अवतरित किया है और मीनार के शब्द का वर्णन करके इस ओर संकेत है कि दमिश्क की धरती विभिन्न प्रकार के आडंबरों से अन्धकारपूर्ण हो जाने के बाद फिर मसीह मौऊद की दुआओं के कारण प्रकाशमान और रौशन हो जाएगी। और तुझे ज्ञात है कि दमिश्क की धरती ईसाइयों के फ़ित्नों का केंद्र थी।

और इसका विवरण जैसा कि हमने ईसाइयों की इंजीलों में देखा है यह है कि पौलूस वह पहला व्यक्ति था जिसने ईसाइयों के धर्म को बिगाड़ा, उन्हें गुमराह किया, उनके सिद्धांतों की धज्जियां उड़ाई और बड़ी मक्कारी से काम लिया। और दमिश्क की ओर गया और अपनी ओर से एक लंबा क़िस्सा बनाया ताकि वह उसे ईसाइयों के कुछ उन सक्रिय लोगों के सम्मुख प्रस्तुत करे जो उसके षड्यंत्रों से अनभिज्ञ थे और मूर्ख, नादान, सामान्य विचारधारा रखने वाले, कमज़ोर और कम अक्ल, वर्णित खुराफात तथा अजीबो गरीब कहानियों पर शीघ्र ईमान लाने वाले थे। चाहे उनका वर्णन करने वाला और उन्हें रिवायत करने वाला बहुत ही झूठा और उपद्रवी व्यक्ति ही हो। अत: पौलूस दमिश्क में उनमें से एक व्यक्ति से मिला जिसका नाम अनान्या था जो प्रथम श्रेणी का मंदबुद्धि और इस प्रकार की मन गढ़त बातों की ओर शीघ्र आकर्षित होने वाला था। उसने कहा कि हे मेरे स्वामी! मैंने एक विचित्र स्वप्न देखा कि मैं एक घुड़सवार समूह के साथ किसी ओर जा रहा हूं और मैं मसीह के धर्म के घोर शत्रुओं में से था और मैं दिन-रात इसी चिंता में रहता था यहाँ तक कि मसीह मुझ पर उतरा और उसने प्रकाश के बीच से मुझे पुकारा। मैंने उसकी आवाज़ सुनी और मैंने उसे पहचान लिया। फिर उसने कहा हे पौलूस! तू मुझे क्यों कष्ट देता है? क्या तू लोहे के भाले पर अपना हाथ मार सकता है? फिर उसने मुझे डांटा और डराया यहां तक कि मैं डर गया और कांप गया और मैंने कहा हे मेरे रब! मैं अपने किए पर पश्चाताप् करता हूं, मुझे आदेश दो कि मैं इसके बाद क्या करूं? तब आपने मुझे यह आदेश देते हुए कहा कि दमिश्क शहर की ओर जा और अनान्या नाम के व्यक्ति को वहां तलाश कर और उसके सामने यह सारी बात कह सुना। अत: वह तुझे बताएगा कि तुझे क्या करना है। अत: समस्त प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं कि मैंने आपको पा लिया और मैंने आप में वही विशेषताएं देखी हैं जो मेरे रब मसीह ने मुझे बताई थीं। फिर इस कपटपूर्ण भूमिका के बाद यह कहा कि हे मेरे आका! मैं यहूदियों के धर्म से विमुख हूं आप मुझे ईसाइयत के पवित्र धर्म में सम्मिलित कर लीजिए, मैं आपके पास एक मोमिन की हैसियत से और मसीह की

ओर से शुभ संदेश देने वाला बनकर आया हूं। अत: उस (पौलूस) ने अनान्या के हाथ पर ईसाइयत स्वीकार कर ली। और उसके उत्तर में अनान्या ने उसकी मांग पूरी की और उसे सम्मान प्रदान किया और दमिश्क शहर में उस अफसाने को खूब फैलाया। अत: सबसे पहली धरती जिसमें मसीह की रबूबियत (रब समझे जाने) का पौधा लगाया गया, वह दमिशक का शहर है और पौलूस ने उसमें यह गन्दे वृक्ष लगाए और उसके निवासियों को नष्ट किया। अत: समस्त ईसाई पौलूस के उस बीज से पैदा होने वाले वृक्ष हैं जो उसने दमिश्क में लगाया था। अत: अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चाहा के मसीह मौऊद की भविष्यवाणी में दमिश्क के शहर का वर्णन करें ताकि आप इस बात पर सचेत करें कि यह धरती उपद्रव का स्रोत और ईसाइयत के फ़ित्नों और मनुष्य को ख़ुदा घोषित करने का प्रथम उद्गम है।

फिर यह भविष्यवाणी है कि अंतिम युग में एकेश्वरवाद का एक उपासक एकेश्वरवाद के प्रचार-प्रसार के लिए यहां (दमिश्क) में पहुंचेगा जैसे पौलूस अपने नफ्स के बहकावे से शिर्के, कुफ्र और अपवित्रता फैलाने के लिए वहां पहुंचा ताकि ईसाइयों की निगाह में उसे एक उच्च पद प्राप्त हो जाए। सारांश यह कि दमिश्क ईसाइयों के फ़ित्नों की जड़ और उद्गम था। और उपद्रव तथा धोखेबाज़ों के धोखे का आरंभ था। तो अल्लाह ने अपने बन्दों को शुभ संदेश दिया कि मसीह की उलूहियत (ख़ुदा होने) फ़ित्ने को जड़ से उखाड़ दिया जाएगा और वह समस्त धरती से यहां तक कि दमिश्क से भी जो उन फ़ित्नों का उद्गम और स्रोत था, मिटा दिया जाएगा और पूर्ण एकेश्वरवाद यहां पहुंचेगा जिस प्रकार कि यहां से फ़ित्नों का आरंभ हुआ था। यह अल्लाह का काम है और उन लोगों की निगाह में विचित्र है जो सबसे बढ़कर रहम करने वाले ख़ुदा की रहमत के चमत्कारों पर ईमान नहीं लाते।

रही दज्जाल के वध की बात जो मसीह की निशानियों में से एक है तो हे प्रियजनो! इस बारे में अल्लाह तआला तुम्हारी सहायता करे। यह याद रखो कि दज्जाल का शब्द किसी एक व्यक्ति का नाम नहीं जो उसके माता-पिता ने रखा

हो बल्कि वह शब्दकोश की दृष्टि से एक बड़ा समूह है जो धरती के किनारों तक यात्रा करेगा और झूठ पर सच्चाई का पर्दा डालेगा और वह उसे शुद्ध और खरी-खरी सच्चाई के समान दिखाएगा और वह (दज्जाली समूह) धरती को चिकनी-चुपड़ी बातों और छल-कपट से अपवित्र कर देगा और वह छल-कपट में हर एक कपटी और धोखेबाज़ पर बाज़ी मार ले जाएगा और उसकी मुसीबतें और आफतें समस्त धरती को ढक लेंगी। और यदि दज्जाल के शब्द से कोई विशेष व्यक्ति अभिप्राय होता तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस व्यक्ति का नाम अवश्य वर्णन करते जिसे दज्जाल की उपाधि दी गई अर्थात वह नाम जो उसके माता-पिता ने उसका रखा। और फिर हुज़ूर उसके माता-पिता का नाम भी वर्णन करते परन्तु हुज़ूर ने उसके माता और पिता के नाम की कोई व्याख्या और विवरण नहीं दिया। अत: हमारे लिए अनिवार्य है कि हम स्वयं अपनी ओर से कोई विशेष व्यक्ति प्रस्तावित न करें बल्कि हम अरब के शब्दकोश देखें और उन अर्थों को प्राथमिकता दें जिनकी ओर क़ुरैश की भाषा हमारा मार्गदर्शन करती है। फिर जब उस (दज्जाल) के अर्थ सिद्ध हो जाएं कि वह षड्यंत्रकारियों का समूह है तो उस शब्द के अर्थ को अपनाने की आवश्यकता के साथ यह अनिवार्य हो गया कि हम इस बात का इक़रार करें कि वह (दज्जाल) एक बड़ा समूह है जो छल-कपट और धोखे में अपने समय के लोगों पर बाज़ी मार ले गया और उन्होंने अपने दूषित विचारों से समस्त धरती को अपवित्र कर दिया। फिर जब हम क़ुरआन की ओर लौटते हैं और उस पर विचार करते हैं कि क्या उसने दज्जाल नामक किसी विशेष व्यक्ति का वर्णन किया है तो उसमें इसका न कोई निशान है और न ही उसकी ओर कोई संकेत पाते हैं। हालांकि उन बड़ी-बड़ी घटनाओं, जिनका धर्म के मामले में हस्तक्षेप है, को वर्णन करने का वह ज़िम्मेदार है। वह फ़रमाता है कि-

مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ (अल अनआम- 6/39)

(अर्थात हमने क़ुरआन में किसी चीज़ की अनदेखी नहीं की।) इसी प्रकार और बहुत से स्थानों पर उसने फ़रमाया है कि क़ुरआन में हर चीज़ का विवरण

पाया जाता है। परन्तु हम क़ुरआन में उस दज्जाल का वर्णन जो लोगों की समझ में एक विशेष व्यक्ति है, विस्तार तो दूर संक्षेप में भी कहीं नहीं पाते। हां परन्तु हम देखते हैं कि क़ुरआन मे सविस्तार धर्म में उपद्रव करने वाले एक समूह का वर्णन किया है और उसने वर्णन किया है कि अंतिम युग में एक क़ौम मक्कारों और उपद्रवियों की होगी जो बड़ी तीव्रता से ऊंचाइयों को फलांगते हुए आएंगे और वे समुद्र की लहरों के समान धरती में उपद्रव फैलाएंगे। अत: यही वह समूह है जिसका नाम हदीसों में दज्जाल रखा गया है। और अल्लाह जानता है कि यह बात सत्य है और समस्त निशानियां प्रकट हो चुकी हैं। क्या तू नहीं देखता कि उन्होंने इन्कार और शिर्क को उससे कहीं अधिक फैलाया जो आदम से लेकर अब तक समस्त काफ़िरों ने फैलाया था। और जिन स्थानों से वे गुज़रे और जिन पर हुकूमत की वहां उन्होंने सांसारिक लाभ के लिए और उसकी धन-दौलत और भूमि, भवनों और उसके उच्च पदों के लिए झूठ और उपद्रव और झगड़ों का बीज बो दिया। और विचित्र प्रकार की गहरी चालों और झगड़ों में फसाने वाले उपायों से लोगों को एक दूसरे के विरुद्ध भड़काया और उन्होंने बुराई, नास्तिकता और अधार्मिकता का प्रचार किया और उन्होंने दुनिया वालों को दज्जाली आचरण और गंभीर फ़ित्ने सिखाए। और उन देशों में अमानत, दियानत, सच्चाई वफा, वादा, लज्जा और परलोक की चिंता शेष न रही सिवाय कुछ के।

वे सांसारिक लाभ के लिए एक दूसरे से प्रेम रखते और संसार ही के लिए एक दूसरे से द्वेष रखते हैं। और दुनिया के लिए आपस में मिलते और दुनिया के लिए बिछड़ते हैं। और वे केवल दुनिया और उसके ऐश्वर्य की चर्चा से प्रसन्न होते हैं। उनमें चोर और धोखेबाज़ और दूसरों का माल हड़प जाने वाले हैं। वे दुनिया के थोड़े से लाभ और उसके सम्मान के लिए अपने साथियों की तो क्या बल्कि अपने बाप दादों की मौत की तमन्ना करते हैं। और मैं उन्हें देखता हूं कि वे अपनी मौत से लापरवाह हैं। सारांश यह कि ईसाई क़ौम फ़ित्नों और भिन्न-भिन्न प्रकार की गुमराही फैलाने और दूसरी क़ौमों और क़बीलों में फूट डालने में बड़ी साहसी, रोबदार, कठोर, दौलतमंद बड़ी मालदार और समस्त फ़ित्नों का

उद्गम है। निकट और दूर का कोई व्यक्ति उनसे सुरक्षित नहीं। उन्होंने उन क्षेत्रों के निवासियों को एक चिड़िया के समान पाया और उनके पर नोंच लिए और उनका मांस खाया और उन्हें संसार की कठिनाइयों में छोड़ दिया और उन्हें अपने समान गुमराह और गुमराह करने वाला बना दिया।

और उन पर उनके व्यापार, बाज़ार और कमाइयां तंग हो गईं और गुमराहियों की आंधियों ने उनका ईमान छीन लिया और बड़े तूफान की तरह उन उद्दंड फ़ित्नों से उनके नौ जवान, उनकी स्त्रियां और उनकी संतान गुमराह हो गई। और सैयदों की क़ौम में से और मशाइख, उलमा और प्रतिष्ठित लोगों की संतानों में से बहुत से ईसाई हो गए। उनमें से कुछ उन (ईसाइयों) के मालों के लालच में और कुछ उनकी स्त्रियों की हवस में और कुछ शराब और दुराचार और व्यभिचार की लालसा में और चरम को पहुंची हुई ईसाइयों की आज़ादी के मोह में मुरतद हो गए और उनमें से कुछ लोग सांसारिक हुकूमतों और उसके प्रभुत्व और उसके पदों और उसके आनंदों और उसकी वासनात्मक इच्छाओं के कारण मुरतद हो गए और जिन लोगों की अल्लाह की कृपा तथा उसकी इनायत ने सुरक्षा की वे उनसे बरी हैं परन्तु वे संख्या में बहुत थोड़े हैं। अत: इस्लाम पर यह बहुत बड़ी मुसीबत और एक ऐसी आपदा है जिससे सम्मानित लोगों की रूह कांप उठती है और आसमान से उतरने वाली सहायता के बिना उससे मुक्ति संभव नहीं। क्योंकि मुसलमानों के साहस परास्त हो गए हैं और उन पर मुसीबतें टूट पड़ी हैं और गुनाहों की अधिकता हो गई है। वे संसार और उसके ऐश्वर्यों पर औंधे मुंह गिर गए हैं और उनमें से बहुत से नष्ट होने वालों के साथ नष्ट हो गए हैं। अत: तू ईसाइयों के माहूद (वादा दिए गए) दज्जाल होने और शैतान का द्योतक होने में सन्देह करने वाला न बन और तू उनके उपद्रवों और उनकी धोखेबाज़ियों की ओर, और पानियों तथा भाप से चलने वाले आविष्कारों और पहाड़ों और समुद्रों और नदियों को अधीन करने और उनके धरती के खज़ाने निकालने और उनके छल कपट और गुमराह करने की ओर देख। क्या तू पहलों में और बाद वालों में उनका कोई उदाहरण पाता है?

जहां तक कुछ इस्लामिक उलमा के इस कथन का संबंध है कि मसीह मौऊद ईसाइयों से लड़ाई करेगा और उनका वध करने या उनके मुसलमान होने के सिवा और किसी चीज़ पर राज़ी नहीं होगा, तो यह अल्लाह की किताब और उसके रसूल पर झूठ बांधना है। क्योंकि जब हम सिहाह सित्ता को ध्यानपूर्वक देखते हैं तो उनमें हम उसका कोई निशान नहीं पाते और हम यह पूरे विश्वास से जानते हैं कि उलमा ने उन आदेशों के समझने में ग़लती की है और उन्होंने उन शब्दों को अनुचित स्थान पर रखा है क्या उन्हें यह ज्ञात नहीं कि क़ुरआन इस वर्णन का सत्यापन नहीं करता और बुख़ारी जो अल्लाह की किताब (क़ुरआन) के बाद सबसे सही किताब है वह स्पष्ट वर्णन से उसे झुठलाती है बल्कि इस बारे में एक हदीस आई है जिसमें यह वर्णन है कि ईसा जंग को स्थगित कर देगा। अत: यह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि वह तलवार और भाले से नहीं लड़ेगा। अल्लाह तुम पर रहम करे न्याय से काम लो कि ईसाई अपने धर्म की प्रचार-प्रसार के लिए हमारे इस ज़माने में मुसलमानों से जंग नहीं कर रहे और न ही अपनी शक्ति से उन्हें अल्लाह के धर्म से रोक रहे हैं। अत: मुसलमानों के लिए कैसे वैध होगा कि वह मना किए जाने के बावजूद उनसे जंग करें

बल्कि अंग्रेज़ी सरकार मुसलमानों की उपकारी है और सम्माननीय मलिका जिसकी हम प्रजा हैं, वह अपने दिल में इस्लाम को दूसरे धर्मों पर प्राथमिकता देती है। अत: हमने तो इससे भी बढ़कर सुना है परन्तु हम उचित नहीं समझते कि उसका वर्णन करें। अत: सारांश यह कि वह (मलिका) अच्छे शिष्टाचार रखती है और अल्लाह ने उसके दिल में इस्लाम की मुहब्बत डाल दी है। इस कारण अल्लाह ने उसे मुसलमानों का इस सीमा तक हमदर्द बनाया है कि वह यह पसंद करती है कि उसके (अधीनस्थ) क्षेत्रों में इस्लाम का प्रचार-प्रसार हो और वह हमारी भाषा की कुछ पुस्तकें एक मुसलमान से पढ़ती है जिसे उसने अपने यहां ठहराया हुआ है और वह अपने पश्चिमी देशों में हमारे धर्म के प्रचार से प्रसन्न है बल्कि उसकी राजधानी के एक निकट क्षेत्र में उसकी क़ौम के एक समूह ने इस्लाम स्वीकार कर लिया है। तो उसने उन पर कृपा की और उन पर उपकार

किया और अपने निकट संबंधियों में उनकी पुस्तकों का प्रकाशन किया। और वह चाहती है कि उनमें से कुछ को अपने सम्मानित अधिकारियों में सम्मिलित करे। उसने उन्हें आदेश दिया है कि वे अपनी उपासना के लिए मस्जिदें बनवाएं और अमन के साथ अपने रब की उपासना करें।

और हम उस (मलिका) के अधीन अमन और शान्ति और पूरी स्वतंत्रता के साथ जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हम नमाज़ें पढ़ते और रोज़े रखते हैं और भलाई का आदेश देते और बुरी बातों से रोकते हैं। और हम जैसा चाहें ईसाइयों की आस्था का खण्डन करते हैं और इसमें कोई रुकावट और आपत्ति नहीं होती और यह सब कुछ उनकी नेक नीयति, दिल की सफाई और न्याय की पराकाष्ठा का परिणाम है। और ख़ुदा की क़सम अगर हम इस्लामी राजाओं के देशों की ओर हिजरत (प्रवास) करें तो इससे बढ़कर अमन और शान्ति न देखेंगे। और इस (मलिका) ने हम पर और हमारे बाप-दादाओं पर कई प्रकार की भलाइयों के साथ उपकार किए हैं और हमारा सामर्थ्य नहीं कि हम उनका धन्यवाद कर सकें। और उसके उपकारों में से एक बड़ा उपकार यह है कि वह स्वयं तथा उसके अधिकारी हमारे धर्म में तनिक भी हस्तक्षेप नहीं करते और उनमें से कोई भी हमें अपने कर्तव्य, सुन्नतों और नफिलों की अदायगी से नहीं रोकता और न हमें उनके क़ौमी धर्म का खण्डन करने से कोई मना करता है और वह सांसारिक नेमतों में कंजूसी नहीं करते और वह न्याय करने वालों में से हैं।

इसलिए मेरे निकट यह उचित नहीं कि हिंदुस्तान की मुस्लिम आबादी बग़ावत के मार्ग पर चले और इस उपकारी सरकार पर अपनी तलवारें उठाए या इस मामले में किसी और की सहायता करे। और किसी विरोधी से कथन, कर्म, संकेत या धन या उपद्रवपूर्ण योजनाओं के द्वारा रचित किसी षड्यंत्र में सहायता करे बल्कि यह सारे मामले पूरी तरह से हराम हैं। और जिस ने इन (वर्जित) मामलों का इरादा किया तो उसने अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा की और वह पूर्णतः गुमराह हो गया। बल्कि धन्यवाद करना अनिवार्य है और जो लोगों का धन्यवाद नहीं करता वह अल्लाह का धन्यवाद भी नहीं करता। उपकार करने

वाले को कष्ट देना शरारत और दुष्टता है और न्याय तथा इस्लामी ईमानदारी के तरीके से बाहर निकल जाना है और अल्लाह हद से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता। हां तथापि ईसाइयों के उलमा एक मनुष्य को उपास्य बनाकर और अपने शैतान की ओर बुलाकर और ईसाई धर्म का समस्त दिशाओं और दूर एवं निकट प्रचार-प्रसार करके धरती में उपद्रव फैला रहे रहे हैं। परन्तु उसमें कोई सन्देह नहीं कि इस हुकूमत का दामन इस प्रकार के मामलों तथा उनकी तहरीकों से पवित्र है और मैं यह नहीं समझता कि उनके बुद्धिमान वर्ग में से कोई आस्था रखता हो कि ईसा वास्तव में उपास्य है बल्कि वह इस प्रकार की आस्थाओं पर हंसते हैं और दिन प्रति दिन इस्लाम की ओर आकर्षित हो रहे हैं। बल्कि हम देखते हैं कि सम्माननीय मलिका की राजधानी में इस्लाम की सुगंधित हवाएं चल रही हैं और हम लोगों को हर साल इस (इस्लाम) में फौज की फौज प्रवेश करते हुए देखते हैं और पूरी स्वतंत्रता से वे ईसाइयों का खण्डन करते हैं। और उस (मलिका) के वे अधिकारी जिन्हें हिंदुस्तान में उसका प्रबंध चलाने के लिए भेजा जाता है वे जाबिरों के अत्याचार के समान लोगों पर अत्याचार नहीं करते और मुक़द्दमों का निर्णय करने में जल्दबाज़ी से काम नहीं लेते और वे अपनी प्रजा से समान व्यवहार करते हैं और लोगों पर अत्याचार नहीं करते। और हर क़ौम उनके अधीन शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करती है।

और पादरियों में से जो लोग इंजील तथा उसकी ग़लत और परिवर्तित शिक्षाओं की ओर बुलाते हैं वे भी अपने हाथों से हम पर अत्याचार नहीं करते और हम पर तलवार नहीं उठाते और अपने धर्म के लिए हमारी क़ौम से नहीं लड़ते और न हमारी औलाद को क़ैद करते हैं और न हमारे माल छीनते हैं बल्कि उनकी बुराई हम तक उनकी उपद्रव पूर्ण पुस्तकों, गुमराह करने वाले भाषणों और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अपमान और पवित्र क़ुरआन तथा उसकी शिक्षाओं को रद्द करते हुए पहुंचती है। और बरतानिया हुकूमत किसी भी मामले में उन (पादरियों) की सहायता नहीं करती और न ही उन्हें मुसलमानों पर प्राथमिकता देती है बल्कि हम देखते हैं कि इस न्यायप्रिय हुकूमत ने हर क़ौम को

पूरी स्वतंत्रता दे रखी है और कानून की सीमा तक उन्हें अनुमति दी है। अत: लोग उनके कानूनों की रियायत रखते हुए जो चाहते हैं, करते हैं और हर धर्म दूसरे धर्म का खण्डन करता है और इन क्षेत्रों में शास्त्रार्थ समुद्र की लहरों के समान चल रहे हैं और हुकुमत उनमें हस्तक्षेप नहीं करती और वह उन्हें बहस-मुबाहसा करने देती है। फिर मैंने इस गुप्त भेद को हमेशा बहुत गहरी दृष्टि से देखा है अर्थात इस मामले को कि क्यों अल्लाह तआला ने मसीह मौऊद को तलवार और भाले देकर नहीं भेजा बल्कि उसे नरमी, विनम्रता, आजिज़ी, सरल व्यवहार तथा हिकमत के साथ बहस करने और आवभगत को अपनाने और उच्चतम बात-चीत का रवैया अपनाने का आदेश दिया है। बल्कि उसने मना फरमाया है कि इस पर वह कोई और बढ़ोतरी करे। अत: मैं इस पर सोच विचार करता रहा यहां तक कि अल्लाह तआला ने मुझ पर यह भेद खोल दिया और मैंने यह जान लिया कि अल्लाह तआला किसी सुधारक को चाहे उसकी हैसियत रसूल की हो या मुजद्दिद की, केवल उन सुधारों के साथ ही अवतरित करता है जिनकी समय और लोगों के फसाद की हालतें मांग करती हों।

कभी ऐसा संयोग भी होता है कि लोग अपने शिर्क और आस्थागत फसाद के साथ-साथ अत्याचारियों, हद से बढ़ने वालों और दुराचारियों की क़ौम बन जाते हैं। वह कमज़ोरों पर अत्याचार करते और सत्यनिष्ठों से ऐसी शत्रुता करते हैं जो क़त्ल, लूट-मार और बन्दी बनाने की सीमा तक जा पहुंचती है। और वे उनका खून बहाते और उनके माल लूटते और उनकी सन्तान को बन्दी बना लेते हैं और धरती में उपद्रवी बनकर उपद्रव मचाते हैं। अल्लाह उन्हें अपनी ओर से आज़माइश के लिए शारीरिक शक्ति, माल की अधिकता और धरती में हुकूमत प्रदान करता है। फिर वे अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री करते हैं और किसी उपदेशक के उपदेश और किसी पुकारने वाले की पुकार और बुद्धिमानों के मुख से निकलने वाली हिकमत की बातों की तरफ ध्यान नहीं देते बल्कि उनके पास सबका एक ही उत्तर तलवार और भाला होता है। और वे चौपायों तथा मदहोशों जैसा जीवन व्यतीत करते हैं। उनके दिल तो हैं परन्तु वे उनके द्वारा समझते नहीं,

उनके कान हैं मगर वे उनसे सुनते नहीं और उनकी आंखें हैं परन्तु वे उनसे देखते नहीं। अल्लाह ने उन्हें जो देश, रियासत और धन संपत्ति प्रदान की है वह उसके कारण अहंकार करते हैं। वे अल्लाह के धर्म में प्रवेश करने वालों को कष्ट देते और उनका वध करने को तत्पर रहते हैं और अहंकार करते हुए अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और निशानों के देखने तथा दलीलों का दर्शन करने के बाद भी अंधे बन जाते हैं। अल्लाह की हुज्जत उन पर पूरी हो चुकी है फिर भी वे उसकी परवाह नहीं करते बल्कि अत्याचार, जातिवाद और मूर्खता के जोश, संगदिली और (धर्म) प्रचारकों को कष्ट देने में बढ़ते चले जा रहे हैं।

अत: अल्लाह ऐसी क़ौमों से सख्त नाराज़ होता है और चाहता है कि उनके प्रबंधन की एकता को तितर-बितर कर दे और उनके सम्मानित लोगों को अपमानित कर दे और उन पर धरती से या आसमान से अज़ाब उतारे या उन्हें समूहों में विभाजित कर दे ताकि उन्हें एक दूसरे की जंग का मज़ा चखाए। और वह (अल्लाह) अपने रसूल को आदेश देता है कि वह तलवार और भालों के द्वारा उनको दंड दे और मुसलमानों को उनके चंगुल से रिहाई दिलाए और अत्याचारियों की खोपड़ी तोड़े। अत: (ख़ुदा द्वारा) आदेशित रसूल एक भयानक जंग लड़ता है और धरती में कुछ इस प्रकार से रक्त बहाता है कि अहंकारी कमज़ोर हो जाते हैं और कमज़ोर शक्तिशाली हो जाते हैं और अल्लाह उनके भय को अमन में परिवर्तित कर देता है। फिर वे शान्तिपूर्वक उसकी उपासना करते हैं और उसके धर्म में अमन के साथ प्रवेश करते हैं। और अगर तू इस प्रकार के उपद्रव का उदाहरण मांगे तो वह तुझे कलीमुल्लाह (अर्थात मूसा) और ख़ातमुन्नबियीन (अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के समय में मिलेगा।

और कभी ऐसा संयोग भी होता है कि लोग अपने धर्म और अपनी ईमानदारी को नष्ट कर देते हैं परन्तु वे धर्म के लिए अल्लाह के नबी और उसके अवतारों से लड़ते नहीं और न ही तलवार और भालों के द्वारा धरती में उपद्रव करते हैं बल्कि गुमराह करने वाले भाषणों तथा झूठी बातों से उपद्रव करते हैं।

और वे इस्लामी तौर तरीकों का खण्डन भालों और तीरों से नहीं बल्कि मक्कारियों और जादुई भाषणों के द्वारा करना चाहते हैं। और वे किसी सत्याभिलाषी को जब वह सत्य को स्वीकार करने का इरादा करे, कष्ट नहीं देते और वह ऐसा दो कारणों में से किसी एक कारण से करते हैं। उनमें से एक (कारण) यह है कि जब वे क़ौमें जिनकी ओर कोई रसूल या मुहद्दस भेजा जाता है, कमज़ोर हों और किसी को कष्ट पहुंचाने की शक्ति न रखती हों तो अत्याचार की शक्ति न रखने और गिरफ़्त, क़त्ल और रक्तपात के साधन न रखने के कारण वे रसूलों पर अत्याचार नहीं करते। और अल्लाह जानता है कि वे अंतर्मन की अशुद्धि और धोखेबाज़ियों की अधिकता के बावजूद किसी को कष्ट देने और किसी सुधारक पर अत्याचार करने की शक्ति नहीं रखते। और वह देखता है कि वे कमज़ोर और पराजित हैं और कभी उस कमज़ोरी की वजह उनके वह झगड़े होते हैं जो उन में पैदा हो जाते हैं और वह झगड़े उनकी शक्ति को छीन लेते हैं। और कभी उसका कारण किसी दूसरी क़ौम का (उन पर) प्रभुत्व होता है, और कभी यह दोनों बातें इकट्ठी हो जाती हैं जो उनकी बेबसी और कमज़ोरी को बढ़ा देती हैं। उन दो में से दूसरा कारण यह है कि जब यह क़ौमें बादशाह और सुल्तान होते हुए भी सभ्य होती हैं तो वे अल्लाह के रसूलों को उनके प्रचार-प्रसार से नहीं रोकती और न अत्याचार करती हैं और न कष्ट देती हैं बल्कि उनकी हुकूमत शान्तिपूर्ण हुकूमत होती है। वे धरती में अत्याचारी, रक्तपाती और अल्लाह के मार्गों से रोकने वाले बनकर नहीं फिरते और न ही वे झूठ के प्रचार के लिए हद से आगे बढ़ने वालों के समान तलवारे सूंतते हैं बल्कि वे छल-कपट करते हैं और लोगों को अपने धर्म की ओर आकर्षक बहानों से बुलाते हैं। वे दिलों में बिगाड़ पैदा करते हैं और शरीरों को कष्ट नहीं देते बल्कि वे लोगों को अय्याशीपूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए छोड़ देते हैं।

अगर तू क़ौमों में से इस प्रकार का उदाहरण तलाश करे तो तू वह उदाहरण ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में पाएगा क्योंकि हज़रत ईसा एक ऐसी क़ौम की ओर भेजे गए थे जो उनके आगमन से पूर्व टुकड़े-टुकड़े कर दी गई थी और

उन पर अपमान तथा भुखमरी की मार मारी गई थी और उनकी रियासतें नष्ट हो चुकी थीं और हुकूमतें मिट चुकी थीं। और रोमी साम्राज्य यहूदियों के धर्म में हस्तक्षेप नहीं करता था इसलिए ईसा अलैहिस्सलाम ने यह उचित न समझा कि वह उनसे लड़ाई करें क्योंकि रसूल (हमेशा) नरमी, प्यार और रहमत से बुलाया करते हैं और वे केवल उन लोगों पर तलवार उठाते हैं जो उन पर तलवार उठाएं और वे बुद्धि के बिगाड़ का बुद्धि के साथ और तलवार के उपद्रव का तलवार के साथ सुधार करते हैं। और वे प्रत्येक रोग का उसी के अनुसार उपचार करते हैं अर्थात तलवार का उपचार तलवार से और बातों का उपचार बातों से। और वे पसंद नहीं करते कि वे हद से बढ़ने वाले बनें।

उसी प्रकार मुझे अंतिम ज़माने के लिए मुजद्दिद और मुहद्दस बनाकर भेजा गया है और मैंने यह देखा है कि इस्लाम धर्म के शत्रु मुसलमानों से धर्म की खातिर नहीं लड़ते और उन्होंने अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए न तो तलवारें सोंती हैं और न भाले ताने हैं बल्कि वह अपने धर्म का प्रचार चालबाज़ियों, बौद्धिक उपायों और गुमराह करने वाली पुस्तकों के लेखन द्वारा करते हैं। और वे षड्यन्त्र करते हैं और अल्लाह भी उपाय करता है और अल्लाह उपाय करने वालों में सबसे श्रेष्ठ उपाय करने वाला है। अत: अल्लाह की शान से दूर है कि वह उन पर तलवार सोंतें और यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह ऐसी क़ौम का वध करे जो तलवारों से मुक़ाबले के लिए नहीं निकलती बल्कि एक दार्शनिक के समान तर्क मांगती है। और उसके साथ यह बात भी है कि यह लापरवाह क़ौम है जो दूर देशों से आई है और वे क़ुरआन की वास्तविकताओं और उसके नूरों और उसके सूक्ष्म तथा गूढ़ ज्ञान में से कुछ भी नहीं जानते। उन लोगों का भरण पोषण इस्लाम से दूर के देशों में हुआ है इसलिए जब वह मुसलमानों से मिले और हमारे देश में आए तो उन्होंने मुसलमानों को गुनाहों के भिन्न-भिन्न अंधकार में पाया, तो इन बिदअतियों (आडंबरियों) को देखकर उनके दिल सख्त हो गए और वह ख़ुदा के कथन से लापरवाह थे। और उन्होंने न तो हमें दुख दिया न हमारा वध किया और न ही धरती में कोई रक्तपात का प्रयत्न किया।

अत: कोई सद्बुद्धि और सदविवेक यह स्वीकार नहीं करेगा कि हम भलाई का बदला बुराई से दें और उस क़ौम को दुख दें जिन्होंने हम पर उपकार किया। और उनकी गर्दन पर तलवार उठाएं पूर्व इसके कि हम उनके दिलों पर हुज्जत पूरी करें और पूर्व इसके कि हम बौद्धिक तर्क तथा आकाशीय निशानों से उन्हें निरुत्तर करें और पूर्व इसके कि यह बात स्पष्ट हो जाए कि उन्होंने निशान देखने के बाद तथा सन्मार्ग के गुमराही से पूर्णत: अलग हो जाने के बाद, जानबूझ कर अवज्ञा की। अत: यदि हम रहम, नर्मी और सदव्यवहार छोड़ दें और रक्तपाती तथा जाबिर बनकर उन पर उठ खड़े हों तो इससे बड़ा कोई पाप न होगा और इस अवस्था में हम अत्यंत दुष्ट अत्याचारी होंगे।

अत: इसी कारण अल्लाह ने मुझे मसीह के पदचिन्हों पर भेजा है क्योंकि उसने मेरे ज़माना को उसके ज़माने के समान और इस क़ौम को उस की क़ौम के समान देखा और उन्हें एक-दूसरे का ऐसा समानांतर पाया जैसे एक जूता दूसरे जूते के समान होता है। अत: उसने आसमानी अज़ाब से पहले मुझे भेजा ताकि मैं उस क़ौम को डराऊं जिनके बाप-दादाओं को नहीं डराया गया। और ताकि मुजरिमों का मार्ग स्पष्ट हो जाए। और तू देखता है कि अधिकतर मुसलमान अपनी इच्छाओं के अधीन हो गए हैं और उन्होंने नमाज़, रोज़ा छोड़ दिया है और उनके दिल सख्त तथा स्वभाव बिगड़ गए हैं और उनमें केवल इस्लाम का नाम और मस्जिदों में प्रवेश करने की रस्म शेष रह गई है। और वे नहीं जानते कि निष्ठा क्या चीज़ है और शौक और ज़ोक़ क्या चीज़ है और उनमें से बहुत से व्यभिचार करते, शराब पीते, झूठ बोलते और माल से अथाह मुहब्बत करते हैं। और वे बुराइयां करते और बिदअतों (आडंबरों) को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु वसल्लम के कथन पर प्राथमिकता देते हैं। फिर लापरवाह काफ़िरों का क्या हाल होगा कि जो कुछ जानते ही नहीं। और न बुद्धि रखते हैं और केवल सोए हुए व्यक्ति के खर्राटों के समान बातें करते हैं। वे नहीं जानते कि इस्लाम के मार्ग क्या हैं? और दलीलें क्या चीज़? अत: इससे स्पष्ट हुआ कि यह आस्था जो लोगों के दिलों में बैठ चुकी है कि महदी और मसीह दोनों अंतिम युग में प्रकट होंगे

और हर उस व्यक्ति से लड़ेंगे जो मुसलमान नहीं होगा, उसकी कोई वास्तविकता नहीं बल्कि यह एक स्पष्ट ग़लती है।

क्या सद्बुद्धि फ़त्वा देती है कि अल्लाह जो रहीम और करीम है (कृपालु और दयालु है) वह लापरवाहों की उनकी लापरवाही की अवस्था में गिरफ्त करेगा और उनको तलवार या आसमानी अज़ाब से नष्ट कर देगा? जब कि अभी तक उन्होंने इस्लाम की वास्तविकता और उसकी दलीलों को समझा ही नहीं और न ही उन्हें यह मालूम है कि ईमान और धर्म क्या है। फिर जब रहम और मुहब्बत का आधार उस मुसीबत का निवारण करना है जिसने हर चीज़ को घेर लिया है और बढ़ चुकी है तो फिर लेखनी (क़लम) के उपद्रव का इलाज तलवारों और तीरों से करना कैसे उचित हो सकता है? बल्कि यह तो इस बात का स्पष्ट इक़रार है कि हम उत्तर देने का सामर्थ्य नहीं रखते और यह कि हमारे पास उन गुमराह करने वाली दलीलों का उत्तर सिवाय काटने वाली तलवार की मार और काफ़िरों का वध करने के अतिरिक्त कुछ नहीं तो फिर सन्देह करने वाले बेख़बर आरोपक का दिल तलवार की मार या कोड़े या भाले और तीर के घाव से कैसे संतुष्ट हो सकता है? बल्कि यह तमाम बातें तो सन्देह करने वालों के सन्देह में और बढ़ोतरी कर देंगी।

फिर तुझे ज्ञात होना चाहिए कि अल्लाह का क्रोध इंसान के क्रोध के समान नहीं और अल्लाह केवल उस क़ौम की ओर तवज्जो करता है जिस पर हुज्जत पूरी हो चुकी हो और उनके सन्देहों का निवारण किया जा चुका है और उनके सन्देह दूर कर दिए गए हों और उन्होंने निशानों को देख लिया हो। फिर हार्दिक विश्वास के बावजूद उन्होंने इन्कार कर दिया हो और जानते-बूझते हुए अपनी गुमराहियों पर डट गए हों। और हमारे (उन) भाइयों पर आश्चर्य है कि वे जानते हैं कि अल्लाह का अज़ाब किसी क़ौम पर केवल हुज्जत पूरी करने के बाद ही आता है फिर भी इस प्रकार की बातें करते हैं। और दूसरा आश्चर्य यह है कि वे महदी की प्रतीक्षा करते हैं बावजूद इसके कि वह 'इब्ने माजा' की सहीह (हदीस)में और मुस्तद्रक में हदीस "ला महदी इल्ला ईसा" (अर्थात् ईसा ही महदी हैं) पढ़ते

हैं और जानते हैं कि सहीहैन (अर्थात बुख़ारी और मुस्लिम) ने महदी के बारे में रिवायत की हुई हदीसों के कमज़ोर होने के कारण उसका वर्णन त्याग दिया है और वे जानते हैं कि महदी के प्रादुर्भाव की समस्त हदीसें ज़ईफ़ और मजरूह हैं बल्कि इनमें से कुछ मौज़ूअ हैं जिन से कुछ सिद्ध नहीं होता परन्तु फिर भी वे उस के आगमन पर हठ करते हैं, मानो उन्हें ज्ञान ही नहीं है।

रहे वह मतभेद जो मसीह के प्रादुर्भाव की भविष्यवाणी में वर्णित हैं तो इस विषय में बुनियादी बात यह है कि इस संसार से संबंधित भविष्य की भविष्यवाणियां आज़माइश अर्थात परीक्षा से खाली नहीं होतीं और ऐसे भी जब अल्लाह उनके द्वारा एक क़ौम को आज़माना और दूसरी क़ौम को सम्मान देना चाहता है तो इस प्रकार की भविष्यवाणियों में रूपक और लाक्षणिकता (मजाज़ात) रख देता है और उनके उद्गम को उन लोगों की आज़माइश के लिए जो रसूलों का इन्कार और जल्दबाज़ों के समान कुधारणा करते हैं, सूक्ष्म और गुप्त और बारीक बना देता है। क्या तू यहूदियों की ओर नहीं देखता कि किस प्रकार वे उस सच्चे रसूल का इन्कार करके दुर्भाग्यशाली हो गए जो सूर्य के उदय होने के समान प्रकट हुआ जबकि उसके आगमन की ख़बर उनकी पुस्तकों में मौजूद थी और यदि अल्लाह चाहता तो तौरात में वह सब कुछ लिख देता जो सन्मार्ग की ओर उनका मार्गदर्शन करता और अवश्य उन्हें हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम, आपके पिता का नाम और आपके शहर का नाम और आपके प्रादुर्भाव के समय तथा आपके सहाबियों के नाम और आपके हिजरत के मक़ाम (प्रवास स्थल अर्थात मदीना) का नाम बता देता और पूरी स्पष्टता के साथ लिख देता कि वह बनी-इस्माईल में से आएगा। परन्तु अल्लाह ने ऐसा नहीं किया बल्कि तौरात में उसने लिख दिया कि वह तुम में से तुम्हारे भाइयों में से होगा। अत: यहूदियों की राय का इस ओर झुकाव हो गया कि अंतिम ज़माने का नबी बनी-इस्राईल में से होगा। और वह इस मुजमल (अस्पष्ट) शब्द के कारण एक बहुत बड़ी कठिनाई में पड़ गए। अत: जिन लोगों ने पूरे तौर पर विचार न किया वे नष्ट हो गए और उन्होंने समझा कि वह

मौऊद (वादा दिया गया) नबी उनकी क़ौम तथा उन्हीं के देश से प्रकट होगा और उन्होंने ख़ातमुन्नबिय्यीन को झुठला दिया।

और तू जान ले कि यह तरीका अत्याचार की प्रकारों में से नहीं बल्कि यह अल्लाह के अपने नेक बन्दों पर एहसानों में से है क्योंकि वह उन सूक्ष्म दृष्टि वाली खबरों के समय अपने रब की ओर से एक सूक्ष्म परीक्षा के द्वारा आज़माए जाते हैं। फिर वे अपनी बुद्धि के प्रकाश और अपनी समझ-बूझ की विशेषता के कारण सीधे मार्ग को पहचान जाते हैं जिस पर उनके लिए उनके रब की ओर से पुण्य निश्चित हो जाता है और अल्लाह उनके दर्जे बुलंद कर देता है और उन्हें अन्य लोगों से विशिष्ट कर देता है और उन्हें ख़ुदा के सानिध्य प्राप्त लोगों से मिला देता है। और यदि वह ख़बर पूर्णत: स्पष्ट तथा खुली-खुली निशानियों पर आधारित होती तो फिर मामला ईमान की सीमा से आगे बढ़ जाता है और एक उपद्रवी शत्रु उस ख़बर का उसी प्रकार इक़रार कर लेता है जैसे एक आज्ञाकारी मोमिन। और धरती पर इन्कार करने वालों में से कोई एक भी शेष न रहता। क्या तू नहीं देखता कि समस्त धर्म तथा मतों के लोग अपने बहुत से परस्पर मतभेदों के बावजूद इस बात में मतभेद नहीं करते कि रात अंधकार पूर्ण होती है और दिन प्रकाशमान, और यह कि एक, दो का आधा होता है और यह कि हर इंसान की एक जीभ, दो कान, एक नाक और दो आंखें होती हैं। परन्तु अल्लाह ने ईमान की बातों को स्पष्ट चीज़ों में से नहीं बनाया और अगर वह ऐसा करता तो पुण्य व्यर्थ हो जाता और कर्म नष्ट। अत: तू विचार विमर्श कर क्योंकि अल्लाह विचार-विमर्श करने वालों का मार्गदर्शन करता है। और जो व्यक्ति ज्ञानी, नेक और सत्याभिलाषी होगा अल्लाह उसके दिल को प्रकाशमान कर देगा और उसे अपना मार्ग दिखाएगा और अपनी ओर से विवेक प्रदान करेगा और निस्सन्देह अल्लाह अपने कर्मों को सही प्रकार से करने वालों के पुण्य को व्यर्थ नहीं किया करता। और जिन लोगों ने मुझे काफ़िर कहा और मुझ पर लानत कि उन्होंने अल्लाह की किताब पर पूरा विचार नहीं किया और कुधारणा से काम लिया और उन्होंने अपने ऊपर रख कर यह नहीं सोचा कि

कोई बुद्धिमान स्वयं के लिए बुराई और गुमराही को नहीं अपनाता और अल्लाह पर झूठ नहीं गढ़ता। फिर वह किस प्रकार ऐसे मार्ग को अपना सकता है जिसके बारे में उसे ज्ञात है कि उस में उसके लिए तबाही है। और वह कौन सी चीज़ है जो इस बात का ज्ञान होने के बावजूद कि वह इस लोक तथा परलोक में घाटे का मार्ग है, उसे इस मुसीबत पर प्रेरित करती है? मेरे शत्रुओं पर यह बात छुपी नहीं कि मैं वह व्यक्ति हूं कि जिसकी सारी उम्र धर्म के समर्थन में बीती है यहां तक कि मुझ पर जवानी से बुढ़ापा आ गया। फिर कोई बुद्धिमान यह कैसे सोच सकता है कि मैं अपने इस बुढ़ापे में और अपनी शारीरिक कमज़ोरी तथा क़ब्र में पांव होने के स्थिति में कुफ्र और नास्तिकता को अपना लूंगा। पवित्र है मेरा रब! यह तो खुला-खुला अत्याचार ही है। और मैं वह हूं जो उनके आरोप से बरी हूं। मैं अपनी आस्थाओं पर नज़र डालते हुए उसमें भ्रम का कण मात्र भी नहीं पाता। और जो मेरे दिल और उनके दिल में है उसे अल्लाह भली-भांति जानता है और मैंने उसी पर भरोसा किया है और उनके बुद्धिमानों को मेरे विरोध पर केवल सांसारिक मोह माया और उसके सम्मान ने प्रेरित किया है और उस ईर्ष्या ने उन्हें उकसाया है जो अधिकतर उलमा के भीतर उनका एक अभिन्न अंग है, सिवाए उसके जिसे अल्लाह अपनी रहमत से सुरक्षित रखे। और अधिकतर उलमा का ऐसा ही स्वभाव चला आया है कि जब भी किसी व्यक्ति को अपनी समझ से ऊपर बात कहते हुए देखते हैं तो वह उस पर विचार नहीं करते और न वह कहने वाले से कुछ पूछते हैं ताकि वह उन पर उसकी वास्तविकता स्पष्ट करे बल्कि केवल सुनकर ही भड़क उठते हैं। और पहली सभा में ही उसको काफ़िर क़रार दे देते हैं और उस पर लानत भेजते हैं और उसके बारे में बढ़-बढ़ कर बातें करते हैं और निकट है कि वे आक्रोश में आकर उसका वध कर दें। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है -

يٰحَسۡرَةً عَلَى الۡعِبَادِ ۚ مَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ

(सूरह यासीन- 36/31)

(अर्थात - हाय अफसोस बन्दों पर! जब भी उनके पास कोई नबी आया उन्होंने

उससे हंसी ठट्ठा ही किया है।)

और सच्ची बात वही है जिसे अल्लाह जानता है। इस ज़माने में मुसलमान चिड़ियों के बच्चों की तरह हैं जो आध्यात्मिक व्यस्कता को नहीं पहुंचे। और वे अपने घरों, बसेरों और घोंसलों से गिर गए हैं। अत: अल्लाह ने इरादा फ़रमाया कि वह उन्हें मेरे परों के नीचे इकट्ठा करे और उन्हें ईमान की मिठास और ख़ुदा-ए-रहमान की मुहब्बत का स्वाद चखाए और उन्हें अध्यात्म ज्ञानियों में से बनाए। अत: वह जो बुद्धिमान है और मुक्ति का इच्छुक है उसे चाहिए कि वह मेरी ओर आने में जल्दी करे। मेरी ओर वही व्यक्ति शीघ्रता पूर्वक आएगा जो अल्लाह से डरता है और दुनिया तथा उसके माल दौलत और उसके मान-सम्मान को अपने हाथों से दूर फेंक देता है और परलोक के लिए जल्दी करता है और वह स्वयं के लिए हर लान-तान, शत्रुओं की बातें, अपने प्यारों की जुदाई और गालियां देने वालों की गालियों को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लेता है।

चेतावनी

हे मेरे भाई! अल्लाह तुझे अपनी ओर से सीधे मार्ग दिखाए, तुझे जान लेना चाहिए कि जो लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पार्थिव शरीर के साथ आसमान की ओर चढ़ने और फिर उतरने की आस्था रखते हैं वे उनके जीवित होने पर अल्लाह के इस कथन से दलील प्रस्तुत करते हैं कि-

وَ اِنۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤۡمِنَنَّ بِهٖ قَبۡلَ مَوۡتِهٖ

(अन्निसा- 4/160)

(अनुवाद - और अहले किताब में से कोई (पक्ष) नहीं परन्तु उसकी मौत से पहले निस्सन्देह उस (मसीह) पर ईमान ले आएगा।)

और अल्लाह जानता है कि वे ऐसी दलील प्रस्तुत करने में ग़लती पर हैं और वे केवल अनुमान से काम ले रहे हैं और लोगों को बिना जानकारी के गुमराह करते हैं। फिर वे तलवार की तरह काटने वाली ज़बानों से सच्चों को कष्ट पहुंचाने के लिए उठ खड़े होते हैं और अल्लाह से नहीं डरते और मोमिनों का नाम काफ़िर रखते हैं, उनका उदाहरण उस क़ौम के समान है जिन्होंने कष्ट पहुंचाने और कुफ्र फैलाने और मोमिनों के बीच फूट डालने के लिए एक मस्जिद बनाई। और तू जानता है कि अगर हम अनुमान के तौर पर यह स्वीकार कर लें कि समस्त यहूदी ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु से पूर्व उन पर ईमान ले आएंगे जैसा कि वे इस आयत से समझते हैं तो ऐसे अर्थ करने से बड़ी कठिनाई सामने आएगी और निश्चित तौर पर यह भी अनिवार्य होगा कि समस्त बनी इस्राईल ईसा अलैहिस्सलाम के उतरने तक जीवित और सही सलामत रहें। क्योंकि समस्त यहूदियों के ईमान का मामला केवल मसीह के जीवित होने के साथ पूरा नहीं होता बल्कि उसके पूरा करने के लिए बनी इस्राईल के तमाम काफ़िरों का प्रथम दिन से क़यामत के दिन तक जीवित रहना अनिवार्य होगा और उसके साथ-साथ क़यामत के दिन तक मसीह का जीवित रहना भी अनिवार्य है। और यह

बात स्पष्ट है कि बहुत से यहूदी मर चुके और दफन हो चुके और वह ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान नहीं लाए। अत: यह कहना कैसे सही हो सकता है कि समस्त यहूदी मसीह पर उनके देहांत से पूर्व ईमान ले आएंगे? अत: निस्सन्देह यह अर्थ पूर्णत: ग़लत हैं और उनका बिगाड़ स्पष्ट है और उसके सही होने की कोई गुंजाइश नहीं। इसलिए अगर तू विचार करने वालों में से है तो विचार कर। फिर जब हम दोबारा इस पर दृष्टि डालते हैं और उनके कथन, आस्था तथा उनकी इस परस्पर सहमति पर गहरा चिंतन करते हैं कि जो लोग मसीह के उतरने के समय मौजूद होंगे वे सब के सब इस्लाम धर्म में सम्मिलित हो जाएंगे और उनमें से कोई व्यक्ति भी इस्लाम का इन्कार करने वाला नहीं रहेगा और इस्लाम के अतिरिक्त समस्त उम्मतें नष्ट हो जाएंगी। तो हमने इस आस्था को क़ुरआन की शिक्षा के अनुसार नहीं पाया बल्कि इसे रब्बुल आलमीन के कथन के विपरीत पाया है। क्योंकि क़ुरआन स्पष्ट शिक्षा देता है और बुलंद आवाज़ से गवाही देता है कि यहूदी और ईसाई क़यामत के दिन तक शेष रहेंगे जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

فَاَغۡرَيۡنَا بَيۡنَهُمُ الۡعَدَاوَةَ وَ الۡبَغۡضَآءَ اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ

(अल माइदा- 5/15)

(अनुवाद- अत: हमने उनके बीच क़यामत के दिन तक परस्पर शत्रुता और ईर्ष्या मुक़द्दर कर दिए हैं।) और स्पष्ट है कि शत्रुता तथा ईर्ष्या का अस्तित्व शत्रुता तथा ईर्ष्या रखने वालों के अस्तित्व की एक शाख है और यह उनके अस्तित्व के बाद ही सिद्ध हो सकता है। और हमने यह बात उनसे लगातार कही और एक से अधिक बार कही ताकि वे नसीहत हासिल करें या वे डरने वालों में से हो जाएं। हम यह बात कैसे स्वीकार कर लें कि समस्त उम्मतों के लोग किसी समय नष्ट हो जाएंगे। क्या हम पवित्र क़ुरआन की आयतों का इन्कार कर दें। हालांकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि: -

وَ اَلۡقَيۡنَا بَيۡنَهُمُ الۡعَدَاوَةَ وَ الۡبَغۡضَآءَ اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ

अर्थात- और हमने उनके बीच क़यामत के दिन तक शत्रुता और ईर्ष्या

डाल दिए हैं (अल मायदा- 5/65) और फ़रमाया कि -

وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

(आले इमरान- 3/56)

(अर्थात- और मैं उन लोगों को जिन्होंने तेरा अनुसरण किया है उन लोगों पर जिन्होंने इन्कार किया है, क़यामत के दिन तक प्रबल करने वाला हूं।) और स्पष्ट है कि क़यामत के दिन तक यहूदियों का पराजित होना। इस बात की मांग करता है कि वे क़यामत के दिन तक जीवित रहें और कुफ्र पर अड़े रहें। और यह बात भी स्पष्ट है कि हर वह बात जो क़ुरआन की बताई हुई ख़बरों के विपरीत और विरोधी हो वह खुला-खुला झूठ है और वह महानतम सत्यवादी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हदीसों में से नहीं। समस्त उम्मतों के नष्ट होने से अभिप्राय वास्तव में उनका दलीलों से नष्ट होना है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि जो दलील से नष्ट हुआ वह वास्तव में नष्ट हुआ और जिसने किसी पर हुज्जत पूरी की तो मानो उसने उसे नष्ट ही कर दिया। अत: तू विवेकियों के समान चिंतन-मनन कर।

और तू जान ले कि समस्त उम्मतों के नष्ट होने वाली हदीस सही है परन्तु उलमा ने उसे समझने में ग़लती की है। उन्होंने विभिन्न धर्मों के नष्ट होने का जो भाव समझा है वह सही नहीं बल्कि उसके सही अर्थ वह हैं जिनकी ओर क़ुरआन ने आयत -

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (अस्सफ्फ़- 61/10)

(अनुवाद- वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे धर्म के हर विभाग पर पूर्णता विजयी कर दे।) में संकेत किया है। अत: इस आयत में क़ुरआन ने हर धर्म और मत पर इस्लाम धर्म के प्रभुत्व की ओर संकेत किया है। और तू जानता है कि जब कोई धर्म पराजित और पराधीन हो जाए तो यह उस धर्म के मानने वालों की स्पष्ट दलील के साथ एक प्रकार की तबाही होती है। अत: इस तहक़ीक़ से सिद्ध हो गया कि आयत "क़ब्ला

मौतिही" का जो अर्थ उलमा ने किया है वह ग़लत अर्थ है और अब तो तुझ तक रब्बुल आलमीन का कथन पहुंच चुका है।

और जहां तक बुख़ारी में और हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से इस सिलसिले में रिवायत का संबंध है तो तू उसे ध्यान देने योग्य चीज़ न समझ जबकि हमारे पास अल्लाह की किताब है इसलिए तू उसके अतिरिक्त किसी और से हिदायत न मांग क्योंकि इस अवस्था में तो तू असफल लौटेगा और तू कदापि हिदायत पाने वालों में से नहीं होगा। 'तफसीर मज़हरी' के लेखक ने कहा है कि अबू हुरैरा रज़ि० महान सहाबी थे परन्तु उन्होंने इस अर्थ में ग़लती की है और हदीस के अन्दर कोई ऐसी बात नहीं है जो उनके विचार का समर्थन करती हो। और इस आयत से जो उन्होंने समझा है हमारे निकट वह इस आयत से नहीं निकलता। इसलिए निस्सन्देह उन्होंने स्पष्ट रूप से सत्य के विपरीत कहा है। और यह सिद्ध नहीं हुआ कि उनके कथन का उद्गम नबूवत का दीपक तथा पवित्र सुन्नत है बल्कि वह एक सतही राय है और आपने कुछ बातों के समझने में अधिकतर ग़लती की है जिस प्रकार कि आपकी ग़लती उस हदीस में सिद्ध है जिसका इमाम बुख़ारी ने अपनी सहीह में वर्णन किया है। वह फ़रमाते हैं कि: मुझे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने कहा कि हमसे अब्दुल रज़्ज़ाक़ ने बयान किया कि मुझे मुअम्मर ने ज़हरी के वास्ते से बताया कि सईद बिन मुसय्यब ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत की है कि वह कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब भी कोई बच्चा पैदा होता है तो शैतान उसे जन्म के समय छूता है और वह शैतान के उस छूने से चीख उठता है सिवाए मरियम अलैहस्सलाम और उनके बेटे (ईसा[अ०]) के। अबू हुरैरा कहते हैं कि अगर तुम चाहो तो तुम आयत-

وَ اِنِّیۡۤ اُعِیۡذُهَا بِكَ وَ ذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ

(आले इमरान- 3/37)

(अनुवाद- और मैं उसे तथा उसकी संतान को धुत्कारे हुए शैतान (के आक्रमण) से तेरी शरण में देती हूं। आले इमरान- 3/37) पढ़ लो। यह है जो अबू हुरैरा ने समझा। परन्तु वह व्यक्ति जिसने अल्लाह की किताब के समुद्र से

चुल्लू भर भी (ज्ञान) लिया हो तो वह स्पष्ट रूप से जानता है कि यह विचार ग़लत है और वह यह भी जानता है कि अबू हुरैरा रज़ि० ने इस राय में जल्दबाज़ी की है और उन्होंने क़ुरआन की खुली-खुली गवाही को गहरी नज़र से नहीं देखा। क्या उन्हें यह ज्ञात न था कि अल्लाह तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मासूमों में से सर्वप्रथम क़रार दिया है और ज़मखशरी ने इस हदीस के भावार्थ के बारे में व्यंग करते हुए उसके सही होने के बारे में प्रश्न चिन्ह लगाया है। और यह कैसे वैध हो सकता है कि हम इब्ने मरियम और उनकी मां को शैतान के स्पर्श से सुरक्षित रहने के लिए विशिष्ट करें जबकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि -

اِنَّ عِبَادِیْ لَیْسَ لَكَ عَلَیْهِمْ سُلْطٰنٌ (अलहिज्र- 15/43)

(अनुवाद - निस्सन्देह (जो) मेरे बंदे (हैं) उन पर तुझे कोई प्रभुत्व प्राप्त न होगा।) और फ़रमाया -

وَ سَلٰمٌ عَلَیْهِ یَوْمَ وُلِدَ وَ یَوْمَ یَمُوْتُ وَ یَوْمَ یُبْعَثُ حَیًّا

(मरियम - 19/16)

(अनुवाद - सलामती है उस पर जिस दिन उसका जन्म हुआ और जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन उसे पुन: जीवित करके उठाया जाएगा।) और शब्द 'अस्सलाम' के अर्थ सुरक्षा और सच्चरित्रता के ही हैं और फ़रमाया -

اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِیْنَ (अल हिज्र - 15/41)

(अर्थात- सिवाए उन में से तेरे निष्ठावान बन्दों के।) और यह हदीस केवल इसी अवस्था में सही हो सकती है जब हम इब्ने मरियम और उनकी मां से सामान्य का अर्थ लें और यह कहें कि हर संयमी और पवित्र आत्मा जो इन दोनों की विशेषताएं अपने अंदर रखता हो वह इब्ने मरियम और उनकी मां है और उसी की ओर ज़मख़शरी रहमहुल्ला ने संकेत किया है और यह भावार्थ अनुमान से दूर नहीं। क्योंकि नबी लक्षण तथा रूपकों की शैली में बातें करते हैं और इस प्रकार के उदाहरण हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन में अधिकता से मिलते हैं। अत: इस बारे में आप का कथन है कि ईसा इब्ने मरियम तुम में

अवश्य अवतरित होंगे, अर्थात उनकी विशेषताएं रखने वाला एक व्यक्ति तुम में अवतरित होगा और वह ईसा का स्थानापन्न होगा। परन्तु अधिकतर लोग इन दो हदीसों के अर्थ नहीं समझे और उन्होंने आस्था बना ली कि ईसा जो बनी इस्राईल का एक नबी था वही आसमान से उतरेगा। हालांकि यह एक स्पष्ट ग़लती है।

'क़ब्ल मौतिही' (अर्थात उसकी मृत्यु से पहले) वाली आयत के बारे में अबू हुरैरा रज़ि० की ग़लती पर दूसरा संदर्भ 'उबइ बिन कअब' की किरअत अर्थात 'मौतिहिम' (अर्थात उनकी मृत्यु से पहले) में है क्योंकि वह इस प्रकार पढ़ा करते थे-

وَ اِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهِمْ

अत: इस किरअत (पढ़ने के तरीके) से सिद्ध हो गया कि शब्द "मौतिही" में सर्वनाम "हि" ईसा अलैहिस्सलाम की ओर नहीं लौटता बल्कि अहले किताब (यहूदियों तथा ईसाइयों) की ओर लौटता है। अत: उबइ बिन कअब की किरअत के बाद सत्याभिलाषियों के लिए और किस प्रमाण की आवश्यकता है? फिर इसके साथ मुफस्सिरीन (क़ुरआन के व्याख्याकारों) ने भी तो इस बात में मतभेद किया है कि "बिही" का सर्वनाम किस की ओर लौटता है। उनमें से कुछ ने यह कहा है कि आयत "लयुमिनन्न बिही" मैं जो सर्वनाम पाया जाता है वह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर लौटता है और यह कथन समस्त कथनों से श्रेष्ठ है और उन व्याख्याकारों में से कुछ ने कहा है कि यह सर्वनाम पवित्र क़ुरआन की ओर लौटता है और कुछ ने कहा है कि इसका संकेत अल्लाह तआला की ओर है और कुछ ने इस सर्वनाम को ईसा अलैहिस्सलाम की ओर फेरा है और यह कथन कमज़ोर है जिस की ओर तहक़ीक़ करने वालों में से किसी ने ध्यान नहीं दिया। अत: खेद है हमारे विरोधी शत्रुओं पर कि वे क़ुरआन और उसकी स्पष्ट बातों को छोड़ते हैं बल्कि उनके दिल उसके बारे में लापरवाह हैं। वे अपने भाइयों के साथ मिलकर यह कहते हैं कि हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों का अनुसरण करते हैं जबकि वे अनुसरण करने वाले नहीं हैं बल्कि वे उन कथनों को त्याग देते हैं जो अल्लाह के रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सिद्ध हैं। वे पवित्र से अपवित्र को परिवर्तित कर लेते हैं और ज्ञान रखते हुए सत्य को छुपाते हैं।

उनका उदाहरण उस खूंखार पशु जैसा है जो मुर्दे खाने का आदी हो और वह फलों तथा उन जैसी दूसरे सुंदर और स्वच्छ खाद्य पदार्थों की ओर ध्यान नहीं देता और जंगलों में मुर्दे के लिए भागता फिरता है और क़ब्रें खोदता है और वह गधे, कुत्ते, सूअर आदि हर प्रकार का मुर्दा खोजता है। और यदि वह उसे मिल जाए तो वह उससे बहुत प्रसन्न होता और खूब इतराता है और धुत्कारने वालों के धुत्कारने पर भी उस मुर्दे से अलग नहीं होता। क्या उन्हें यह ज्ञात नहीं कि शब्द 'तवफ़्फ़ी' जो क़ुरआन में मौजूद है उसे अल्लाह ने उन मृत्यु प्राप्त लोगों के लिए प्रयोग किया है जो उससे पहले गुज़र चुके हैं या उसके बाद मृत्यु को प्राप्त हो गए। क्या रब्बुल आलमीन की गवाही पर्याप्त नहीं ? क्या उनके लिए वह (अर्थ) पर्याप्त नहीं जिसके अरब लोग आज तक आदी हैं। (अब भी) किसी अनपढ़ मूर्ख अरब से जब कहा जाए कि "तुवुफ्फिया फुलानुन" तो वह समझ जाएगा कि वह व्यक्ति मर गया है। अत: विचार करो क्या तुम्हें उन अरबों में यह मुहावरा प्रचलित नज़र नहीं आता? फिर देखो कि वह किस प्रकार मुंह फेरते हुए फ़रार हो गए।

और उनमें से कुछ कहते हैं कि आयत 'फलम्मा तवफ़्फ़यतनी' बिलकुल सही है और निस्सन्देह ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु पर स्पष्ट रूप से दलालत करती है। वह निस्सन्देह मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं और हमारा इस बात पर ईमान है और तफसीर की पुस्तकें इस वर्णन से भरी पड़ी हैं। परन्तु ईसा अलैहिस्सलाम मरे नहीं रहे बल्कि वह 3 दिन के बाद या 7 घंटे बाद पुन: जीवित हो उठे। उसके बाद वह पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर उठाए गए और फिर वह अंतिम युग में धरती पर उतरेंगे और 40 साल तक रहेंगे, फिर दोबारा मृत्यु को प्राप्त होंगे और मदीना की धरती में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र में दफन किए जाएंगे। उनके कथन का सारांश यह है कि समस्त सृष्टि के लिए तो केवल एक मौत है परन्तु मसीह के लिए दो मौतें हैं। परन्तु जब हम

अल्लाह तआला की पुस्तक क़ुरआन में विचार करते हैं तो उस कथन को स्पष्ट प्रमाणों के विपरीत पाते हैं। क्या तू नहीं देखता कि अल्लाह तआला ने अपनी सुदृढ़ पुस्तक में एक ऐसे मोमिन के बारे में उदाहरण के तौर पर वर्णन किया है जो, अल्लाह के द्वारा जन्नत में शाश्वत जीवन मिलने तथा बिना मौत के सम्मान के स्थान में ठहराने पर, स्वयं पर रश्क (बराबरी की चेष्ठा) करता है।

اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ۔ اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَ مَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ۔ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (साफ्फात - 37/59 से 61)

(अनुवाद- अतः क्या हम मरने वाले नहीं थे सिवाए हमारी पहली मौत के और हमें कदापि दण्ड नहीं दिया जाएगा। निस्सन्देह यही (ईमान लाने वाले की) एक बहुत बड़ी सफलता है।)

मेरे प्रिय! इस बात पर विचार कर कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने पहली मौत के बाद दूसरी मौत के न होने के बारे में संकेत किया है और मौत के बाद हमें परलोक में शाश्वत जीवन की ख़ुशख़बरी दी है। इसलिए तू इन्कार करने वालों में से न बन। और तू जानता है कि 'अ फमा नहनु बिमय्येतीन" वाक्य में 'हम्ज़ा' प्रश्नवाचक चिन्ह के लिए है और इसमें आश्चर्य के अर्थ पाए जाते हैं। और "फ" अक्षर यहां महजूफ़ पर अतफ है अर्थात यह कि क्या हम अपने कर्मों के सीमित होने के बावजूद जन्नत की नेमतों में हमेशा रहेंगे और हम मरेंगे नहीं? और तुझे यह ज्ञात हो कि यह प्रश्न जन्नतियों का उस समय होगा जब वे अल्लाह तआला का आदेश सुनेंगे कि -

كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (अल मुर्सलात- 77/44)

(अनुवाद- मज़े से खाओ और पियो क्योंकि यह इनाम तुम्हारे कर्मों का परिणाम है।) जैसा कि अल्लाह तआला के कथन "हनीअम्" की व्याख्या में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाह अन्हु से रिवायत है ऐसे अवसर पर वे (जन्नती) कहेंगे कि -

اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ۔ اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى (साफ़्फ़ात- 37/59,60)

(अनुवाद - क्या हम मरने वाले नहीं थे सिवाए हमारी पहली मौत के?) और याद रखो कि उन जन्नतियों का यह कथन प्रसन्नता और आनंद के तौर पर होगा।

फिर जान लो कि यहां यह अपवाद संलग्न है और कुछ के निकट यह अपवाद असंलग्न "परन्तु" के अर्थों में है। और हर हाल में इस आयत से यह सिद्ध होता है कि जन्नतियों को शाश्वत और हमेशा की ख़ुशख़बरी दी जाएगी और उन्हें यह भी ख़ुशख़बरी दी जाएगी कि उनके लिए पहली मौत के अतिरिक्त और कोई मौत नहीं और यह स्पष्ट दलील है (इस बात की) कि अल्लाह ने जन्नतियों के लिए दो मौतें नहीं बनाईं बल्कि उसने उन्हें इस मौत के बाद जो हर व्यक्ति के लिए मुक़द्दर है, शाश्वत जीवन की ख़ुशख़बरी दी है। और इस आयत के अंत में उसने फ़रमाया है कि- اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (साफ़्फ़ात -37/61)

(अनुवाद - निस्सन्देह यही ईमान लाने वाले की एक बहुत बड़ी सफलता है।) उसने यह संकेत किया है कि नेमतों, खुशियों और प्रसन्नताओं से परिपूर्ण शाश्वत जीवन और मौत का न होना (उसकी) महान कृपाओं में से है।

अत: जब यह बात दृढ़ता पूर्वक सिद्ध हो गई तो फिर यह कैसे अनुमान किया जा सकता है कि ईसा जैसा नबी सानिध्य प्राप्त लोगों की इस पंक्ति में सम्मिलित होने के बावजूद इस महान कृपा से वंचित हो? और कैसे कल्पना की जा सकती है कि अल्लाह अपने वादे के विपरीत करे और उसे संसार तथा उसके दुखों और विपत्तियों और मुसीबतों और कठिनाइयों और सख़्तियों की ओर वापस भेजे और फिर उसे पुन: मृत्यु दे। पवित्र है अल्लाह यह (उस पर) बहुत बड़ा आरोप है। और कोई व्यक्ति जो मोमिन हो यह उसकी शान के अनुकूल नहीं कि वह ग़लती का ज्ञान होने के बाद भी उसको दोहराए।

और नबी इस दुनिया को छोड़ कर उस समय तक परलोक नहीं जाते जब तक कि उन संदेशों को पूर्णत: पहुँचा न दें जिन के प्रचार-प्रसार के लिए वह अवतरित किए जाते हैं। और हर युग को (अपने समय के) नबी के अस्तित्व से एक सम्बन्ध होता है इसलिए हर नबी उसी संबंध की रियायत से भेजा जाता है। और अल्लाह तआला के आदेश-

وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ (अहज़ाब - 33/41)

(अर्थात्- बल्कि वह अल्लाह का रसूल है और नबियों का ख़ातम है) में उसी की ओर संकेत है।

अत: यदि हमारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अल्लाह की किताब क़ुरआन को आने वाले समस्त युगों तथा उनमें रहने वालों से इलाज के दृष्टिकोण से संबंध न होता तो यह महान नबी (मुहम्मद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनके इलाज और सुधार के लिए क़यामत के दिन तक के लिए अवतरित न किए जाते। अत: हमें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद किसी और नबी की आवश्यकता नहीं क्योंकि आपके अध्यात्मलाभ समस्त ज़मानों पर फैले हुए हैं। और आपके वरदान समस्त औलिया, क़ुतुब और मुहद्दसों के दिलों पर उतरते हैं, बल्कि समस्त सृष्टि पर भी, यद्यपि उन्हें इस बात का ज्ञान न हो कि यह वरदान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही की ओर से जारी हैं। अत: यह आप का समस्त लोगों पर महान उपकार है।

और वह लोग जिन को इस अनपढ़ नबी रसूल के ज्ञान तथा आध्यात्म का बहुत अधिक लाभ प्राप्त हुआ है तो उनमें से कुछ लोगों ने तो अल्लाह की किताब पर विचार करने और उसके सूक्ष्म रहस्यों से अर्थ निकालने की ओर ध्यान दिया है और कुछ दूसरे लोग हैं जिनकी दौड़-धूप अल्लाह तआला से ज्ञान प्राप्त करने में रही। तो वास्तव में यही लोग बुद्धिमान, मुहद्दस और ख़ुदाई बुद्धिमत्ता के वारिस हैं। और सब इसी पवित्र स्रोत से लेते हैं और क़यामत के दिन तक इसके लाभों से पोषण पाते रहेंगे और उसी की ओर अल्लाह तआला ने अपने कथन-

وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (अल जुम्आ - 62/4)

(अनुवाद - और उन्हीं में से दूसरों की ओर भी उसे अवतरित किया है जो अभी उन से नहीं मिले।) में संकेत किया है। अर्थात हज़रत मुहम्मद स०अ०व० अपनी उम्मत के अंतिम लोगों का अपनी आंतरिक ध्यानशक्ति के द्वारा उसी प्रकार शुद्धीकरण करेंगे जैसे आप सहाबा का शुद्धिकरण किया करते थे। अत: तू इस आयत पर विचार कर और प्रत्येक जल्दबाज़ के उपद्रव से अल्लाह की

शरण मांग। चाहे उस जल्दबाज़ को तेरे यहां कितना ही सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त हो या वह तेरे बहुत ही निकट संबंधियों में से हो। और तू धरती में कोई ऐसी सदात्मा नहीं पाएगा जो मार्गदर्शक से जुदा हो जाए और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जाम से एक घूंट भी न पिए। इसलिए तू हुज़ूर स०अ०व० के सिवा किसी और की ओर ध्यान न दे, चाहे वह नबी हो या रसूल। और तुझ पर अनिवार्य है कि जो कुछ तुझे कहा गया है उसे स्वीकार कर और यहां-वहां की बातों से बच और यह जान ले कि आप 'ख़ातमुन्नबियीन' हैं और आपके प्रकाशमान सूर्य के बाद उन अनुयायियों के ही सितारे उदय हो सकते हैं जो आपके नूर से लाभान्वित हों। आप नूरों के उद्गम स्थल हैं और निकट है कि आप का नूर इन्कार करने वाली क़ौम के प्रांगण में उतर आए।

अब हम फिर अपनी पहली बात की ओर लौटते हैं और करते हैं कि जिस आयत का हमने अभी वर्णन किया है अर्थात अल्लाह तआला के कथन- "इल्ला मौततनल ऊला" (अर्थात सिवाए पहली मौत के कोई मौत नहीं- अनुवादक)। जब हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का देहांत हुआ और लोगों ने आप के देहांत के बारे में मतभेद किया तो प्रथम ख़लीफ़ा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह अन्हु ने इस आयत से दलील दी। और हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हु ने यहां तक कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वास्तविक रूप से मृत्यु को प्राप्त नहीं हुए बल्कि आप पुनः संसार में आएंगे और मुनाफिकों (दोगले प्रवृत्ति के लोगों) के नाक और हाथ और कान काटेंगे। इस पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह ने उन्हें इस बात से रोका और मना किया। फिर आप तेज़ी से हज़रत आयशा रज़ि० के घर गए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र लाश के पास गए जो बिस्तर पर थी। फिर आपने हुज़ूर के चेहरे से चादर हटाई और आपके (चेहरे) को चूमा, रो पड़े और फ़रमाया- "आप जीवित होने और मृत्यु को प्राप्त होने (दोनों अवस्थाओं) में पवित्र हैं। अल्लाह आप पर आप की पहली मौत के अतिरिक्त दो मौतें इकट्ठी नहीं करेगा।"

इस प्रकार आपने इस कथन के साथ उमर के कथन का खण्डन कर दिया। और आपके कथन का स्रोत अल्लाह तआला की आयत- "इल्ला मौततनल ऊला" ही था। और हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह अन्हु को क़ुरआन के सूक्ष्म ज्ञान और उसके भेदों और अध्यात्म रहस्यों से एक विचित्र संबंध था, और आप को पवित्र क़ुरआन में से विषयों के निकालने में पूर्ण महारत प्राप्त थी। अत: इसी कारण आप के हृदय का सत्य की ओर मार्गदर्शन किया गया और आप समझ गए कि दुनिया की ओर लौटना दूसरी मौत है और यह जन्नतियों के लिए वैध नहीं और दलील इसकी अल्लाह का वह कथन है जो उसने जन्नतियों के मुंह से-

اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَ مَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ۔ (साफ़्फ़ात- 37/60)

(अर्थात- सिवाए हमारी पहली मौत के और हमें कदापि अज़ाब नहीं दिया जाएगा) कहलवाया। क्योंकि जन्नत वालों का दुनिया की ओर लौटना, फिर उनका मरना और जान निकलने तथा बीमारियों के कष्टों का सहन कारण, यह एक प्रकार का अज़ाब है जबकि अल्लाह ने उन्हें हर एक अज़ाब से मुक्ति दी है और उन्हें उनके परलोक ग्रह की ओर स्थानांतरित करने के दिन से ही प्रत्येक सुविधा और आनंद प्रदान करके अपनी शरण प्रदान की है। फिर यह कैसे संभव है कि वह दोबारा दुखों के घर की ओर लौटें। अत: जन्नतियों के कथन- "वमा नह्नु बिमुअज़बीन" के यह अर्थ हैं।

सारांश यह कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह अन्हु ने इस आयत के साथ हज़रत उमर के कथन का खण्डन किया। फिर इस पर ही बस नहीं किया बल्कि आप मस्जिद में गए और सहाबा का एक समूह आपके साथ गया। तब आप आए और मिंबर पर खड़े हुए और आपने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उन समस्त सहाबियों को जो उपस्थित थे, अपने पास इकट्ठा कर लिया। फिर आपने अल्लाह की प्रशंसा की और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजा और फ़रमाया- हे लोगो! जान लो कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। अत: जो कोई मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उपासना करता है तो

उसे यह जान लेना चाहिए कि आप का देहांत हो गया है और जो अल्लाह की उपासना करता है तो वह (अल्लाह) जीवित है और उस पर मौत नहीं आएगी। फिर आप ने यह आयत पढ़ी -

وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاْئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ (आले इमरान- 3/145)

(अनुवाद- हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम केवल एक रसूल हैं और उनसे पहले समस्त रसूल मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। तो क्या यदि वह मृत्यु को प्राप्त हो गए या उनका वध हो गया तो तुम इस्लाम धर्म को छोड़ दोगे?) फिर इस आयत से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बारे में इस बात को आधार बना कर दलील की व्याख्या की कि समस्त नबी मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं। जब सहाबियों ने (हज़रत अबू बकर) सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह अन्हु का यह कथन सुना तो किसी एक सहाबी ने भी आपके इस कथन का खण्डन न किया और न ही किसी ने यह कहा कि हे व्यक्ति! तूने झूठ बोला है या तूने अपनी व्याख्या करने में ग़लती की है या तूने अधूरी व्याख्या प्रस्तुत की है और तू सही राय देने वाले लोगों में से नहीं।

अत: यदि वे इस बात पर आस्था रखने वाले होते कि ईसा अलैहिस्सलाम अब तक जीवित हैं तो वे हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह अन्हु का खण्डन करते और कहते कि आप इस आयत से समस्त नबियों की मृत्यु का अर्थ कैसे ले रहे हैं? क्या आप नहीं जानते कि ईसा अलैहिस्सलाम तो आसमान की ओर जीवित उठा लिए गए हैं और वह अंतिम युग में आएंगे? अत: जब ईसा अलैहिस्सलाम दोबारा संसार में आने वाले हैं और आपका इस पर ईमान भी है तो फिर इसमें क्या आपत्ति है कि हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी हमारे पास (दोबारा) पधारें जैसा कि हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हु ने समझा है जिनके मुख से सत्य ही निकलता है और जिन्हें सही राय देने वालों में बहुत सम्मान प्राप्त है और जिन की राय कई अवसरों पर क़ुरआनी आदेशों के अनुकूल

निकली है और इससे अधिक यह कि वह मुल्हम और मुहद्दसों में से हैं। और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु निस्सन्देह मुसलमानों के लिए एक ऐसी विपत्ति थी कि उस जैसी विपत्ति उन पर कभी नहीं आई। अत: आश्चर्य नहीं कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम संसार में वापस लौटें। बल्कि आप का वापस लौटना तो मसीह के वापस लौटने से बहुत अधिक सही, उचित और लाभदायक है। और आप के पवित्र वजूद की आवश्यकता मुसलमानों को मसीह के वजूद की अपेक्षा कहीं अधिक है। परन्तु उन्होंने इन शब्दों में हज़रत अबू बकर का खण्डन नहीं किया बल्कि वे सब चुप हो गए और उन्होंने अपने हाथ में से इन्कार के तीर फेंक दिए और आप रज़ि अल्लाह अन्हु की बात स्वीकार कर ली और रो पड़े और "इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन" (अनुवाद:- हम अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर हमें लौट कर जाना है।) कहा और वे समस्त नबियों की मृत्यु पर विचार करते हुए इस बात से संतुष्ट हो गए कि वह सब मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं और उन में से कोई एक भी सदा रहने वाला नहीं।

और जब यह बात सिद्ध हो गई कि जन्नतियों का और उन लोगों का जो मलीके मुक़्तदर (अर्थात ख़ुदा) के पास प्रसन्न तथा आनंद के साथ बैठे हैं, (दुनिया में) लौटना वर्जित है और उनका अपनी नेमतों तथा आनन्दों से बाहर निकलना अल्लाह के वादे के विपरीत है तो फिर एक बुद्धिमान मोमिन यह कैसे वैध क़रार दे सकता है कि मसीह अलैहिस्सलाम इस महान सफलता से वंचित हैं। और हर व्यक्ति के लिए तो एक मौत है और उसके लिए दो मौतें ? क्या यह आस्था क़ुरआनी प्रमाणों के विपरीत नहीं? इसलिए सोच और अल्लाह से दुआ कर कि वह तुझे विचार-विमर्श करने वालों जैसी समझ प्रदान करे। और अल्लाह तआला ने दूसरे अवसरों पर फ़रमाया है कि -

وَ مَا هُمۡ مِّنۡهَا بِمُخۡرَجِيۡنَ (अल हिज्र - 49)

(अनुवाद- और न वे उन (जन्नतों) से कभी निकाले जाएंगे।)

और फ़रमाया कि -فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ

(अनुवाद- अत: जिस रूह के बारे में उसने मौत का फैसला कर लिया हो वह उसे रोक लेता है। अज़्ज़ुमर -39/43)

और फ़रमाया - وَ حَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ

(अर्थात् किसी बस्ती के लिए जिसे हमने नष्ट कर दिया हो निश्चित है कि वे लोग फिर लौट कर नहीं आएंगे। (अंबिया - 21/96)

अत: हे प्रिय! विचार कर, हम इस स्पष्ट सच्चाई को केवल कमज़ोर विचारों और ग़लत अनुमानों के आधार पर कैसे त्याग दें। अत: तू विचार कर और अल्लाह का संयम धारण कर क्योंकि अल्लाह तआला संयम धारण करने वाले लोगों को पसंद करता है।

संभवत: तेरे हृदय में यह बात खटके कि स्वर्ग में प्रवेश करने के बाद तो मुर्दों का संसार की ओर लौटना वर्जित है परन्तु स्वर्ग में प्रवेश होने से पूर्व उनके लौटने में क्या आपत्ति है? तो तू जान ले कि क़ुरआन की समस्त आयतें इस बात पर दलालत करती हैं कि मुर्दा कदापि संसार की ओर नहीं लौटेगा, चाहे वह स्वर्ग में हो या नर्क में या उन दोनों से बाहर। और हमने अभी तुम्हारे सम्मुख आयत - -فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ (अज़्ज़ुमर - 39/43)

(अनुवाद- अत: जिस रूह के बारे में उसने मौत का फैसला कर लिया हो वह उसे रोक लेता है।) और اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ (अंबिया - 21/96) (अनुवाद- यह कि वह लोग फिर लौट कर नहीं आएंगे) पढ़ी है और इसमें सन्देह नहीं कि यह आयतें स्पष्ट रूप से इस बात पर दलालत करती हैं कि इस संसार से जाने वाले उसकी ओर कभी भी वास्तविक रूप से लौट कर नहीं आएंगे। वास्तविक लौटने से मेरा अभिप्राय मुर्दों का अपनी समस्त इच्छाओं तथा अनिवार्यताओं के साथ और बुरे-भले कर्म करने और अपने कमाए हुए कर्मों पर प्रतिफल के अधिकार के साथ वापस आना है। और इस से बढ़कर यह कि इस वास्तविक लौटने से मेरा अभिप्राय मुर्दों का उन लोगों से मिलना है जिन्हें वे छोड़ कर चले

गए अर्थात बाप, दादा, बेटे, भाई, पत्नियां और पति और खानदान के वे समस्त लोग जो संसार में उपस्थित हैं। और इसी प्रकार उनका अपने मार्लों की ओर जो उन्होंने कमाए और उन घरों की ओर जिनका उन्होंने निर्माण किया और उन खेतियों की ओर जिनका उन्होंने बीजारोपण किया और उन खज़ानों की ओर जो उन्होंने इकट्ठे किए, लौटना अभिप्राय है। फिर वास्तविक लौटने की शर्तों में यह भी सम्मिलित है कि वे दुनिया में वैसे ही जीवन व्यतीत करें जैसे पहले व्यतीत किया करते थे। और यदि वे विवाह की आवश्यकता समझें तो विवाह भी करें और यह कि अगर वे अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाएं तो उनका ईमान स्वीकार कर लिया जाए और उस कुफ्र की ओर ध्यान न दिया जाए जिस पर उनकी मृत्यु हुई बल्कि दुनिया में वापस आ जाने और मोमिन बन जाने के बाद उनका ईमान उन्हें लाभ दे। परन्तु हम इन वादों में से कोई भी क़ुरआन में नहीं पाते और न कोई ऐसी सूरत ही मौजूद पाते हैं जिसमें इन विषयों का वर्णन किया गया हो, बल्कि उसके विपरीत पाते हैं जैसा कि अल्लाह फ़रमाता है कि -

اِنَّ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا وَ مَاتُوۡا وَ ہُمۡ کُفَّارٌ اُولٰٓئِکَ عَلَیۡہِمۡ لَعۡنَۃُ اللّٰہِ وَ الۡمَلٰٓئِکَۃِ وَ النَّاسِ اَجۡمَعِیۡنَ۔ خٰلِدِیۡنَ فِیۡہَا (बक़रा- 2/162,163)

(अनुवाद- निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने कुफ्र (इन्कार) किया और कुफ्र ही की अवस्था में मर गए यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह की लानत है और फरिश्तों की और समस्त इंसानों की। इस लानत में वे एक लंबे समय तक रहने वाले होंगे।)

अत: विचार कर कि अल्लाह ने किस प्रकार काफ़िरों के लिए हमेशा की लानत का वादा किया है जैसा कि इस आयत का सही अर्थ है। फिर यदि वे दुनिया की ओर लौटें और अल्लाह की पुस्तकों तथा रसूलों पर ईमान लाएं तो निश्चित है कि उनसे उनका ईमान स्वीकार न किया जाए और हमेशा के लिए वह कथित लानत उनसे हटाई न जाए। और तू जानता है कि यह बात क़ुरआन के आदेशों के विपरीत है जैसा कि बुद्धिमानों पर स्पष्ट है।

हां तथापि मुर्दों का उन अनिवार्यताओं के बिना जिनका हमने वर्णन किया है, जीवित होना या जीवितों का एक क्षण भर के लिए मार देना और फिर उनका अविलंब जीवित किया जाना जैसा कि हम क़ुरआन करीम के वृतांतों में उनका वर्णन पाते हैं, तो वह एक अलग बात है और अल्लाह तआला के भेदों में से एक भेद है और इसमें न तो वास्तविक जीवन के लक्षण हैं और न ही वास्तविक मृत्यु के लक्षण पाए जाते हैं। बल्कि वे अल्लाह तआला के निशानों में से और उसके कुछ नबियों के चमत्कारों में से हैं। हमारा इस पर ईमान है यद्यपि हम इसकी वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं परन्तु हम उसका नाम न तो वास्तविक जीवन रखते हैं और न ही वास्तविक मृत्यु। उदाहरण स्वरूप यदि एक व्यक्ति किसी नबी के चमत्कार से 1000 साल बाद जीवित हो फिर उसे अविलंब मार दिया जाए और वह अपने घर वापस न आए और न ही अपने परिवार की ओर तथा सांसारिक इच्छाओं और आनन्दों की ओर लौटे और उसे यह अधिकार प्राप्त न हो कि उसकी पत्नी और उसके धन और उसकी मिल्कियत समस्त चीज़ें दूसरे वारिसों से लेकर उसे लौटाई जाएं बल्कि उसने उन कथित वस्तुओं में से किसी एक वस्तु को छुआ तक न हो और वह अविलंब मर गया हो और मुर्दों से जा मिला हो तो हम ऐसे जीवित होने का नाम वास्तविक जीवित होना नहीं रख सकते। बल्कि हम उसे अल्लाह तआला के निशानों में से एक निशान कहेंगे और उसकी वास्तविकता रब्बुल आलमीन के सुपुर्द कर देंगे।

और निस्सन्देह मुर्दों का जीवित करना और उन्हें दुनिया की ओर भेजना अल्लाह की किताब को उल्टा के रख देगा। बल्कि यह सिद्ध करेगा कि वह अधूरी है और लोगों के धर्म तथा दुनिया के लिए अत्यंत फ़ित्ने का कारण होगा और फ़ित्नों में से सबसे बड़ा फ़ित्ना धर्म का फ़ित्ना होता है। उदाहरण स्वरूप एक स्त्री ने एक पति से विवाह किया और वह मर गया, फिर उसने एक दूसरे पति से विवाह कर लिया परन्तु वह भी मर गया, फिर उसने तीसरे से विवाह किया और वह भी चल बसा। फिर अल्लाह तआला ने उन सबको एक ही साथ जीवित कर दिया। और वे पति उस स्त्री के बारे में झगड़ने लगे

और उनमें से हर एक ने यह दावा किया कि वह उसकी पत्नी है। तो अल्लाह की किताब (क़ुरआन) जो अपने आदेशों और सीमाओं के निर्धारण में पूर्ण है, उसकी शिक्षानुसार इन में से कौन उस स्त्री का अधिक हक़दार होगा? क़ाज़ी (निर्णायक) उनके बीच कैसे फ़ैसला करेगा और उनके माल, उनकी संपत्ति और घरों के बारे में अल्लाह की किताब से कैसे निर्णय करेगा? क्या ये वारिसों से वापस लेकर उन मुर्दों को दे दिए जाएंगे जो जीवित हो गए? यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल के आदेश के बारे में पूर्ण जानकारी रखते हो तो व्याख्या करो तुम्हें इसका प्रतिफल मिलेगा।

और इसी प्रकार वह मौत जो घड़ी दो घड़ी की हो और फिर मुर्दा जीवित कर दिया जाए तो ऐसी मौत वास्तविक मौत नहीं होगी बल्कि वह अल्लाह तआला के निशानों में से एक निशान होगा और उसकी वास्तविकता सिवाए उस अल्लाह के कोई और नहीं जानता। और तू जानता है कि मुर्दों को जीवित करने के बारे में क़ुरआन में अल्लाह का केवल एक ही वादा है जो क़यामत के दिन प्रकट होगा। और उसने क़यामत के दिन से पहले मुर्दों के वापस न लौटने की सूचना दी है इसलिए हम इस सूचना पर ईमान लाते हैं और क़ुरआन को मतभेदों तथा विरोधाभासों से पवित्र समझते हैं। और आयत- فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ (अनुवाद- अत: जिस रूह के बारे में उसने मौत का फैसला कर लिया हो वह उसे रोक लेता है। अज़्ज़ुमर -39/43) और आयत وَّ مَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ (अनुवाद- और न वे उन (जन्नतों) से कभी निकाले जाएंगे। अल हिज्र- 49) पर ईमान लाते हैं।

और हम यह नहीं कहते कि जन्नती परलोक सिधार जाने के बाद जन्नत से कहीं दूर स्थान पर क़यामत के दिन तक क़ैद कर दिए जाते हैं, और यह कि क़यामत से पहले केवल शहीद लोग ही जन्नत में प्रवेश करेंगे। नहीं, ऐसा कदापि नहीं बल्कि हमारे निकट नबी सबसे पहले (जन्नत में) प्रवेश करने वाले होंगे। क्या ऐसा मोमिन जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता है वह

ऐसी कल्पना कर सकता है कि नबी और सिद्दीक़ दोबारा उठाए जाने के दिन तक जन्नत से दूर रखे जाएंगे और उसकी सुगंध तक न पा सकेंगे और केवल शहीद ही अविलंब हमेशा रहने के लिए जन्नत में प्रवेश करेंगे।

अत: हे मेरे भाई! जान ले कि यह आस्था रद्दी, ग़लत और अपमान से भरी हुई है। क्या तूने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन को नहीं पढ़ा कि "जन्नत मेरी क़ब्र के नीचे हैं" और आप ने फ़रमाया कि- "मोमिन की क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।" और अल्लाह तआला ने अपनी सुदृढ़ पुस्तक क़ुरआन में फ़रमाया है कि -

يَاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۔ارْجِعِىٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۔فَادْخُلِىْ فِىْ عِبٰدِىْ ۔ وَ ادْخُلِىْ جَنَّتِىْ (अल फ़ज्र - 89/28 से 31)

(अनुवाद - हे सत्वगुण से युक्त आत्मा! अपने रब की ओर लौट जा, रज़ामन्द रहते हुए और रज़ा पाते हुए। और फिर मेरे बन्दों में सम्मिलित हो जा और मेरी जन्नत में प्रवेश कर जा) और दूसरे स्थान पर फ़रमाया-

قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ (यासीन - 36/27)

(अर्थात- उसे कहा गया कि जन्नत में प्रवेश कर जा) और इसी प्रकार उसने एक ऐसे व्यक्ति का वृतांत हमारे लिए वर्णन किया है जो मर गया था और जन्नत में प्रवेश कर गया था और दुनिया में उसका एक पापी मित्र था और वह मित्र भी मर गया और वह नर्क में गया तो जन्नत में जाने वाले व्यक्ति ने अपने साथी का वृतांत जन्नतियों के सम्मुख वर्णन किया और-

قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ۔ فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِىْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ۔ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ۔ وَ لَوْ لَا نِعْمَةُ رَبِّىْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ۔

(साफ्फात - 37/55 से 58)

(अनुवाद - उसने कहा कि क्या तुम झांकोगे। फिर उसने स्वयं नर्क में झांका तो उसने (अपने उस साथी को) नर्क में पड़ा देखा तो उसे कहने लगा ख़ुदा की क़सम! तू तो मुझे भी नष्ट करने ही वाला था। और यदि मेरे रब का उपकार न

होता तो मैं भी नर्क में पड़ने वालों में से होता।)

और तू जानता है कि यह वृत्तांत स्पष्ट रूप से इस बात पर दलालत करता है कि मोमिन अपनी मौत के बाद अविलंब जन्नत में चले जाएंगे। फिर वे उससे निकाले नहीं जाएंगे और वे उसमें हमेशा आराम और ऐश्वर्य के साथ रहते चले जाएंगे और इसी प्रकार क़ुरआन से सिद्ध होता है कि नारकी नर्क में मौत के बाद अविलंब प्रवेश कर जाएंगे जैसा कि यह बात उन लोगों पर छुपी नहीं जो आयत-

فَرَاٰهُ فِیْ سَوَآءِ الْجَحِیْمِ (साफ़्फ़ात- 56)

(अनुवाद - तो उसने (अपने उस साथी को) नर्क में पड़ा देखा।) पर विचार करते हैं और जैसा कि अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया है कि -

مِمَّا خَطِیْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا (नूह- 71/26)

(अनुवाद - वे अपनी ग़लतियों के कारण डुबो दिए गए। फिर आग में डाले गए) और अगर तू हदीस से कोई गवाह चाहता है तो मेराज की हदीसों को देख क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात नर्क का दृश्य देखा और उसी प्रकार स्वर्ग को भी देखा तो आपने स्वर्ग में स्वर्गीय लोगों को और नर्क में नारकियों को देखा। एक पक्ष सुख समृद्धि में और दूसरा पक्ष अज़ाब (यातना) दिए जाने वालों में से है।

और अगर तू यह कहे कि अल्लाह की किताब और सहीह हदीसें इस बात पर गवाह हैं कि दोबारा उठाया जाना सत्य है और कर्मों का हिसाब-किताब सत्य है और अल्लाह का अपने बंदों से पूछताछ करना ऐसी सच्चाई है जो निस्सन्देह घटित होने वाली है। तो फिर उन समस्त घटनाओं के बाद अर्थात सबको इकट्ठा किए जाने, हिसाब-किताब और कर्मों की नापतोल करने के बाद स्वर्गीय अपने स्थान स्वर्ग में और नारकी अपने नर्क के स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। यदि यह बात सत्य है तो फिर स्वर्गीयों और नारकियों का अपने-अपने स्थानों में प्रवेश करना कैसे संभव हो सकता है जब तक कि समस्त शरीरों को इकट्ठा और समस्त कर्मों की नापतोल न हो जाए जैसा कि मुसलमानों की आस्थाओं से सिद्ध है?

तो हमारा उत्तर यह है कि यदि हम इन आयतों के शब्दों को उनके व्यवहारिक रूप पर चरितार्थ करें तो अल्लाह की किताब की व्यवस्था धरम-भरम हो जाएगी और अल्लाह की आयतों में एकरूपता शेष नहीं रहेगी बल्कि इस अवस्था में यह अनिवार्य होगा कि हम इक़रार करें कि क़ुरआन मतभेदों और विरोधाभासों से भरा पड़ा है और उस की आयतें एक-दूसरी के विपरीत हैं। क्या तू उन आयतों को नहीं देखता जो स्वर्गीय लोगों के स्वर्ग के बागों में और नारकियों के भड़कती अग्नियों में अविलंब प्रवेश होने पर दलालत करती हैं? तो जान ले कि इन आयतों में कोई मतभेद नहीं और हिसाब, कर्मों की नापतोल किए जाने तथा शरीरों के इकट्ठा किया जाने से यह अभिप्राय नहीं है कि स्वर्गीय, अपने स्वर्ग तथा अपने मान-सम्मान के स्थान से निकाले जाएं और उनसे पूछ-ताछ तथा हिसाब-किताब हो कि शायद वे नारकी हैं। और नारकी अपने नर्क से बाहर निकाले जाएं और उनके बारे में यह विचार किया जाए कि संभवत: वे स्वर्गीय हैं, क्योंकि अल्लाह तआला तो परोक्ष को जानता है और वह लोगों के ईमान और उनके कुफ्र को उनके स्रजन से भी पहले जानता है। और उसका ज्ञान परोक्ष की बातों के समझने से असमर्थ नहीं बल्कि हिसाब और नापतोल तो सम्माननीय लोगों के गुणों के इज़हार तथा दुष्टों की दुष्टता दिखाने के लिए होते हैं। और निस्सन्देह सुधार करने वाले और पाप करने वाले लोग मरने के बाद अविलंब, आंख झपकते ही अपने कर्मों का फल देख लेंगे और उनका स्वर्ग तथा उनका नर्क जहां भी वे होंगे उनके साथ होगा। और वह दोनों किसी समय भी उनसे अलग नहीं होंगी। क्या तेरी निगाह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस आदेश की ओर नहीं गई कि क़ब्र स्वर्ग के बागों में से एक बाग़ है या आग के गड्ढों में से एक गड्ढा है। और मय्यत को कभी दफन किया जाता है, कभी जला दिया जाता है, कभी भेड़िया उसे खा जाता है और कभी उसे समुद्र में डुबो दिया जाता है। और किसी हालत में उसकी जन्नत का बाग या उसकी आग का गड्ढा उससे अलग नहीं होता और यह बात विश्वसनीय तौर पर सिद्ध है कि हर मोमिन और काफ़िर को उसकी मौत के बाद एक शरीर दिया जाता है और

उसकी जन्नत या उसका जहन्नुम उसकी क़ब्र में रख दिया जाता है। फिर जब क़यामत का दिन होगा तो हर मय्यत को अपने नए रूप में उठाया जाएगा और उन्हें उनके कर्मों की नापतोल के लिए उपस्थित किया जाएगा और उनकी जन्नत और उनकी जहन्नुम, उनका नूर और उनके पाप उनके साथ चलेंगे। फिर कर्मों के हिसाब और सम्मान या अपमान के इज़हार और वबाल दिखाने के तरीके पर सवाल किए जाने के बाद और कर्मों की नाप-तोल करने के बाद जिन पर हमारा ईमान है, अल्लाह की रहमत और उसका क्रोध नए जलवे की मांग करेगा। तब अल्लाह तआला जन्नतियों की आंखों के सामने जन्नत को ऐसी सूरत में प्रकट करेगा कि उनकी आंखों ने कभी उसका दर्शन न किया होगा जैसा कि उसने अपनी किताब में मुसलमानों से वादा किया है। तब वह दिन उनके लिए बड़ी प्रसन्नता और बहुत सौभाग्य का दिन होगा। फिर वह उसमें खुशी-खुशी और शान्तिपूर्वक प्रवेश करेंगे।

और इसी प्रकार जहन्नुम, दोज़खियों की निगाहों में रूप धारण करेगी और वह उन्हें जहन्नुम ऐसी सूरत में दिखाएगा कि उसका देखना उन्हें कष्ट देगा और वह उसके दहकने और उसके भड़कने की आवाज़ सुनेंगे और वह अनुमान करेंगे कि उन्होंने इस जैसी चीज़ न कभी पहले देखी और न उसमें प्रवेश किया। अत: यह दिन उनके लिए बड़ी घबराहट का दिन होगा और (निस्सन्देह) अल्लाह के लिए इन कदरों और भेदों और हिक्मतों में बहुत से जलवे हैं इसलिए तुम अल्लाह के इन जलवों पर आश्चर्य मत करो और अल्लाह से दुआ मांगो कि वह तुम्हें सन्मार्ग प्राप्त लोगों का मार्ग दिखाए। और यह सब कुछ अल्लाह की किताब में लिखा हुआ है हमने अपनी ओर से एक अक्षर भी नहीं लिखा और न ही हमने तहरीफ (शब्दांतरण) किया और न ही झूठ गढ़ा। और जो व्यक्ति क़ुरआन को झुठलाए तो वह नष्ट होगा और जिसने इस मार्ग को छोड़कर कोई और मार्ग अपनाया तो वह तबाह हो जाएगा और आसमान अपने कुचलियों से उसे खा जाएगा। अत: तू अल्लाह की पुस्तक को दृढ़ता पूर्वक पकड़ और उसके अतिरिक्त किसी की ओर मत झुक अन्यथा तू गुमराह हो जाएगा। और यदि हम

मोमिन हैं तो अल्लाह की किताब हमारे लिए पर्याप्त है।

और अल्लाह की किताब की शान के बारे में जो अल्लाह ने उसकी प्रशंसा और गुणगान किया वही तेरे लिए पर्याप्त है। उसने फ़रमाया कि-

مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ (अनाम - 6/39)

(अर्थात् हमने किताब में कोई चीज़ भी नज़र अंदाज नहीं की।) और यह कि इसमें हर चीज़ का विवरण मौजूद है। और जो मुस्लिम की हदीस में ज़ैद बिन अरक़म से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन मक्का और मदीना के बीच 'ग़दीर खुम' पर हमारे बीच खुत्बा के लिए खड़े हुए। आपने अल्लाह की प्रशंसा की और उपदेश किया और फिर फ़रमाया- हे लोगो! ध्यानपूर्वक सुनो मैं एक मनुष्य मात्र हूं। निकट है कि मेरे रब का दूत (मौत का फरिश्ता) मेरे पास आए और मैं उसके साथ चला जाऊं। और मैं तुम्हारे लिए दो अत्यंत महत्वपूर्ण चीज़ें छोड़ रहा हूं। उनमें से पहली अल्लाह की किताब (क़ुरआन) है जिसमें मार्गदर्शन और नूर है। अत: तुम अल्लाह की किताब को दृढ़तापूर्वक पकड़ लो और उसकी शिक्षाओं का पालन करो। अत: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह की किताब के लिए प्रेरणा दिलाई। फिर फ़रमाया और दूसरे मेरे अहले-बैत हैं। मैं तुम्हें अपने अहले-बैत के बारे में अल्लाह याद दिलाता हूं (अर्थात् ख़ुदा के लिए उनका ध्यान रखना- अनुवादक) और याद रखो कि अल्लाह की किताब ही अल्लाह की रस्सी है जिसने उसका अनुसरण किया तो वह सन्मार्ग पर है और जिसने उसे छोड़ा तो वह गुमराही पर है। अत: विचार करो कि किस प्रकार हुज़ूर ने इस (क़ुरआन) की प्रेरणा दिलाई है और आपने उसे डराया है जिसने क़ुरआन को इस प्रकार विमुख होते हुए छोड़ा कि उसने वह अपना लिया जो उस (क़ुरआन) के विपरीत है तो तू जान ले कि क़ुरआन पथप्रदर्शक और अध्यात्म प्रकाश है और वह सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है। और निस्सन्देह रब्बुल आलमीन की ओर से उतारा गया है।

और जो लोग हदीसों को अल्लाह की किताब से अधिक महत्व देते हैं, वे अल्लाह की किताब की महानता को भूल जाते हैं और उसका कम ही अनुसरण

करते हैं और चाहते हैं कि हदीसों के मुक़ाम को अल्लाह की किताब के मुक़ाम से ऊंचा क़रार दें, अल्लाह से नहीं डरते और न परवाह करते हैं और न ही संयम धारण करते हैं। और वे कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादाओं को इसी मत का अनुसरण करते हुए पाया है। चाहे उनके बाप-दादा लापरवाह और पक्षपाती ही हों? उनमें से रोकने वाले और धोखा देने वाले अल्लाह से छुपे नहीं, जो भोले-भाले अनपढ़ लोगों से कहते हैं कि हमारी ओर आ जाओ क्योंकि हम सन्मार्ग प्राप्त हैं हालांकि यही काफ़िरों में से हैं। क्या वे हदीसों की घटनाओं को क़ुरआन की घटनाओं जैसा क़रार देते हैं? जो अल्लाह के निकट बराबर नहीं? यदि वे मोमिन हैं तो अल्लाह और उसके निशानों के बाद वे किस बात पर ईमान लाएंगे? क्या उन्होंने यह समझ लिया है कि उनका रब उनसे हदीसों के साथ राज़ी हो जाएगा और क़ुरआन का त्याग करने पर उनसे कोई पूछताछ नहीं होगी? ऐसी बात नहीं बल्कि उनसे पूछताछ अवश्य होगी।

और ऐसी कितनी ही दलीलें हैं जो मैंने इस विषय पर अपनी पुस्तकों में प्रस्तुत की हैं और जब उन्होंने देखा कि यह सत्य पर आधारित हैं तो उन्होंने अपने पश्चाताप को छुपा लिया परन्तु वे वापस नहीं लौटे और वे लौटने वाले थे ही नहीं। मेरे प्रिय! यह जान ले कि मुक्ति का आधार क़ुरआन की शिक्षा है और कोई व्यक्ति जन्नत या जहन्नुम में प्रवेश नहीं करेगा सिवाय उसके कि जिसे क़ुरआन प्रवेश कराए और कोई व्यक्ति आग में नहीं रहेगा सिवाय उसके जिसे अल्लाह की किताब रोके रखे। इसलिए तुम इस किताब को मज़बूती से पकड़ लो उसी में तुम्हारा उद्धार है। और अल्लाह के समक्ष आज्ञाकारी होकर खड़े हो जाओ और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी अंतिम वसीयत में जिसके बाद आप का देहांत हो गया, फ़रमाया- तुम अल्लाह की किताब को पकड़ो और उसकी शिक्षाओं के अनुसार पालन करो और आप ने अल्लाह की किताब क़ुरआन के बारे में विशेष रूप से निर्देश दिया। और यह किताब वही है कि जिसके द्वारा अल्लाह ने तुम्हारे रसूल का मार्गदर्शन किया। अतः तुम उसे पकड़ो तो हिदायत पा जाओगे। हमारे पास अल्लाह की किताब के अतिरिक्त और कुछ नहीं। अतः तुम

अल्लाह की किताब को पकड़ो। क़ुरआन तुम्हारे लिए पर्याप्त है। कोई भी ऐसी शर्त जो कि अल्लाह की किताब में मौजूद नहीं, वह झूठी है। अल्लाह का निर्णय ही सर्वश्रेष्ठ है। अल्लाह की किताब हमारे लिए पर्याप्त है। सही बुख़ारी और मुस्लिम पर नज़र डालो क्योंकि यह समस्त हदीसें उन दोनों में मौजूद हैं। **अत्तलवीह*** के लेखक कहते हैं कि अल्लाह की किताब के विरुद्ध होने की अवस्था में ख़बर अहाद रद्द की जाएगी। सत्यनिष्ठों ने इस बात पर सहमति व्यक्त की है कि अल्लाह की किताब हर कथन से पहले है क्योंकि वह ऐसी पुस्तक है जिसकी आयतें ऐसी सुदृढ़ हैं कि ग़लत बात न उसके आगे से आ सकती है और न उसके पीछे से और अल्लाह ने उसकी रक्षा की और उसे सुरक्षित रखा और लोगों की हस्तक्षेप ने उसे छुआ तक नहीं और मनुष्य के कथन की उसमें तनिक भर भी मिलावट नहीं।

अब हम अपनी पहली बात की ओर लौटते हैं और यह कहते हैं कि जिस प्रकार क़ुरआन ने जन्नतियों को दुनिया की ओर वापस लौटने के बारे में मना किया है उसी प्रकार जहन्नुमियों को भी उनकी ओर वापस लौटने की मनाही की है। अत: फ़रमाया -

وَ قَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ
كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَ مَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ

(अल बक़र - 2/168)

(अनुवाद- और वे लोग जिन्होंने अनुसरण किया कहेंगे काश हमें एक और अवसर मिलता तो हम उनसे विमुखता का प्रदर्शन करते जिस प्रकार उन्होंने हमसे विमुखता दिखाई है। इसी प्रकार अल्लाह उन्हें उनके कर्म उन पर हसरतें बनाकर दिखाएगा और वे उस अग्नि से निकल नहीं सकेंगे।) फिर दूसरे स्थान पर फ़रमाया - لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا (अल क़हफ़-18/109) (अर्थात वह कभी उन (जन्नतों) से जुदा होना नहीं चाहेंगे।) फिर एक और स्थान पर फ़रमाया -

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَ مَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا

*अत्तलवीह से अभिप्राय **'अत्तलवीह अलत्तौज़ीह'** है। सअदुद्दीन मसऊद बिन उमर अत्तफ़्ताज़ानी रहमहुल्लाह द्वारा लिखित। (देहान्त 793 हिजरी) - प्रकाशक

(अल माइदा- 38)

(अनुवाद- वह चाहेंगे कि आग से निकल जाएं जबकि वह कदापि उस से निकल न सकेंगे) फिर उसने एक और स्थान पर फ़रमाया-

فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّ لَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ (यासीन- 51)

(अनुवाद- अत: वे वसीयत करने का भी सामर्थ्य न पाएंगे और न अपने परिवार की ओर लौट सकेंगे।)

अब तुझे यह भली-भांति ज्ञात हो गया है कि जन्नत वाले और जहन्नुम वाले अपने-अपने स्थान में अपने मरने के बाद अविलंब प्रवेश कर जाएंगे और क़यामत की प्रतीक्षा न करेंगे। और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है कि- "जो मर गया तो उसकी क़यामत हो गई।" और अगर इनाम और दुख पाना मय्यत को केवल अपनी मौत के साथ ही पहुंचने वाला न होता तो फिर उसके हक़ में क़यामत के होने का क्या अर्थ? और जब हमने यह इक़रार कर लिया कि मय्यत को मौत के बाद अविलंब अज़ाब दिया जाएगा या उस पर उपकार किया जाएगा तो फिर हम पर यह अनिवार्य होता है कि हम यह इक़रार करें कि जहन्नुम का अज़ाब और जन्नत का इनाम केवल मौत की घटना के साथ ही अविलंब प्रकट होता है। और यही कारण है कि हदीसों में आया है कि मोमिनों की सबसे कमतर (निम्नतर) नेकी क़ब्र में यह होगी कि जन्नत उनके निकट कर दी जाएगी और जन्नत के महलों में से एक महल उनके लिए खोला जाएगा जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें हर समय उस महल से जन्नत की हवा और उसकी सुगंध आएगी। और क़ब्र में काफ़िर का सबसे कमतर (निम्नतर) अज़ाब यह होगा कि जहन्नुम उसके सामने प्रत्यक्ष रूप से प्रकट हो जाएगी और उसका एक गड्ढा उसके लिए खोल दिया जाएगा जिसके परिणाम स्वरूप उसे हर समय उस गड्ढे से आग के शोले आएंगे। और अल्लाह अपनी कृपा और व्यापक है रहमत से अपने मोमिन बन्दों के लिए जन्नत के महल को विशाल करता जाएगा। (उनकी) जारी और बाकी रहने वाली नेकियों और अच्छाइयों और अच्छी औलाद की वजह से जिन्हें मोमिन ने अपने लिए दुनिया में छोड़ा। या अपनी नेक औलाद और नेक भाइयों की दुआ के कारण, इस

प्रकार वह महल दिन प्रतिदिन इतना बढ़ता जाएगा कि मोमिन की क़ब्र जन्नत के बागों में से एक बाग़ बन जाएगी। अत: इन हदीसों पर विचार कर कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किस प्रकार खोलकर वर्णन कर रहे हैं। फिर उन लोगों की ओर देख जो अपने भाइयों से कहते हैं कि हम क़ुरआन और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों पर ईमान लाते हैं परन्तु उसके साथ वे इस बात पर भी हठ करते हैं कि जन्नत में प्रवेश करना केवल शहीदों के लिए विशिष्ट है और उनके अतिरिक्त जो दूसरे लोग हैं अर्थात नबी, सिद्धीक़ यहां तक कि हमारे सैयद व मौला मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी जन्नत से दूर रखे जाएंगे। उन तक जन्नत की हवा और उसकी सुगंध नहीं पहुंचेगी और वह क़यामत के बाद ही उसमें प्रवेश कर सकेंगे। सत्यानाश हो उनका और उनके कथनो का! उन्होंने अल्लाह का संयम धारण न किया और शहीदों को (हज़रत) ख़ातमुल अंबिया से अधिक प्रतिष्ठा दी। फिर तुझ पर यह बात छुपी नहीं कि मरे हुए लोगों को उनके मृत्योपरांत बेकार रोके नहीं रखा जाता बल्कि वे या तो नेमतों में होते हैं या फिर अज़ाब में और यह जन्नत और जहन्नुम ही है। अत: विचार करने वालों के साथ तू भी विचार कर।★यह वह वर्णन है जो हमने मसीह की मृत्यु

★**हाशिया:- तू जान ले कि ईसा** अलैहिस्सलाम की मृत्यु अकाट्य तथा विश्वसनीय आयतों से सिद्ध है और यदि तू इसका प्रमाण क़ुरआन* से चाहता है तो (वह प्रमाण) तो आयत- يٰعِيْسٰٓى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ (अर्थात- हे ईसा! मैं तुझे मृत्यु दूंगा आले इमरान- 3/56) और आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ (अर्थात जब तूने मुझे मृत्यु दे दी। अल माइदा-5/118) और आयत- كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ (अर्थात वह दोनों भोजन किया करते थे। अल माइदा -5/76) और

*__हाशिए का हाशिया -__ जहां तक ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु का अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन से प्रमाण की बात है तो तुझ पर यह उस समय स्पष्ट होगा जब तू बुखारी की उस हदीस पर विचार करेगा जो आयत- فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ की व्याख्या में आई है और इमाम बुखारी ने उस हदीस को किताबुत्तफ़सीर में इसलिए वर्णन किया है ताकि वह यह संकेत करें कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन और फिर

और उनके पार्थिव शरीर के साथ आसमान पर न जाने और उनके संसार* की ओर लौट कर न आने के बारे में क़ुरआन के प्रमाणों से किया है। और जहां तक नबी करीम की हदीसों का संबंध है तो तू उनमें मसीह के पार्थिव शरीर के साथ उठाए जाने का कोई निशान नहीं पाएगा बल्कि तू हर जगह उनकी मृत्यु का वर्णन पाएगा जैसा कि हमने संक्षेप में वर्णन किया है, जिसे दोहराने की आवश्यकता नहीं।

---

* **शेष हाशिया -** किसी अज्ञानी व्यक्ति ने कहा है की आयत- وَ مَا قَتَلُوْهُ وَ مَا صَلَبُوْهُ وَ لٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ (अर्थात निस्सन्देह वे उसे क़त्ल न कर सके और न उसे सूली पर (लटका कर) मार सके बल्कि उन पर मामला संदिग्ध कर दिया गया। अन्निसा-4/158) और आयत بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ (अर्थात बल्कि अल्लाह ने अपनी ओर उसका रफ़ा कर लिया। अन्निसा- 4/159) मसीह के पार्थिव शरीर के साथ जीवित उठाए जाने पर दलील है। यह उस (अज्ञानी) व्यक्ति का कथन और व्याख्या है परन्तु यदि उस व्यक्ति को इस आयत की पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी होती तो वह अवश्य अपने कथन से मुख मोड़ लेता बल्कि

★**शेष हाशिया:-** आयत- وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो केवल एक रसूल हैं और उनसे पहले रसूल मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। आले इमरान- 3/145) और आयत - فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَ فِيْهَا تَمُوْتُوْنَ (अल आराफ़- 7/26) में पाएगा और यह अंतिम आयत अपने वक्तव्य के साथ यह दलालत करती है मानवजाति विशेष रूप से धरती में जीवित रहेंगे और वे अपने पार्थिव शरीर के साथ आसमान की ओर नहीं चढ़ेंगे क्योंकि 'फीहा' का शब्द जो 'तहयौना' के शब्द से पहले आया है वह जीवन की विशिष्टता को धरती के साथ जोड़ता है और उसके साथ सीमित करता है। और इसमें उन लोगों

✶**शेष हाशिए का हाशिया -** हजूर का आयत - فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ का अपने लिए प्रयोग करना जैसा कि ईसा अलैहिस्सलाम ने उसे अपने लिए प्रयोग किया है, यह व्याख्या की एक किस्म है और इसीलिए इमाम बुखारी ने इस तफ़सीर का समर्थन इब्ने अब्बास के कथन से किया है अर्थात मुतवफ़्फ़ीका - मुमीतुका और यूं इमाम बुखारी ने इस इजतेहाद के साथ अपने अपनाए हुए मत की ओर संकेत किया है। सारांश यह कि शब्द तवफ़्फ़ी ऐसा शब्द नहीं जिसकी व्याख्या कोई व्यक्ति अपनी राय से कर सके बल्कि उसका पहला व्याख्याकार क़ुरआन है और वह इस प्रकार कि उसने इस शब्द का प्रयोग हर स्थान पर मृत्यु देने और रूह को कब्ज करने (निकालने) के अर्थों में किया है। और दूसरे व्याख्याकार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और तीसरे व्याख्याकार अबू बकर सिद्दीक रज़ि अल्लाह ताला अन्हु हैं और

और हम हदीस में 'तवफ़्फ़ी' का अर्थ किसी व्यक्ति का शरीर के साथ आसमान पर उठाए जाना नहीं पाते बल्कि बुख़ारी में तो इब्ने अब्बास से आयत - या ईसा इन्नी मुतवफ़्फ़ीक की व्याख्या में "मुतवफ़्फ़ीक" के अर्थ "मुमीतुक" के आए हैं। और इस व्याख्या में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा में से किसी ने इब्ने अब्बास का विरोध नहीं किया।

⁂ **शेष हाशिया-** ऐसे अर्थ की ओर ध्यान ही न देता जो कि बौद्धिक तथा उद्धृत दोनों प्रकारों के विपरीत है और व्यर्थ की बातें न करता और लज्जित हो जाता। हे प्रिय! तू सुन कि यहूदी तौरात में यह पढ़ते थे कि नबूवत के दावे में झूठ बोलने वाला व्यक्ति क़त्ल किया जाता है और जो सूली पर लटकाया जाए तो वह लानती होता है और उसका अल्लाह की ओर 'रफा' नहीं होता और उनकी इस बात पर दृढ़ आस्था थी। फिर अल्लाह की ओर से आज़माइश के तौर पर वह (मसीह) उन्हें एक सूली पर लटकाए गए व्यक्ति के समान दिखाए गए मानो उन्होंने मसीह को सूली पर चढ़ा दिया और उनका वध कर दिया। इस

★**शेष हाशिया:-** का भी खंडन है जो यह कहते हैं कि किसी व्यक्ति का पार्थिव शरीर के साथ आसमान की ओर उठाया जाना और उसमें अल्लाह की इच्छा के अनुसार एक अवधि तक जीवित रहना क्यों जायज़ नहीं? आश्चर्य है उन पर कि वह हम पर झूठ गढ़ते हैं और यह समझते हैं कि मानो हमने मसीह अलैहिस्सलाम के पार्थिव शरीर के साथ उठाए जाने के बारे में क़ुरआन के प्रमाणों को त्याग दिया है। एक बुद्धिमान को यहां विचार करना चाहिए कि क्या क़ुरआन और उसके प्रमाणों को इस आस्था में हमने छोड़ा है या उन्होंने? और वे यह भी कहते हैं कि अल्लाह तआला ने بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ के शब्द

∗**शेष हाशिए का हाशिया -** चौथे व्याख्या कार इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाह ताला अन्हु हैं और पांचवें व्याख्याकार ताबईन की जमाअत है और छठे व्याख्याकार सही बुखारी में इमाम बुखारी हैं और सातवें व्याख्याकार मुहद्दिसों के इमाम इब्ने क़य्यम हैं बल्कि उन्होंने तो अपनी किताब 'मदारिजुस् सालिकीन' में लिखा है कि यदि मूसा और ईसा अलैहिमुस्सलाम जीवित होते तो वे दोनों हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरणकर्ताओं में से होते और (अपने इस कथन में) उन्होंने हदीसे नबवी की ओर संकेत किया है। और आठवें व्याख्याकार अपने समय के मुहद्दस 'वली उल्लाह देहलवी' हैं क्योंकि आप ने अपनी पुस्तक "अल फ़ौज़ुल कबीर" में يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ की व्याख्या की है और फरमाया कि मुतवफ़्फ़ीका - मुमीतुका और इसके साथ पहलों और बाद वालों का एक बड़ा समूह इन अर्थों की

अत: जब यह बात सिद्ध हो गई कि 'तवफ़्फ़ी' के अर्थ मृत्यु के हैं न कि कुछ और, तो फिर यह नहीं कहा जाएगा कि मसीह की मौत इब्ने अब्बास की रिवायत के अनुसार ऐसा वादा है जो इस समय तक घटित नहीं हुआ बल्कि वह अंतिम ज़माने में घटित होगा। क्योंकि वह वादे जिनका इस आयत में क्रमश: वर्णन हुआ है वह घटित हो चुके हैं और वह सारे के सारे उसी क्रम से पूरे हुए

⁂ **शेष हाशिया-** प्रकार उन्होंने उन्हें लानती और ख़ुदा की ओर न उठाया गया समझ लिया और उन्होंने इस प्रकार तार्किक क्रम की रचना की कि मसीह इब्न मरियम सूली पर लटकाए गए हैं और हर सूली पर लटकाया गया व्यक्ति लानती होता है जिसका रफा नहीं होता। अत: उनके निकट इस प्रथम दृश्य से जिसका परिणाम बिल्कुल स्पष्ट है यह सिद्ध है कि ईसा अलैहिस्सलाम (नाऊज़ुबिल्लाह) लानती हैं और उनका रफ़ा (अल्लाह की ओर) नहीं हुआ है। अत: अल्लाह ने इस भ्रम के निराकरण और ईसा अलैहिस्सलाम की इस आरोप से बरीयत का इरादा किया, तो फरमाया - وَ مَا قَتَلُوْهُ وَ مَا صَلَبُوْهُ وَ لٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ... بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ (निस्सन्देह वे उसे क़त्ल न कर सके और न उसे सूली पर (लटका कर) मार सके बल्कि उन पर मामला संदिग्ध कर दिया गया बल्कि अल्लाह ने अपनी ओर उसका रफ़ा कर लिया। अन्निसा- 4/158,159) और अल्लाह तआला के

★**शेष हाशिया:-** कहे हैं और वे इस आयत में मसीह के शरीर सहित उठाए जाने पर दलील देते हैं और यह नहीं सोचते कि यदि यह मामला ऐसा ही होता तो निश्चित रूप से इन दो आयतों में विरोधाभास पैदा हो जाता अर्थात आयत بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ और فِيْهَا تَحْيَوْنَ में, और तू जानता है कि पवित्र क़ुरआन विरोधाभास तथा अंतर्विरोध से पवित्र है और अल्लाह तआला ने स्वयं फरमाया है- وَ لَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا (अन्निसा - 4/83) (अनुवाद - और यदि वह क़ुरआन अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की

✶**शेष हाशिए का हाशिया -** ओर गया है और सब ने सहमति व्यक्त की है कि इस आयत में 'तवफ्फी' के अर्थ केवल और केवल मृत्यु देने के हैं। फिर जिनके दिलों में बीमारी है वह न तो अल्लाह के कथन की परवाह करते हैं और न ही उसके रसूल की व्याख्या की, और न ही उस व्याख्या की जो आपके सहाबा ने की और न ही ताबईन, अइम्मा और मुहद्दसीन के कथनों की परवाह करते हैं। अत: हम नहीं जानते कि हम उनके वह अर्थ कैसे स्वीकार करें जिन पर अल्लाह के कथन और उसके रसूल की व्याख्या से कोई दलील नहीं और हम इस हिदायत से कहां भाग कर जाएं जो बिल्कुल स्पष्ट और खुली खुली है। क्या हम अल्लाह और उसके रसूल को एक गुमराह कौम के कथन की खातिर छोड़ दें? इसी से।

हैं जो इस आयत में पाया जाता है। और 'तवफ़्फ़ी' का वादा क्रम की दृष्टि से उन सब वादों से पहले आता है और तू जानता है कि 'राफिउका इलैया' का वादा घटित हो चुका है और उसी प्रकार 'मुतह्हिरुक मिनल्लज़ीना कफ़रू' (आले इमरान-56) का वादा भी घटित हो चुका है और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव के साथ पूरा हो गया है और क़ुरआन ने गवाही दी है कि

शेष हाशिया - इस कथन का सारांश यह है कि ईसा की शान सूली पर चढ़ाए जाने और उस परिणाम से जिससे लानती होना और रफ़ा न होना निकलता है, पवित्र है बल्कि आपने स्वाभाविक मृत्यु पाई और आपका रफ़ा अल्लाह की ओर उसी प्रकार हुआ जैसे कि सानिध्य प्राप्त लोगों का रफ़ा होता है और आप लानतियों में से नहीं थे और यही वह कारण है जिसकी वजह से अल्लाह ने ईसा के सूली पर न चढ़ाए जाने का वर्णन किया और उन्हें उन (यहूदियों) के कथन से बरी क़रार दिया, अन्यथा वह कौन सा कारण था जिसकी वजह से इस किस्से को वर्णन किया गया? क़त्ल के द्वारा मरना अल्लाह के नबियों के लिए कोई दोष या उनकी शान में कमी नहीं और न ही यह उनके सम्मान के विपरीत है। और कितने ही नबी ऐसे हैं जो अल्लाह के मार्ग में क़त्ल हुए जैसे यहया अलैहिस्सलाम तथा उनके पिता। अत: विचार कर और हिदायत प्राप्त लोगों के मार्ग पर चल और गुमराहों के साथ मत बैठ। इसी से

★**शेष हाशिया:-** ओर से होता तो वे अवश्य उसमें बहुत मतभेद पाते।)

अत: इस आयत में उसने संकेत किया है कि क़ुरआन में कोई भी मतभेद नहीं पाया जाता क्योंकि वह क़ुरआन अल्लाह की किताब है और उसकी शान इससे बहुत बुलंद है। और जब सिद्ध हो गया कि अल्लाह की किताब मतभेदों से पवित्र है तो फिर हम पर अनिवार्य है कि हम उसकी व्याख्या में कोई ऐसा तरीका न अपनाएं जो विरोधाभास तथा अंतर्विरोध को अनिवार्य ठहराता हो। उनके शरीर के उठाए जाने या न उठाए जाने से यहूदियों को कोई मतलब और बहस नहीं थी। अत: आवश्यक है कि हम आयत- بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ में रफा की व्याख्या आध्यात्मिक रफ़ा करें जैसा कि आयत- ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً (अल फज्र-89/29) का भावार्थ है क्योंकि अल्लाह की ओर राज़ी रहते हुए लौटना और उसकी ओर उठाए जाना यह दोनों एक ही चीज़ हैं और उनमें अर्थ के दृष्टिकोण से कोई अंतर नहीं।

अत: तू देख और विचार कर, अल्लाह तुझे अपनी ओर से निर्णय करने का सामर्थ्य प्रदान करे। असल झगड़ा अध्यात्मिक रफा में था न कि शारीरिक रफा का क्योंकि यहूदी ईसा

मसीह और उनकी मां दोनों यहूदियों के आरोपों से बरी हैं और फ़रमाया कि-

مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَ اُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ (अल माइदा - 5/76)

(अनुवाद- मसीह इब्न मरियम तो केवल एक रसूल हैं जिन से पहले समस्त रसूल मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं और उनकी माँ सच्ची थीं।)

★**शेष हाशिया:-** के इस प्रकार अल्लाह की ओर उठाए जाने के इनकारी थे जिस प्रकार दूसरे पवित्र, सानिध्यप्राप्त नबी अल्लाह की ओर उठाए जाते हैं और वे (यहूदी, अल्लाह उन पर लानत करे) इस पर हठ करते थे कि ईसा अलैहिस्सलाम लानतियों में से थे और अल्लाह की ओर उठाए नहीं गए थे, जैसा कि वह आज तक कह रहे हैं। और वे उनके सूली पर लटकाए जाने से उन अलैहिस्सलाम के लानती होने पर दलील पकड़ते हैं क्योंकि उनके धर्म की दृष्टि से सूली पर लटकाए जाने वाला लानती होता है उसका 'रफ़ा' नहीं होता जैसा कि तौरात की किताब 'इसतस्ना' में आया है। अत: अल्लाह तआला ने इरादा किया है कि वह अपने नबी ईसा को इस आरोप से बरी करार दे, जो तौरात की एक आयत और सूली चढ़ाए जाने की घटना के आधार पर लगाया गया था क्योंकि तौरात सूली पर लटकाए जाने वाले को लानती करार देती है उसका रफा नहीं मानती, जब वह नबूवत का दावेदार हो और इस पर वह क़त्ल किया गया हो और सूली पर लटकाया गया हो। अत: अल्लाह तआला ने ईसा से उनका आरोप दूर करने के लिए फरमाया -

وَ مَا قَتَلُوْهُ وَ مَا صَلَبُوْهُ وَ لٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ

(अन्निसा- 4/158,159)

(अनुवाद- और वे निस्सन्देह उसका वध न कर सके और न उसे सूली पर चढ़ा (कर मार) सके बल्कि उन पर मामला संदिग्ध कर दिया गया।) अर्थात सूली पर चढ़ाए जाना जो तौरात के आदेश की दृष्टि से लानती होने और रफा के न होने को अनिवार्य ठहराता है, सही नहीं। बल्कि अल्लाह ने ईसा को अपने निकट बुलंदी प्रदान की। मतलब यह कि जब सूली पर लटकाया जाना और क़त्ल किया जाना साबित न हुआ तो लानती होना और रफ़ा न होना भी साबित न हुआ। अत: सच्चे नबियों की तरह उनका रूहानी रफ़ा साबित हो गया और यही उद्देश्य है। यह है संपूर्ण वास्तविकता इस क़िस्से की। यहां झगड़ा और मतभेद शारीरिक रफ़ा का नहीं था और न ही यह मामला वास्तव में यहूदियों की बहस का मुद्दा था, न उनकी कोई इच्छा इससे संबंधित थी। बल्कि यहूदी उलमा मसीह को झुठलाने और काफ़िर ठहराने के लिए मंसूबे बना रहे थे और आपको झुठलाने और काफ़िर ठहराने के लिए शरीयत के बहाने ढूंढ रहे थे। अत: उनको विचार सूझा कि आप को सूली पर लटका दें ताकि वह आपका लानती होना और अन्य सच्चे नबियों

और फ़रमाया कि -

وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ (आले इमरान - 3/46)

(अनुवाद- इस लोक तथा परलोक में प्रतिष्ठावान और सानिध्यप्राप्त लोगों में से होगा।)

और इसी प्रकार यह वादा कि -

وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا (आले इमरान - 3/56)

★**शेष हाशिया:-** के समान आपका आध्यात्मिक रफ़ा न होना, तौरात के प्रमाण से साबित करें ताकि अल्लाह की किताब के बाद किसी के लिए हुज्जत न रहे। अत: उन्होंने अपनी समझ में उन्हें सूली पर चढ़ा दिया और वह प्रसन्न हो गए कि उन्होंने आपके लानती होने और रफा न होने को तौरात से सिद्ध कर दिया। परन्तु अल्लाह ने आपको उनके षड्यंत्रों और क़त्ल करने से बचा लिया। उसने इसके बारे में अपनी उस किताब में खबर दी जो इंजील के बाद बतौर निर्णायक और न्यायकर्ता के उतरी। और जो हर क़ौम के अत्याचार, कष्ट पहुंचाने और छल-कपट को खोलकर वर्णन करने वाली और काफ़िरों को झुठलाने वाली है। मानो कि वह फरमा रहा है कि हे मक्कारों की टोली! हे सच्चाई और सत्यनिष्ठा के शत्रुओ! तुम यह क्यों कहते हो कि हमने मसीह इब्न मरियम को क़त्ल किया और सूली पर चढ़ा दिया और यह साबित कर दिया कि आप लानती हैं और आपका रफ़ा नहीं हुआ? अत: हे दुष्ट लोगो! मैं तुम्हें यह बताता हूं कि न तो तुम लोगों ने उसे क़त्ल किया और न उन्हें सूली पर मारा परन्तु तुम पर मामला संदिग्ध कर दिया गया और तुम अपने दिलों में खूब जानते हो कि तुम ने उन्हें निस्सन्देह क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे षड्यंत्र से मुक्ति दी और उन्हें वह रूहानी रफ़ा प्रदान किया जो तुम उनके लिए नहीं चाहते थे।

और तुम षड्यंत्र करते रहे कि उसे यह स्थान प्राप्त न हो। अत: निसन्देह उन्हें वह स्थान प्राप्त हो गया और अल्लाह ने उनका रफ़ा कर लिया और अल्लाह सर्वथा प्रभुत्व वाला है और ख़ुदा का कथन - **अज़ीज़न-हकीमन** (प्रभुत्व वाला और युक्ति से काम करने वाला) इस बात की ओर संकेत करता है कि अल्लाह जिसे चाहता है सम्मान प्रदान करता है और अपने चयनित बन्दों के सम्मान की अपनी बारीक से बारीक और अत्यंत सूक्ष्म हिकमत के साथ ऐसी सुरक्षा करता है कि किसी षड्यंत्र करने वाले का कोई षड्यंत्र उसे हानि नहीं पहुंचा सकता जैसा कि यहूदियों के षड्यंत्र ने ईसा के सम्मान को हानि नहीं पहुंचाई बल्कि अल्लाह ने आपको सम्मान और बुलंदी प्रदान की और षड्यंत्र करने वालों को तबाह और बर्बाद कर दिया।

अत: हे प्रिय! जान ले कि अल्लाह तआला के कथन- بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ की यह व्याख्या है परन्तु हमारी क़ौम उसे स्वीकार नहीं करती और वह अल्लाह के कथन में शब्दांतरण

(अनुवाद- मैं तेरे अनुयायियों को तेरा इन्कार करने वालों पर क़यामत तक प्रभुत्व प्रदान करूँगा (आले इमरान - 56)

भी पूरा हुआ और जिस प्रकार वादा था उसी प्रकार घटित हुआ और हम यहूदियों को पराजित और अपमानित ही देखते हैं।

और तू जानता है कि इस आयत के क्रम में सारे वादे 'तवफ़्फ़ी' के

★**शेष हाशिया:-** करते हैं और उसकी पृष्ठभूमि पर विचार नहीं करते और धरती पर अहंकार पूर्वक चलते हैं। और जब उनसे यह कहा जाए कि अल्लाह और उसके रसूल ने मसीह की मृत्यु पर गवाही दी है और उसी प्रकार सहाबा तथा ताबईन और अइम्मा मुहद्दसीन में से बड़े मोमिनों ने गवाही दी है तो उनका अंतिम उत्तर यह होता है कि अल्लाह उनकी मृत्यु के बाद उन्हें पुन: जीवित करने पर समर्थ है। वे इस बात पर विचार नहीं करते कि अल्लाह तआला की कुदरत का उन मामलों से कोई संबंध नहीं होता जो उसके सच्चे वादों के विपरीत हो। जबकि उसने फरमा दिया कि - فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ (अज़्ज़ुमर - 39/43) (अर्थात- फिर वह उस रूह को जिसकी मौत का उसने फ़ैसला कर दिया होता है, रोक लेता है) फिर फरमाया- وَّ مَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ (आले इमरान- 3/56) (अर्थात- और वे उसमें से निकलने वाले नही हैं) फिर फरमाया कि-

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى (अददुखान- 44/57)

(अर्थात- वे उसमें पहली मौत के अतिरिक्त किसी अन्य मौत का मज़ा नहीं चखेंगे) और इसमें सन्देह नहीं कि सालिहीन में से जिसने मृत्यु पाई तो वह जन्नत में चला गया और उस पर दूसरी मौत हराम हो गई। फिर यह कैसे जायज़ हो सकता है कि ईसा दुनिया में पुन: लौटाए जाएं और जन्नत के आनंदों तथा नेमतों से बाहर निकाल दिए जाएं और उन पर उस जन्नत का द्वार बंद कर दिया जाए। फिर वह दूसरी बार मृत्यु पाएं जबकि पहली आयत अर्थात यह आयत-

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى (अददुखान- 44/57)

शाश्वत जीवन तथा मौत का स्वाद न चखने पर दलालत करती है और इसी की ओर इस्तस्ना मुनक़ता (अपवाद का नियम) संकेत करता है क्योंकि यह सामान्य नियम की सुरक्षा के लिए बतौर निर्देश तथा ठोस प्रमाण के तौर पर प्रयोग हुआ है और उसने सामान्य (नियम के) प्रथम निषिद्ध को ऐसे प्रमाण के तौर पर ठहराया है जिसमें निश्चित तौर पर कोई अपवाद नहीं हो सकता क्योंकि यदि लोगों में से किसी व्यक्ति का अपवाद उसमें आ जाए तो उससे अपवाद विच्छिन्न की बजाय उसका वर्णन करना अधिक उचित होगा। अत: तू इस बात को भली-भांति समझ ले क्योंकि यह उन भेदों में से है जो तहक़ीक़ करने वालों के लिए लाभदायक हैं। इसी से।

वादे के बाद ही हैं और 'तवफ़्फ़ी' का वादा उन सब (वादों) से पहले है और क़ौम इस बात पर सहमत है कि यह समस्त वादे उसी क्रम से घटित हुए हैं जो इस आयत में पाया जाता है। अत: यदि हम मान लें कि शब्द 'तवफ़्फ़ी' शब्द 'रफ़ा' के बाद आया है तो हम पर अनिवार्य होगा कि हम इक़रार करें कि ईसा अलैहिस्सलाम 'रफ़ा' के बाद और शेष वादों के घटित होने से पूर्व मृत्यु को प्राप्त हो गए और यह बात ऐसी है कि विरोधियों में से कोई भी यह आस्था नहीं रखता। और यदि हम कहें कि शब्द 'तवफ़्फ़ी', 'व मुतह्हिरुका मिनल्लज़ीन कफरू' के वाक्य से बाद में है और उस वादे से पहले है जो आयत के क्रम में उसके बाद आया है तो फिर हम पर अनिवार्य होगा कि हम इक़रार करें कि ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु अविलंब हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद और उनके अनुयायियों के अपने शत्रुओं पर विजयी होने से पूर्व घटित हुई। और उन लोगों के विचार में यह भी झूठ है क्योंकि उनकी यह आस्था है कि मसीह अलैहिस्सलाम सब उम्मतों के नष्ट होने के बाद ही मृत्यु पाएंगे। अत: अगर हम उन सब कथनों को त्याग दें और यह कहें कि मसीह उस विजय के वादे की पूर्णता के उपरान्त ही मृत्यु पाएंगे जो क़यामत के दिन तक फैला हुआ है जैसा कि आयत-

وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

(आले इमरान- 3/56)

(अनुवाद- मैं तेरे अनुयायियों को तेरे इन्कार करने वालों पर प्रभुत्व प्रदान करूँगा।) ने स्पष्ट किया तो फिर निश्चित रूप से हमें यह इक़रार करना होगा कि मसीह अलैहिस्सलाम क़यामत के दिन के बाद ही मृत्यु पाएंगे क्योंकि यह वादा क़यामत के दिन तक फैला हुआ है। और मसीह अलैहिस्सलाम का प्रादुर्भाव इस वादे के पूरे होने और पूर्ण रूप से घटित होने के बाद ही संभव है। और हम इसके लिए अल्लाह की किताब में कोई गुंजाइश नहीं पाते सिवाए क़यामत के दिन के बाद और वह भी कष्ट कल्पना के तौर पर। काश! मैं यह जान लेता कि हमारे शत्रु जो अपने मुंह से तो कहते हैं कि 'मुतवफ़्फ़ीक' का शब्द आयत 'या ईसा इन्नी

मुतवफ़्फ़ीक' में वास्तव में पीछे है और यह जगह उसकी वास्तविक जगह नहीं है परन्तु वह हमें यह नहीं बताते कि अगर हम इस शब्द को इस वर्तमान स्थान से उठा लें तो फिर उसे कहां रखें? क्या हम इसे तहरीफ़ (शब्दांतरण) करने वालों के समान अल्लाह की किताब से निकाल दें?

और जो लोग यह कहते हैं कि शब्द 'तवफ़्फ़ी' शब्द 'रफ़ा' के बाद है तथा दूसरे वादों से पहले, तो एक बुद्धिमान व्यक्ति उनकी इस बात पर हंसेगा और उनकी मूर्खता पर आश्चर्य करेगा। क्या उन्हें यह ज्ञात नहीं कि यह कथन मसीह की मृत्यु के अनुमानित समय के बारे में जो उनकी आस्था है, उसके विपरीत है और हमने अभी वर्णन किया है कि वे यह आस्था रखते हैं कि 'तवफ़्फ़ी' का वादा समस्त क़ौमों की तबाही के बाद ही घटित होगा। अत: उन पर यह अनिवार्य है कि वे यह आस्था रखें कि शब्द 'तवफ़्फ़ी' इस दूसरे वादे से भी पीछे है न कि केवल 'रफ़ा' से। क्योंकि जैसा कि विचार-विमर्श करने वालों पर यह बात छुपी नहीं कि "ताख़ुर वजई ताख़ुर तबई"* के अधीन होता है। फिर यह हमारा अधिकार नहीं है कि हम अल्लाह और उसके रसूल की सनद के बिना केवल अपनी ओर से उसको पीछे कर दें जिसे अल्लाह तआला ने अपनी सुदृढ़ पुस्तक में आगे रखा है। और यह वही शब्दांतरण है जिसके कारण अल्लाह ने यहूदियों पर लानत की। अत: तुम उस से डरो और अगर तुम्हें (ख़ुदा का) डर है तो अल्लाह की आयतों का जो क्रम है उसे न बदलो। और तुम्हें ज्ञात है कि आयत- 'फलम्मा तवफ़्फ़यतनी' ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु पर एक और गवाह है क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 'फलम्मा तवफ़्फ़यतनी' वाक्य को बिना किसी परिवर्तन और बिना किसी व्याख्या के जो इस व्याख्या के वास्तविक अर्थ के विपरीत हो स्वयं अपने लिए प्रयोग किया है। और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ुरआन के अर्थ और उसके भेदों तथा रहस्यों को समस्त लोगों से अधिक जानते थे। अत: यदि

*ताख़ुर वज़ई- अपनी इच्छा से शब्दों को पीछे करना, **ताख़ुर तबई**- स्वाभाविक रूप से शब्द का पीछे होना। अनुवादक

इस आयत में 'तवफ़्फ़ी' के अर्थ शरीर का जीवित आसमान की ओर उठाया जाना होता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं को कभी इस आयत का पात्र न ठहराते। परन्तु आप ने तो इस आयत को अपनी ओर उसी प्रकार संबद्ध किया है जैसा कि यह मसीह की ओर संबद्ध है। अत: यह इस बात पर पहली दलील है कि इस आयत में शब्द 'तवफ़्फ़यतनी' के अर्थ 'अमत्तनी' (अर्थात तूने मुझे मौत दे दी) के हैं। अत: यह वह कारण है जिसकी वजह से इमाम बुख़ारी ने अपनी सहीह (बुख़ारी) में इस आयत से मसीह की मृत्यु के अर्थ किए हैं और इन अर्थों को इब्ने अब्बास के कथन- 'मुतवफ़्फ़ीक' - 'मुमीतुका' के साथ सुदृढ़ किया है। अत: सत्याभिलाषियों के लिए ईसा अलैहिस्सलाम की मौत पर इससे अधिक स्पष्ट दलील और कौन सी हो सकती है? अल्लाह ने इस आयत में मसीह की मृत्यु का समय स्पष्ट कर दिया है मानो कि उसने यह फ़रमाया कि हे लोगो! जब तुम देखो कि ईसाइयों ने ईसा अलैहिस्सलाम को उपास्य बना लिया है और उन्होंने अपना धर्म बिगाड़ लिया है तो जान लो कि निस्सन्देह ईसा अलैहिस्सलाम मर चुके हैं। अत: देख! कि 'तवफ़्फ़ी' के अर्थ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की व्याख्या और फिर इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाह की व्याख्या से किस प्रकार स्पष्ट और खुलकर सामने आ गए। साथ ही देख कि किस प्रकार उनकी मौत का, ईसाई धर्म के बिगड़ने और ईसा को उपास्य बना लेने से पूर्व घटित होना सिद्ध हो गया। और तू जानता है कि अगर हम यह मान लें कि ईसा अलैहिस्सलाम अब तक जीवित हैं तो यह हम पर अनिवार्य होगा कि हम इक़रार करें कि ईसाइयों का धर्म इस समय तक सही और शुद्ध है, उसमें शिर्क की कोई मिलावट नहीं हुई। अत: स्वयं विचार कर और चिन्तन-मनन करने वालों से पूछ ले।

कुछ जल्दबाज़ों ने कहा है कि क़ुरआन में 'तवफ़्फ़ी' का शब्द सुलाने के अर्थों में भी तो आया है जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है -

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَ الَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا

(अज़्ज़ुमर- 39/43)

(अनुवाद- अल्लाह जानों को उनकी मौत के समय निकालता है और जो मरी नहीं होतीं (उन्हें) उनकी नींद की हालत में (निकालता है) और जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है-

وَ هُوَ الَّذِیْ یَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّیْلِ وَ یَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ یَبْعَثُكُمْ فِیْهِ لِیُقْضٰۤى اَجَلٌ مُّسَمًّى (अल अनाम- 6/61)

(अनुवाद- और वही है जो तुम्हें रात को (नींद की सूरत में) मृत्यु देता है जबकि वह जानता है जो तुम दिन के समय कर चुके हो। फिर वह तुम्हें उस में (अर्थात दिन के समय) उठा देता है ताकि तुम्हारी अज्ले मुसम्मा (निर्धारित आयु) पूरी की जाए।)

अत: तू जान ले कि अल्लाह तआला ने इन आयतों में शब्द 'तवफ़्फ़ी' से केवल मृत्यु देने और रूह को क़ब्ज़ करने के अर्थ ही अभिप्राय लिए हैं। अत: इसी कारण उसने संदर्भ स्थापित किए और फ़रमाया- وَ الَّتِیْ لَمْ تَمُتْ فِیْ مَنَامِهَا अर्थात जो जान वास्तविक मृत्यु नहीं मरती उसे अल्लाह उसकी नींद के समय लाक्षणिक मृत्यु देता है

अत: तू देख! कि किस प्रकार उसने इस आयत में संकेत किया है कि नींद की अवस्था में रूह को निकालना एक लाक्षणिक मृत्यु है इसलिए उसने इस जगह 'तवफ़्फ़ी' के शब्द को नींद का संदर्भ स्थापित करके वर्णन किया है, यह बताने के लिए कि यहां 'तवफ़्फ़ी' शब्द अपने वास्तविक अर्थों से लाक्षणिक अर्थों की ओर स्थानांतरित किया गया है और यह इस बात की ओर संकेत है कि शब्द 'तवफ़्फ़ी' के अर्थ वास्तव में मौत ही के हैं इसके अतिरिक्त और कोई अर्थ नहीं। और इस प्रकार उसने "सुम्मा यब'असुकुम" (अर्थात फिर वह तुम्हें उठाएगा) कहकर एक संदर्भ स्थापित किया है और एक दूसरी आयत में 'अल्लैल' (रात) का संदर्भ स्थापित किया है अर्थात आयत -

هُوَ الَّذِیْ یَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّیْلِ (अल अनाम - 6/61)

(अनुवाद- और वही है जो तुम्हें रात को (नींद की सूरत में) मृत्यु देता है)

में यह बताने के लिए कि यहां 'तवफ़्फ़ी' का शब्द सुलाने के अर्थों में नहीं बल्कि वास्तव में उससे अभिप्राय मौत तथा मौत के बाद का ज़िन्दा किया जाना है ताकि 'कर्मफल के दिन' उठाए जाने पर दलील हो।

अत: इसी कारण उसने क़यामत के दिन उठाए जाने का वर्णन इस आयत के बाद किया और फ़रमाया कि "सुम्मा इलैहि मरजिउकुम" (अर्थात- फिर उसी की ओर तुम्हारा लौटना है। अल अनाम - 61) ताकि वह उस लाक्षणिक मृत्यु और लाक्षणिक उठाए जाने को वास्तविक मौत और वास्तविक उठाए जाने पर दलील ठहराए। अत: तू इस याददिहानी के बाद अत्याचारी क़ौम के साथ न बैठ। क्या तू देखता नहीं कि उसने 'तवफ़्फ़ी' के वर्णन के बाद किस प्रकार शब्द 'बअस' का वर्णन किया और फ़रमाया कि फिर वह तुम्हें उसमें उठाएगा और स्पष्ट है कि सोने वालों के लिए 'ईकाज़' (जागने) का शब्द प्रयोग किया जाता है न कि 'बअस' (उठाने) का। अत: अगर 'तवफ़्फ़ी' के शब्द से अभिप्राय यहां सुलाना होता तो वह अवश्य यह कहता कि अल्लाह ऐसा है जो तुम्हें रात को सुलाता है और वह जानता है कि तुम दिन में क्या करते हो। फिर वह तुम्हें उसमें जगाए रखता है। परन्तु अल्लाह तआला ने 'सुम्मा यूक़ज़कुम फीहे' के शब्द नहीं कहे बल्कि 'सुम्मा यबअसुकुम फीहे' कहा। अत: इससे अधिक स्पष्ट दलील और कौन सी हो सकती है? तो शब्द 'बअस' का संबंध मुर्दों से है न कि सोने वालों से।

और इस जैसे रूपक पवित्र क़ुरआन में बहुत हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया -

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا (अल हदीद- 57/18)

(अनुवाद- याद रखो कि अल्लाह धरती को उसकी मौत के बाद अवश्य जीवित करता है।) इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि शब्द 'युह्यी' (वह जीवित करता है) यहां शब्दकोश की दृष्टि से युन्बितु (वह उगाता है) के अर्थों में आया है बल्कि वह एक रूपक है और इससे अभिप्राय इन्बात (उगाने) को इह्या (जीवित करने) के साथ समानता देना है ताकि वह इससे मुर्दों के उठाए जाने

पर दलील ठहराए। और इसी प्रकार अल्लाह तआला ने فَاَصَمَّهُمْ وَ اَعْمٰى اَبْصَارَهُمْ (मुहम्मद-47/24) (अनुवाद- और उसने उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आँखों को अँधा कर दिया) फ़रमाया है परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि 'असम्महुम व अ'मा' के शब्दों के अर्थ शब्दकोष की दृष्टि से उन्हें गुमराह करने के हैं बल्कि यह एक रूपक है जिससे अभिप्राय विमुख होने वाले गुमराहों को बहरों और अंधों के साथ समानता देना है। अत: न तो तू लालच कर और न ही तू अपने आप को इस कठिनाई में डाल कि तू शब्दकोश की दृष्टि से 'तवफ़्फ़ी' के अर्थ सुलाने के करे। क्योंकि यदि ऐसा करना सही होता तो तुझ पर यह अनिवार्य होता कि तू इक़रार करे कि आयत يُحْيِ الْاَرْضَ (युह्यिल अर्ज़ अर्थात वह धरती को जीवित करता है) में शब्द 'युह्यी' के अर्थ युन्बितु (अर्थात उगाने) के हैं। फिर तू इन अर्थों को शब्दकोशों से सिद्ध भी करता। इसी प्रकार अगर तू इस अर्थ पर हठ करे तो तुझ पर यह इक़रार करना अनिवार्य होगा कि शब्द 'असम्महुम' और शब्द 'व अ'मा अब्सारहुम' अवश्य शब्द 'अज़ल्लहुम' और 'अबअदहुम अनिल हक़ व अज़ाग़ क़ुलूबहुम' (अर्थात उन्हें सच्चाई से दूर कर दिया और उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया-अनुवादक) के अर्थों में है फिर यह अरबी शब्दकोश की पुस्तकों से भी हमें दिखाना होगा परन्तु ऐसा करना तेरे बस में कहां? अत: तू ऐसी सोच का अनुसरण न कर जिस में भ्रम की मिलावट है। तेरे लिए इसके सिवा कोई चारा नहीं कि तू इस प्रमाणित वास्तविकता को स्वीकार कर ले और सत्यनिष्ठों के साथ सम्मिलित हो जाए।

और अगर तू विवेकवान है तो तुझे यह ज्ञात होना चाहिए कि इन अर्थों का कोई ऐसा निशान वास्तविक रूप से अरबी भाषा की किसी पुस्तक में तुझे कदापि नहीं मिलेगा जो प्रथम दृष्टया उपरोक्त आयतों से दिमाग में उभरते हैं, जबकि क़ुरआन इन उदाहरणों से भरा पड़ा है। यह बात प्रमाणित है कि लोगों के निकट वास्तविक अर्थ वही होते हैं जिनका किसी स्थान पर बिना संदर्भ स्थापित किए अधिकता से प्रयोग होता हो। इसलिए तुझ पर यह अनिवार्य है कि तू क़ुरआन पर अत्यंत ध्यान पूर्वक विचार करे ताकि तुझ पर ये स्पष्ट हो जाए

कि शब्द 'तवफ़्फ़ी' का बिना संदर्भ स्थापित किए, अकेला प्रयोग पवित्र क़ुरआन में केवल मौत देने के अर्थों में ही हुआ है। और किसी हदीस में या किसी कवि के काव्य में भी तू यह कदापि न पाएगा कि जब 'तवफ़्फ़ी' का शब्द अल्लाह की ओर मंसूब (संबद्ध) हो (अर्थात ख़ुदा कर्ता हो) और मनुष्य 'मफ्ऊल बिही' (अर्थात कर्म) हो तो इसके अर्थ मृत्यु देने के अतिरिक्त कुछ और हों। अत: यदि तू सच्चा है तो इसका कोई उदाहरण प्रस्तुत कर और हम से वह इनाम प्राप्त कर जिसका हमने वादा किया हुआ है।

और जिन लोगों ने यह कहा कि आयत- يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ में शब्द 'मुतवफ़्फ़ीक' के अर्थ 'इन्नी मुनीमुका' (अर्थात मैं तुझे सुलाने वाला हूं) हैं तो उन्होंने एक ग़लती नहीं की है बल्कि उन्होंने अपने कथन में कई प्रकार की ग़लतियाँ इकट्ठी कर दी हैं और उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की व्याख्या को छोड़ दिया है। हालांकि हुज़ूर मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ हैं और आपका बात करना रहमान ख़ुदा के आदेश से था और आपका कथन समस्त कथनों से श्रेष्ठ था और आपके (पवित्र) वाक्य आनन्द, सहज बोध, ज्ञान, विवेक और नूर के समस्त पहलुओं पर हावी हैं जो ख़ुदाए रहमान की ओर से आपको प्रदान किए गए थे। और उन्होंने 'मुतवफ़्फ़ीक' के अर्थों के बारे में इब्ने अब्बास के कथन को (भी) छोड़ दिया है। और उन्होंने क़ुरआन तथा उसके इस शब्द को प्रयोग करने के तरीके और क़ुरआन में उस शब्द के निरंतरता के साथ मौत देने के अर्थों में प्रयोग होने पर विचार नहीं किया। इस प्रकार वह स्वयं भी गुमराह हुए और दूसरों को भी गुमराह किया और वह सन्मार्ग पाने वाले नहीं थे।

फिर यदि हम मान लें कि 'तवफ़्फ़ी' का शब्द सुलाने के अर्थों में है तो हम उन अर्थों को उनके लिए तनिक भी लाभदायक नहीं समझते क्योंकि नींद, रूह और शरीर के परस्पर संबंध के शेष रहने के बावजूद ज्ञानेंद्रियों के निलंबित होने और रूह के निकलने के अर्थ में ही है। फिर इससे यह कहां से सिद्ध हुआ कि अल्लाह ने मसीह अलैहिस्सलाम के शरीर को क़ब्ज़ कर (निकाल) लिया। क्या तू अल्लाह की अनादि सुन्नत की ओर निगाह नहीं डालता कि वह नींद की

अवस्था में रूहों को क़ब्ज़ कर लेता है और शरीरों को धरती पर रहने देता है। फिर तुझे कहां से यह ज्ञात हुआ कि 'मुतवफ्फ़ीक' का शब्द शरीर के उठाए जाने को दर्शाता है? हालांकि समस्त सृष्टि सोती है परन्तु अल्लाह उनमें से किसी के शरीर को क़ब्ज़ नहीं करता। अत: तू अहंकार और हटधर्मी छोड़ दे और ईमान तथा दयानतदारी से चिंतन-मनन कर ताकि अल्लाह तेरे दिल में अपनी रूह फूंके और तुझे अध्यात्मज्ञानियों में से बना दे।

और इस अर्थ के मान लेने से एक और ख़राबी भी अनिवार्य ठहरती है और वह यह कि इस आयत में 'तवफ़्फ़ी' का शब्द उन दूसरे वादों के समान जिनका अल्लाह ने इस आयत में वर्णन किया है एक नया वादा है। और अगर (अनुमान के तौर पर) यह अर्थ ही सही हों तो इससे यह अनिवार्य होगा कि उठाए जाने के समय मसीह की नींद वह पहला मामला होगा जो उनके जीवन में घटित हुआ और फिर यह भी उन पर अनिवार्य होगा कि वे यह आस्था रखें कि ईसा अलैहिस्सलाम रफ़ा (उठाए जाने) से पहले कभी भी नहीं सोते थे। अत: वह मामला जो उन (अर्थात मसीह) के जीवन में कई बार घटित हुआ, यह कैसे संभव है कि अल्लाह उसका नए वादों के साथ वर्णन करे। क्योंकि किसी चीज़ का वादा करना वादे से पूर्व उस चीज़ के न होने पर दलालत किया करता है अन्यथा पहले से प्राप्त वस्तु का मिलना अनिवार्य आएगा। और यह व्यर्थ कर्म है जो अल्लाह तआला की शान के अनुकूल नहीं और ज़रूरी है कि रब्बुल आलमीन का वादा उससे पवित्र हो। फिर अगर (अनुमान के तौर पर) यह अर्थ भी सही हों तो

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ (अल माइदा- 118)

(अनुवाद- फिर जब तूने मुझे मृत्यु दे दी तो उस समय तू ही उनका निगरान और संरक्षक था) के बारे में तू क्या कहेगा। क्या तू यह विचार करता है कि ईसाइयों ने मसीह को उनकी नींद के बाद उपास्य बनाया था न कि उनकी मृत्यु के बाद? और तू यह समझता है कि मसीह अपने जीवन में कभी नहीं सोया था सिवाए ईसाइयों की गुमराही के समय में? और केवल रफ़ा (अर्थात उठाए जाने) के समय ही उसकी

आंखों ने नींद का मज़ा चखा था और रफ़ा से पहले वह हमेशा जागते रहे? अत: न्याय पूर्वक देख क्या यह अर्थ यहां सही हैं? और क्या इससे दिल को ठण्डक, रूह को संतुष्टि और अंतर्मन को तसल्ली प्राप्त हो सकती है? और तू जानता है कि यह अर्थ हकीक़त से बहुत दूर और गलत हैं और तवील करने वालों (अर्थात वास्तविक अर्थों से हट कर अर्थ करने) की कोई तावील भी उसका सुधार नहीं कर सकती। अत: यह काफ़िर ठहराने वाले उलमा की बहुत लापरवाही है कि उन्होंने इन ग़लत अर्थों को सही क़रार दिया। अत: अगर तुम सुनने वाले हो तो सुनो।

फिर उसके साथ ही (सही बुख़ारी) में 'तवफ़्फ़ी' के अर्थों की हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाह अन्हु की स्पष्ट व्याख्या आई है। आपने 'मुतवफ़्फ़ीक' के अर्थ 'मुमीतुक' किए हैं और समस्त सहाबा तथा ताबईन और तबा ताबईन ने भी आप का अनुसरण किया है और उनमें से किसी एक ने भी मतभेद करते हुए अलगाव नहीं किया। यदि कोई व्यक्ति सत्याभिलाषियों में से हो तो इससे स्पष्ट दलील और कौन सी हो सकती है?

और मैंने अभी वर्णन किया है कि अगर हम अवनति के तौर पर अनुमान कर लें और कहें कि 'तवफ़्फ़ी' का शब्द यहां अर्थात आयत- 'या ईसा इन्नी मुतवफ़्फ़ीका' में सुलाने के अर्थों में आया है तो यह घटना एक दूसरी घटना होगी और इससे दलील देना विरोधियों के लिए लाभदायक न होगा क्योंकि विरोधियों का उद्देश्य अपनी अविवेकता के कारण यह है कि वह मसीह का पार्थिव शरीर के साथ रफ़ा सिद्ध करें परन्तु इन अर्थों से यह उद्देश्य पूरा नहीं होता बल्कि उसके उलट अर्थ प्राप्त होता है। क्योंकि इस अवस्था में इस आयत के अर्थ कुछ इस प्रकार होंगे कि हे ईसा! मैं तेरी रूह क़ब्ज़ करने वाला हूं और तेरे शरीर को धरती पर, शरीर तथा रूह के बीच संबंध रखते हुए छोड़ने वाला हूं क्योंकि नींद, रूह के क़ब्ज़ करने तथा शरीर को छोड़ देने बावजूद इन दोनों के परस्पर संबंध के पूर्णत: शेष रहने का नाम है। अत: विचार कर कि भला इन अर्थों से विरोधियों का उद्देश्य कैसे प्राप्त हो सकता है और इससे ईसा अलैहिस्सलाम के शरीर का आकाश की ओर उठाया जाना कहां सिद्ध होता है? बल्कि 'तवफ़्फ़ी'

के अर्थों को अनुचित स्थान पर रखने के बावजूद यह मामला जूं का तूं रहता है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्रत्येक न्यायप्रिय व्यक्ति हमारी इस बात को समझेगा और उससे लाभ उठाएगा। सिवाय उस व्यक्ति के जिसका न्याय अपनी जांच परख पर स्थापित नहीं रहा और जिसके साथ पक्षपात का अंधकार और ईर्ष्या का धुआं घुल मिल गया हो ऐसी अवस्था में ईर्ष्यालु लोगों को दलीलें और तर्क कुछ लाभ नहीं देते।

फिर अगर तू इस आयत को सूक्ष्म दृष्टि से देखे और उसे उसके सुंदरतम पैरायों और अर्थों पर आधारित करे तो तुझ पर यह बात छुपी नहीं रहेगी कि इस आयत का भावार्थ और इबारत की पृष्ठभूमि ईसा मसीह की मृत्यु पर दलालत करते हैं जैसा कि उसका कथन वफात मसीह पर दलाल करता है क्योंकि अल्लाह ने अपने कथन يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَىَّ (आले इमरान- 3/56) के बाद ऐसे शब्दों का वर्णन किया है जिनमें मसीह के लिए संतुष्टि और ख़ुशख़बरी है और उनके अनुयायियों की विजय के ज़माने तथा उनके मृत्यु पा जाने के बाद उनके अपने शत्रुओं पर प्रभुत्व पाने की सूचना है। और यह इस बात की स्पष्ट दलील है कि ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु ख़ुदाई सहायता तथा उस प्रभुत्व से पहले है जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे थे। और अल्लाह से अपनी विजय के लिए प्रार्थना कर रहे थे। और इस अध्याय में वास्तविकता यह है कि अल्लाह ने अपने नबियों की फितरत में यह बात रखी है कि वे पसंद करते हैं कि उनके हाथों ख़ुदा का झण्डा ऊंचा हो और उनके द्वारा स्वयं उनकी आंखों के सामने उम्मत (क़ौम) एकजुट हो और वे चाहते हैं कि सच्चे धर्म के अतिरिक्त समस्त मिल्लतें नष्ट हो जाएं। और उनके साथ अल्लाह की सुन्नत इसी प्रकार जारी है क्योंकि वह उन्हें उनका प्रभुत्व तथा विजय और उनके शत्रुओं का अपमान दिखाता है और स्पष्ट विजय के बाद ही उन्हें मृत्यु देता है। और इसका उदाहरण हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पवित्र जीवन है। अत: जब अल्लाह ने देखा कि काफ़िर उसके रसूल का अपमान करते हैं और अल्लाह की वह्यी से खेलते हैं और हंसी ठट्ठा करते हैं और कष्ट

पहुंचाते हैं तो उसने अपने नबी का समर्थन किया और उसकी सहायता की और जिसने भी उससे शत्रुता की उसे अपमानित और तिरस्कृत किया और नष्ट कर दिया। यहां तक कि पवित्र, अपवित्र से अलग हो गया और उसने अपने नबी को यह दृश्य दिखा दिया कि लोग अल्लाह के धर्म में फौज की फौज प्रवेश कर रहे हैं और उसे यह दृश्य भी दिखाया कि सच्चाई सिद्ध हो गई और असत्य मिट गया। और यह कि सन्मार्ग गुमराही से अलग हो गया और उपद्रवियों का अपमान खुलकर सामने आ गया।

और कभी अल्लाह तआला की हिकमत और उस की युक्तियों की सूक्ष्मताएं यह मांग करती हैं कि वह किसी नबी को उसकी विजय और बुलंदी के दिन आने से पहले ही मृत्यु दे। अत: वह उसे दुखी तथा मायूस होने की अवस्था में मृत्यु नहीं देता बल्कि वह उसे उसके देहान्त के बाद उसके अनुयायियों के प्रभुत्व की निरंतर ख़ुशख़बरी देता है ताकि उन से उसका दिल संतुष्ट हो और वह दुखी न हो। और ताकि वह अपने रब की ओर दुखी दिल के साथ न लौटे बल्कि वह इस जहान से संतुष्ट, प्रसन्न और आंखों की ठंडक के साथ विदा हो और अल्लाह की ख़ुशख़बरियों और उसके सच्चे वादों के बाद उसके लिए कोई दुख शेष नहीं रहता। और वह अपने रब की ओर प्रसन्न अवस्था में और बिना किसी दुख के चला जाता है और ऐसा ही ईसा अलैहिस्सलाम का मामला है। अत: उन्होंने अपने जीवन के दिनों में प्रभुत्व न देखा और जब उनके देहांत का दिन निकट आया तो अल्लाह तआला ने उन्हें उनकी मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों को (मिलने वाले) प्रभुत्व की ख़ुशख़बरी दी और उनको उनके जीवन में प्रभुत्व की ख़ुशख़बरी नहीं दी। अत: तू पिछली आयत की ओर लौट और उस पर सूक्ष्मता से विचार कर। क्या तुझे इन अर्थों में कोई कमी दिखाई देती है? मानो कि उसने इस आयत में फ़रमाया है कि हे ईसा! मैं तुझे तेरी सफलता और तेरी विजय और तेरे प्रभुत्व देखने से पहले मृत्यु दूंगा और यहूदियों के अनुमान के विपरीत तुझे सम्मान और बुलंदी और सानिध्य का स्थान प्रदान करूंगा। अत: तू अपना प्रभुत्व देखने से पूर्व मृत्यु के कारण उदास न हो और अपने अनुयायियों की कमज़ोरी और शत्रुओं

की अधिकता से न डर। इसलिए कि तेरे बाद मैं (स्वयं) तेरा उत्तराधिकारी हूंगा और तेरे शत्रुओं को टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा और उन्हें हमेशा के लिए जड़ से उखाड़ दूंगा। और तेरे अनुयायियों को और तेरी खिलाफत स्वीकार करने वालों को काफ़िरों पर क़यामत के दिन तक प्रभुत्व प्रदान करूंगा। यह है वह व्याख्या जो सबसे उत्तम वर्णन करने वाले अल्लाह ने वर्णन की।

और यदि ईसा ने किसी समय आसमान से उतरना होता तो वह इस प्रकार न कहता बल्कि वह यह कहता कि हे ईसा! तू भय और गम न कर क्योंकि हम तुझे मारेंगे नहीं बल्कि तुझे जीवित आसमान की ओर उठा लेंगे फिर उसके बाद हम तुझे धरती की ओर उतारेंगे। और तुझे तेरी उम्मत की ओर लौटाएंगे और तुझे तेरे शत्रुओं पर विजयी करेंगे। फिर हम तेरे अनुयायियों को उन पर क़यामत के दिन तक प्रबल रखेंगे इसलिए तू स्वयं को पराजित होने वालों में से मत समझ। परन्तु अल्लाह ने आप से यह वादा नहीं किया कि वह आपको आसमान से अवतरित करेगा और फिर आप को आप के शत्रुओं पर विजयी करेगा बल्कि उसने आप से यह वादा किया था कि वह आपके अनुयायियों को काफ़िरों पर क़यामत के दिन तक प्रबल रखेगा। फिर उसने वही किया जिसका उसने वादा किया था और इस पर बहुत सी शताब्दियां बीत गईं। जहां तक नुज़ूल (आसमान से उतरने) का संबंध है तो वह ऐसी चीज़ है जिसका निशान आज तक तू नहीं देख रहा। अत: तू सोच कि वह क्यों नाज़िल नहीं हुआ जबकि दुनिया की आयु भी अब अंतिम समय को पहुंच गई है? तो इस सन्देह को दूर करने वाला भेद यह है कि ज़ाहिरी नुज़ूल अल्लाह के वादों में सम्मिलित नहीं था बल्कि वह दुष्ट प्रवृत्तियों और गलत विचारधाराओं की मनगढ़त आस्था थी। अत: वह ज़ाहिरी रूप से घटित न् हुआ क्योंकि वह वादा अल्लाह की ओर से न था। हां तथापि वह वादे जो अल्लाह की ओर से थे वे सब के सब प्रकट हुए और पूरे हुए। क्या तू नहीं देखता कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने ईसा के बाद एक अनपढ़ रसूल अवतरित किया ताकि वह अपने वादे अर्थात ख़ुदाई कथन-

وَ مُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا (आले इमरान - 3/56)

(अर्थात- और काफ़िरों के आरोपों से तुझे पवित्र करूंगा।) को सच्चा कर दिखाए। फिर किस प्रकार उसने ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयायियों को यहूदियों पर विजयी किया। ताकि वह अपने वादे-

وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

(आले इमरान - 3/56)

(कि मैं तेरे अनुयायियों को तेरा इन्कार करने वालों पर क़यामत तक प्रभुत्व प्रदान करूँगा) को सच्चा कर दिखाए। अत: यदि नुज़ूल का वादा भी उन वादों का एक भाग होता तो वह भी उन वादों के साथ प्रकट हो जाता। अत: विचार कर कि दूसरे भागों के प्रकटन के बावजूद नुज़ूल का वादा कहां गायब और लुप्त हो गया? अत: क़सम है उस हस्ती की जिसके अधिकार में मेरे प्राण हैं कि मैंने जो बात कही है वह बिल्कुल सत्य है और नुज़ूल की आस्था इन वादों के भागों में से नहीं और न इसे इन वादों के साथ क़ुरआन में वर्णन किया गया है बल्कि उसका कोई निशान तक अल्लाह की किताब में नहीं पाया जाता। यह केवल भ्रम करने वालों का भ्रम है। अत: जब सत्य प्रकट हो गया तो तू सत्य को अपमान और तिरस्कार की निगाह से मत देख और अल्लाह से डर और संयमियों में से हो जा और तू क़ुरआन में उसके जीवन का कोई संकेत तक नहीं पाएगा। बल्कि क़ुरआन उनके भरपूर जवानी बिताने और उधेड़ आयु में कलाम करने और अवतरित होकर अल्लाह के पैग़ाम को पहुंचाने और इन्कार करने वालों पर हुज्जत पूरी करने के बाद उनकी मृत्यु की सूचना देता है।

अत: हे लोगो! तुम सच्ची गवाहियों को उनके ज़ाहिर करने के समय मत छुपाओ और धरती में उपद्रव न करो और परस्पर प्रेम से रहो और एक दूसरे से ईर्ष्या न रखो और भलाई के बारे में परस्पर मशवरा कर लिया करो और अवज्ञा न करो और सत्य का अनुसरण करो और हद से न बढ़ो और अपने बारे में विचार करो और जल्दबाज़ी न करो। मैं तुम्हें अल्लाह याद दिलाता हूं जो तुम्हारा रब है। अगर तुम मोमिन हो तो उस से डरो। और जान लो कि जो कुछ तुम

छुपाते हो और जो कुछ तुम कहते हो उसे अल्लाह जानता है। कोई गुप्त चीज़ उस से छुपी नहीं। अत: जिसने अपने रब के आदेश की अवहेलना की और उसकी अवज्ञा की तो शीघ्र वह उसे कठोर दंड देगा और उसकी सख्त गिरफ्त करेगा। और उसकी करतूत का मज़ा उसे चखाएगा और उसे नष्ट कर देगा।

यह नहीं कहा जा सकता कि उपरोक्त आयत का बाद वाला वाक्य अर्थात "व राफिउका इलैया" नींद के बाद शरीर के उठाए जाने पर दलालत करता है। क्योंकि जब यह बात पूर्णत: सिद्ध हो गई कि 'तवफ़्फ़ी' के अर्थ केवल रूह क़ब्ज़ करने के हैं न कि शरीर क़ब्ज़ करने के, तो इससे सिद्ध हुआ कि रफ़ा का संबंध रूह से है शरीर से नहीं। अत: अल्लाह तआला किसी चीज़ का रफ़ा नहीं करता सिवाए उस चीज़ के जिसको उसने क़ब्ज़ कर लिया हो और ज़ाहिर है कि अल्लाह शरीरों को क़ब्ज़ नहीं करता बल्कि वह केवल रूहों को क़ब्ज़ करता है। और तू जानता है कि क़ुरआन समस्त स्थानों पर इसकी गवाही देता है। और तू क़ुरआन में 'तवफ़्फ़ी' के शब्दों में से कोई शब्द ऐसा नहीं पाएगा जिसके अर्थ रूह के साथ शरीर के उठाए जाने के हों। और इसी प्रकार आदम के जन्म के दिन से लेकर आज तक यही अल्लाह की सुन्नत चली आ रही है कि वह रूहों को क़ब्ज़ करता है और शरीरों को धरती या चारपाइयों या बिस्तरों पर पड़ा हुआ छोड़ देता है। अत: वह चीज़ जिसे अल्लाह ने क़ब्ज़ न किया हो उसका उसकी ओर रफ़ा कैसे होगा? क्योंकि रफ़ा के लिए (रूह का) क़ब्ज़ होना आवश्यक शर्त है। फिर जब हम क़ुरआन में 'तवफ़्फ़ी' के शब्द तलाश करते हैं तो हम 25 स्थानों पर यह शब्द पाते हैं। परन्तु अल्लाह ने किसी एक स्थान पर भी उसे रूह क़ब्ज़ करने के अतिरिक्त किसी अन्य अर्थ में प्रयोग नहीं किया। अत: तू क़ुरआन को उसके आरंभ से लेकर अंत तक देख क्या तू इसमें इस वर्णन के विपरीत कोई और अर्थ पाता है? साथ ही अल्लाह के कथन-

رَبَّنَآ اَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرًا وَّ تَوَفَّنَا مُسۡلِمِيۡنَ (अल आराफ़- 7/127)

(अर्थात- हे हमारे रब हमपर सब्र उंढेल और हमें मुसलमान होने की हालत में मृत्यु दे।) पर विचार कर और इसी प्रकार تَوَفَّنِىۡ مُسۡلِمًا وَّ اَلۡحِقۡنِىۡ بِالصّٰلِحِيۡنَ

(अर्थात- मुझे आज्ञाकारी होने की अवस्था में मृत्यु दे और मेरी गणना नेक लोगों के समूह में कर। यूसुफ 12/102) और अल्लाह तआला के कथन-

وَ اِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ (यूनुस-10/47)

(अर्थात- और यदि हम तुझे इस चेतावनी में से कुछ दिखा दें जिससे हम उन्हें डराया करते हैं या तुझे मृत्यु दे दें।) और अल्लाह के कथन -

وَ لٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰكُمْ (यूनुस- 10/105)

(अर्थात- परन्तु मैं उसी अल्लाह की उपासना करूंगा जो तुम्हें मृत्यु देता है।) और अल्लाह के कथन- حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ (अर्थात- यहाँ तक कि उनको मौत आ जाए। सूरह अन्निसा- 4/16) और अल्लाह के कथन اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ (अर्थात जब हमारे पैग़ंबर (अर्थात फ़रिश्ते) उन्हें मृत्यु देते हुए उनके पास पहुंचेंगे। आराफ़-7/38) और क़ुरआन में आने वाले अन्य कथनों में। और 'तवफ़्फ़ी' के शब्दों पर विचार कर। क्या तू इन आयतों में उसके अर्थ मौत देने के पाता है या उसके अतिरिक्त कोई दूसरे? जहां तक सिहाह-ए-सित्ता (हदीस की प्रथम छः पुस्तकें) तथा हदीस की अन्य पुस्तकों और अरब के शायरों के कलाम में इसके उदाहरणों का संबंध है तो वे अनगिनत हैं अतः तू विचार कर और इन्कार करने वालों में से न बन और तुझे चाहिए कि अपने चिंतन में सावधानी बरत और जल्दबाज़ों के समान उत्तर न दे और जान ले कि जिन लोगों ने हमारे इस बयान का विरोध किया और यह कहा कि आयत- 'या ईसा इन्नी मुतवफ़्फ़ीका' (या ईसा निस्यंदह मैं तुझे मृत्यु देने वाला हूँ आले इमरान -56) और आयत- 'फलम्मा तवफ़्फ़यतनी' (अतः जब तूने मुझे मृत्यु दे दी। अल माइदह- 118) में तवफ़्फ़ी का शब्द शरीर के साथ उठाए जाने के अर्थों में आया है तो यह ऐसा कथन है जिस पर कोई दलील नहीं और उन्होंने इस पर कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया और न ही अल्लाह के कलाम के मुहावरे, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा आपके सहाबा की व्याख्या या अरब लोगों में से किसी की गवाही से दलील दी। अतः यह तो ज़बरदस्ती थोपने वली बात है जैसा कि पक्षपाती लोगों का स्वभाव होता है।

और जब यह बात सबूत तक पहुंच गई कि क़ुरआन में हर स्थान पर तवफ़्फ़ी का शब्द मृत्यु देने और रूह क़ब्ज़ करने के अर्थों में ही आया है तो तुम्हारा इस तवफ़्फ़ी के शब्द के बारे में क्या विचार है जो 'या ईसा इन्नी मुतवफ़्फ़ीका' की आयत में आया है? क्या यह तुम्हारे निकट उन्हीं शब्दों के समान है जिन्हें तुम क़ुरआन में निरंतर हर स्थान पर मौत देने तथा रूह क़ब्ज़ करने के अर्थों में पाते हो? या उसके कोई और ऐसे विशेष अर्थ हैं जिनका उदाहरण न क़ुरआन में पाया जाता है और न हदीस में न ही किसी सहाबी के कथन में और न अरब के विद्वानों और उनके आगे-पीछे आने वाले शायरों के कलाम में पाया जाता है। अत: यदि तुम यह समझते हो कि जो अर्थ उलमा ने शब्द 'मुतवफ़्फ़ीका' के बेफायदा और भोंडे तौर पर गढ़ लिए हैं उसका कोई और उदाहरण यदि अरबी भाषा, पवित्र क़ुरआन और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में पाया जाता है तो तू उसे प्रस्तुत कर अगर तुम सच्चों में से हो और अगर तुम उन्हें प्रस्तुत न कर सके, और तुम कदापि प्रस्तुत न कर सकोगे, तो फिर उस अल्लाह से डरो जिसकी ओर तुम लौटाए जाओगे। फिर तुमसे तुम्हारे ज्ञान और कर्म के बारे में पूछा जाएगा और अल्लाह उसे जानता है जो समस्त संसार के दिलों में है अल्लाह के अस्तित्व और उसके सम्मान की क़सम मैंने अल्लाह की किताब को एक-एक आयत करके पढ़ा और उस पर खूब विचार किया फिर मैंने हदीस की पुस्तकों को बहुत गहरी नज़र से पढ़ा और उन पर भी खूब विचार किया परन्तु मैंने शब्द 'तवफ़्फ़ी' को न तो क़ुरआन में और न ही हदीसों में इस प्रकार से पाया है कि (जब उसका कर्ता अल्लाह हो और उसका कर्म कोई व्यक्ति हो तो) उसके अर्थ मौत देने तथा रूह को क़ब्ज़ करने के अतिरिक्त कुछ और हों। और जो व्यक्ति मेरी इस तहक़ीक़ के विरुद्ध सिद्ध करे तो उसको हज़ार रुपया सिक्का राइजुल वक्त मेरी ओर से बतौर इनाम है। ऐसा वादा मैं अपनी प्रकाशित पुस्तकों में विरोधियों तथा उन लोगों के सम्मुख कर चुका हूं जो यह समझते हैं कि 'तवफ़्फ़ी' का शब्द जब अल्लाह अपने बंदों में से किसी के लिए प्रयोग

करे तो वह रूह क़ब्ज़ करने और मौत देने के लिए विशिष्ट नहीं बल्कि वह हदीसों तथा अल्लाह की पुस्तक (क़ुरआन) में सामान्य अर्थों में आया है। और सच्चाई यह है कि जब 'तवफ़्फ़ी' का शब्द किसी वाक्य में आए और उसका कर्ता अल्लाह हो तथा उसका कर्म स्पष्ट रूप से या सांकेतिक रूप से कोई मनुष्य हो उदाहरणस्वरूप वाक्य इस प्रकार हो कि- تَوَفَّى اللهُ زَيْدًا (अर्थात अल्लाह ने ज़ैद नामक व्यक्ति को मृत्यु दे दी) या تَوَفَّى اللهُ بَكْرًا (अल्लाह ने बकर नामक व्यक्ति को मृत्यु दे दी) या تُوُفِّيَ خَالِدٌ (खालिद को मृत्यु दी गई) तो इसके अर्थ अरबी भाषा में केवल मारने और नष्ट करने के होंगे और उसके विपरीत तू अल्लाह के कथन, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन, अरब के शायरों में से किसी शायर तथा उनके प्रकांड विद्वानों के कलाम में इसके विपरीत कोई अर्थ न पाएगा। अत: हर प्रकार निगाह डाल कि क्या हम अपनी इस बात में सच्चे हैं या झूठे? और हमने अपना पक्ष स्पष्टतापूर्वक वर्णन कर दिया है ताकि जो विचार-विमर्श करने वाले हों वे विचार करें।

आश्चर्य है अज्ञानियों पर कि जब उन्होंने हमसे हमारी इस दलील को सुना तो उन्होंने सन्मार्ग की जिज्ञासा करने वालों के समान उसे स्वीकार न किया बल्कि विरोध में उठ खड़े हुए और अपनी ओर से हमारी (दलील) के तोड़ के तौर पर आयत- ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ (अर्थात फिर हर जान को पूरा-पूरा दिया जाएगा। आले इमरान- 3/162) और कुछ दूसरी इसी प्रकार की आयतें पढ़ीं परन्तु उन्होंने अपनी मूर्खता और घोर अज्ञानता के कारण न समझा कि यह समस्त आयतें जो वे हमारे खंडन में पढ़ते हैं वे सब की सब "बाब-ए-तफ'ईल" से हैं न कि "बाब-ए-तफ़उउल" से जो इस समय विवाद का विषय है। अत: देख कि वे किस प्रकार हर ओर ख़ुदा के नूर को बुझाने के लिए दौड़-धूप कर रहे हैं, फिर देख कि वे किस प्रकार असफल लौटते हैं। और कितनी ही क़ुरआनी आयतें हैं जिन्हें वे पढ़ते हैं फिर लापरवाही में उन से गुज़र जाते हैं। और उनकी अधिकता ने उन्हें उद्दंड बना दिया है इसलिए वे अहंकार पूर्वक कमज़ोरों पर अत्याचार करते हैं।

और अल्लाह तेरी सहायता और सुरक्षा करे और तेरे गुनाहों की मैल धो दे, जान ले! कि विरोधियों के कुछ अन्य ऐतराज़ भी हैं जो उनकी कमअक्ली तथा विचार-विमर्श की कमी के परिणाम स्वरूप पैदा हुए हैं। इसलिए हमने यह इरादा किया है कि हम उन ऐतराज़ों को उनके उत्तर सहित अपनी इस पुस्तक में लिखें ताकि लोगों में से प्रत्येक बुद्धिमान, प्रतिष्ठित और पक्षपात की मैल से पवित्र और सत्याभिलाषी व्यक्ति उससे लाभ प्राप्त करे।

अत: उन ऐतराज़ों में से एक यह है कि- वे कहते हैं कि फ़रिश्ते धरती की ओर इस प्रकार उतरते हैं जिस प्रकार व्यक्ति पहाड़ से नीचे की ओर उतरता है। अत: वे अपने निर्धारित स्थान से दूर हो जाते हैं। और अपने निर्धारित स्थान को उस समय तक खाली छोड़ देते हैं जब तक कि वे चढ़ते हुए उनकी ओर वापस न लौट जाएं। यह है उनकी आस्था जो वे वर्णन करते हैं और हम इसे स्वीकार नहीं करते। हम कहते हैं कि वह इस आस्था में गलती पर हैं तो उनका क्रोध बहुत बढ़ जाता है और वे कहते हैं कि यह लोग 'अहले सुन्नत वल जमाअत' की आस्थाओं से निकल गए हैं बल्कि काफ़िर और मुर्तद हो गए हैं। अत: वे हम पर ऐतराज़ करने के लिए उठ खड़े हुए हैं।

जहां तक उत्तर का संबंध है तो तू जान ले कि उन लोगों ने फ़रिश्तों को मनुष्यों के समान अनुमान करके गलती की है और उस व्यक्ति पर, जिसकी रचना स्वतंत्रता की मिट्टी से हुई हो और जिसे विश्वसनीय दिरायत का दूध पीने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो, यह बात छुपी नहीं कि फ़रिश्ते कदापि किसी विशेषता में भी मनुष्यों से समानता नहीं रखते और क़ुरआन, सुन्नत तथा सर्वसम्मति की दृष्टि से इस बात पर कोई भी दलील स्थापित नहीं हुई कि जब वे फ़रिश्ते धरती पर उतरते हैं तो वे आसमानों को उस शहर की तरह खाली छोड़ देते हैं जिसके निवासी उस से निकल गए हों और यह कि वे अपनी जान जोखिम में डालकर लोगों के पास जाते हैं। और वे यात्राओं के कष्ट, दूरी के दुख और उसकी थकान और कठिनाइयों और हर प्रकार की दौड़-धूप सहन करके धरती तक पहुंचते हैं। बल्कि पवित्र क़ुरआन यह स्पष्ट रूप से वर्णन करता है कि फ़रिश्ते

अपनी विशेषताओं में ख़ुदा तआला की विशेषताओं से समानता रखते हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ने-

وَّ جَآءَ رَبُّكَ وَ الْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا (अल फज्र- 89/23)

(अर्थात- और तेरा रब आएगा कतार बांधे हुए फ़रिश्ते भी) अल्लाह तुझे अध्यात्म ज्ञान के रहस्य प्रदान करे! तू देख कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने इस आयत में यह संकेत किया है कि उसका आना और फ़रिश्तों का आना तथा उसका उतरना और फ़रिश्तों का उतरना, वास्तविकता तथा अवस्था की दृष्टि से एक समान है और इस बात की आश्यकता नहीं कि हम तुझे रात के तीसरे पहर में अल्लाह का अर्श से उतरना जो कि प्रमाणित है, याद दिलाएं क्योंकि तू उस जानता है। इसके बावजूद मैं यह नहीं समझता कि तू उस उतरने को शारीरिक रूप से उतरने पर आधारित करता होगा और यह आस्था रखता होगा कि अल्लाह तआला जब दुनिया के निकटतम आसमान की ओर उतरता है तो अर्श उसके अस्तित्व से ख़ाली रह जाता है। अत: तू यह जान ले कि फ़रिश्तों का उतरना अल्लाह के उतरने के समान है। जैसा कि वर्णित आयतें उसकी ओर इशारा करती हैं। और अल्लाह ने फ़रिश्तों के अस्तित्व को ईमान में सम्मिलित किया है जैसा कि उसने स्वयं के अस्तित्व को उसमें सम्मिलित किया है और फ़रमाया है-

وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ الْمَلٰٓئِكَةِ وَ الْكِتٰبِ وَ النَّبِيّٖنَ (अल बक़र:- 2/178)

(अर्थात- बल्कि नेकी उसी की है जो अल्लाह पर ईमान लाए और क़यामत के दिन पर और फ़रिश्तों पर और किताब पर और नबियों पर) और फ़रमाया कि

وَ مَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ (अल मुद्दसिर- 74/32)

(अर्थात- और तेरे रब के लश्करों को कोई नहीं जानता सिवाए उसके।) अत: उसने समस्त लोगों पर यह स्पष्ट कर दिया है कि फ़रिश्तों की वास्तविकता और उनकी विशेषताओं की वास्तविकता बुद्धि की सीमाओं से ऊपर की बात है और इस (वास्तविकता) को केवल अल्लाह ही जानता है। इसलिए तुम अल्लाह और

उसके फ़रिश्तों के लिए उदाहरण वर्णन न करो बल्कि उसकी सेवा में आज्ञापालन करते हुए उपस्थित हो जाओ।

और तू जानता है कि हर मुसलमान मोमिन यह आस्था रखता है कि अल्लाह तआला अर्श पर विद्यमान और सुशोभित होने के बावजूद रात के तीसरे पहर में दुनिया के निकटतम आसमान पर उतरता है फिर भी इस आस्था के कारण किसी दोष लगाने वाले के दोष और व्यंग करने वाले के व्यंग उसकी ओर मुख नहीं करते बल्कि समस्त मुसलमान इस पर सहमत हैं और मोमिनों में से किसी ने उनसे झगड़ा नहीं किया। अत: इसी प्रकार फ़रिश्ते अपने निर्धारित स्थानों में विद्यमान रहते हुए धरती की ओर उतरते हैं और यह उसकी क़ुदरत के भेदों में से एक भेद है और अगर यह भेद न होते तो कहार ख़ुदा की पहचान न हो सकती। और इसमें कोई सन्देह नहीं कि आसमानों में फ़रिश्तों के स्थान निर्धारित हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने उनकी ओर से हिकायतन कहा है कि-

وَ مَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ (साफ्फात- 37/165)

[अर्थात- (फ़रिश्ते कहेंगे कि) हम में से प्रत्येक के लिए एक स्थान तय है।] और हम क़ुरआन में ऐसी कोई आयत नहीं पाते जो संकेत करती हो कि वह फ़रिश्ते किसी समय अपने उन निर्धारित स्थानों को छोड़ देते हैं बल्कि क़ुरआन यह संकेत करता है कि वह अपने उन स्थानों को नहीं छोड़ते जिन पर अल्लाह ने उन्हें नियुक्त किया है उसके बावजूद वे धरती की ओर उतरते हैं और अल्लाह तआला के आदेश से धरती वालों तक पहुंचते हैं और बहुत रूपों में प्रकट होते हैं। कभी वह नबियों के लिए मनुष्य का रूप धारण करते हैं और कभी वह नूर (प्रकाश) के समान प्रकट होते हैं और कभी अहले कश्फ़ उन्हें बच्चों के रूप में देखते हैं और कभी नौजवानों की सूरत में। और अल्लाह अपनी हर चीज़ पर हावी महान क़ुदरत के द्वारा उनके वास्तविक शरीरों के अतिरिक्त उनके लिए धरती पर नए शरीर पैदा करता है और उसके साथ आसमान में भी उनके लिए शरीर हैं और वे अपने आसमानी शरीरों से अलग नहीं होते और न वे अपने स्थानों को छोड़ते हैं। और वे नबियों तथा उन समस्त लोगों तक,

जिनकी ओर उन्हें भेजा जाए, आते हैं जबकि वे अपने-अपने स्थानों को भी नहीं छोड़ते। और यह अल्लाह के भेदों में से एक भेद है इसलिए तू इस पर आश्चर्य न कर। क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह हर बात पर समर्थ है अत: तू झुठलाने वालों में से न बन।

और फ़रिश्तों की ओर देख कि किस प्रकार अल्लाह ने उन्हें अपने अंगों के समान बनाया है और समस्त मामलों में और हर बात में अपनी 'कुन फयकूनियत'☆ के लिए उन्हें अपनी क़ुदरत का माध्यम बनाया है (यह शब्द 'कुन फयकून' से मिलकर बना हुआ शब्द है)। (यह फ़रिश्ते) अपने-अपने स्थान पर रहते हुए ही सूर फूंकते हैं और जिन लोगों तक चाहते हैं अपनी ध्वनि पहुंचा देते हैं। और उनमें से कोई इस बात से असमर्थ नहीं होता कि वह हर एक तक जो पूर्वी तथा पश्चिमी दिशाओं में है, आंख छपकने या उससे भी कम समय में पहुंच जाए और उसका कोई एक काम दूसरे काम में रुकावट नहीं बन सकता। उदाहरण स्वरूप मौत के फ़रिश्ते की ओर देखो जो लोगों पर नियुक्त किया गया है कि वह किस प्रकार निर्धारित समय पर हर एक की जान निकाल लेता है चाहे एक ही समय में उन मरने वालों में से एक व्यक्ति पूरब के छोर पर और दूसरा पश्चिम दिशा के अंतिम छोर पर रहता हो। अत: यदि ख़ुदाई व्यवस्था का यह सिलसिला फ़रिश्तों के आसमान से धरती की ओर और फिर एक शहर से दूसरे शहर और एक देश से दूसरे देश की ओर क़दम उठाकर जाने पर आधारित होता तो ख़ुदाई व्यवस्था तहस-नहस हो जाती और अल्लाह की तकदीर के मामलों में बहुत बड़ा हर्ज होता। और किसी फ़रिश्ते के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में यह संभव न होता कि वह समय व्यर्थ करने और अभीष्ट के नष्ट हो जाने से सुरक्षित रहे। और वह किसी न किसी समय अवश्य दंड का भागी भी होता और किसी न किसी दिन समय पर काम न करने के परिणाम स्वरूप वह ख़ुदा की चौखट से दूर फेंक दिया जाता और

☆**कुन फयकूनियत**- ख़ुदा जब कोई आदेश दे कि 'हो जा' तो तुरंत वह होने लगे और होकर रहे। अनुवादक

उसे भिन्न-भिन्न प्रकार के दंड मिलते। और तू जानता है कि फ़रिश्तों की शान इससे पवित्र है और वे हर काम अविलंब करते हैं और उनका कार्य बिना किसी अन्तर अल्लाह का कार्य होता है। अत: तू विचार कर और लापरवाहों में से न हो।★

फिर विचार कर अल्लाह तेरी सहायता करे और अध्यात्मज्ञान की ओर ध्यान करना तुझे नसीब करे। निस्सन्देह शरीर के हिसाब से फ़रिश्ते आसमानों और धरती में मौजूद हर चीज़ से बड़े हैं जैसा कि क़ुरआन और हदीस के प्रमाणों से सिद्ध है। अत: इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि उनमें से कोई अपने शक्तिशाली और बड़े शरीर के साथ धरती पर उतरे तो वह समस्त संसार को ढक ले और उन में बसने वालों को नष्ट कर दे और फिर भी वह धरती में

★**हाशिया :-** यहां स्वभाविक रूप से सद्बुद्धि रखने वाले व्यक्ति के दिल में एक प्रश्न पैदा होता है कि क्या फ़रिश्ते कोई काम जिसका उन्हें आदेश दिया जाए उतने समय में कर सकते हैं या नहीं जो उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए पर्याप्त न हो बल्कि वह उनके अपने स्थान पर खड़ा होने से पहले पहले समाप्त हो जाए? अत: यदि उसके उत्तर में यह कहा जाए कि वे उसका सामर्थ्य रखते हैं तो फिर नुज़ूल (अर्थात उतरना) व्यर्थ और समय को नष्ट करना होगा बल्कि वह कमज़ोरी की निशानी होगी बल्कि वास्तव में वह अवज्ञा और लापरवाही बन जाएगी। और जिस ने जानबूझ कर लापरवाही की तो उसने अवज्ञा की। और यदि यह कहा जाए कि वह फ़रिश्ते सामर्थ्य नहीं रखते तो इससे यह अनिवार्य होगा कि अल्लाह फ़रिश्तों के धरती पर उतरने की अवधि तक अपने अभीष्ट की प्रतीक्षा में रहे और इस बात में जो दोष है वह बुद्धिमानों से छुपा नहीं। निस्सन्देह अल्लाह के लिए प्रतीक्षा करना एक ऐसा दोष है जो असंभव है। और यह सही नहीं कि उसके इरादे में कोई रुकावट आ सके और उसकी इच्छापूर्ति में विलंब हो और उस पर कोई समय प्रतीक्षा करने वालों के समान आए। अत: समय न ठहरने वाली चीज़ है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उतरने का समय, रहने के समय तथा ख़ुदा तआला की वाणी सुनने के समय के अतिरिक्त समय है और तू जानता है कि उसकी शान यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो वह उसे कहता है कि "हो जा" तो वह होने लगती है। क्या तुम समझते हो कि अल्लाह के फ़रिश्ते सुलेमान के साथी से भी कम साहस और कम सामर्थ्य रखते हैं जो न तो उनके दरबार से उठा और न उसने अपना स्थान बदला बल्कि सुलेमान की आंख के झपकने से पहले ही बिल्कीस के तख्त को ला उपस्थित किया। अत: विचार कर क्योंकि बुद्धिमान के लिए इशारा ही पर्याप्त है। इसी से

समा न सके। अत: सच्चाई यह है कि उनका उतरना तमस्सुल☆ की सूरत में होता है और उनके वास्तविक शरीर आसमानों से नहीं उतरते बल्कि अल्लाह उनके लिए धरती पर दूसरे शरीर पैदा कर देता है जो धरती में समा सकें और जिस में उन फ़रिश्तों की सृष्टि की ज़ाहिरी रूप रेखा मांग करे, जिसे देखने वालों की आंखें देख लें।

अत: तू हमारी इस बात पर विचार कर जैसे कि विचार करना चाहिए और जल्दबाज़ी से काम न ले बल्कि समझने के लिए कुछ देर परिश्रम कर और मेरी इस वाणी को एक बार न्याय की दृष्टि से देख और एक बार मेरी बात की हक़ीक़त की छानबीन कर और एक बार मुझसे मेरी बातें सुन। फिर उसके बाद तुझे अधिकार है और उसे स्वीकार करना या न करना तेरे हाथ में है। और हमारी बात का सारांश यह है कि फ़रिश्ते ख़ुदा की अनन्त क़ुदरत को उठाने के लिए पैदा किए गए हैं। वे थकावट, कमज़ोरी और कठोर परिश्रम करने से पवित्र हैं। सफर की परेशानी, मार्ग तय करने की थकान, मंज़िलों और मक़सदों तक अपनी जान को कष्ट में डालकर और समय नष्ट करके पहुंचना उनके लिए दुरुस्त नहीं क्योंकि वे (फ़रिश्ते) अल्लाह की इच्छाओं को केवल इरादा करने से अविलंब पूरा करने के लिए उसके अंगों के तौर पर हैं। और अगर उनका उतरना और चढ़ना इंसानी चढ़ने और उतरने के समान होता तो आसमानी हुकूमत की व्यवस्था तहस-नहस हो जाती और जो कुछ (धरती-आकाश) में है वह सब नष्ट हो जाता और यह सब कमी अल्लाह की ओर संबद्ध होती जिस ने उनको रबूबियत और खालिकीयत तथा अन्य सिफात (विशेषताओं) की मुहिम में अपना क़ायम-मुक़ाम (स्थानापन्न) बनाया है। अत: वे उसके हर काम के प्रबंधक और उसकी ओर से हर चीज़ पर निगरान हैं। और उनकी शान यह है कि जब वे किसी चीज़ का इरादा करें तो वह अभीष्ट चीज़ अविलंब हो जाती है। अत: कहां यह सफर और कहां मार्ग तय करने और स्थानों को छोड़ने और समय खर्च करके धरती

☆ **तमस्सुल-** फ़रिश्ते का कोई रूप धारण करके संसार में आना/ किसी वस्तु का किसी अन्य रूप में प्रकट होना, जबकि वह अपने मूल स्थान पर है। अनुवादक

की ओर उतरने का प्रश्न? अत: इस बारे में तू झगड़ा न कर और उन लोगों से फतवा न मांग जिन्हें धार्मिक पक्षपात का जुनून हो गया है और उनके जुनून के कारण उनकी अक्लों पर पर्दा पड़ गया है।

और फ़रिश्तों के न उतरने के बारे में हमारे इस कथन का समर्थन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी होता है जैसा कि हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह अन्हा फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आसमान पर एक क़दम का भी ऐसा स्थान खाली नहीं जिसमें कोई फ़रिश्ता सजदा न कर रहा हो या खड़ा होकर उपासना न कर रहा हो और फ़रिश्तों का यह कथन है- وَ مَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ

[अर्थात- (फ़रिश्ते कहेंगे कि) हम में से प्रत्येक के लिए एक स्थान तय है। साफ्फात -37/165]

अल्लाह तुझ पर रहम करे जान ले कि यह निश्चित दलील है कि फ़रिश्ते अपने स्थान को नहीं छोड़ते अन्यथा यह कहना किस प्रकार सही हो सकता है कि आसमान में एक क़दम भर भी ऐसा स्थान नहीं पाया जाता जहां कोई फ़रिश्ता न हो। फिर बताओ कि फ़रिश्तों के धरती पर उतरने के समय यह अवस्था किस प्रकार स्थापित रह सकती है? क्या तुम यह आस्था नहीं रखते कि जिब्राईल का एक शरीर है जो पूरब और पश्चिम को भर देता है। अत: जब जिब्राईल इस विशाल शरीर के साथ धरती पर उतरे और आसमान उनसे खाली हो गया तो उस खाली स्थान के बारे में विचार कर और क़दम भर वाली हदीस को याद कर और लज्जित हो।

फिर जब तू लैलतुल क़द्र वाली सूरत पर विचार करेगा तो तुझे इससे भी बढ़कर लज्जा और हसरत होगी क्योंकि अल्लाह तआला उस सूरत में वर्णन करता है कि फ़रिश्ते और रूह (अल अमीन) उस रात अपने रब के आदेश से उतरते हैं और फज्र के उदय होने तक धरती पर ठहरते हैं। अत: जब सब के सब फ़रिश्ते उस रात धरती पर उतर आए तो फिर तेरी इस आस्था के आधार पर यह अनिवार्य होगा कि उनके उतरने के बाद सारे का सारा आसमान खाली

हो जाए और यह ऐसा ही है जैसा कि 'एक क़दम' वाली हदीस में पहले गुज़र चुका है। अतः तू अपना क़दम स्पष्ट गुमराही की ओर मत उठा। और तू खूब जानता है कि गुमराही के मुकाबले में सन्मार्ग स्पष्ट हो गया है और तू कोई ऐसी हदीस निकाल कर हमारे सम्मुख प्रस्तुत नहीं कर सकता जो यह सिद्ध करे कि फ़रिश्तों के धरती पर उतरने के बाद आसमान खाली रह जाता है। अतः अल्लाह और उसके रसूल के विरुद्ध न कर और उसके पीछे मत पड़ जिसका तुझे कोई ज्ञान नहीं अन्यथा तू लान-तान का निशाना बन बैठेगा और ख़ुदा की सहायता से वंचित और गुमराहों की टोली में सम्मिलित हो जाएगा।

निस्सन्देह वे लोग जो अल्लाह के मार्गों के इच्छुक हैं वे अपनी कथनी और करनी पर हठ नहीं करते और जब वे यह देखते हैं कि वे भटक गए हैं तो इस्तिग़फ़ार करते (क्षमा मांगते) हुए सच्चाई की ओर लौट आते हैं। तब तू उनकी आंखों को आंसू बहाते हुए देखेगा (वे यह दुआ कर रहे होंगे) कि हे हमारे रब! तू हमें क्षमा कर दे हम वास्तव में दोषी थे। तब उनका रब उन्हें क्षमा कर देता है और अपनी रहमत तथा कृपा करता है और अल्लाह तौबा करने वालों तथा पवित्र लोगों को पसंद करता है। जान ले कि अल्लाह और उसका वह रसूल जिसे जवामिउल कलिम (शब्द भंडार) प्रदान किए गए हैं, वार्तालाप में बहुत अधिकता से रूपकों का प्रयोग करते हैं और जो व्यक्ति पूर्ण रूप से विचार नहीं करता वह उन (के समझने) में गलती कर जाता है। और जो उनकी समय से पूर्व व्याख्या करता है और यह आस्था रखता है कि वे (रूपक) वास्तविकता पर आधारित हैं हालांकि वह वास्तविकता पर आधारित नहीं हैं, परन्तु वह समय पूर्व हस्तक्षेप के कारण ग़लती कर बैठता है और अपनी ग़लती पर हठ करता है या उसको अल्लाह की कृपा प्राप्त होती है और वह विवेकवान लोगों में से हो जाता है।

अल्लाह तआला की यह सुन्नत निरन्तर चली आती है कि उसकी आइंदा भविष्यवाणियों और उसके सूक्ष्म एवं गूढ़ अध्यात्मज्ञानों में जो रूपकों से सुसज्जित होते हैं, कुछ ऐसे भाग होते हैं जिनसे लोगों की परीक्षा ली जाती है। फिर वे लोग

जिनके दिलों में बीमारी होती है, उनको अल्लाह तआला इन बीमारियों में बढ़ा देता है। अत: वे जल्दीबाज़ी से काम लेते हैं और ईशवाणी को झुठलाते हैं या वे अत्याचार तथा अहंकार करते हुए उस व्यक्ति को झुठलाते हैं जिसे अल्लाह ने अपना ज्ञान प्रदान किया होता है और वे डरते हुए विचार नहीं करते। फिर जब उसकी बरियत प्रकट हो जाती है और उसकी दलील स्पष्ट हो जाती है तो वे लज्जित होकर उसकी ओर लौटते हैं या वे पक्षपात के गड्ढे में गिर कर मर जाते हैं और अल्लाह उन से विमुख हो जाता है। और अल्लाह समस्त जहानों से बेपरवाह है। हां वह व्यक्ति जिसे अल्लाह के दरबार से विवेक और उसकी ओर से नूर प्रदान किया जाता है वह ख़ुदा के ज्ञान में महारत प्राप्त कर लेता है। और वास्तविकता को पहचान लेता है और अल्लाह के नूर के द्वारा देखता है और अल्लाह उसे सुरक्षित लोगों जैसी मज़बूत राय प्रदान करता है।

अब हम अपनी पहली बात की ओर लौट कर आते हैं और कहते हैं कि अल्लाह तआला ने अपनी सुदृढ़ पुस्तक (क़ुरआन) में फ़रमाया है-

إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ (अत्तारिक- 86/5)

(अर्थात- कोई एक जान भी ऐसी नहीं जिसका कोई संरक्षक न हो।) अत: जब फ़रिश्ते समस्त सितारों, सूरज, चंद्रमा, आसमानों, अर्श तथा हर उस चीज़ के अस्तित्व के संरक्षक हैं जो धरती में है, तो यह अनिवार्य हुआ कि वे अपनी सुरक्षा अधीनस्थ चीज़ों से पल भर के लिए भी जुदा न हों। अत: विचार कर कि इस बात से सच्चाई कैसे खुल गई और उन (फ़रिश्तों) के अपने असली शरीरों के साथ उतरने और चढ़ने की आस्था रखने वालों का विचार झूठा हो गया। तो उस मारिफ़त के बिंदु को स्वीकार करने के सिवा कोई चारा नहीं जिसे हमने लिखा है अर्थात यह कि फ़रिश्ते वास्तविक रूप में नहीं उतरते और वे सफर की कठिनाइयों से दो-चार नहीं होते बल्कि जब अल्लाह उन्हें दुनिया में दिखाने का इरादा करता है तो उनका एक समरूप अस्तित्व धरती में पैदा कर देता है। इस प्रकार उन्हें वह आंख देख लेती है जो तंद्रावस्था में लीन रहती है और यदि ऐसा न होता तो यह अनिवार्य होता कि रूहों के क़ब्ज़ करने तथा अन्य मुहिमों

को पूर्ण करने के अवसर पर समस्त लोग उन फ़रिश्तों को धरती पर उतरते हुए देखते। और यह भी अनिवार्य होता कि उदाहरण स्वरूप मौत के फ़रिश्ते को हर वह व्यक्ति देखता जिस के निकट संबंधी, भाईबंध, क़बीले वाले, औलाद, क़ौम और मित्रों में से कोई उसकी आंखों के सामने मरता। अत: यदि फ़रिश्तों का शरीर दूसरे वजूदों के शरीरों के समान हो तो उनके उतरने के समय अपने वास्तविक शरीर के साथ उनके दिखाई न देने का कोई कारण नहीं बनता और तू जानता है कि बहुत से लोग हमारी आंखों के सामने मरते हैं। अत: हम उनकी जान निकलने (चंद्रावस्था) और मौत की बेहोशी के समय उन फ़रिश्तों को नहीं देखते जो उनकी रूह क़ब्ज़ करते हैं और न हम वह सुनते हैं जो वे मुर्दों से पूछते और जो वे उनसे बातें करते हैं। अत: वास्तविकता यह है कि यह विषय तथा इस जैसे अन्य विषय आलम-ए-मिसाल (उदाहरणों के संसार) की बातें हैं जिस की वास्तविकता को अल्लाह ने बुद्धि तथा आंखों पर प्रकट करने का इरादा नहीं किया। हां जबकि आलम- ए-मिसाल के उदाहरण बहुत से हैं और उनमें से एक फ़रिश्तों का उतरना है। और एक वह है जो हदीसों में आया है कि मोमिन की क़ब्र जन्नत के बागों में से एक बाग या नर्क के गड्ढों में से एक गड्ढा है। और इन मिसालों में से एक यह भी है जो एक हदीस में आया है कि

انّ اللہ یکشف للمؤمن غرفةً الی الجنّة فی قبرہٖ و یکشف للکافر غرفةً الی جھنّم

अर्थात अल्लाह मोमिन के लिए उसकी क़ब्र में जन्नत की तरफ एक खिड़की खोलेगा और काफ़िर के लिए एक खिड़की नर्क की ओर खोलेगा। परन्तु कभी-कभी हम क़ब्रों को देखते हैं या उनकी धरती खोदते हैं तो स्वर्ग या नर्क की ओर कोई खिड़की नहीं देखते और बाग़ तो दूर हम उनमें एक पेड़ तक नहीं देखते और इसी तरह भड़कती हुई जलाने वाली अग्नि तो दूर हम आग का कोई अंगारा तक नहीं देखते और न ही हम वहां किसी मुर्दा को उसके मरने के बाद जीवित बैठा हुआ देखते हैं जैसा कि प्रश्नोत्तर के समय मुर्दों के बैठने तथा उनके जीवन के बारे में ख़बर दी गई है बल्कि कफन दी गई मय्यत को देखते हैं जिसके

गोश्त और कफन को मिट्टी ने खा लिया है। और हदीसों में यह भी तो आया है कि शहीदों को स्वर्ग के फल, दूध और पवित्र पेय पदार्थों में से भोजन दिया जाता है हम उनकी क़ब्रों में जो स्वर्ग के बागों में से एक बाग़ हैं कोई फल या कोई सुगंधित पौधा या दूध का प्याला या शराब का कोई जाम नहीं देखते। और कभी-कभी हम मुर्दों को कई दिनों तक दफन नहीं करते परन्तु हम उनके पास फ़रिश्तों का आना-जाना नहीं देखते और अल्लाह तआला ने अपनी पुस्तक में यह ख़बर दी है कि फ़रिश्ते काफ़िरों के मुंह पर थप्पड़ मारते हैं परन्तु हम न तो किसी मारने वाले फ़रिश्ते को देखते हैं और न उसकी मार के निशान को और न ही मार खाने वालों की चीखो-पुकार सुनते हैं। और कुछ हदीसों में आया है कि जब कोई दूध पीता बच्चा मां का दूध पीने के दिन पूरे होने से पहले मर जाए तो उसके दूध पीने की अवधि को क़ब्र में पूरा किया जाता है परन्तु हम उसकी दूध पिलाने वाली को क़ब्र में बैठे हुए नहीं देखते और न ही बच्चे को उसका दूध चूसते हुए पाते हैं और कुछ "आसार हदीसों" में आया है कि मोमिन की क़ब्र इतनी-इतनी सीमा तक चौड़ी कर दी जाती है परन्तु हम उस चौड़ाई का कहीं निशान नहीं देखते बल्कि हम बिना किसी अंतर के चौड़ाई तथा संकीर्णता में उसे काफ़िर की क़ब्र के समान ही देखते हैं। अत: हम उसकी हक़ीक़त का कैसे दावा कर सकते हैं जबकि हम उसके लक्षण भी नहीं देखते।

इसी प्रकार कहा गया है कि शहीद जीवित हैं और वे खाते-पीते हैं परन्तु हम नहीं देखते कि वे लोगों से जीवितों के समान मिले हों और वे अपनी क़ब्रों से छलांग लगाकर बाहर आए हों और अपने घरों को वापस लौट आए हों। अत: यदि यह मामले अर्थात फ़रिश्तों का उतरना, मोमिनों की क़ब्रों को चौड़ा किए जाना और उनमें बाग का मौजूद होना और मुर्दों का क़ब्रों में जीवित होकर बैठना और कुछ दूसरे मामले जिनका वर्णन क़ुरआन और हदीसों में पाया जाता है वास्तविक और अनुभूत विषय होते, जिनका संबंध इस संसार से है न कि परलोक से तो हम उसको (अपनी इन आँखों से) देखते जैसे हम उन दूसरी चीज़ों को देखते हैं जो इस संसार में पाई जाती हैं। और तू जानता है कि हम में

से कोई उन घटनाओं को उस आंख से नहीं देखता जिससे वह इस संसार की चीज़ों को देखता है। क्योंकि हम इस दुनिया के वृक्ष तथा उसके बागों को दूर से देख लेते हैं और हम उनके फल उनके शाखाओं से लटके हुए देखते हैं परन्तु जब हम शहीदों में से किसी शहीद की क़ब्र खोलते हैं तो उसमें उनका कोई निशान नहीं पाते। हालांकि हमारा ईमान है कि उनकी क़ब्रों को बहुत सी नेमतें दी जाती हैं और उन्हें दूर-दूर तक फैलने वाली सुगंध से सुगंधित किया गया है। और उन तक तस्नीम (स्वर्ग की एक नहर) का पानी और सुबह की ठण्डी हवा की ख़ुश्बूदार झोंके लाए गए और उनमें जन्नत के बागों में से एक बाग भी है और दूध और शराब के प्यालों में से एक प्याला है परन्तु हमने उनमें से किसी चीज़ को अपनी आंखों से नहीं देखा और न किसी दूसरी इन्द्रिय से उसे महसूस किया। अत: तावील के सिवा हमारे लिए कोई चारा नहीं इसलिए हम कहते हैं कि यह सब मामले अर्थात फ़रिश्तों का उतरना, जन्नत का नुज़ूल और दूसरे मामले मिले-जुले हैं जो एक दूसरे से समानता रखते हैं। और इसमें सन्देह नहीं कि बिना किसी मतभेद और अंतर के उनकी वास्तविकता एक ही है और निस्सन्देह यह सब वृतांत एक ही लड़ी में पिरोए हुए हैं। अत: तू विवेक से काम ले, तो आपत्ति कर्ताओं की आपत्तियों से बच जाएगा। और तू उन लोगों की ओर आकर्षित न हो जिन्होंने अत्याचार किया और सन्मार्ग तथा गुमराही से अलग हो जाने के बाद अपमान सहा और गलती की। और उस कथन का अनुसरण कर जो पूरी तरह स्पष्ट हो चुका है और अज्ञानियों का अनुसरण करना पूरी तरह से छोड़ दे और इस बात की परवाह न कर कि कोई बुरा भला कहता है या अपाहिज समझता है और उन लोगों में से हो जा, जो अल्लाह के समक्ष पूर्ण आज्ञाकारी होते हैं।

और तेरे लिए इसके सिवा कोई चारा नहीं कि तू ईमान लाए और आस्था रखे कि फ़रिश्तों का उतरना और मुर्दों का अपनी क़ब्रों में जीवित होना और अपनी क़ब्रों में बैठना और वहां स्वर्ग तथा नर्क का अस्तित्व इस संसार की घटनाओं में से नहीं और न ही वह इन इंद्रियों से अनुभव किए जा सकते हैं बल्कि उनका संबंध परलोक से है और किसी व्यक्ति के लिए उचित नहीं कि वह उनको इस

संसार की घटनाओं पर चरितार्थ करे। या इस संसार की वास्तविकताओं को उस पर अनुमान करे बल्कि यह मामले ऐसे हैं जो इस संसार के तौर तरीके और उसके अनुभवों से श्रेष्ठतर हैं और उनकी हक़ीक़त को केवल अल्लाह ही जानता है। अत: तू उनके लिए उदाहरण वर्णन न कर और न ही हद से आगे बढ़ने वालों में से हो।

और तू जानता है कि अल्लाह तआला ने अपनी पुस्तक में यह नहीं फ़रमाया कि फ़रिश्ते अपने उतरने और चढ़ने में इंसानों से समानता रखते हैं। बल्कि उसने अपनी सुदृढ़ पुस्तक में बहुत से स्थानों पर इस ओर संकेत किया है कि फ़रिश्तों का उतरना और चढ़ना अल्लाह के उतरने और चढ़ने के समान है और इस बात से तू अनजान नहीं कि अल्लाह तआला रात के अंतिम पहर में सबसे निकटतम आसमान पर उतरता है परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि उसके उतरने के समय अर्श खाली रहता है। और इसी प्रकार अल्लाह ने अपनी पुस्तक में बादलों के साए में निकटतम फ़रिश्तों के साथ अपने उतरने की ओर संकेत किया है। अत: जब अल्लाह अपने सब फ़रिश्तों के साथ धरती पर उतर आया फिर अगर यह उतरना शारीरिक उतरने के समान हो, तब तो अनिवार्य है कि तू यह आस्था रखे कि अर्श और आसमान उस दिन खाली रह जाते हैं और उनमें न रहमान ख़ुदा होता है और न उसके फ़रिश्ते। अत: यदि तू नसीहत हासिल करने वालों में से है तो नसीहत हासिल कर और जो कुछ हमने कहा है उस पर भली-भांति विचार कर और अगर तू सत्याभिलाषी है तो अध्यात्मज्ञान को स्वीकार करने के लिए तैयार हो जा।

क्या तू समझता है कि आसमान एक हालत पर नहीं रहता, कभी तो वह फ़रिश्तों से इतना भरा होता है कि उसमें तिल धरने का भी स्थान नहीं होता। और कभी वह ऐसे खाली स्थानों के समान होता है जिनमें कोई भी नहीं होता। अत: यदि तू इस झूठी आस्था को सत्यापित करता है और फ़रिश्तों के अपने शरीरों समेत उतरने पर हठ करता है तो तुझ पर अनिवार्य है कि तू उसे क़ुरआन तथा हदीस के प्रमाणों से सिद्ध करे जैसा कि तू इसका दावेदार है या फिर संयमी मर्दों

के समान तौबा (प्रायश्चित) कर ले। और कुछ हदीसों में वर्णित है कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम ईसा अलैहिस्सलाम के साथ धरती पर 30 साल तक ठहरे रहे और वह उनसे किसी समय भी अलग न हुए और कुछ दूसरी हदीसों में आया है कि वह आसमान में होते हुए ही वह्यी को उतारता है और अपने रब की ओर से वह्यी पाता है और फिर दूसरों को उससे सूचित करता है। अत: यह तुझ पर एक और मुसीबत है और तू उन हदीसों में एकरूपता और समानता पैदा करने पर समर्थ न होगा।

और अधिकतर तेरे दिल में भ्रम खटकेगा और तू कह उठेगा कि मैं फ़रिश्तों के उतरने के बाद आसमानों के खाली होने का समर्थक नहीं। और इस पर तुझसे यह कहा जाएगा कि तू अपनी आस्था को भूल रहा है। क्या तेरी यह आस्था नहीं है कि फ़रिश्ते वास्तविक रूप से उतरते हैं? अत: इससे तुझ पर अनिवार्य हुआ कि तू कहे कि वे अपने वास्तविक शरीरों के साथ उतरते हैं। और तू जानता है कि उनका अपने वास्तविक शरीरों के साथ उतरना निश्चित रूप से इस बात की मांग करता है कि आसमान उनके उतरने के बाद ख़ाली हों और अगर तेरी यह आस्था है कि फ़रिश्ते अपने वास्तविक शरीरों के साथ नहीं उतरते बल्कि अल्लाह तआला उनके लिए धरती में दूसरे शरीर पैदा करता है जिनको न तो समझा जा सकता है और न वे देखे जा सकते हैं, तो हमारा धर्म भी यही है। परन्तु यदि तू उनके वास्तविक शरीरों के साथ उनके उतरने पर हठ करे तो यह आस्था महान क़ुरआन के विरुद्ध है क्योंकि क़ुरआन फ़रिश्तों के अस्तित्व को ईमानियात (आस्था) में सम्मिलित करता है और उनके लिए आसमानों में निर्धारित स्थानों की निशानदही करता है अर्थात् वे स्थान जिन पर अल्लाह ने उन्हें नियुक्त किया है और वह यह वर्णन नहीं करता कि वे किसी समय अपने स्थानों को छोड़ देते हैं। जहां तक उनके उतरने के वर्णन का संबंध है तो वह अल्लाह के उतरने के वर्णन जैसा है और उन दोनों के बीच कोई अन्तर नहीं। अत: उनमें से कुछ सफ (कतार) बांधने वाले हैं, कुछ तस्बीह (ख़ुदा का गुणगान) करने वाले हैं और कुछ रुकू करने वाले और कुछ सज्दा करने वाले हैं और कुछ क़याम

करने वाले हैं जैसा कि इसकी ओर पवित्र क़ुरआन ने संकेत किया है और उन फ़रिश्तों में से कोई भी बेकार लोगों के समान बैठने वाला नहीं।

अत: उनमें से जब कोई अपने भौतिक शरीर के साथ उतर आए तो अनिवार्य होगा कि वह अपने स्थान को खाली छोड़ आए और अपनी सफ़ से बाहर निकल जाए और अपने तस्बीह या रुकू या सज्दा के स्थान से दूर हो जाए जिस पर अल्लाह ने उसे नियुक्त किया है और मुसाफिरों के समान धरती पर उतरे। जबकि हम क़ुरआन में इस शिक्षा का कोई अंश तक नहीं देखते बल्कि अल्लाह ने फ़रिश्तों के उतरने को अपने अस्तित्व के उतरने के समान और उनके आगमन को स्वयं के आगमन के समान क़रार दिया है। क्या तू अल्लाह तआला के इस कथन की ओर नहीं देखता -

وَّ جَآءَ رَبُّكَ وَ الْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا (अल फज्र- 89/23)

(अर्थात- और तेरा रब आएगा और कतार बांधे हुए फ़रिश्ते भी) और अल्लाह के कथन-

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ قُضِيَ الْاَمْرُ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ (बक़र: - 2/211)

(अर्थात- क्या वे केवल यह प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह बादलों की छाया में उनके पास आए और फ़रिश्ते भी और मामला निपटा दिया जाए। और अल्लाह ही की ओर तमाम मामले लौटाए जाते हैं।) की ओर नहीं देखता? और यहां एक और बिंदु भी है और वह यह कि अल्लाह जब अपने फ़रिश्तों के साथ धरती की ओर उतरता है तो आवश्यक है कि सब के सब फ़रिश्ते भी उतरें क्योंकि फ़रिश्ते अल्लाह की फौज हैं। इसलिए उचित नहीं कि उनमें से कोई अर्श के रब (ख़ुदा) के धरती पर उतरते समय पीछे रह जाए। और जब यह सिद्ध हो गया तो इससे यह भी अनिवार्य हुआ कि अर्श से लेकर दुनिया के निकटतम आसमान तक हर आसमान अल्लाह तआला के धरती पर उतरते समय खाली हो जाए, न उसमें रब्बे रहीम और अर्श का रब हो और न फ़रिश्तों में से कोई फ़रिश्ता। और जैसा

कि विचार-विमर्श करने वालों पर यह बात छुपी नहीं कि (जब) अनिवार्य खण्डित हो जाए तो उससे संबंधित भी वैसे ही (खण्डित) होगा।

फिर अगर हम यह अनुमान कर लें कि उदाहरण स्वरूप धरती में एक लाख नबी हैं जिनमें से कुछ पूरब में हैं और कुछ पश्चिम में हैं, कुछ दक्षिण की दिशाओं में और कुछ उत्तर के अत्यंत दूर के क्षेत्रों में हैं और अल्लाह तआला जिब्राईल को यह आदेश दे कि उन सब की ओर एक ही समय में वह्यी करे और उनमें से कोई एक भी वह्यी पाने में आगे पीछे न हो या अगर हम यह अनुमान कर लें कि अल्लाह ने मौत के फ़रिश्ते को यह आदेश दिया कि वह एक लाख लोगों को जिनमें से कुछ पूरब में रहते हैं और कुछ पश्चिम में, पलक झपकने की अवधि में मार दे और इसमें आगे-पीछे न हो। (तो ऐसी अवस्था में) तुम्हारा क्या विचार है कि जिब्राईल या मौत का फ़रिश्ता उससे असमर्थ रहेंगे या वे पूरब में होते हुए पश्चिम वाले आदेश को पूरा करने पर समर्थ होंगे? अत: यदि वे इस बात पर समर्थ हैं तो फिर उसी प्रकार वे इस बात पर भी समर्थ हैं कि वे आसमान से न उतरें परन्तु उतरने वालों के समान जैसा चाहें काम कर दिखाएं।

एक अन्य उदाहरण के द्वारा हम तुमसे उत्तर की मांग करते हैं और वह यह कि किसी महामारी के दिनों में मौत का फ़रिश्ता पूर्वी देशों के किसी बड़े शहर में इस उद्देश्य से उतरा कि वह शहर के रहने वालों की रूह को क़ब्ज़ करे फिर उसे उस शहर में दो महीने तक रहने की विशेष आवश्यकता पड़ गई क्योंकि उसमें मौत की घटनाएं अधिक और निरंतर घट रही थीं और वह अभी एक रूह के क़ब्ज़ करने से फारिग नहीं होता था कि दूसरी रूह के क़ब्ज़ करने का समय आ जाता। यों इस निरन्तर चलते सिलसिले ने उस शहर में उसे रोक लिया और वह वहां से उस समय तक नहीं जा सकता था जब तक वह वहां के रहने वालों को न मार ले। अत: वह उस शहर में ठहरा रहा यहां तक कि उसका ठहरना लंबा हो गया और दो महीनों का समय लग गया। तो उस क़ौम का क्या हाल होगा जिनकी मौत का समय उन दिनों में पश्चिमी देशों में हो गया

हो और मौत के फ़रिश्ते ने उनके निर्धारित समय पर उन तक पहुंचने का सामर्थ्य न पाया हो। क्या रूहों के क़ब्ज़ करने वाले फ़रिश्ते के उन तक पहुंचे बिना वे मर जाएंगे या उनकी मौतों का समय खाली जाएगा? अगर तुम सच्चे हो तो खुल कर बताओ। यह नहीं कहा जा सकता कि मौत का फ़रिश्ता पूरब में ठहरने के बावजूद पश्चिम में रहने वाले लोगों की रूहों को क़ब्ज़ करने पर समर्थ है क्योंकि हम कहते हैं कि यदि वह ऐसे कार्य पर समर्थ है तो वह आसमान से उतरने पर क्यों विवश हुआ? हालांकि वह धरती में फिरने का मोहताज नहीं।

और जब तुम ने स्वीकार कर लिया और मान लिया कि फ़रिश्तों में से कोई फ़रिश्ता किसी देश में होते हुए समस्त पृथ्वी पर प्रभाव डाल सकता है। और कोई परिस्थिति उसको किसी दूसरे काम से रोक नहीं सकती और वह पश्चिम में होते हुए किसी भी पूरब में रहने वाले को पूरब में मृत्यु दे सकता है तो इसमें क्या हर्ज होगा कि तू कहे कि फ़रिश्ते आसमान में होते हुए भी अल्लाह तआला के आदेश से धरती में कार्य करते हैं, और उनके उतरने की कौन सी ऐसी अत्यंत आवश्यकता पड़ गई है जबकि वे धरती पर किसी (एक) स्थान पर होते हुए किसी (दूसरे) स्थान के रहने वालों पर अपना प्रभाव डालने में समर्थ हैं।

अगर तू हमसे किसी ऐसे उदाहरण की मांग करता है कि जिससे तुझ पर हमारा धर्म स्पष्ट हो जाए तो भली-भांति जान ले कि यह बात उदाहरणों के वर्णन करने से बहुत ऊपर हैं। वास्तव में तो नहीं बल्कि लगभग यह कहा जा सकता है कि फ़रिश्तों के धरती पर उतरने का उदाहरण आसमानी सितारों के समान है जिनकी शक्लें समुद्रों, दरियायों, तालाबों और दर्पणों में नज़र आती हैं जो उनके सम्मुख होते हैं। और सच्चाई यह है कि उतरने का मामला बुद्धि की सीमा तथा उदाहरणों के वर्णन से ऊपर है। और यह तो उस सामर्थ्यवान ख़ुदा की ओर से एक नई पैदाइश है जो हर सृष्टि को खूब जानने वाला है। और जिसकी हिकमतों की हक़ीक़त और उसके गुप्त रहस्यों तक आंखें नहीं पहुंच सकतीं। अत: फ़रिश्तों के उतरने को मनुष्यों के उतरने से समानता देना मूर्खता और गुमराही है और

उससे इन्कार नास्तिकता और अधर्म है, और ऐसे अर्थ स्वीकार करना जो उन फ़रिश्तों की शान के योग्य हों जो अल्लाह के अंगों के समान हैं पूर्ण पहचान और सीधा रास्ता है। अल्लाह हमें और अपने नेक बंदों को यह सही पहचान और सीधा रास्ता प्रदान करे।

और यह उतरने के अर्थों की अत्यंत सुंदर ता'बीर (भाववार्थ) है जो अधिकतर लोगों पर संदिग्ध हो गई है। अत: धन्यवादी होकर तू इस अर्थ को मुझ से प्राप्त कर ले क्योंकि यह उन ज्ञानों में से है जो अल्लाह ने मेरे दिल में डाले हैं और जिन पर मुझे हार्दिक संतुष्टि प्रदान की गई है और यह वही संतुष्टि है जो मुहद्दसीन की ज़बानों पर जारी होती है, जब लोग अपनी भ्रांतियों के निवारण के मोहताज होते हैं। अत: विचार कर और इससे विमुख न हो यदि तू विश्वास के मार्गों का इच्छुक है। अल्लाह ने उनके सूक्ष्म और कठिन विषयों को हल करने के लिए मुझे मार्गदर्शक बनाया है यद्यपि मेरा स्वभाव मार्गदर्शन से संकोच अनुभव करता है और उसे नापसंद करता है। परन्तु उसने अपनी ओर से कृपा करते हुए ऐसा किया ताकि वह उस व्यक्ति पर उपकार करे जिस को झुठलाया गया और जिस पर लानत की गई और जिसे काफ़िर कहा गया और ताकि अपनी सृष्टि पर उपकार करे और शत्रुओं को यह दिखाए कि वे झूठे और बोधभ्रम में ग्रस्त हैं और ताकि वह ज़माने वालों को वह ज्ञान प्रदान करे जिनके प्रकटन की उनके स्वभाव मांग करते हैं और अल्लाह जो चाहता है करता है, लोगों को यह अधिकार नहीं कि वह उसके कार्य के बारे में उससे प्रश्न करें जबकि वे स्वयं (उसके समक्ष) उत्तरदाई हैं।

और क़सम है मुझे उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है कि उसने मुझे देखा और मुझे स्वीकार किया और मुझ पर उपकार किया और मेरा पालन पोषण किया और मुझे अपनी ओर से सद्बुद्धि और सही समझ प्रदान की। और कितने ही नूर हैं जो उसने मेरे दिल में डाले जिनके कारण मैंने पवित्र क़ुरआन से वह कुछ सीख लिया जो मेरे अतिरिक्त दूसरे लोग नहीं जानते और मैंने उनसे वह कुछ पाया जो मेरे विरोधी नहीं पाते और मैं उसके समझने में उस मर्तबा

(श्रेणी) पर पहुंच गया जिससे अधिकतर लोगों की बुद्धि असमर्थ है। और यह पूर्णत: उसका उपकार है और वह सबसे बेहतर उपकार करने वाला है।

और उनके ऐतराज़ों में से एक यह है कि जब उन्होंने मेरी पुस्तक "तौज़ीह-ए-मराम" पढ़ी और उन्होंने उस में यह लिखा हुआ पाया कि सूर्य, चंद्रमा और सितारों के ऐसे प्रभाव हैं जिनके द्वारा अल्लाह हर उस चीज़ का भरण पोषण करता है जो धरती में पाई जाती है, तो उन्होंने मुझ पर ऐतराज़ किया और कहा कि यह आस्था झूठी और ग़लत है और हदीसों में जो आया है उसके विपरीत है। हाय अफसोस उन पर! उन्होंने न तो हदीसों के अर्थ समझे और न ही मेरे कथन के अर्थ समझे और जल्दबाज़ी तथा कुधारणा करते हुए उठ खड़े हुए और नेक लोगों के समान उन्होंने मेरे शब्दों के अर्थ मुझसे नहीं पूछे बल्कि वह क्रोध से भर गए और उन्होंने मुझे झुठलाया, मुझे काफ़िर कहा और गालियां दीं। और विचार विमर्श न किया और अपनी दुष्टता तथा मूर्खता दिखाई और उन्होंने अपने ही पर्दे खोले और वह अपनी अज्ञानता को पहचान न सके।

अत: हे गहरी नज़र रखने वालो तथा दूरदर्शियो! जान लो कि हमने पुस्तक में कोई ऐसी चीज़ नहीं लिखी जो क़ुरआन या हदीस के प्रमाणों के विपरीत हो और न हमने कभी भी ऐसी बात कही। अल्लाह ने हमें ऐसी बातों से अपनी शरण में रखा हुआ है परन्तु वे हैं कि समझने से पहले ही ऐतराज़ करते हैं और पूर्व इसके कि वे हिदायत पाने वाले हों, वे हमें गुमराह समझते हैं। अल्लाह जानता है और हम जिन्नों तथा इंसानों को गवाह के तौर पर प्रस्तुत करते हैं कि हम यह आस्था नहीं रखते कि सूर्य और चंद्रमा और सितारों में से कोई एक भी अपने कर्म में स्थाई रूप से स्वतंत्र और व्यक्तिगत तौर पर प्रभावकारी है या उसे प्रभावों को पहुंचाने में कोई अधिकार है या नूरों के पहुंचाने और वर्षाओं के बरसाने और शरीरों तथा फलों की उन्नति में उन्हें अपनी इच्छा से कोई सामर्थ्य है। और न ही हमारी यह आस्था है कि उन नूरानी सितारों में से कोई प्रशंसा, धन्यवाद और उपासनाओं का अपने लाभ पहुंचाने के कारण अधिकारी है या उसका धरती वालों पर तनिक भर भी एहसान है। या वह लोगों की दुआओं को

सुनता है और प्रशंसा करने वालों से प्रसन्न होता है और जिसने इन बातों में से कोई बात हमारी ओर संबद्ध की तो उसने हम पर अत्याचार किया और अल्लाह जानता है कि वह झूठ गढ़ने वाला, महा झूठा और निर्लज्ज और धोखेबाज़ों के रास्तों पर चलने वाला है।

बल्कि हम ईमान लाते हैं और आस्था रखते हैं कि अल्लाह अकेला है, निस्पृह है, उसके अस्तित्व तथा उसकी समस्त विशेषताओं में उसका कोई भागीदार नहीं, न आसमानों में और न धरती में और जिसने आसमान या धरती की किसी चीज़ को अल्लाह का भागीदार ठहराया तो वह हमारे निकट काफ़िर, मुर्तद और इस्लाम धर्म से दूर तथा मुश्रिकों में सम्मिलित है।

और उसके साथ-साथ हम यह आस्था रखते हैं कि वस्तुओं के गुण एक वास्तविकता है और उनमें उस अलीम व हकीम (सर्वज्ञानी तथा सर्वाधिक विवेकवान) ख़ुदा की आज्ञा से जिसने कोई चीज़ लाभरहित पैदा नहीं की, प्रभाव हैं और हम हर चीज़ में कोई विशेषता और प्रभाव पाते हैं जो अल्लाह ने उसमें रखा हुआ है यहां तक कि मच्छर, मक्खी, जुओं, कीड़ों और उनसे भी निम्नतर चीज़ों में। अत: हम कैसे विश्वास करें कि सूर्य, चन्द्रमा तथा सितारों की रचना उन चीज़ों से भी निम्नतर है और उन की प्रकृति में कोई विशेषता और लोगों का लाभ नहीं और यह सब पूर्णत: धोखा हैं और उन्हें अल्लाह ने लाभरहित और रद्दी चीज़ों के समान पैदा किया है और अल्लाह ने उनमें अपने बंदों के लिए कोई बड़ा लाभ नहीं रखा सिवाए उस थोड़े से लाभ के जिसकी स्थानापन्न बहुत सी चीज़ें हो सकती हैं। जैसा कि तू सितारों की रचना के बारे में समझता है और कहता है कि वे यात्रियों का मार्गदर्शन करने वाली निशानियां हैं। और तू जानता है कि लोगों ने अपनी थल तथा समुद्री यात्राओं के लिए अन्य उपाय भी बनाए और अपनाए हैं जिन्होंने उन्हें सितारों से निष्ग्रिह कर दिया है बल्कि उन्हें उन निशानियों की तनिक भी आवश्कता नहीं रही। फिर जब तू न्याय से काम ले तो तुझ पर अनिवार्य होगा कि तू यह कहे कि लोग सिवाए कुछ सितारों के शेष समस्त सितारों के मोहताज नहीं कि वे उन्हें अपनी यात्राओं के दौरान

निशान ठहराएं। और वे सितारे जिनकी आकाश में इतनी अधिक संख्या है कि जिन्हें तुम गिन नहीं सकते, उनकी यात्रियों को क्या आवश्यकता है? और यदि तुम अपने दावे को विस्तार से वर्णन कर सकते हो तो वर्णन करो ताकि बदला पाओ। और यदि तुमने वर्णन न किया और तुम कदापि वर्णन न कर सकोगे तो उस अल्लाह से डरो जो झूठों को पसंद नहीं करता। फिर तू कैसे समझता है कि अल्लाह ने सितारों को व्यर्थ पैदा किया है और उनमें विचित्र प्रभाव नहीं रखे हालांकि हम उसकी निम्नतम सृष्टि में भी विशेषताएं और प्रभावों का दर्शन करते हैं, फिर हम कैसे यह आस्था रख सकते हैं कि जिस अल्लाह ने इन ग्रहों को ज़ाहिरी प्रकाश प्रदान किए और उन्हें प्रकाशमान, चमकदार और लुभावनी सूरतों से सुशोभित किया है उसने उनके अंदर रखे हुए अन्य प्रकाश अर्थात प्रभावों की ओर ध्यान न दिया हो जो लोगों को लाभ दें। उसने सूर्य, चंद्रमा और सितारों को लोगों के लिए निर्धारित किया और इस ओर संकेत किया कि उनमें से हर एक को सर्वजन हिताय पैदा किया गया है और यह कि उन ग्रहों का अस्तित्व उसके महान उपकारों में से है और यह भी कि उसने कुछ चीज़ों के प्रभावों को अपनी सुदृढ़ पुस्तक (क़ुरआन) में वर्णन नहीं किया और अनुभवी लोगों के निकट यह बात प्रमाणित है, फिर क्या कारण है कि हम उन चीज़ों के प्रभावों का इक़रार न करें जिनका अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में वर्णन किया है बल्कि उन्हें अधिकतर नेमतों पर प्राथमिकता दी है और अपने बंदों को प्रेरणा दिलाई है कि वे आसमान और धरती की संरचना तथा उनके निशानों पर विचार करें। और उसने फ़रमाया-

اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ اخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَ النَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الۡاَلۡبَابِ (आले इमरान - 3/191)

(अर्थात- निस्सन्देह धरती तथा आसमानों की संरचना में और रात-दिन के अदलने-बदलने में बुद्धिमानों के लिए बहुत से लक्षण हैं।)

और सच्चाई यह है कि सूर्य, चंद्रमा और सितारों के प्रभाव ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें लोग हर समय और हर पल देखते हैं और उनसे इन्कार करने की कोई गुंजाइश

नहीं। उदाहरण स्वरूप ऋतुओं तथा उनकी अवस्थाओं का परिवर्तन और हर ऋतु का विशेष रोगों, विशेष पेड़-पौधे और प्रसिद्ध कीड़े-मकोड़ों के साथ विशिष्ट होना ऐसी चीज़ है जिसे तू जानता है इसलिए उसके विवरण की आवश्यकता नहीं। और तू जानता है कि जब सूर्य उदय हो और प्रकाश फैले तो निस्सन्देह उस समय पेड़-पौधों, पत्थरों तथा जीव-जंतुओं में विशेष प्रभाव होता है और फिर जब दिन ढलने और (सूर्य) अस्त होने के निकट हो तो उस समय दूसरे प्रकार के प्रभाव होते हैं। सारांश यह कि सूर्य से दूरी और उससे निकटता का वृक्षों, फलों, पत्थरों और मानवजाति के स्वभावों में विशेष प्रभाव और मज़बूत असर होता है और उसके सिवा कोई चारा नहीं कि हम उनका इक़रार करें अन्यथा हम इन अनुभूत होने वाले स्पष्ट ज्ञान से कहां भाग सकते हैं जो हर क़ौम के निकट प्रमाणित हैं। और चंद्रमा की कितनी ही विशेषताएं हैं जिन्हें किसान और कृषि व्यवसाय के लोग जानते हैं। हाय अफसोस उन लोगों पर जो दावा तो यह करते हैं कि हम विद्वान हैं परन्तु फिर वे अधम अज्ञानियों के समान बातें करते हैं।

और ज्ञानी लोग इस बात पर सहमत हैं कि लोगों का सबसे अधिक मध्यम वर्ग भूमध्य रेखा में रहने वाले लोग हैं और कोई विशेष प्रभाव ही उनके पूर्ण स्वास्थ्य और उनकी समझ और विवेक की श्रेष्ठता का कारण है और निस्सन्देह यह बात संवेदी, स्पष्ट और दिखाई देने वाले ज्ञानों में से है और इस (वास्तविकता) से केवल वही व्यक्ति इन्कार कर सकता है जिसे दलीलों और तर्कों का दीपक नसीब नहीं हुआ और वह मार्ग से हट गया है, अत: इन्कार करने वालों पर तबाही हो। और हमारे धर्म में यह बात स्वीकृत है कि कुछ समय बाबरकत (शुभ) होते हैं जिनमें दुआएं स्वीकार होती हैं और प्रार्थनाएं सुनी जाती हैं जैसे "लैलतुल क़द्र" की रात और रात का अंतिम तीसरा पहर। और तहक़ीक़ करने वालों ने कहा है कि इन समयों में जिनमें नमाज़ का प्रबंध निर्धारित है छुपी हुई बरकते रखी हैं। अत: इसीलिए अल्लाह ने उन (समयों) को उपासनाओं के लिए विशिष्ट किया है। अत: जिस व्यक्ति ने इन (समयों) से लाभ उठाया और हर नमाज़ को पूरे ध्यान के साथ उसके समय पर पढ़ा तो निस्सन्देह उसे

उसकी बरकतें प्रदान की जाएंगी और वह उनमें से हिस्सा पाएगा और वांछित सौभाग्य प्राप्त करेगा और वह बुरे साथी से मुक्ति पाएगा। अत: इस मर्तबे पर विचार कर जैसा कि विचार करना चाहिए। क्योंकि यह बड़ा महान मर्तबा है और जिसने किसी चीज़ की खोज में प्रयत्न तथा परिश्रम किया तो ख़ुदा की कृपा, सामर्थ्य और प्रशंसा उसको प्राप्त होगी और अल्लाह उसे प्रत्येक दुर्भाग्य से बचा लेगा और उसे सामर्थ्य पाने वालों में से बना देगा।

और जब तुझे यह विवेक प्राप्त हो गया तो यदि तू सच्चा दिल भी रखता है तो तू इस वास्तविकता से अवगत हो जाएगा और इस विषय में तेरे बहुत से सन्देह समाप्त हो जाएंगे और सन्देहों का पर्दा फट जाएगा और सच्चाई के लक्षण प्रकट हो जाएंगे और अंधेरे छठ जाएंगे और तू विश्वास के प्रकाश की ओर मार्गदर्शन पाएगा और यदि तेरे लिए इतना पर्याप्त न हो और तू अपने हृदय में अधिक व्याख्या और वाग्मिता की इच्छा पाए तो फिर यह जान ले कि क़ुरआन ने उसकी बहुत से स्थानों पर व्याख्या कर दी है। और जैसा कि ख़ुदा तआला ने फ़रमाया-

فَقَالَ لَهَا وَ لِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ۔
فَقَضٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَ اَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا

(हामीम सजदा -41/12,13)

(अर्थात- उसने उससे और धरती से कहा कि तुम दोनों प्रसन्नता पूर्वक या विवश होकर चले आओ। उन दोनों ने कहा हम प्रसन्नता पूर्वक उपस्थित हैं। अत: उसने उनको दो युगों में सात आसमानों की अवस्था में विभाजित कर दिया और हर आसमान के नियम उसमें वह्यी किए।) और फ़रमाया-

يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ (अत्तलाक़- 65/13)

(अर्थात - उसका आदेश उनके बीच अधिकता से उतरता है।) फिर फ़रमाया -

يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ (अस्सजदह- 32/6)

(अर्थात- वह निर्णय को युक्ति के साथ आसमान से धरती की ओर उतारता है।)

ये समस्त आयतें इस बात पर दलालत करती हैं कि हकीम और अलीम और रहीम और करीम और अनुकंपा करने वाले ख़ुदा ने आकाशों तथा धरती को स्त्री एवं पुरुषों के रूप में बनाया है और उसकी युक्ति ने यह चाहा कि वह इन दोनों को प्रभाव डालने वाले तथा प्रभाव स्वीकार करने वाले के रूप में इकट्ठा करे और उन दोनों में से कुछ को कुछ पर प्रभावकारी करे और यह अर्थ अल्लाह के इस कथन- فَقَالَ لَهَا وَ لِلْاَرْضِ ائْتِيَا (उसने उस अर्थात आकाश से और धरती से कहा कि तुम दोनों चले आओ।) के हैं। अत: तू इस आयत पर खूब विचार कर और अल्लाह के अस्तित्व के बारे में अतिशयोक्ति से काम न ले और मृत्यु से पहले पुण्य कमाने और दोषों के प्रायश्चित के लिए उठ खड़ा हो और लापरवाहों में से न हो। और फिर इस बात पर भी विचार कर कि अल्लाह तआला ने एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया है- قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا (अर्थात - निस्सन्देह हम ने तुम्हारे लिए वस्त्र उतारे हैं। अल आराफ़- 7/27) और फ़रमाया اَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ (अर्थात- हमने लोहा उतारा। अल हदीद- 57/26) और फ़रमाया- وَ اَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ (अर्थात- और उसने तुम्हारे लिए पशु उतारे। ज़ुमर- 39/7) और स्पष्ट है कि यह चीज़ें आसमान से नहीं उतरतीं इसलिए अल्लाह का इन चीज़ों को आसमान की ओर संबद्ध करना केवल उसी ओर संकेत करता है कि इन चीज़ों की पैदाइश, उनके जन्म लेने तथा सृजन के कारणों में से प्रथम कारण जिसे अल्लाह ने मुक़द्दर किया वह आकाश, सूर्य, चंद्रमा और सितारों के प्रभाव हैं और अल्लाह तआला ने इन आयतों में संकेत किया है कि धरती एक स्त्री के समान और आसमान उसके पति के समान है और इन दोनों में से किसी एक का कार्य दूसरे से मिलकर ही पूरा हो सकता है। अत: उसने अपनी हिक्मत से उन दोनों का जोड़ा बनाया और अल्लाह अलीम और हकीम है। अत: तू इन आयतों पर गहरी नज़र से विचार कर और बार-बार उन पर नज़र डाल और जान ले कि यह स्थान उस व्यक्ति के लिए सबसे बड़ा स्थान है जिसने उसकी तहक़ीक़ की और उसे समझा और उसे गहरी निगाह से देखा। इन आयतों का समर्थन अल्लाह तआला का यह कथन करता है -

فَلَآ أُقۡسِمُ بِمَوٰقِعِ ٱلنُّجُومِ (अल वाक़िआ- 56/76)

(अर्थात- अत: मैं अवश्य सितारों के झुरमुटों को गवाह के तौर पर प्रस्तुत करता हूँ) और तू जानता है कि इस कथन में इस ओर संकेत है कि सितारों तथा उनके टूटने के समयों का नबूवत के ज़माने और वह्यी के उतरने के साथ एक विशेष संबंध है। इसीलिए कहा गया है कि कुछ सितारे नबियों में से किसी नबी के प्रादुर्भाव के समय ही प्रकट होते हैं। अत: बधाई हो उस व्यक्ति को जो अल्लाह के संकेतों को समझता है और फिर संयमियों के समान उन्हें स्वीकार करता है और उस व्यक्ति की तरह आक्रमण नहीं करता जो बेलगाम, मां बाप से आज़ाद, अवज्ञाकारी और अहंकारियों में से हो।

यदि तूने हमारे इस वर्णन से पहले कोई इस जैसा स्पष्ट वर्णन न सुना हो तो उस पर आश्चर्य न कर क्योंकि हर मैदान के अपने शहसवार होते हैं और हर समय का अपना वक्तव्य का विषय होता है। और अल्लाह गंभीर अध्यात्मज्ञान का प्रकटन तथा उनका सविस्तार वर्णन केवल उनकी आवश्यकता के समय ही करता है और कितनी ही सूक्ष्म बातें और बिंदु हैं जो लोगों से छुपे रहते हैं फिर दूसरे ज़माने में उनके प्रकटन का समय आता है। तब अल्लाह उस समय किसी मुजद्दिद (धर्म सुधारक) को अवतरित करता है और वह 'समय का मुहद्दस' उन बिंदुओं को वर्णन करता है और समय की मांग के अनुकूल उन संक्षिप्त बातों का विवरण विस्तारपूर्वक प्रस्तुत करता है और उसकी ज़बान से ख़ुदा की किताब के अध्यात्मिक ज्ञान जारी किए जाते हैं जिनके विस्तारपूर्वक वर्णन करने का समय आ जाता है और वह उन्हें लोगों के लिए अंतर्दृष्टि के कारण पूरी दृढ़ता से वर्णन करता है। फिर दुनिया को त्याग कर ख़ुदा की ओर आकर्षित होने वाला व्यक्ति उसे स्वीकार कर लेता है और मूर्ख अपनी मंदबुद्धि तथा दुर्भाग्य के प्रभुत्व के कारण उससे अपना मुंह फेर लेता है। अत: अल्लाह का संयम धारण कर और सदात्माओं में से हो जा।

और जान ले कि अधिकतर प्रसिद्ध विद्वान उपरोक्त आयतों की व्याख्या में उसी मत के समर्थक रहे हैं जो मत हमने प्रकट किया है और वे आस्था

रखते थे कि सूर्य, चंद्रमा और सितारों में प्रभाव हैं जिन्हें अल्लाह ने अपने बन्दों के हितों के लिए पैदा किया है जैसा कि इमाम राज़ी ने अपनी 'तफ़सीर कबीर' में यह लिखा है कि सूर्य दिन का राजा और चंद्रमा रात्रि का राजा है और यदि सूर्य न होता तो चार ऋतुएं प्राप्त न होतीं। और यदि यह ऋतुएं न होतीं तो संसार की व्यवस्था पूर्णत: बाधित हो जाती। और हमने सूर्य तथा चंद्रमा के लाभ इस पुस्तक के आरंभ में पूर्ण अनुसंधान के साथ वर्णन कर दिए हैं।"

इमाम राज़ी का कथन पूर्ण हुआ। अत: तू इस बारे में विचार कर और सोए हुए लोगों के समान पास से न गुज़र।

"हुज्जतुल्लाह अलबालिगा" के लेखक (हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दस देहलवी) फ़रमाते हैं कि- "जहां तक तकनीकी ज्ञान तथा ज्योतिष विज्ञान का संबंध है तो यह दूर नहीं कि इन दोनों की कोई वास्तविकता हो, क्योंकि शरीयत ने केवल इनमें व्यस्त होने से मना किया है पूर्णत: इनकी वास्तविकता को नहीं नकारा। पूर्व विद्वान से यही बात निरंतर चली आती है कि इन ज्ञानों में पूर्णता व्यस्त हो जाने को त्यागा जाए और उन में व्यस्त लोगों की निन्दा की गई है और उन प्रभावों को स्वीकार न करना सिद्ध है, न यह कि उनकी वास्तविकता का पूर्णत: इन्कार। क्योंकि उनमें से कुछ प्रभाव ऐसे हैं जो आधारभूत वास्तविकताओं में से हैं, जैसे सूर्य और चंद्रमा की हालतों के परिवर्तन से ऋतुओं का बदलना आदि और उनमें से कुछ बातें ऐसी हैं जिन पर विवेक, अनुभव और अवलोकन दलालत करते हैं। जैसा कि ये ज्ञान सौंठ की गर्मी और काफूर की ठंडक पर दलालत करते हैं और यह दूर नहीं कि उनका प्रभाव दो प्रकार से हो। एक प्रकार स्वभावों के समान हो। अत: जिस प्रकार कि हर चीज़ के प्रभाव होते हैं जो उस चीज़ के साथ विशिष्ट होते हैं, जैसे गर्म और ठंडा होना, सूखा और गीला होना आदि। उनमें से (सर्वोचित को) बीमारियों के इलाज के लिए प्रयोग किया जाता है इसी प्रकार आकाशों तथा सितारों के प्रभाव और विशेषताएं हैं जैसे सूर्य की गर्मी तथा चन्द्रमा की ठंडक। अत: जब वह सितारा अपने स्थान पर आ जाता है तो उसकी शक्ति (का प्रभाव) धरती पर प्रकट हो जाता है। क्या

तू नहीं जानता कि औरतों की आदतों तथा स्वभावों में पाई जाने वाली सख्ती एक ऐसी चीज़ से विशिष्ट है जो उन सितारों के प्रभावों से संबंध रखती है चाहे उस की जानकारी गुप्त ही हो। और मर्द से बहादुरी, रोब, दबदबा और उनसे मिलती-जुलती (विशेषताओं) का उनके स्वभाव पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए तू इस बात से इन्कार न कर कि जिस प्रकार इन गुप्त स्वभावों का प्रभाव होता है उसी प्रकार शुक्र तथा मंगल के प्रभावों का धरती पर असर होता है और उनमें दूसरा पहलू एक ऐसी आध्यात्मिक शक्ति के समान है जो फितरत से मिलती जुलती है और यह उस क़ुव्वते नफ़सानी (विशेषणात्मक शक्ति) के समान है जो भ्रूण में उसकी माँ और पिता की ओर से पाई जाती है। और मवालीद (अर्थात वनस्पति, जीव-जन्तु, निर्जीव वस्तुओं) का आकाश और पृथ्वी के साथ वैसा ही संबंध होता है जैसा कि भ्रूण का अपने माता-पिता के साथ होता है। अत: यह शक्ति (पहले तो) संसार को पशु रूप और फिर मानवीय रूप के इनाम के लिए और फिर मानव रूप के फैज़ान के लिए तैयार करती है, और आसमानी मेल-मिलाप के दृष्टिकोण से इन प्रभावों का असर कई प्रकार से होता है और हर प्रकार के अलग गुण हैं। तो जब एक क़ौम ने इस ज्ञान पर विचार किया, तो उन्होंने ज्योतिष विज्ञान प्राप्त कर लिया जिसके द्वारा वे भविष्य में होने वाली घटनाओं से अवगत हो जाते हैं, परन्तु जब नियति इसके विपरीत निर्धारित हो जाती है, तो सितारों के प्रभाव को एक अलग रूप में प्रकट कर देती है जो उस पहले रूप के काफी निकट होता है। और अल्लाह अपनी नियति को पूर्ण करता है बिना इसके कि सितारों के गुणों की व्यवस्था में कोई बाधा उत्पन्न हो।" यहाँ "हुज्जतुल्ला अल-बालिग़ा" के लेखक रहमहुल्ला का कथन पूर्ण हुआ।

अत: हे प्रिय! विचार कर, अल्लाह तेरे साथ हो, कि जो व्यक्ति सितारों के प्रभावों का कायल है, वह भारत के उलमा में से एक सत्यनिष्ठ आलिम है जो अपने समय का मुजद्दिद (सुधारक) था, जिनके गुणों को इस देश में सब जानते हैं और वह बड़ों तथा छोटों की नज़र में इमाम (मार्गदर्शक) हैं और मोमिनों में से कोई भी उनकी बुलंद शान में मतभेद नहीं करता। अत: तबाही है उन लोगों

के लिए जो एक बेशर्म, बेबाक व्यक्ति की तरह अपनी ज़बानें मुसलमानों को काफ़िर कहने के लिए लम्बी करते हैं और अपने इमामों के निर्देशों पर विचार नहीं करते और वे चाहते हैं कि काफ़िरों की संख्या को बढ़ाएं और मुसलमानों की संख्या को कम करें और वे मुस्लिम उम्मत को एक गंभीर फ़ितने (प्रलोभन) में डालना चाहते हैं कि कुछ लोग कुछ दूसरों को काफ़िर कहें और अपने ईमानों को झूठन और घाट के अवशेष पानी के लिए बेच देते हैं और पीप, बहती रेंठ और लोगों के मल पर मक्खियों की तरह गिरते हैं। और गुलाब, सुगंधित घास, कस्तूरी, अम्बर और साफ पानी की नहरों को त्यागते हैं। फिर यह भी जान ले कि जिस विद्वान व्यक्ति के लेख का थोड़ा सा भाग हमने लिखा है उसने "फुयूज़ुल-हरमैन" (नामक पुस्तक) में इससे भी अधिक लिखा है, इसलिए हम उसके लेख का थोड़ा सा भाग जो सितारों तथा आसमानों के प्रभावों से संबंधित है यहाँ वर्णन करते हैं वे इबारतें निम्नलिखित हैं:-

"कभी-कभी एक व्यक्ति अपने वंश में उच्च प्रतिभाओं से युक्त नहीं होता परन्तु उसका जन्म ऐसे समय में होता है कि उस समय 'फलकी इत्तिसाल' (आकाशीय संबंध, विलय) उसके कुलीन वंश की मांग करते हैं, और मुझे लगता है कि यह तब होता है जब शनि, सूर्य और बृहस्पति के साथ एक प्रकार से विलीन हो जाता है, और इस विलय की स्थिति यह है कि शनि की हैसियत एक दर्पण की हो और सूर्य तथा बृहस्पति का प्रकाश उसमें परिलक्षित हो रहा हो। अत: इसके कारण, उस समय, वंश और कुलीनता की श्रेष्ठता उत्पन्न होती है। और अल्लाह सबसे अधिक जानता है। और यह इत्तिसाल (विलय, संबंध) इस प्रकार होता है कि इस विलय का प्रभाव उसको दी जाने वाली सूरत पर इस प्रकार सुरक्षित हो जाता है जिस प्रकार औलाद में उनके माता-पिता के चिन्ह और शक्लो-सूरत आ जाते हैं हालांकि उस बच्चे को कुलीनता विरासत में नहीं मिलती।"

फिर उन्होंने अपनी पुस्तक "फुयूज़ुल-हरमैन" में एक अन्य स्थान पर लिखा है कि:- "इस बारे में मेरे रब ने जो मुझे समझाया है वह यह है कि पहले आसमान की सहायता से सफर, परस्पर संबंध और वस्त्र उतरते हैं और दूसरे

आसमान में मज़बूत नियम हैं जो लिखे जाते हैं और जिन्हें सीखा जाता है। और वह एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल में स्थानांतरित होते रहते हैं और वह दिलों में डाले जाते हैं और जिन से पुस्तकें पूर्ण की जाती हैं। और तीसरे आसमान से क़ुदरती रंग आता है जो (इंसान की) फितरत बन जाता है और स्वभाव उसकी ओर आकर्षित होते हैं और उसके लिए अपने स्वाभिमान के कारण जोश में आते हैं। अत: वह उसकी सुरक्षा और सहायता करते हैं और उसके लिए जंग करते हैं और उससे ऐसी मोहब्बत करते हैं जैसे वह माल और संतान और स्वयं से मोहब्बत करते हैं। और चौथे आसमान से प्रभुत्व, शक्ति और विजय उतरती है जिनके कारण सब छोटे-बड़े लोग और उनके विद्वान और अधिकारी उसके लिए नियुक्त कर दिए जाते हैं। और पांचवें आसमान से कष्ट और सख्ती उतरती हैं और तू देखेगा कि उसका इन्कार करने वाला हर व्यक्ति कठिनाइयों तथा दुखों में गिरफ्तार किया जाता है। और उस पर लानत की जाती है और अज़ाब दिया जाता है मानो परोक्ष से कोई उसकी सहायता कर रहा है। और छठे आसमान से महानता वाली हिदायत उतरती है जिसके कारण वह व्यक्ति उनकी हिदायत का कारण बन जाता है और लोगों की उन्नति के लिए उनका केंद्र बन जाता है। और सातवें आसमान से एक शाश्वत प्रतिष्ठा मिलती है जो पत्थर में उस आकृति के समान होती है कि जब तक पत्थर के जोड़-जोड़ अलग न किए जाएं और उसके हिस्से काटे न जाएं वह उसमें रहता है। अत: ये सात अंग हैं जो फ़रिश्ते में परस्पर मिल जाते हैं और एक संतुलित शरीर बन जाता है। फिर उनमें सबसे बड़ी प्रभावी शक्ति की ओर से उस शरीर में जज़्ब (ब्रह्मलीनता) की रूह फूंकी जाती है जो उसके लिए वही महत्व रखती है जो मानवीय शरीर में रूह का होता है। फिर जो उस ख़ुदा की याद को अपनी आदत बना लेता है और उसमें रम जाता है तो ख़ुदा की रहमत उसको ढक लेती है और उसके पास ऊपर, नीचे, दाएं, बाएं से और ऐसी जगह से जिसकी कल्पना भी नहीं हो सकती, जज़्ब (ब्रह्मलीनता) आती है फिर फरिश्तों के सरदार उस बच्चे का प्रशिक्षण करते हैं। और निम्न स्तर के फ़रिश्ते उसकी सेवा करते

हैं। इस प्रकार उसका मामला स्थिर होता जाता है और उसकी शान बढ़ती जाती है यहां तक कि अल्लाह का आदेश उस पर उतरता है। अत: यही ब्रह्मज्ञान है, धर्म के अंगों तथा सिद्धांतों को तू इसी के अनुसार समझ ले। अत: हर वह व्यक्ति जो दावा करे कि अल्लाह तआला ने उसे कोई और मार्ग या मत प्रदान किया है और वह व्यक्ति जिसे यह मार्ग प्रदान किया गया हो वह ऐसा न हो जैसा हमने वर्णन किया है तो ऐसा व्यक्ति अपनी उस आस्था में सच्चाई को समझने से असमर्थ रहा है। फिर हर व्यक्ति ऐसा होता भी नहीं है कि उसके लिए ब्रह्मज्ञान दिए जाने का निर्णय किया जाए और अल्लाह के पास किसी चीज़ में आकलन और अनुमान नहीं होता बल्कि वह ऐसी क़ौम को प्रदान करता है जो सौभाग्यशाली और पवित्र हो और उसमें सातों आसमानों और श्रेष्ठ तथा निम्न स्तर के फ़रिश्तों की सहायता सम्मिलित होती है। और वह संप्रभु सत्ता (तदल्ली-ए-आज़म) की एक विशेष रहमत होती है। और कितने ही महान अध्यात्म ज्ञान रखने वाले ज्ञानी हैं या फना के मुकाम में पराकाष्ठा तक पहुंचे हुए और मुकाम-ए-बक़ा में उच्चतम स्थान रखने वाले परन्तु चूंकि (उनका स्वभाव) सौभाग्यशाली तथा पवित्र न था इसलिए उन्हें यह नेमत न मिली। और इसी प्रकार उस (विशेष कृपा) की सुरक्षा का उत्तरदायित्व हर व्यक्ति नहीं लेता। बल्कि हर कार्य के लिए विशेष व्यक्ति होता है जो उसके लिए पैदा किया जाता है और उसे इस काम के करने का ख़ुदाई सामर्थ्य दिया जाता है। हां परन्तु उसके प्रादुर्भाव की सूरत, प्रसिद्ध वास्तविक जन्म से परे एक और जन्म है कि जिसकी बरकत आराज़★ और कर्मों में जारी रहती है।"

लेखक का कथन पूर्ण हुआ, अल्लाह उस पर रहम करे। यदि तू इन

★**"आराज़"-** यह अरज़ का बहुवचन है। अरज़ वह चीज़ होती है जो स्वयं में स्थित न हो बल्कि दूसरी वस्तु के कारण स्थित हो जैसे कपड़े पर रंग या कागज़ पर अक्षर। रंग या अक्षर कपड़े या कागज़ के कारण स्थित हैं, इसलिए अरज़ कहलाते हैं और कपड़ा और कागज़ जौहर। (अरज़, जोहर का विपरीत है) (उर्दू शब्दकोश तारीखी उसूल पर। प्रकाशक - तरक्की उर्दू बोर्ड कराची, जिल्द - 13, पृष्ठ- 368)

आस्थाओं के कारण किसी को काफ़िर ठहराता है तो सर्वप्रथम इस लेखक को काफ़िर ठहरा क्योंकि प्रतिष्ठा पूर्व लोगों के लिए है।

और उनके ऐतराज़ों में से एक यह है कि वे कहते हैं कि यह व्यक्ति (अर्थात यह विनीत) मसीह के मोजिज़ों (चमत्कारों) का अपमान करता है और कहता है कि वे चमत्कार कुछ भी नहीं और अगर मैं चाहता तो उन जैसा बल्कि उनसे भी बड़ा चमत्कार दिखाता परन्तु मैं उसे पसंद नहीं करता हूं और शौक रखने वालों के समान उनकी ओर ध्यान नहीं देता।

इसका उत्तर यह है कि मोजिज़ा (चमत्कार) दिखाना बन्दों का काम नहीं बल्कि अल्लाह के कामों में से है और कोई व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि मैं अपनी शक्ति और इरादे से यह यह काम करूंगा। मनुष्य जो अपनी शक्ति, इरादे और उपाय से करता है वह मनुष्य के कर्मों में से एक कर्म है और हम उसका नाम चमत्कार नहीं रखते बल्कि वह एक उपाय या जादू है। अत: हे मेरे भाई! अल्लाह तआला तुझे हिदायत में बढ़ाए। तू भली-भांति समझ ले कि मैंने ऐसे नहीं कहा जैसे जल्दबाजो ने समझा है। बल्कि मैंने एक मुसलमान मर्द के रूप में अपने आका मौला मुहम्मद मुस्तफा ख़ातमुन्नबिय्यीन पर जो कृपा थी उसको दृष्टिगत रखते हुए यह बात कही है।

मैंने न तो ईसा मसीह अलैहिस्सलाम का अपमान किया और न ही उनके मोजिज़ों (चमत्कारों) से हंसी ठट्ठा किया बल्कि मेरी समस्त वार्तालाप का उद्देश्य यह था कि हमें एक पूर्ण धर्म और पूर्ण नबी प्रदान किया गया है और निस्सन्देह हम ही सर्वश्रेष्ठ उम्मत हैं जो लोगों के लाभार्थ पैदा की गई है। अत: कितने ही गुण हैं जो वास्तविक रूप से नबियों में पाए जाते हैं और यह गुण उससे श्रेष्ठ और उत्तम शक्ल में प्रतिरूप के तौर पर हमें प्राप्त हैं। और यह अल्लाह की कृपा है वह जिसे चाहता है प्रदान कर देता है। क्या तू अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन पर विचार नहीं करता। जब आप ने फ़रमाया: कि जन्नत में एक घर है जिस तक केवल एक ही व्यक्ति पहुंचेगा और मैं आशा रखता हूं कि वह मैं ही हूंगा। यह बात सुनकर एक व्यक्ति रो पड़ा

और आपसे निवेदन किया कि- हे अल्लाह के रसूल! मैं आपकी जुदाई सहन नहीं कर सकूंगा और मुझसे यह नहीं हो सकेगा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी और स्थान पर हों और मैं आप से दूर किसी अन्य स्थान पर, आप के पवित्र मुख के दीदार से वंचित रहूं। इस पर अल्लाह के रसूल ने उससे कहा कि तुम मेरे साथ और मेरे ही घर में होगे। अत: देख कि किस प्रकार (अल्लाह ने) उसे उन नबियों पर श्रेष्ठता दे दी जो उस घर को नहीं पा सकेंगे। फिर अल्लाह के इस कथन और दुआ को भी सामने रख जो उसने हमें सिखाई अर्थात-

اِهْدِ نَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

(फ़ातिहा- 1/6,7)

(अर्थात- हमें सीधे रास्ते पर चला, उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनाम किया)

अत: हमें यह आदेश दिया गया है कि हम समस्त नबियों का अनुसरण करें और अल्लाह से उन नबियों के गुण मांगें। और जबकि नबियों के विशेषण विभिन्न भागों के समान हैं और हमें यह आदेश दिया गया है कि हम उन सब गुणों की मांग करें और उन समस्त भागों के संग्रह को अपने अंदर इकट्ठा करें तो यह अनिवार्य है कि हमें प्रतिरूप के तौर पर तथा रसूलल्लाह के अनुसरण में वह चीज़ प्राप्त हो जाए जो अन्य नबियों को अकेले-अकेले प्राप्त नहीं हुई। और इस्लाम के उलमा इस बात पर सहमत हैं कि कभी कोई जुज़वी (आंशिक) प्रतिष्ठा ग़ैर नबी में ऐसी भी पाई जाती है जो नबी में नहीं पाई जाती। फिर तू इब्ने सीरीन के कथन पर विचार कर कि जब उनसे महदी के मरतबे के बारे में प्रश्न किया गया और पूछा गया कि क्या वह अपने गुणों में अबू बकर[रज़ि०] के समान होगा? तो उन्होंने फ़रमाया:- बल्कि वह कुछ नबियों से भी श्रेष्ठ होगा। इस उम्मत के उलमा में से किन्हीं दो ने भी इस बात में मतभेद नहीं किया कि वह प्रतिरूपी विशेषताएं जो इस उम्मत में पाई जाती हैं वह कभी-कभी उन कुछ प्रतिष्ठाओं पर प्राथमिकता ले जाती हैं जो अन्य नबियों में मूल रूप से पाई जाती हैं। इसीलिए कहा गया है कि पूर्व नबी इस उम्मत को रश्क की निगाह से देखते थे और उनमें से बहुतों से यह इच्छा की कि वे इस उम्मत में से हो जाएं। अत:

यदि इस उम्मत में कुछ ऐसे विशेष गुण न होते जो बनी इस्राईल के नबियों में मौजूद नहीं थे तो उन्होंने अपने रब्ब से यह मांग क्यों की कि उन्हें इस उम्मत में से बना दे। जहां तक मसीह के कुछ चमत्कारों को नापसंद करने की बात है तो यह सही है। हम उन मामलों को कैसे पसंद कर सकते हैं जो हमारी शरीयत में हलाल नहीं हैं। उदाहरणस्वरूप इंजील यूहन्ना के दूसरे अध्याय में है कि ईसा अलैहिस्सलाम को आपकी मां के साथ एक शादी में बुलाया गया और आपने (वहां) एक बर्तन के पानी को शराब बना दिया ताकि लोग उसमें से पिएं। अत: तू विचार कर कि हम इस प्रकार के चमत्कारों को नापसंद क्यों न करें क्योंकि न तो हम शराब पीते हैं और न ही हम उसे कोई पवित्र चीज़ समझते हैं, अत: हम इस प्रकार के चमत्कारों पर कैसे राज़ी हो जाएं। और कितने ही ऐसे मामले हैं जो नबियों की सुन्नत में से हैं परन्तु हम उन्हें नापसंद करते हैं और उन पर राज़ी नहीं होते। आदम अलैहिस्सलाम अपनी बेटी की शादी अपने बेटे से कर देते थे परन्तु हम अपने इस ज़माने में इस काम को अच्छा और पवित्र नहीं समझते बल्कि हम उसे नापसंद करते हैं। अत: हर समय का अलग आदेश और हर उम्मत की अलग कार्यपद्धति होती है और इसी प्रकार हमें यह नापसंद है कि हमारे लिए पक्षी पैदा करने का चमत्कार हो। क्योंकि अल्लाह ने हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह चमत्कार प्रदान नहीं किया और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बड़ा पक्षी पैदा करना तो दूर एक मक्खी भी पैदा नहीं की और उसमें भेद एकेश्वरवाद को बढ़ावा देना और लोगों को हर खतरे की जगह से बचाना था बल्कि कभी (इस प्रकार का चमत्कार) शिर्क के बीज की तरह हो जाता है। हमारी किताब में हमारा उद्देश्य यही था और कर्मों का दारोमदार निय्यतों पर होता है। अत: तू थोड़ी देर के लिए सोच विचार कर, संभवत: अल्लाह तुझे सत्यापन करने वालों में से बना दे।

और उनके आरोपों में से एक यह है कि वे कहते हैं कि यह व्यक्ति फ़रिश्तों को सूर्य, चन्द्रमा और सितारों की रूहें समझता है। तो इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि वह इस बारे में धोखे में पड़े हुए हैं। अल्लाह जानता है

कि मैं सितारों की रूहों को फ़रिश्ते नहीं कहता बल्कि मेरे रब ने मुझे यह ज्ञान दिया है कि फ़रिश्ते- सूर्य, चन्द्रमा, सितारों और आसमान और धरती में मौजूद हर चीज़ की व्यवस्था करने वाले हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि :-

اِنۡ كُلُّ نَفۡسٍ لَّمَّا عَلَيۡهَا حَافِظٌ (अत्तारिक - 86/5)

(अर्थात कोई एक जान भी ऐसी नहीं जिस पर कोई संरक्षक नियुक्त न हो।) फिर फ़रमाया :- فَالۡمُدَبِّرٰتِ اَمۡرًا (अर्थात- क़सम है किसी महत्वपूर्ण काम के मंसूबे बनाने वालियों की। सूरह अन्नाज़िआत- 79/6) और उन जैसी अन्य बहुत सी आयतें क़ुरआन में हैं तो विचार विमर्श करने वाले के लिए ख़ुशख़बरी है।

काफ़िर कहने वालों के ऐतराज़ों में से एक यह है कि वे कहते हैं कि इस व्यक्ति ने नबूवत का दावा किया है और कहता है कि मैं नबियों में से हूं। इसका उत्तर यह है कि हे मेरे भाई! तू जान ले कि मैंने न तो नबूवत का दावा किया है और न ही मैंने उन्हें कहा है कि मैं नबी हूं परन्तु उन लोगों ने जल्दबाज़ी से काम लिया और मेरी बात समझने में ग़लती की है और पूरी तरह से विचार-विमर्श नहीं किया। बल्कि खुल्लम-खुल्ला झूठा आरोप लगाने का साहस किया है। और तू उन्हें देखता है कि वे कुफ़्र का फ़तवा लगाने में जल्दी करते हैं। कुछ मोमिनों को काफ़िर क़रार देते हैं और कुछ को धोखा देते हैं और अत्याचारियों के दिलों में जो कुछ भी है वह अल्लाह से छुपा नहीं। और उनमें से कुछ ऐसे लोग भी हैं कि जिन की बात लोगों को पसंद आती है। और वह अल्लाह की सौगंध खाता है कि वह सच्चाई पर है हालांकि वह प्रथम श्रेणी का झूठा है और वह सच्चाई को झूठ के साथ मिलाता और झूठ को सच्चाई बनाकर प्रस्तुत करता है और शैतानों जैसी करतूत करता है और धरती को चापलूसी तथा सच और झूठ को खलत-मलत करके अपवित्र करता है। और अपनी धोखेबाज़ियों में हर एक मक्कार को पीछे छोड़ जाता है और फिर वह सच्चे को दज्जाल का नाम देता है। मैंने लोगों से वही कुछ कहा है जो मैंने अपनी पुस्तकों में लिखा है अर्थात यह कि मैं मुहद्दस हूं और अल्लाह मुझसे वैसे ही बातें करता है जैसे वह

मुहद्दसों से बातें करता है और अल्लाह जानता है कि उसी ने मुझे यह मर्तबा प्रदान किया है। अत: मैं अल्लाह के प्रदान किए हुए और जो उसने मुझे अपनी ओर से दिया है उसे कैसे ठुकरा सकता हूं। क्या मैं रब्बुल आलमीन के उपकार से मुंह मोड़ लूं और मेरे लिए यह उचित नहीं कि मैं नबूवत का दावा करूं और इस्लाम से बाहर निकल जाऊं और काफ़िर क़ौम से जा मिलूं। और सुनो कि मैं अपने इल्हामों में से किसी इल्हाम का सत्यापन नहीं करता जब तक कि मैं उसे अल्लाह की किताब के सम्मुख प्रस्तुत न कर लूं और मैं जानता हूं कि हर वह बात जो पवित्र क़ुरआन के विपरीत है वह झूठ, धोखा और अधर्म है। फिर मैं मुसलमान होते हुए कैसे नबूवत का दावा कर सकता हूं। और मैं इस बात पर अल्लाह की प्रशंसा व्यक्त करता हूं कि मैंने अपने इल्हामों में से किसी इल्हाम को ऐसा नहीं पाया जो अल्लाह की किताब के विपरीत हो बल्कि मैंने उन सब को रब्बुल आलमीन की पुस्तक (क़ुरआन) के बिल्कुल अनुकूल पाया।

और कुछ लोग यह भी कहते हैं कि इस उम्मत पर इल्हाम का द्वार बंद है उन्होंने क़ुरआन पर इस प्रकार विचार-विमर्श नहीं किया जैसा कि विचार करना चाहिए और न वे किसी इल्हाम प्राप्त बन्दे से मिले। हे बुद्धिमान व्यक्ति! तू जान ले कि यह बात स्पष्ट रूप से ग़लत है और अल्लाह की किताब, सुन्नत और नेक लोगों की गवाही के विपरीत है। जहां तक अल्लाह की किताब का संबंध है तो तू क़ुरआन में बहुत सी ऐसी आयतें पढ़ता है जो हमारे इस कथन का समर्थन करती हैं और अल्लाह तआला ने क़ुरआन में कुछ ऐसे मर्दों तथा औरतों के बारे में सूचना दी है जिनसे उनके रब ने इल्हाम व कलाम किया और उन्हें कुछ बातों का आदेश दिया और कुछ बातों से रोका। हालांकि वे रब्बुल आलमीन के नबियों तथा रसूलों में से नहीं थे। क्या तू क़ुरआन में नहीं पढ़ता कि-

وَ لَا تَخَافِیْ وَ لَا تَحْزَنِیْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَیْكِ وَ جَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِیْنَ

(अल क़सस- 28/8)

(अर्थात- कोई भय न कर और ग़म न खा। हम निश्चित रूप से उसे तेरी ओर वापस लाने वाले हैं और उसे रसूलों में से (एक रसूल) बनाने वाले हैं।)

हे बुद्धिमान न्याय प्रिय! विचार कर कि उम्मतों में से इस श्रेष्ठ उम्मत के कुछ मर्दो के साथ अल्लाह का बातें करना क्यों जायज़ (वैध) नहीं? जबकि अल्लाह ने तुमसे पहले गुज़री हुई क़ौमों की औरतों के साथ भी बातें की हैं। और तुम्हारे पास पहले लोगों के उदाहरण मौजूद हैं। यदि कुछ लोगों को मेरे इल्हाम के बारे में सन्देह है और उन्हें इस बात पर आश्चर्य है कि अल्लाह इस उम्मत के किसी व्यक्ति को बिना इसके कि वह नबी हो, इल्हामो कलाम का सौभाग्य प्रदान करे, तो फिर वह क्यों अपने आपसी झगड़ों में क़ुरआन को अपना निर्णायक नहीं बनाते यदि वे मोमिन हैं, और इस मामले को क्यों अल्लाह और उसके रसूल की ओर नहीं लौटाते। हालांकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि -

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا (यूनुस- 10/65)

(अर्थात-और उनके लिए सांसारिक जीवन में भी ख़ुशख़बरी है) और फ़रमाया-

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَ لَا تَحْزَنُوْا وَ اَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ۔ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَ لَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَ لَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ (हा मीम सजद: 41/31,32)

(अर्थात- निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने कहा अल्लाह हमारा रब है फिर उस पर दृढ़ता पूर्वक स्थापित रहे, उन पर बहुत अधिकता से फ़रिश्ते उतरते हैं और कहते हैं कि भय न करो और न दुखी हो और उस जन्नत के मिलने से प्रसन्न हो जाओ जिसका तुमसे वादा किया जाता है। हम इस सांसारिक जीवन में तुम्हारे साथी हैं और परलोक में भी और उसमें तुम्हारे लिए वह सब कुछ होगा जिसके तुम्हारे दिल इच्छा करते हैं और उसमें तुम्हारे लिए वह सब कुछ होगा जो तुम मांगते हो।) इसी प्रकार फ़रमाया -

يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ

(अनुवाद - अपने बंदों में से जिस पर चाहे अपने आदेश से रूह को उतारता है ताकि वह मुलाकात के दिन से डराए (मोमिन- 40/16) और वह फ़रमाता है कि-

يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا۔ (अर्थात- वह तुम्हारे लिए एक विशेष निशान बना देगा। अन्फ़ाल- 8/30) और उसने फ़रमाया है कि-

وَ يَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ (सूरह हदीद- 57/29)

(अर्थात- और तुम्हें एक नूर प्रदान करेगा जिसके साथ तुम चलोगे) ऐसा नूर जो अल्लाह के विशेष बन्दों और दूसरे सामान्य बन्दों के बीच अंतर करने वाला है, वह इल्हाम, कश्फ़ (स्वप्न), वार्तालाप और अत्यंत गूढ़ ज्ञान हैं जो अल्लाह की ओर से विशेष लोगों के दिलों में डाले जाते हैं। इसी प्रकार अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि -

وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝ وَّ يَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

(अत्तलाक- 65/3,4)

(अनुवाद- और जो अल्लाह से डरे उसके लिए वह मुक्ति का कोई न कोई मार्ग बना देता है और वह उसे वहां से जीविका प्रदान करता है जहां से वह कल्पना भी नहीं कर सकता।

और तू जानता है कि वे लोग जो संयम और कृपालु रब की जुदाई के भय में पराकाष्ठा को पहुंच जाते हैं तो उन्हें जीविका की चिंता का न कोई ग़म होता है और न उसकी आवश्यकता शेष रहती है जिससे शरीर आनंदित होता है अर्थात रोटी, मांस और भिन्न-भिन्न प्रकार के खान-पान तथा वस्त्र आदि। बल्कि वे रूहानी (आध्यात्मिक) माल कमाने के लिए हर समय तैयार रहते हैं। और उनका दिल, उनकी रूह (आत्मा) और उनका प्रेम कृपालु ख़ुदा की तरफ और उस जीविका की तरफ खिंचा चला जाता है जो उन्हें विश्वास और अध्यात्मिक ज्ञान में आगे बढ़ाती है और उन्हें ख़ुदा से मिलने वाले लोगों में सम्मिलित करती है और वे दुनिया, उसकी मोह-माया तथा आनंदों की इच्छा नहीं करते। उनकी सबसे बड़ी इच्छा दुनियादारी नहीं होती और न यह कि वे खाएं-पिएं और अपने जीवन को भोजन चबाने तथा चटखारे लेने में व्यर्थ कर दें और समृद्ध लोगों के समान जीवन व्यतीत करें। अत: वह जीविका जो संयमी लोगों का उद्देश्य और अभीष्ट होती है वह केवल कश्फ़, इल्हाम और ख़ुदा से वार्तालाप के दैवीय

वरदान हैं ताकि वे विश्वास के समस्त स्तरों तक पहुंच सकें और अल्लाह के अध्यात्मज्ञानी बन्दों में सम्मिलित हो जाएं। अत: अल्लाह ने उनसे वादा किया है और फ़रमाया है-

وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّ يَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

(अत्तलाक- 65/3,4)

(अनुवाद- और जो अल्लाह से डरे उसके लिए वह मुक्ति का कोई न कोई मार्ग निकाल देता है और वह उसे वहां से जीविका प्रदान करता है जहां से वह कल्पना भी नहीं कर सकता। और वे लोग जो यह समझते हैं कि जीविका केवल शारीरिक सुख सुविधाओं तक सीमित है तो उन्होंने बहुत बड़ी ठोकर खाई है। और उन्होंने क़ुरआन पर उस प्रकार विचार नहीं किया जैसा कि करना चाहिए और वे लापरवाहों में से हैं। और इसी प्रकार अल्लाह तआला का यह कथन कि-

اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

(अनफ़ाल- 8/13)

(अनुवाद- (याद करो) जब तेरा रब फ़रिश्तों की ओर वह्यी कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूं, अत: वे लोग जो ईमान लाए हैं उन्हें दृढ़ता प्रदान करो।

अर्थात तुम उनके दिलों तक पहुंचो और उन तक दृढ़ता प्रदान करने वाले वाक्य भेजो अर्थात तुम उनसे कहो कि न डरो और न दुखी हो और कुछ इसी प्रकार के अन्य वाक्य कहो जिनसे उनके दिल संतुष्ट हों। अत: यह सब की सब आयतें दलालत करती हैं कि अल्लाह अपने वलियों से वार्तालाप करता है और उन को संबोधित करता है ताकि उनका विश्वास और उनका विवेक बढ़े और वे संतुष्ट हो जाएं।

और इसी प्रकार अल्लाह ने अपने बन्दों को-

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ (फ़ातिहा- 1/6,7)

(अनुवाद- हमें सीधे रास्ते पर चला, उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तूने इनाम

किया, जिन को अज़ाब नहीं दिया गया और जो गुमराह नहीं हुए।) दुआ सिखाई और यह ज्ञात ही है कि कश्फ़, इल्हाम, सच्चे स्वप्न, ख़ुदा से वार्तालाप और मुहद्दसियत हिदायत की किस्में हैं ताकि उनके द्वारा क़ुरआन के भेद प्रकट हों और विश्वास में बढ़ोतरी हो बल्कि इनाम के इन आसमानी लाभों के अतिरिक्त और कोई अर्थ नहीं। क्योंकि ये साधक के वास्तविक उद्देश्य हैं जो चाहते हैं कि उन पर अध्यात्मज्ञान के सूक्ष्म रहस्य प्रकट हों और वे इस दुनिया में अपने रब को पहचान लें और मुहब्बत तथा ईमान में तरक्की करें और दुनिया से संबंध तोड़ कर अपने महबूब (अर्थात ख़ुदा) का मिलन प्राप्त करें। अत: यही कारण है कि अल्लाह ने अपने बन्दों को प्रेरणा दिलाई है कि वे उसके दरबार से यह इनाम मांगे। क्योंकि वह (अर्थात ख़ुदा) उनके दिलों में मौजूद मिलन, विश्वास और अध्यात्मज्ञान की प्यास को भली भांति जानता है। इसलिए अल्लाह ने उन पर दया की और जिज्ञासा करने वालों के लिए हर प्रकार के अध्यात्मज्ञान उपलब्ध कराए और फिर उन्हें आदेश दिया कि वे उसे सुबह-शाम और रात-दिन मांगते रहें। और उसने इन नेमतों के देने पर राज़ी होने के बाद ही उन्हें यह आदेश दिया बल्कि इसके बाद उसने इन नेमतों का दिया जाना उनके लिए मुक़द्दर कर दिया, और बाद इसके कि उन्हें उन नबियों का वारिस बनाया जो उनसे पूर्व बिना किसी माध्यम के हिदायत की हर नेमत दिए गए थे। अत: देख कि अल्लाह ने हम पर किस प्रकार उपकार किया है और 'उम्मुल किताब' (अर्थात सूरह फ़ातिहा) में हमें आदेश दिया है कि हम उस में नबियों की समस्त हिदायतें मांगे ताकि हम पर उन समस्त बातों का प्रकटन हो जो उन पर प्रकट की गई थीं। परन्तु यह अनुसरण करने से तथा प्रतिरूप के तौर पर योग्यताओं और हिम्मतों के सामर्थ्य अनुसार होगा। अत: यदि हम हिदायत के इच्छुक हैं तो हम अल्लाह की उस नेमत को कैसे रद्द कर सकते हैं जो हमारे लिए उपलब्ध की गई और सर्वाधिक सत्यवादी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सूचना पाने के बाद हम किस प्रकार उसका इन्कार कर सकते हैं।

और जहां तक इस बात का संबंध है कि जो इस अध्याय में अल्लाह के

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत तथा हदीसों से सिद्ध है तो जान लो कि अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया है कि तुम से पहले बनी इस्राईल में ऐसे मर्द पाए जाते थे जो नबी न होते हुए अल्लाह से वार्तालाप करते थे। अत: यदि उनमें से कोई मेरी उम्मत में हो तो वह उमर (रज़ि अल्लाह अन्हु) है। और फ़रमाया कि तुमसे पहली उम्मतों में मुहद्दस पाए जाते थे और अगर मेरी उम्मत में कोई मुहद्दस है तो वह **उमर बिन खत्ताब रज़ि०** हैं। और बुख़ारी में आयत-

وَ مَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ مِنۡ رَّسُوۡلٍ وَّ لَا نَبِيٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰٓى

(अलहज्ज- 22/53)

(अर्थात- और हमने तुझ से पहले न कोई रसूल भेजा और न नबी परन्तु जब भी उसने कोई इच्छा की) इस आयत के बारे में इब्न अब्बास से यह रिवायत वर्णित है कि आप रज़ि० इस आयत में **"वला मुहद्दसिन"** (अर्थात और न कोई मुहद्दस) के शब्दों की बढ़ोतरी करते थे अर्थात् आप इस आयत को इस प्रकार पढ़ा करते थे-

وَ مَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ مِنۡ رَّسُوۡلٍ وَّ لَا نَبِيٍّ وَّ لَا مُحَدَّثٍ

और तू इसका विस्तृत वर्णन "फत्हुल बारी" में पाएगा। अत: तू सच्चाई के आ जाने के बाद इससे विमुख न हो और विचार करने वालों के साथ विचार कर।

और मैंने अपनी कुछ पुस्तकों में लिखा है कि मुहद्दसियत का मर्तबा नबूवत के मर्तबा के साथ गहरी समानता रखता है और उनमें सिवाय शक्ति और कर्म के और कोई अंतर नहीं। परन्तु लोगों ने मेरी बात को न समझा और कहने लगे कि यह व्यक्ति नबूवत का दावा करता है। और अल्लाह जानता है कि उनकी यह बात सरासर झूठ है जिसमें सच्चाई का अंश मात्र तक नहीं और न ही कोई वास्तविकता है। और उन्होंने यह आरोप केवल इसलिए लगाया है ताकि मुझे काफ़िर घोषित करने, गालियां देने और बुरा-भला कहने के लिए लोगों को भड़काएं और उन्हें दुश्मनी और उपद्रव में उभारें और मोमिनों के बीच मतभेद पैदा करें। अल्लाह की क़सम निस्सन्देह मैं अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखता हूं और मेरा इस बात पर ईमान है कि आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं। हां मैंने यह अवश्य कहा है कि नबूवत के सारे अंश मुहद्दसियत में पाए जाते हैं परन्तु शक्ति के साथ न कि कर्म से। अत: मुहद्दस गुणों की दृष्टि से नबी है। और यदि नबूवत का द्वार बंद न होता तो वह व्यावहारिक रूप से नबी होता और इस आधार पर हमारा यह कहना उचित है कि नबी पूर्ण विशेषणों के साथ मुहद्दस है क्योंकि वह नबी सर्वश्रेष्ठ और संपूर्ण रूप से मुहद्दसियत के समस्त विशेषणों का संग्रहीत: है और इसी प्रकार हमारे लिए यह कहना भी उचित है कि अपनी आंतरिक योग्यताओं के आधार पर हर मुहद्दस नबी है अर्थात मुहद्दस गुणों की दृष्टि से नबी है और नबूवत के समस्त विशेषण मुहद्दसियत में गुप्त और छुपे हुए हैं और उनके व्यवहारिक रूप से प्रकटन को नबूवत के द्वार के बंद होने ने ही रोक रखा है और इसी की ओर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने इस कथन में संकेत किया है - لو كان بعدى نبى لكان عمر कि अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो वह उमर होता। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह कथन केवल इस आधार पर है कि हज़रत उमर मुहद्दस थे। अत: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात की ओर संकेत किया है कि नबूवत का तत्व और उसका बीज मुहद्दसियत में मौजूद होता है परन्तु अल्लाह ने यह न चाहा कि वह उसे गुप्त शक्ति से व्यावहारिक रूप की ओर निकाल कर ले आए। और इसी की ओर इब्न अब्बास की रिवायत-

وَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّ لَا نَبِيٍّ وَّ لَا مُحَدَّثٍ

में संकेत है। अत: तू विचार कर कि किस प्रकार रसूलों, नबियों और मुहद्दसों को इस किरात में एक साथ सम्मिलित कर लिया गया है और अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया है कि ये सब के सब सुरक्षित हैं और पैगंबर हैं।

निस्सन्देह मुहद्दसियत एक विशेष वरदान है जो नबूवत की शान के समान केवल परिश्रम से प्राप्त नहीं होता। अल्लाह मुहद्दसों से उसी प्रकार वार्तालाप करता है जिस प्रकार वह नबियों से वार्तालाप करता है और मुहद्दसों को उसी प्रकार अवतरित करता है जिस प्रकार वह रसूलों को अवतरित करता

है और मुहद्दस उसी स्रोत से पीता है जिससे नबी पीता है। अत: निस्सन्देह वह (मुहद्दस) नबी होता अगर यह द्वार बंद न होता और यही वह भेद है जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर फारूक का नाम मुहद्दस रखा है। अत: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने उपरोक्त कथन के बाद फ़रमाया: لو كان بعدى نبى لكان عمر अर्थात मेरे अतिरिक्त अगर कोई नबी होता तो उमर होता और यह इस बात ही की ओर संकेत था कि मुहद्दस स्वयं में नबूवत के विशेषण रखता है। और अंतर केवल (नबूवत के) ज़ाहिर तथा छुपे होने और आंतरिक गुणों के होने तथा व्यवहारिक रूप से होने का है। वास्तव में नबूवत ज़ाहिरी रूप में मौजूद अपनी चरम सीमा को पहुंचा हुआ एक बड़ा वृक्ष है और मुहद्दसियत एक बीज के समान है जिसमें गुणों के रूप में वह सब कुछ उपस्थित है जो वृक्ष में व्यवहारिक तथा बाहरी रूप में पाया जाता है और यह धर्म के अध्यात्म ज्ञान के अभिलाषियों के लिए एक स्पष्ट उदाहरण है और उसी की ओर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने- عُلَمَآءُ اُمَّتِیْ كَاَنْبِيَاءِ بَنِیْ اِسْرَائِيْل (अर्थात मेरी उम्मत के उलमा बनी इस्राईल के नबियों के समान हैं) वाली हदीस में संकेत किया है और उलमा से अभिप्राय मुहद्दस हैं जिन्हें अपने रब की ओर से ज्ञान प्रदान किया जाता है और ख़ुदा से इल्हाम कलाम से सुशोभित होते हैं।

कुछ लोगों को मुहद्दसियत और नबुव्वत के बीच अंतर करने में बड़ी कठिनाई होती है परन्तु वास्तविकता यही है कि उन दोनों में अंतर है तो आंतरिक गुणों के होने तथा व्यवहारिक रूप से होने का जैसा कि मैंने अभी वृक्ष और उसके बीच के उदाहरण में स्पष्ट किया है। अत: मुझसे यह (ज्ञान बिंदु) ले ले और ख़ुदा के सिवा किसी से न डर। और मैं अल्लाह से दुआ करता हूं कि तू अध्यात्मज्ञानियों में से हो जाए। यही वह बात है जो हमने नबी स० की हदीसों और पवित्र क़ुरआन से निष्कर्ष निकाल कर अपनी कुछ पुस्तकों में वर्णन की है और जो कुछ पहले उलमा ने कहा है वह इस से कहीं बढ़कर है। क्या तू इब्ने सीरीन के कथन को नहीं देखता कि उनके पास महदी का वर्णन किया गया और उसके बारे में पूछा

गया कि क्या वह (महदी) अबू बकर रज़ि से श्रेष्ठ होगा? तो उन्होंने फ़रमाया कि अबू बकर क्या, वह तो कुछ नबियों से भी श्रेष्ठ होगा।

यही बात (तफसीर) 'फतहुल बयान' के लेखक सिद्दीक हसन ने अपनी पुस्तक "हुजजुल किरामा" में लिखी है और इसी प्रकार के अन्य कथन भी हैं परन्तु हम उन्हें बात लम्बी होने के भय से छोड़ते हैं और तुझ पर यह अनिवार्य है कि तू न्यापूर्वक सूक्ष्म दृष्टि से देखे ताकि तुझ पर वास्तविकता स्पष्ट हो जाए और तू सफल होने वालों में से हो जाए। और मैंने हर वह बात जो जल्दबाज़ों की दृष्टि में कुफ्र का वाक्य है, तुम्हारे लिए वर्णन कर दी है। इसलिए विचार कर कि कहां यह बात और कहां नबी होने का दावा? मेरे भाई तू यह मत समझ कि मैंने कोई ऐसी बात कह दी है जिसमें नबूवत के दावे की कोई गंध पाई जाती हो जैसा कि मेरे ईमान और मेरे सम्मान पर जानबूझ कर दिलेरी करते हुए आक्रमण करने वालों ने समझ रखा है। बल्कि जब कभी मैंने यह बात कही है तो केवल अध्यात्मज्ञान और क़ुरआन के सूक्ष्म बिंदुओं की व्याख्या के लिए कही है और कर्मों का आधार नीयतों पर है (अर्थात जैसी निय्यत होगी वैसा फल मिलेगा) ख़ुदा की पनाह कि मैं नबूवत का दावा करूं। बाद इसके कि हमारे नबी सैयद व मौला मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुल अंबिया बनाया है।

और उनके ऐतराज़ों में से एक यह है कि वे कहते हैं कि मसीह मौऊद क़यामत के निकट और उसकी बड़ी-बड़ी निशानियों के प्रकटन के समय अर्थात याजूज-माजूज और "दाब्बतुल अर्ज़" (ज़मीनी कीड़े अर्थात प्लेग इत्यादि बीमारियों) और उस दज्जाल के प्रकटन के समय जिस के साथ-साथ जन्नत और दोजख चलेंगे, और सूर्य के पश्चिम से उदय होने के समय आएगा। हालांकि इन निशानियां में से कोई निशानी भी अभी प्रकट नहीं हुई तो फिर अन्य निशानियों के आए बिना मसीह मौऊद कहां से आ गया और उस पर दिल कैसे संतुष्ट हो सकता है और तसल्ली और विश्वास कैसे प्राप्त हो सकता है?

इस ऐतराज़ का उत्तर यह है कि तू जान ले कि ये समस्त भविष्यवाणियां उसी प्रकार पूरी हो गईं। और घटित हो गईं जैसा कि विश्वस्त लोगों की

संकलित एवं चयनित हदीसों में वह मौजूद हैं परन्तु लोगों ने उन्हें न पहचाना और लापरवाह रहे।

और इस बारे में विवरण यह है कि क़यामत की निशानियां दो प्रकार की हैं छोटी निशानियां और बड़ी निशानियां। जहां तक छोटी निशानियों का संबंध है तो वे कभी अपने व्यावहारिक रूप में प्रकट होती हैं और कभी उनका अस्तित्व रूपक के रंग में प्रदर्शित होता है, परन्तु बड़ी निशानियां अपने व्यावहारिक रूप में कदापि प्रकट नहीं होती और उनके लिए आवश्यक है कि वे रूपकों और लक्षणों के भेस में प्रकट हों। और इस मामले में भेद यह है कि क़यामत अचानक आएगी जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ۚ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۔ (आराफ़ - 7/188)

(अनुवाद: वे तुझसे क़यामत के बारे में प्रश्न करते हैं कि वह कब होगी? तू कह दे कि उसका ज्ञान केवल मेरे रब के पास है। उसे सिवाए उसके, अपने समय पर कोई प्रकट नहीं करेगा। वह आसमानों और धरती पर भारी है वह तुम पर अचानक आएगी। वे (उसके बारे में) तुझ से इस प्रकार प्रश्न करते हैं मानो कि तू उसके बारे में सब कुछ जानता है। तू कह दे कि उसका ज्ञान केवल अल्लाह ही के पास है परन्तु अधिकतर लोग यह बात नहीं जानते।) एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला फरमाता है :-

اَفَاَمِنُوْۤا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ۔ قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْۤ اَدْعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ ۣ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَ مَنِ اتَّبَعَنِيْ (युसूफ - 12/108, 109)

(अनुवाद: अत: क्या वे इस बात से सुरक्षित हैं कि उनके पास अल्लाह के प्रकोप में से कोई ढक देने वाली (मुसीबत) आए या इन्कलाब की घड़ी अचानक आ

जाए जबकि वे उसकी कोई समझ न रखते हों। तू कह दे कि यह मेरा रास्ता है मैं अल्लाह की ओर बुलाता हूं। मैं सही ज्ञान के मार्ग पर हूं और वह भी जिसने मेरा अनुसरण किया।) फिर फरमाया -

بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَ لَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ

(अनुवाद: बल्कि वह घड़ी उन तक अचानक आएगी और उन्हें बेसुध कर देगी और वे उसे स्वयं से दूर कर देने की शक्ति नहीं रखेंगे और न ही उन्हें मोहलत दी जाएगी। (अल अंबिया- 21/41)

फिर फरमाया -

كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ۔ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ۔ فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ۔ (शुअरा- 26/201-203)

(अनुवाद: इसी प्रकार हमने दोषियों के दिलों में इस बात को बैठा दिया है कि वे उस पर ईमान नहीं लाएंगे यहां तक कि दर्दनाक अज़ाब देख लें। अत: वह (अज़ाब) उनके अनजाने में उनके पास अचानक आ जाएगा।

फिर फरमाया -

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ

(अनुवाद: वे इसके अतिरिक्त कुछ और प्रतीक्षा कर रहे हैं कि (क़यामत की) घड़ी अचानक उनके पास इस प्रकार आ जाए कि उन्हें पता भी न चले। अज़्ज़ुखरुफ़- 43/67)

फिर फरमाया-

وَ لَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ (अलहज्ज- 22/56)

(अनुवाद: और वे लोग जिन्होंने कुफ्र किया सदा इस के बारे में संशय में रहेंगे यहाँ तक कि अचानक उन तक इंकलाब की घड़ी आ पहुंचेगी या ऐसे दिन का अज़ाब उन्हें आ पकड़ेगा जो खुशियों से खाली होगा।)

अत: अल्लाह तआला के इस कथन-

وَ لَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ (अलहज्ज- 22/56)

(अनुवाद: और वे लोग जिन्होंने कुफ्र किया सदा इस के बारे में संशय में रहेंगे) से यह सिद्ध हो गया कि सन्देह को दूर करने वाले अकाट्य तर्क और व्यवहारिक निशानियां जो क़यामत के निकट होने पर दलालत करती हैं कभी प्रकट न होंगी। हां वह बाहरी निशान प्रकट होंगे जो तावील के मोहताज होते हैं और वे भी केवल रूपकों के रंग में प्रकट होते हैं अन्यथा यह कैसे संभव है कि आसमान के द्वार खुल जाएं और उनसे ईसा अलैहिस्सलाम लोगों की आंखों के सामने उतरें और उनके हाथ में एक भाला हो और फ़रिश्ते उनके साथ उतरें और धरती फट जाए और उसमें से एक विचित्र जानवर निकले जो लोगों से यह कहे
कि अल्लाह के निकट वास्तविक धर्म इस्लाम ही है। और याजूज-माजूज अपनी विचित्र शक्लों में निकलें और उनके कान लंबे हों, और दज्जाल का गधा निकले और लोग उसके दो कानों के बीच 70 गज की दूरी देखें। और दज्जाल निकले और लोग उसके साथ जन्नत तथा दोज़ख देखें और उन खज़ानों को देखें जो उस (दज्जाल) के पीछे-पीछे चलते हैं। और सूरज अपने पश्चिम से उदय हो जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके बारे में सूचना दी है। और सृष्टि आसमान से लगातार ये ध्वनियां सुने कि महदी अल्लाह का ख़लीफ़ा है। और इसके बावजूद काफ़िरों के दिलों में सन्देह शेष रहे।

और इसी कारण मैंने अपनी पुस्तकों में कई बार यह लिखा है कि यह सारे के सारे रूपक हैं और ऐसा करने में अल्लाह की इच्छा केवल यह है कि वह लोगों की परीक्षा ले ताकि उसे यह ज्ञात हो कि कौन उनको दिल के नूर से पहचानता है और कौन गुमराहों में से है और अगर हम यह मान लें कि वह निशानियां अपने ज़ाहिरी रूप में प्रकट होंगी तो निस्सन्देह उसका निश्चित परिणाम यह निकलेगा कि समस्त लोगों के दिलों से सन्देह और भ्रम दूर होगा। जैसा कि क़यामत के दिन दूर होगा। अत: जब समस्त सन्देहों का निवारण हो गया और समस्त पर्दे उठ गए तो फिर इन भयानक विचित्र लक्षणों के प्रकटन के बाद इन (वर्तमान) दिनों में तथा क़यामत के दिन में कौन सा अंतर शेष रह गया। हे बुद्धिमान! विचार कर कि जब

लोग एक व्यक्ति को आसमान से उतरते हुए देखें कि उसके हाथ में एक भाला है और उसके साथ ऐसे फ़रिश्ते हैं जो दुनिया के आरंभ से गायब थे और लोग उनके अस्तित्व के बारे में सन्देह किया करते थे, फिर वे फ़रिश्ते उतरें और यह गवाही दें कि यह रसूल सच्चा है और इसी प्रकार लोग आसमान से अल्लाह की यह ध्वनि सुनें कि महदी अल्लाह का ख़लीफ़ा है और वे दज्जाल के मस्तक पर काफ़िर का शब्द लिखा हुआ पढ़ें और यह देखें कि सूर्य पश्चिम से उदय हो गया है, धरती फट गई है और उससे वह ज़मीनी कीड़ा निकल कर बाहर आ गया है जिसका पांव धरती पर और सर आसमान को छू रहा है और उसने मोमिन तथा काफ़िर को चिन्हित किया है और उसने उनकी आंखों के बीच मोमिन या काफ़िर (का शब्द) लिखा है और उसने ऊंची आवाज़ से इस बात की गवाही दी है कि इस्लाम सच्चा है और सच्चाई खुल गई है और हर प्रकार से स्पष्ट हो गई है और इस्लाम की सच्चाई के प्रकाश ऐसे प्रकट हो गए हैं कि पशुओं तथा जंगली जानवरों और बिच्छुओं तक ने उसकी सच्चाई की गवाही दे दी है तो फिर कैसे संभव है कि यह महान निशान (चमत्कार) देखने के बाद भी कोई काफ़िर धरती पर शेष रह जाए या अल्लाह तथा क़यामत के दिन के बारे में कोई सन्देह शेष रह जाए क्योंकि सुस्पष्ट निशान ऐसी चीज़ हैं कि जिन्हें काफ़िर और मोमिन दोनों स्वीकार करते हैं। और इस बारे में उन लोगों में से जिन्हें माननीय अंग दिए गए हैं कोई एक भी मतभेद नहीं कर सकता। उदाहरण स्वरूप जब दिन मौजूद हो और सूर्य निकला हुआ हो और लोग जाग रहे हों तो काफ़िरों और मोमिनों में से कोई भी उसका इन्कार नहीं करेगा। अत: इसी प्रकार जब समस्त परदे उठा दिए जाएं और गवाहियां निरंतर प्रकट हों और निशान एक दूसरे को मज़बूती दें और छुपे हुए मामले प्रकट हो जाएं और फ़रिश्ते उतर आएं और आसमानी आवाज़ें सुनाई दें तो फिर बताओ कि कौन सा फर्क इन दिनों तथा क़यामत के दिन के बीच शेष रह जाएगा और इन्कार करने वालों के लिए भागने की कौन सी जगह शेष रह जाएगी? अत: इससे यह अनिवार्य होगा कि उन दिनों में सब काफ़िर मुसलमान हो जाएं और उन्हें क़यामत के बारे में कोई संदेह न रहे। परन्तु क़ुरआन ने कई बार कहा है कि काफ़िर क़यामत के दिन तक अपने कुफ्र पर

स्थित रहेंगे और वह क़यामत के बारे में उस समय तक सन्देह में पड़े रहेंगे यहां तक कि वह घड़ी उन पर यकायक आ जाए और उन्हें आभास तक न हो। और 'बगततन' का शब्द स्पष्ट रूप से इस बात पर दलालत करता है कि ऐसी निश्चित निशानियां जिन के बाद क़यामत के प्रकटन में कोई सन्देह नहीं रहता, कभी ज़ाहिर न होंगी और अल्लाह उन्हें इस प्रकार ज़ाहिर नहीं करेगा कि समस्त भेद खुल जाएं और यह निशानियां क़यामत को देखने के लिए एक विश्वसनीय दर्पण हों। बल्कि यह मामला क़यामत के दिन तक अस्पष्ट रहेगा और समस्त निशानियां प्रकट हो जाएंगी परन्तु ऐसे ज़ाहिर मामले के समान नहीं जिसको स्वीकार करने से कोई भाग न सके बल्कि उन मामलों के समान जिनसे बुद्धिमान लोग लाभ उठाते हैं और जिन्हें मूर्ख पक्षपाती लोग छू नहीं सकते। इसलिए तू इस अवसर पर विचार-विमर्श कर क्योंकि यह विचार-विमर्श करने वालों के लिए ज्ञानवर्धक है।

और तू जानता है कि ये समस्त भविष्यवाणियां उदाहरण स्वरूप "दाब्बतुल अर्ज़" (ज़मीनी कीड़ा- अनुवादक) का निकलना और याजूज-माजूज तथा अन्य निशानियों के प्रकटन के बारे में रिवायतों ने उनके स्पष्टीकरण में परस्पर मतभेद किया है और उनकी व्याख्या एक ढंग और एक तरीके से नहीं की, यहां तक कि कुछ सहाबा ने यह समझा कि "दाब्बतुल अर्ज़" हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हु हैं। अत: हज़रत अली से कहा गया कि लोग यह समझते हैं कि आप "दाब्बतुल अर्ज़" हैं तो इस पर उन्होंने कहा क्या तुम नहीं जानते कि वह मनुष्य है परन्तु उसके साथ कुछ जानवरों के लक्षण होंगे। उसके बाल और पर होंगे और उसमें कुछ चीज़ें पक्षियों जैसी और कुछ हिंसक पशुओं जैसी और कुछ सामान्य पशुओं जैसी होंगी और वह तीन बार एक मज़बूत घोड़े के समान तेज़ भागेगा परन्तु अपने 2/3 से कम ही निकलेगा जबकि मैं तो केवल एक मनुष्य हूं। मेरी त्वचा पर न तो पश्म है और न ही पर। फिर मैं कैसे "दाब्बतुल अर्ज़" हो सकता हूं? और कुछ लोगों का कहना है कि वह "दाब्बतुल अर्ज़" जिसका पवित्र क़ुरआन में वर्णन है वह एक प्रजाति का नाम है किसी एक निश्चित व्यक्ति का नाम नहीं। अत: जब धरती फट जाएगी तो उससे हज़ारों "दाब्बतुल अर्ज़" निकलेंगे। जिनमें से प्रत्येक

को "दाब्बतुल अर्ज़" के नाम से नामित किया जाएगा उनके रूप मनुष्यों जैसे और उनके शरीर खूंखार जानवरों, कुत्तों और पशुओं जैसे होंगे और कहा गया है कि वह एक जानवर है जिसकी गर्दन लंबी है जिसे एक पश्चिम में रहने वाला व्यक्ति वैसे ही देखेगा जैसे पूरब में रहने वाला व्यक्ति और उसकी पक्षियों जैसी चोंच होगी और वह ऊन वाला, रूएं वाला, पश्मी और बालों वाला जानवर होगा। और उसमें जानवरों के रंगों में से हर रंग होगा। उसकी चार टांगे होंगी और उसमें हर उम्मत का निशान होगा। और इस उम्मत के लिए उसका निशान यह है कि वह लोगों से सरस सुबोध अरबी भाषा में वार्तालाप करेगा और उनसे उन्हीं की भाषा में बात करेगा। यह हज़रत इब्ने अब्बास का कथन है। और हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि वह मांसपेशियों तथा परों वाला होगा और उसमें हर रंग मौजूद होगा और उसके दो सींगों के बीच तेज़ रफ्तार सवार के लिए एक फरसख (अर्थात तीन मील) की दूरी होगी। और हज़रत इब्न उमर से रिवायत है कि वह नरम रूएं रखने वाला पश्मी और बालों वाला होगा। और हज़रत हुज़ैफ़ा वर्णन करते हैं कि वह परों और बालों वाला भेड़िया है। कोई पकड़ने वाला उस तक पहुंच नहीं सकता और न ही कोई भागने वाला उससे आगे निकल सकता है। और उमर बिन अलआस रज़ि अल्लाह अन्हु से रिवायत है वह कहते हैं कि लम्बे कद का जानवर है जिसका सर आसमान तक पहुंचा होगा और उसके दोनों पांव धरती से नहीं निकलेंगे और वह घोड़े के समान 3 दिन सरपट दौड़ेगा और 1/3 भी नहीं निकलेगा। और हज़रत इब्ने ज़ुबैर से रिवायत हैं वह कहते हैं कि वह एक ऐसा जानवर होगा जिसका सर गाय के सर जैसा, आंखें सूअर की आंखों जैसी, कान हाथी के कान जैसे और सिंह बारहसिंघा जैसे और उसकी गर्दन शुतुरमुर्ग की गर्दन जैसी और उसका सीना शेर के सीने जैसा और उसका रंग चीते के रंग जैसा और उसकी कमर बिल्ली की कमर जैसी और उसकी पूंछ बकरे की पूंछ जैसी और उसकी टांगें ऊंट की टांगों जैसी और उसके हर दो जोड़ों के बीच 12 गज की दूरी होगी। और आसिम बिन हबीब बिन असबहान से रिवायत है वह कहते हैं कि मैंने (हज़रत) अली रज़ि अल्लाह अन्हु को यह फ़रमाते हुए देखा कि "दाब्बतुल अर्ज़" अपने मुंह से

खाएगा और अपने सुरीन से बात करेगा। और कुछ हदीसों में आया है कि वह निकलेगा और उसके साथ मूसा अलैहिस्सलाम का डंडा और सुलेमान बिन दाऊद अलैहिस्सलाम की अंगूठी होगी। और वह ऊंची आवाज़ से मुनादी करेगा कि लोग हमारे निशानों से लापरवाह थे। और वह मोमिन और काफ़िर चिन्हित करेगा। फिर जो मोमिन होगा तो उसका चेहरा निशान लगने के बाद चमकदार सितारे के समान दमक उठेगा और वह दाब्बतुल (अर्ज़) उसकी दोनों आंखों के बीच मोमिन शब्द लिखेगा और जो काफ़िर होगा तो उसकी दोनों आंखों के बीच काफ़िर शब्द काले बिंदु के समान लिखेगा और एक रिवायत में आया है कि उसकी आवाज़ इतनी ऊंची है जिसे पूरब और पश्चिम में जो भी है सुन लेगा। और वह इब्लीस का वध करेगा और टुकड़े-टुकड़े कर देगा। और उसके निकलने के स्थानों और उसके प्रकटन के समयों में विचित्र प्रकार के मतभेद पाए जाते हैं। परन्तु हमने बात के लंबे होने से बचने के लिए उसका वर्णन छोड़ दिया है। और लोगों ने यह भी कहा है कि वह एक ही समय में बहुत से स्थानों से निकलेगा और वह मक्का की धरती से भी निकलेगा और मदीना से भी निकलेगा और यमन की धरती से भी प्रकट होगा। अत: वह विभिन्न स्थानों में विलक्षण रूप से उदाहरण योग्य रूपों में अपनी सूरत दिखाएगा। अत: यहां से साबित होता है कि यह सब उदाहरण हैं। और मुझे आश्चर्य होता है कि हमारे उलमा ने "दाब्बतुल अर्ज़" के निकलने के बारे में इन मिसाली सूरतों को जाइज़ क़रार दिया है और कहा है कि एक ही समय में उसे पूरब और पश्चिम में मौजूद होने की शक्ति प्राप्त होगी, जबकि वे ऐसी शक्ति को फ़रिश्तों के लिए वैध क़रार नहीं देते और कहते हैं कि जब वे (फ़रिश्ते) आसमान से उतरें तो आवश्यक है कि समस्त आसमान उनसे खाली हो जाए। हालांकि यह खुली-खुली मूर्खता है।

यह वह वर्णन है जो "दाब्बतुल अर्ज़" के बारे में हदीस की पुस्तकों में मतभेद तथा विरोधाभास के साथ वर्णन हुआ है। यहां तक कि अधिकतर सहाबी यह समझने लगे कि वह केवल इंसान ही है। और इसी वजह से उन्होंने समझा कि (हज़रत) अली ही "दाब्बतुल अर्ज़" हैं। और सबसे विचित्र तो यह है कि कुछ

हदीसें दलालत करती हैं कि "दाब्बतुल अर्ज़" मोमिन होगा जो मोमिनों की सहायता करेगा और काफ़िरों को अपमानित करेगा और गवाही देगा कि इस्लाम धर्म सच्चा है। यहां तक कि वह इबलीस का वध करके उसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा। और कुछ हदीसें दलालत करती हैं कि वह (दाब्बतुल अर्ज़) एक काफ़िर औरत है जो शैतान की सेविका और दज्जाल की जासूस है और उसमें कोई भलाई नहीं पाई जाती। उन दोनों प्रकार की हदीसों में एकरूपता की इसके अतिरिक्त कोई संभावना नहीं कि हम यह कहें कि "दाब्बतुल अर्ज़" से अभिप्राय बुरे उलमा हैं जो अपने कथनों से यह गवाही देते हैं कि रसूल सच्चा है और क़ुरआन सच्चा है परन्तु फिर भी वे गंदे काम करते हैं और दज्जाल की सेवा करते हैं। मानो उनका अस्तित्व दो भागों से बना है एक भाग इस्लाम के साथ है और दूसरा भाग कुफ्र के साथ है। उनके कथन मोमिनों के कथनों के समान और उनके कर्म काफ़िरों के कर्मों जैसे हैं। अत: (यही कारण है कि) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी की कि (बुरे उलमा) अंतिम युग में अधिकता से होंगे और उनका नाम "दाब्बतुल अर्ज़" रखा गया है। क्योंकि वे धरती की ओर झुके हुए होंगे और नहीं चाहेंगे कि उन्हें आसमान की ओर बुलंद किया जाए और वे दुनिया और उसकी मोह माया पर संतुष्ट होंगे और मनुष्य जैसा दिल उनमें शेष नहीं रहेगा और खूंखार जानवरों, सूअरों और कुत्तों के स्वभाव उनमें इकट्ठे होंगे। उन्हें तू अहंकारी और घमण्डी पाएगा। मानो कि उन्होंने आसमान तक पहुंचकर उसे छू लिया है हालांकि संसार की ओर अत्यंत झुकाव के कारण उनके पांव धरती से निकले ही नहीं। वे उस व्यक्ति के समान हैं जिसकी क़ैदियों के समान बेड़ियां कसी गई हों। वे लोगों से मुंह के द्वारा नहीं बल्कि सुरीन के द्वारा बात करते हैं अर्थात तू उनकी बातचीत में वह पवित्रता, लाभ और दृढ़ता और अध्यात्मिकता नहीं पाएगा जो भले लोगों की बातचीत में होता है।★

★**हाशिया :-** एक व्यक्ति ने ऐतराज़ किया है कि अगर यही सत्य है कि "दाब्बतुल अर्ज़" इस युग के उलमा का एक समूह ही है तो फिर अनिवार्य होगा कि उनका किसी को काफ़िर क़रार देना सच हो, क्योंकि "दाब्बतुल अर्ज़" का एक काम यह भी है कि वह

और उनके ऐतराज़ों में से एक यह है कि वे कहते हैं कि उनके बड़े मशाइख़ में से एक ने यह कहा है कि मैंने अल्लाह के रसूल को स्वप्न में देखा और आपसे इस व्यक्ति (अर्थात इस पुस्तक के लेखक) के बारे में पूछा

शेष हाशिया- मोमिन और काफ़िर को निशान लगाएगा तो फिर जिस व्यक्ति को वह "दाब्बतुल अर्ज़" काफ़िर क़रार दे (ऐतराज़ करने वाले का इशारा हमारी ओर है) तो तुम पर यह अनिवार्य है कि तुम उसका इक़रार करो। ("दाब्बतुल अर्ज़" उलमा का) किसी को काफ़िर क़रार देना "दाब्बतुल अर्ज़" के निशान लगाने के समान है। अत: इस ऐतराज़ करने वाले के उत्तर में यह कहा जाता है कि निशान से अभिप्राय काफ़िर के कुफ्र और मोमिन के ईमान का इज़हार है। अत: यह इज़हार दो प्रकार का है। कभी तो वह कथन के साथ होता है और कभी कर्म और उनके परिणामों के साथ होता है और अल्लाह की जारी सुन्नत है कि वह काफ़िरों और दुराचारियों को अपने नबियों और औलिया के ईमानी तेज के इज़हार का अनिवार्य कारण बना देता है। क्या तू हमारे आका, हमारे नबी मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर नहीं देखता कि किस प्रकार अबू जहल और उस जैसे लोगों की शत्रुता आप की सच्चाई के प्रकाश तथा आपके ईमान के नूर की उन्नति का कारण बनी। यदि अबू जहल और उसके दूसरे शत्रु भाई बंद न होते तो मुहम्मदी सच्चाई के बहुत से नूर पर्दे में रह जाते। अत: जब अल्लाह ने इरादा किया कि वह अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई को लोगों पर प्रकट करे तो उसने इस धरती में अबू जहल और दूसरे उपद्रवियों को आपका ईर्ष्यालु और दुश्मन बना दिया तो उन्होंने हर प्रकार के षडयंत्र किए और हर प्रकार के कष्ट पहुंचाए और आसमान से उतरने वाले नूरों को बुझाने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु वे उसमें असमर्थ रहे और सत्य फैल गया और असत्य नष्ट हो गया और अल्लाह का आदेश प्रकट हो गया यद्यपि वे उसे नापसंद करते थे। इसलिए यह कहना उचित है कि अबू जहल और उस जैसे दूसरे लोग हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई, आपके पवित्र ईमान और आपके सर्वोत्तम नूरों को प्रकट करने का कारण बने। अत: इसीलिए हम कहते हैं कि "दाब्बतुल अर्ज़" जो शैतान की सेविका है अर्थात जो सुरीन से बात करती है न कि नेक लोगों की तरह मुंह से। जो मोमिन को इन अर्थों में निशान लगाती है कि वह उस (मोमिन) के ईमानी नूरों को वैसे ही प्रकट करती है जैसे अबू जहल में हज़रत खातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ईमान के नूरों को प्रकट किया। अत: विचार कर और पागल दीवानों की तरह मत हो। इसी से

कि क्या वह व्यक्ति झूठा है या सच्चा? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह सच्चा है और अल्लाह की ओर से है परन्तु अल्लाह उससे हंसी ठट्ठा कर रहा है।★

इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि उस बुज़ुर्ग ने अपने दो संदेशवाहक मेरी ओर भेजे। उनमें से एक का नाम ख़लीफ़ा अब्दुल लतीफ और दूसरे का नाम ख़लीफ़ा अब्दुल्ला अरब है। वे मेरे पास फिरोज़पुर में आए और उन्होंने कहा कि हमें आपकी ओर हमारे बुज़ुर्ग पीर झंडे वाले ने यह कह कर भेजा है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा और मैंने हुज़ूर से आपके बारे में पूछा और निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए कि क्या वह झूठा है या सच्चा? तो अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया कि- اِنَّہٗ صَادِقٌ وَ مِنْ عِنْدِ اللّٰہ (अर्थात वह सच्चा है और अल्लाह की ओर से है।) तो मैंने पहचान लिया कि आप स्पष्ट रूप से सच्चाई पर हैं और उसके बाद हम आपके बारे में कोई सन्देह नहीं करते और न आपकी शान में हमें कोई संशय है। और हम आपके आदेश के अनुसार पालन करेंगे। यदि आप हमें आदेश दें कि अमेरिका चले जाओ तो हम वहां चले जाएंगे और हमारा अपने ऊपर कोई अधिकार न होगा और अल्लाह ने चाहा तो आप हमें प्रसन्नता पूर्वक आज्ञापालन करने वालों में से पाएंगे। यह वह बात है जो उस बुज़ुर्ग के दोनों संदेशवाहकों ने कही और यह दोनों ही अपनी क़ौम के सम्मानित लोगों में से हैं। बल्कि वह व्यक्ति जिसका नाम अब्दुल्ला अरब है, प्रसिद्ध व्यापारियों में से है और अल्लाह ने उसे अधिकता से माल और शेष रहने वाले सतकर्म प्रदान किए हैं। और मेरा विचार है कि वह नेक आदमी है, झूठ नहीं बोलता और उसने अल्लाह के मार्ग में और धार्मिक कार्यों में बहुत सा माल खर्च किया है और उसे इस्लाम की सरबुलंदी की बहुत चिंता है और वह मेरे पास केवल सच्चाई और निष्ठा के साथ

★**हाशिया :-** उस बुज़ुर्ग का नाम पीर झंडेवाला है और वह सिंध के क्षेत्र के रहने वाले हैं। और मैंने सुना है कि वह इस इलाके के प्रसिद्ध मशा इख़ों में से हैं। और उनके मुरीदो की जमाअत एक लाख के लगभग बल्कि इससे भी अधिक है। इसी से।

आया था और वे दोनों नहीं आए जब तक कि उनके शैख़ ने उनको मेरे पास नहीं भेजा। अत: तू ईमानदारी और न्याय के साथ विचार कर कि क्या उनके शैख़ ने उन्हें इतने दूर-दराज़ इलाके से मार्ग के व्यय और गर्मी के मौसम में सफर की कठिनाइयां उठाने के बाद इसलिए भेजा था कि वे दोनों उस (शैख़) की ओर से हंसी की बात पहुंचाएं और वे दोनों सुन्नत के खिलाफ नेक लोगों को कष्ट दें? वे दोनों जीवित मौजूद हैं और शैख़ साहब भी जीवित मौजूद हैं। अत: तू उनसे और उनके शैख़ से पूछ ले अगर तू सन्देह करने वालों में से है। इसके अतिरिक्त अल्लाह की ओर हंसी-ठठ्ठा संबद्ध करना एक ऐसी बात है जिसकी सच्चाई को तू भली-भांति जानता है और तुझे ज्ञात है कि हंसी-ठठ्ठा झूठ की एक प्रकार है और अल्लाह तआला की ओर झूठ संबद्ध करना सही नहीं। क्योंकि झूठ अपवित्र तथा दोषों में से है और समस्त दोष व्यक्तिगत रूप से, बौद्धिक रूप से और उर्फ़ी रूप से अल्लाह तआला के लिए असंभव हैं और उनकी इस बात पर सहमति है कि अल्लाह तआला झूठ नहीं बोलता और वचन भंग नहीं करता। झूठ बोलना उसके लिए असंभव है क्योंकि झूठ में बेबसी, मूर्खता और अभद्रता की निशानी पाई जाती है और फिर उसमें कमी-बेशी होती है और अल्लाह तआला इन समस्त दोषों से और उनके हर प्रकार से रहित है। और अल्लाह तआला की भविष्यवाणियों, उसकी वह्यी तथा उसके इल्हाम में झूठ का औचित्य, बेहिसाब उपद्रवों की बुनियाद डाल देगा। शरहुल मवाकिफ के लेखक कहते हैं कि अल्लाह की ओर झूठ को संबद्ध करना सर्वसम्मति से वर्जित है और यदि (कल्पना के तौर पर) अल्लाह झूठा होता तो उसका झूठ अवश्य अनादि काल से होता जबकि मौत अल्लाह तआला के अस्तित्व के साथ स्थापित नहीं हो सकती तो झूठ उसकी अनादि विशेषताओं से कैसे संबद्ध हो गया जबकि वह सबसे अधिक सच्चा है।

और उनके ऐतराज़ों में से एक यह है कि वे कहते हैं क़ुरआन से सिद्ध है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम क़त्ल या सूली (सलीब) पर लटकाए बिना आसमान की ओर उठाए जा चुके हैं और हदीसों में वर्णित है कि वह शीघ्र

नाज़िल होगा।★ और वह दज्जाल का वध करेगा और विवाह करेगा और उसकी संतान होगी। फिर वह मृत्यु को प्राप्त होगा और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र में दफन किया जाएगा। और कुछ हदीसों में आया है कि वह मृत्यु को प्राप्त नहीं हुआ और जिस ज़माने में अल्लाह महदी को अवतरित करेगा उसी ज़माने में ईसा के मौत से पूर्व आगमन पर सर्वसम्मति हो चुकी है। और वह याजूज और माजूज के विरुद्ध बद्दुआ करेगा तो वह उनकी बद्दुआ से मर जाएंगे। तो फिर उन हदीसों का कैसे इन्कार किया जा सकता है जिन पर पहले और गुज़रे हुए नेक लोगों और सहाबा और ताबईन, इमाम और बड़े-बड़े मुहद्दसीन ने सर्वसम्मति व्यक्त की है?

इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु अटल आयतों से साबित है। क्योंकि पवित्र क़ुरआन ने 'तवफ़्फ़ी' शब्द को केवल मौत देने और मारने के लिए ही प्रयोग किया है और उसके इन अर्थों का अल्लाह के रसूल ने भी सत्यापन किया है और इस पर सहाबा में से एक ऐसे व्यक्ति ने गवाही भी दी है जो अपनी क़ौम के शब्दकोश को सबसे अधिक जानने वाला था, जिसने व्याख्या के विज्ञान को प्रतिपादित किया और उसे तैयार किया और जिसे अरबी भाषा की तहक़ीक़ में पूर्ण महारथ थी और वह अध्यात्म ज्ञानियों में से था। और उसकी गवाही जैसा कि बुख़ारी में वर्णित है और बुख़ारी के व्याख्याकार 'अलऐनी' ने इब्न अबी हातिम से पूरी सनद के साथ इस रिवायत को हज़रत इब्ने अब्बास तक पहुंचाया है क्योंकि उन्होंने कहा है कि 'मुतवफ़्फ़ीक' का अर्थ है मुमीतुका (अर्थात मैं तुझे मृत्यु दूंगा)। फिर तू यह जान ले कि हज़रत

★**हाशिया :-** यदि ईसा अलैहिस्सलाम उठाए जाने के बाद संसार की ओर पुन: आने वाले होते तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यूं कहते कि ख़ुदा की क़सम निकट है कि वह लौट आए। परन्तु आपने तो यह फ़रमाया है कि ख़ुदा की क़सम निकट है कि वह नाज़िल हो। अत: अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का 'लौटने' के शब्द को त्यागना और 'नुज़ूल' के शब्द को अपनाना इस बात का ठोस तर्क है कि इससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अभिप्राय कोई और व्यक्ति है न कि वह ईसा इब्न मरियम जो अल्लाह के नबी हैं। इसी से।

ईसा अलैहिस्सलाम के पार्थिव शरीर समेत जीवित उठाए जाने की आस्था के बारे में सर्वसम्मति का दावा ग़लत और बिलकुल झूठा है। इब्नुल असीर ने अपनी पुस्तक "अलकामिल" में कहा है कि जानकारों ने ईसा अलैहिस्सलाम के रफ़ा (उठाए जाने) के बारे में मतभेद किया है कि उनका रफ़ा मौत से पहले हुआ या बाद में। अत: उनमें से कुछ इस मत की ओर गए हैं कि उनका रफ़ा मौत से पहले हुआ और कुछ का यह मत है कि वह 3 घंटे या 7 घंटे तक मृत रहे और मौतज़िला और जहमिय्या में से एक पक्ष इस मत की ओर गया है कि आप का रफ़ा पार्थिव शरीर के साथ नहीं हुआ बल्कि वह मृत्यु को प्राप्त हो गए और उनका रफ़ा, रूहानी रफ़ा हुआ (अर्थात् उनको आध्यात्मिक रूप से उठाया गया न कि शरीर सहित) और उनका नुज़ूल (अर्थात आना) भी आध्यात्मिक होगा जैसा कि उनका आध्यात्मिक रफ़ा हुआ था। और (इमाम) बुख़ारी ने उनकी मृत्यु को अपनी 'सहीह (बुख़ारी)' में अल्लाह की किताब तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों और कुछ सहाबियों के कथन से सिद्ध किया है। (फिर बताओ कि) उनके जीवित उठाए जाने और उनके न मरने पर सर्वसम्मति कहां सिद्ध हुई और इसी प्रकार मुसलमान उनको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र में दफन किए जाने पर भी सहमत नहीं। और 'ऐनी' ने बुख़ारी की व्याख्या में कहा है कि- कहा गया है कि वह अरज़े मुक़द्दस: (पवित्र भूमि) में दफन होंगे और उसी प्रकार उनके नुज़ूल (उतरने) के स्थान के बारे में भी मतभेद है। और इब्ने अब्बास की हदीस में है वह कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल को फ़रमाते हुए सुना कि मेरा भाई ईसा इब्ने मरियम इमाम, मार्गदर्शक, निर्णायक और न्यायकर्ता होने की अवस्था में अफीक नामक पहाड़ पर उतरेगा। उसके हाथ में दज्जाल को क़त्ल करने के लिए एक भाला होगा और युद्ध स्थगित हो जाएगा। नईम बिन हमाद ने **जुबेर बिन नफीर** और शुरेह और उमर बिन अस्वद और कसीर बिन मुर्रह के तरीके पर रिवायत की है कि लोग कहते हैं कि दज्जाल ही शैतान है, उसके अतिरिक्त और कोई नहीं अर्थात वह दज्जाल अंतिम युग में निकलेगा और लोगों के दिलों में भ्रम पैदा

करेगा और मसीह उसे आसमानी हथियार अर्थात नूर के द्वारा क़त्ल करेगा और सहाबा रिज़वानुल्ला अलैहिम में से जो उनके नुज़ूल पर ईमान लाए थे वह केवल लाक्षणिक तौर पर ईमान लाए थे। और जिन्होंने इस विषय में सहाबा के बाद अधिक विस्तारपूर्वक बात की है तो उन्होंने ठोकर खाई है और हम पर अनिवार्य नहीं कि हम उनके मतों का अनुसरण करें। वे भी मर्द थे और हम भी मर्द हैं और अल्लाह ने हम पर उपकार किया है और अपने इल्हामों के द्वारा हमें वह कुछ समझा दिया है जो उन्हें नहीं समझाया गया और यह अल्लाह की कृपा है और वह अपने मोमिन बंदों में से जिसे चाहता है प्रदान करता है।

और अल्लाह तआला ने क़ुरआन में संकेत किया है कि तौरात इमाम है। अर्थात उसमें हर उस घटना का उदाहरण मौजूद है जो इस उम्मत के साथ घटित होगी और यही कारण है कि उस ने फ़रमाया है-

فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (अंबिया- 21/8)

(अनुवाद- अत: वर्णन करने वालों से पूछ लो यदि तुम नहीं जानते।) परन्तु हम तौरात में शारीरिक नुज़ूल का उदाहरण नहीं पाते बल्कि उसमें हम रूहानी नुज़ूल का उदाहरण पाते हैं। जैसा कि हमने एलिया नबी के नुज़ूल का किस्सा वर्णन किया है। अत: तू सच्चे ईमानदार दिल के साथ विचार कर। फिर इसके साथ यह भी सिद्ध हो गया कि भविष्य की घटनाएं जिन की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या दूसरे नबियों ने दी है वे सब की सब बिल्कुल उस ज़ाहिरी रूप में घटित नहीं हुईं जैसा कि उम्मीद की जाती थी। बल्कि उनमें से कुछ ज़ाहिरी रूप में और कुछ रूपक के तौर पर घटित हुए। अत: जब अल्लाह की सुन्नत भविष्य की ख़बरों के प्रकटन के बारे में यह है तो फिर इस बात पर कौन सी दलील है कि नुज़ूल-ए-मसीह की ख़बर ज़ाहिरी रूप से घटित होने पर आधारित हो और उसका आंतरिक रूप पर आधारित होना कैसे वैध न हो? बल्कि जब हम सूक्ष्म दृष्टि से देखते हैं तो बुद्धि यही गवाही देती है कि वह ख़बरें जो क़यामत के लिए बड़ी-बड़ी निशानियां हैं उनके लिए आवश्यक है कि वह रूपकों के पैराये में घटित हों। क़यामत तो अचानक ही आएगी और

सन्देह करने वालों का सन्देह कभी दूर न होगा यहां तक कि वह उनके पास आ जाए जैसा कि क़ुरआनी प्रमाणों से सिद्ध है। और यदि हम बड़ी-बड़ी निशानियों के प्रकटन को उनके ज़ाहिरी रूप में उचित क़रार दें तो इन्कार करने वालों की दृष्टि में क़यामत अनुमानित नहीं रहेगी। अत: अनिवार्य है कि हम यह आस्था रखें कि बड़ी-बड़ी निशानियां अपनी ज़ाहिरी सूरत में घटित नहीं होंगी और इसी प्रकार मसीह का नुज़ूल भी रूहानी नुज़ूल है जो एक ऐसे व्यक्ति के माध्यम से होगा जो मसीह की विशेषताओं से समानता रखता हो जैसा कि एलिया नबी के नुज़ूल के भावार्थ की व्याख्या नबियों की पुस्तकों में पहले की गई है।

और रहा उनका यह कथन कि हदीसें गवाही देती हैं कि ईसा दज्जाल का अपने हथियार से वध करेगा परन्तु हम स्वीकार नहीं करते कि हदीसें इस पर सर्वसम्मति से दलालत करती हैं बल्कि वह हदीस जो बुख़ारी में ईसा के बारे में वर्णन हुई है अर्थात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह कथन कि वह लड़ाई को स्थगित करेगा, स्पष्ट रूप से दलालत करती है कि ईसा दज्जाल का जंगी हथियारों में से किसी हथियार से वध नहीं करेगा और वह अपने हाथ में अपना हथियार कैसे पकड़ सकता है जबकि अल्लाह के रसूल ने उसके बारे में यह फ़रमाया है कि वह लड़ाई को स्थगित कर देगा। अत: इसमें कोई सन्देह नहीं कि दज्जाल का वध करने का हथियार आसमान से उतारा जाने वाला आध्यात्मिक हथियार होगा जैसा कि इब्न अब्बास से मरवी हदीस इस पर अदालत करती है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरा भाई ईसा इब्न मरियम अफीक नामक पहाड़ पर बतौरे महदी, पथप्रदर्शक और बतौर निर्णायक अवतरित होगा। उसके हाथ में एक हथियार होगा जिससे वह दज्जाल का वध करेगा। इससे यह स्पष्ट हुआ कि यह हथियार आसमानी है न पार्थिव। तो वध भी अध्यात्मिक विषय है न कि शारीरिक। फिर जब दज्जाल अंतिम युग का शैतान है जो अपने द्योतकों पर गुमराही का साया फैलाएगा तो शारीरिक वध के क्या अर्थ? और उन्होंने वर्णन नहीं किया कि दज्जाल को उसके वध के बाद दफन किया जाएगा या जला दिया जाएगा या समुद्र में डाल दिया

जाएगा या धरती पर फेंक दिया जाएगा ताकि पक्षी उसे खा जाएं। अत: यह समस्त अकाट्य तर्क हैं कि दज्जाल का वध एक अध्यात्मिक विषय है। और जान ले कि ईसा का वह हथियार जो उसके साथ आसमान से उतरेगा वह उसके सांस (अर्थात वाक् शक्ति) का हथियार है जिससे हर काफ़िर नष्ट हो जाएगा। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम बुद्धिमानों के समान विचार नहीं करते और तुम जान चुके हो कि दज्जाल शैतान है जैसा कि कुछ हदीसों में आया है। अत: इब्लीस के वध का हथियार सिवाए आध्यात्मिक हथियार के और कुछ नहीं। अत: जंग के स्थगन की हदीस सही है जो बुख़ारी में पाई जाती है और हर वह हदीस जो बुख़ारी की विरोधी है या तो उसमें किसी रावी ने मिलावट की है या वह भावार्थ करने योग्य है। और जो इस बारे में बहस करता है वह इस हदीस को भूल गया है जो इस किताब में पाई जाती है जो ख़ुदा की किताब के बाद सबसे सही किताब है। और यही सच्चाई है और उसका इन्कार कोई मूर्ख लापरवाह व्यक्ति ही कर सकता है। अत: सोच विचार कर और जल्दबाज़ों में से न हो।

और जहां तक महदी के आगमन से जुड़ी हदीसों का संबंध है तो तू जानता है कि वह सब की सब कमज़ोर, मजरूह हैं और एक दूसरे की विरोधी हैं यहां तक कि इब्ने माजा और उसके अतिरिक्त दूसरी पुस्तकों में एक हदीस आई है कि لا مهدی الا عیسی ابن مریم अर्थात ईसा बिन मरियम ही महदी होगा। तो किस प्रकार इन जैसी हदीसों पर भरोसा किया जा सकता है जिनमें अधिकता से परस्पर मतभेद, विरोधाभास और कमज़ोरी पाई जाती है और उनके रावियों में बहुत जिरह हुई है जैसा कि मुहद्दसीन को ज्ञात है।

सारांश यह कि यह समस्त हदीसें मतभेद और विरोधाभास से खाली नहीं तू इन सब से अलग रह और हदीसों के झगड़ों को क़ुरआन की ओर लौटा और क़ुरआन को उन पर निर्णायक बना ताकि तुझ पर हिदायत प्रकट हो और तू उन लोगों में से हो जाए जो सन्मार्ग प्राप्त हैं परन्तु यदि तू हदीसों को उनके विरोधाभास, अत्यधिक मतभेद और उनके विश्वास के स्तर से गिरे हुए होने के बावजूद स्वीकार करता है तो तेरे लिए यह कहीं अधिक उचित होगा कि तू

क़ुरआन को स्वीकार करें जो ऐसा अकाट्य और विश्वसनीय है कि झूठ न तो उसके सामने से आ सकता है और ना उसके पीछे से, अगर तू विश्वास के मार्ग का अनुसरण करना चाहता है।

और उनके आरोपों में से एक यह है कि वे कहते हैं कि यह व्यक्ति ईमान नहीं रखता कि (ईसा) मसीह परिंदों का पैदा करने वाला और मुर्दों को जीवित करने वाला और सम्मान में विशिष्ट तथा अद्वितीय और शैतान के स्पर्श से सुरक्षित था और उस विशेषता में नबियों में से कोई उसके समान नहीं है।

इस आरोप का उत्तर यह है कि तू जान ले कि हम (ईसा अलैहिस्सलाम के) मुर्दों के जीवित करने के चमत्कार तथा चमत्कार पूर्वक पैदा करने पर ईमान लाते हैं परन्तु हम उसे वास्तविक तौर से जीवित करने तथा वास्तविक तौर पर पैदा करना नहीं मानते जो अल्लाह के जीवित करने और अल्लाह के पैदा करने के समान हो। और यदि ऐसा होता तो पैदा करने और जीवित करने में समानता हो जाती हालांकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि-

فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ (आले इमरान-3/50)

(अर्थात वह अल्लाह के आदेश से परिंदा (अर्थात रूहानी परिंदा) बन जाएगा) और यह नहीं फ़रमाया कि- فَيَكُوْنُ حَيًّا بِاِذْنِ اللّٰهِ कि वह अल्लाह के आदेश से जीवित हो जाता था। और न ही यह कहा है कि- فَيَصِيْرُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ अर्थात वह अल्लाह के आदेश से पक्षी हो जाता है। निस्सन्देह ईसा के परिंदे का उदाहरण मूसा अलैहिस्सलाम के डंडे के समान है जो एक दौड़ने वाले सांप के समान प्रकट हुआ था परन्तु उसने हमेशा के लिए अपनी पहली अवस्था को नहीं छोड़ा था और इसी प्रकार तहक़ीक़ करने वालों ने कहा है कि ईसा का पक्षी लोगों की आंखों के सामने उड़ता था और जब वह आंखों से ओझल हो जाता तो गिर पड़ता और फिर अपनी प्रथम अवस्था में लौट आता था। तो उसे वास्तविक जीवन कहां प्राप्त हुआ? और मुर्दे जीवित करने की वास्तविकता भी कुछ ऐसी ही थी अर्थात् उसने मुर्दे को पूर्णत: जीवित नहीं किया बल्कि मुर्दे के जीवन का जलवा आपकी पवित्र रूह के प्रभाव के कारण दिखाई देता था और मुर्दा उस

समय तक जीवित रहता था जब तक ईसा उसके पास खड़े या बैठे रहते परन्तु जब वह चले जाते तो मुर्दा अपनी प्रथम अवस्था में लौट आता और मर जाता। अत: यह जीवित करना चमत्कारिक था न कि वास्तविक और अल्लाह जानता है कि यही वास्तविक सच्चाई है इसमें लोगों के गलत बयानों की मिलावट हुई है और उन्होंने जो चाहा उस में बढ़ोतरी कर दी। जैसा कि हर ऐसे व्यक्ति पर यह बात छुपी नहीं जिसे तनिक भर भी ज्ञान और विवेक प्राप्त है। अत: आयतों के भाव और उनके अर्थ ज्ञात करने में गंभीर चिंतन कर ताकि तुझसे गुमराही और अंधकार दूर हो जाएं और तू विवेकवान लोगों में से हो जाए।

और उनका एक ऐतराज़ एक यह भी है कि वे कहते हैं कि अल्लाह ने क़यामत के निकट मसीह के अवतरण की सूचना दी है जैसा कि उसने फ़रमाया -

وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ (ज़ुखरुफ - 43/62)

(अर्थात- और वह अन्तिम घड़ी का ज्ञान प्रदान करता है)

इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि अल्लाह ने وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ फ़रमाया है وَ اِنَّهٗ سَيَكُوْنُ عِلْمًا لِّلسَّاعَةِ नहीं फ़रमाया। अत: यह आयत ददालत करती है कि वह एक दृष्टिकोण से क़यामत का निशान थे जो उन्हें व्यवहारिक रूप से प्राप्त था न कि उन्हें बाद के किसी समय में प्राप्त होना था। और वह प्राप्त पहलू उनका बिना बाप के जन्म था। और इसका विवरण यह है कि यहूदियों का एक संप्रदाय अर्थात सदूकी क़यामत के अस्तित्व के इन्कारी थे। तो अल्लाह ने उन्हें कुछ नबियों के द्वारा ख़बर दी कि उनकी क़ौम से एक लड़का बिना बाप के पैदा होगा। और वह उनके लिए क़यामत के अस्तित्व पर एक निशान होगा। अत: उसने आयत وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ में इसी की ओर संकेत किया है और इसी प्रकार इस आयत وَ لِنَجْعَلَهٗۤ اٰيَةً لِّلنَّاسِ (अनुवाद- ताकि हम उसे लोगों के लिए निशान बनाएं। मरियम-19/22) में भी संकेत है अर्थात हम उसे लोगों (अर्थात सदूकियों) के लिए निशान बनाएंगे।

और कुछ व्याख्याकारों ने कहा है कि وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ का सर्वनाम क़ुरआन की ओर लौटता है। अत: क़ुरआन ने बहुत सी सृष्टि को

जीवित किया और उन्हें क़ब्रों से उठाया है। अत: यह रूहानी तौर पर उठाया जाना दलील है शारीरिक रूप से उठाए जाने पर अर्थात क़यामत पर जैसा कि "मआलिमुत्तन्ज़ील" आदि में है। तो सारांश यह है कि आयत وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ मसीह के अवतरण पर बिल्कुल दलालत नहीं करती बल्कि वह इन्कार करने वालों का मुंह एक मौजूद प्रमाणित दलील से बंद करती है। इसीलिए अल्लाह ने "फला तमतरुन्ना बिहा" फरमाया है। और किसी ऐसे कथन को निशान नहीं कहा जा सकता जिसका बाद में अस्तित्व ही सिद्ध न हो और जिसे विरोधियों में से किसी ने भी न देखा हो।

और उनका एक ऐतराज़ यह है कि वे कहते हैं कि अगर यह वही मसीह है जो सलीब तोड़ने तथा सूअरों का वध करने के लिए भेजा गया है तो उस पर शताब्दी के आरंभ से 11 वर्ष बीत चुके हैं तो कौन सी सलीब तोड़ी गई और कौन से सूअर का वध किया गया? और कौन सा टैक्स हटाया गया और कौन है जिसने काफ़िरों के मार्गों को छोड़ा और इस्लाम में प्रवेश किया?

इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि सच्चाई (का प्रभुत्व) यकायक नहीं आया करता बल्कि धीरे-धीरे आता है और ऐनी (उमदतुलक़ारी फी शरहिल बुख़ारी) में इब्ने अब्बास से रिवायत है कि ईसा अलैहिस्सलाम 19 साल रहेंगे। और वह न तो अमीर होंगे, न निर्णायक और न ही राजा। और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मक्का में 13 साल का समय बीता और इस अवधि में आपके साथ कमज़ोरों का केवल एक छोटा सा समूह सम्मिलित हुआ था। और तौरात में लिखी हुई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कुछ निशानियों में से रोम, सीरिया और फारस के इलाकों का विजय होना था, परन्तु यह (विजय) लोगों ने आपके जीवनकाल में नहीं देखी और न ही क़ौमों तथा देशों के बड़े-बड़े समूहों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्वर्गवास के बाद आपका अनुसरण किया। बल्कि आप ने अपने प्रारंभिक समय में मुसीबतों पर मुसीबतों के सिवा कुछ नहीं देखा और जो लोग आप पर ईमान लाते थे उन्हें भी क़ौम ने बहुत कष्ट दिए। उन पर आरोप लगाए, उन्हें धुत्कारा और

उनके विरुद्ध झूठ बोलते हुए हर प्रकार की उपद्रवपूर्ण बातें की और इसी प्रकार समस्त नबी धुत्कारे गए और उनको उनके जीवनकाल के प्रारंभ में दुख और कष्ट पहुंचे और इस कठिनाई पर एक लंबा समय बीत गया यहां तक कि वे "मता नसरुल्लाह" (अर्थात अल्लाह की सहायता हमारे पास कब आएगी) पुकार उठे। फिर (ऐसा हुआ कि) जो नष्ट होने वालों में से थे वे नष्ट हो गए जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया -

اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تَدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ وَ لَمَّا يَاۡتِكُمۡ مَّثَلُ الَّذِيۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلِكُمۡ ؕ مَسَّتۡهُمُ الۡبَاۡسَآءُ وَ الضَّرَّآءُ وَ زُلۡزِلُوۡا حَتّٰى يَقُوۡلَ الرَّسُوۡلُ وَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ مَتٰى نَصۡرُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ نَصۡرَ اللّٰهِ قَرِيۡبٌ ۔

(अल बक़र: - 2/215)

(अनुवाद- क्या तुम यह समझते हो कि तुम जन्नत में प्रवेश कर जाओगे जबकि अभी तक तुम पर उन लोगों जैसे हालात नहीं आए जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं। उन्हें कठिनाइयां और कष्ट पहुंचे और वह हिला कर रख दिए गए यहां तक कि रसूल और वे जो उसके साथ ईमान लाए थे, पुकार उठे कि अल्लाह की सहायता कब आएगी। अल बक़र: - 2/215) इसी प्रकार इस समय के लोग चाहते हैं कि मेरा वध करें या मुझे सूली पर लटका दें या मुझे किसी अंधे कुएं में डाल दें और सच्चाई को अपने पैरों तले रौंद डालें। और हरे-भरे वृक्षों को उसी प्रकार जला दें जैसे सूखी घास को जला दिया जाता है। तो अल्लाह ही है जिससे उनके षड्यंत्रों के विरुद्ध सहायता मांगी जा सकती है और वही सबसे श्रेष्ठ सहायता करने वाला है। और उसकी वह सहायता जिसका वे इन्कार करते हैं, वह एक ऐसी चीज़ है कि शीघ्र ही तू वह कुछ देखेगा जिसे तू सुनता नहीं, बल्कि उसकी निशानियां देखने वालों की निगाहों में प्रकट हो गई हैं।

क्या तू नहीं देखता कि ज़माना कैसे एकेश्वरवाद की ओर पलट गया है और किस तरह इस्लाम की हवाएं मुश्रिकों के देशों में चल पड़ी हैं और किस प्रकार लोग अल्लाह के धर्म में हर देश से फौज की फौज प्रवेश कर रहे हैं।

अत: यह वही नूर है जो आसमान से उस व्यक्ति के साथ उतरा जो लोगों के सुधार के लिए अवतरित किया गया। यदि तू इंसाफ करने वालों में से है तो बता कि इससे अधिक स्पष्ट दलील और कौन सी हो सकती है? हे नादान! उठ और आंख खोल ताकि तू देखे कि आसमानी हथियार से किस प्रकार सलीब तोड़ी जा रही है और सूअरों का वध किया जा रहा है। जहां तक लोगों को इस संसार के हथियारों से मारने का संबंध है तो यह कोई विचित्र बात नहीं। क्या राजा ऐसा नहीं किया करते? अत: तू अल्लाह के हथियार को तलाश कर और इन्कार करने वालों में से न बन।

और मैंने अभी वर्णन किया है कि दज्जाल ही शैतान होगा जो उन लोगों के दिलों में भ्रम उत्पन्न करेगा जो उसका अनुसरण करेंगे। अत: इस प्रकार वह उसके लिए उसके सहायक बन जाएंगे और उनका कर्म उस शैतान का कर्म हो जाएगा। तब उस ज़माने में मसीह मौऊद आकाशीय हथियार के साथ अवतरित होगा। फिर वह शैतान का वध करेगा और उसके सूअरों का भी वध करेगा और क़ुरआन ने विभिन्न स्थानों पर इस की ओर संकेत किया है और यह भी संकेत किया है कि वह अंतिम युग में विजय प्राप्त करेगा। तो जिन लोगों पर शैतान अवतरित होगा वह धरती में उपद्रवी बनकर उपद्रव करेंगे और हर ऊंचाई को फलांगेंगे। फिर अल्लाह अपने बन्दों को आकाशीय बिगुल फूंक कर सच्ची बात पर इकट्ठा करेगा और यह रब्बुल आलमीन की ओर से निर्धारित नियति है।

यह अल्लाह तआला के भेदों में से एक भेद और उसकी सुन्नतों में से एक सुन्नत है कि जब वह लोगों के दिलों पर शैतानी प्रभुत्व के समय उनके सुधार का इरादा करता है तो वह रुहुल क़ुदुस (जिब्राईल) को अपने बंदों में से एक बंदे के दिल पर उतारता है और उसके साथ फ़रिश्ते होते हैं। अत: फ़रिश्ते हर ओर से उतरते हैं और उसके बन्दों को यह वह्यी करते हैं कि उठो और सच्चाई को स्वीकार करो। फिर वह उनके पास आते हैं और उन्हें सच्चाई को स्वीकार करने तथा कठिनाइयों को बर्दाश्त करने का सामर्थ्य देते हैं। और यह तहरीकें केवल किसी रसूल, नबी या मुहद्दस के प्रादुर्भाव के समय ही प्रकट होती हैं।

परन्तु मूर्ख लोग इस भेद को नहीं पहचानते जिससे हिदायत की हवाएं चलती हैं और उसके बारे में ठोकर खाते हैं और उन्हें संयोग समझते हैं और इस बात पर विचार-विमर्श नहीं करते कि अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक कारण बनाया है और इस संसार मैं प्रत्येक सक्रिय चीज़ के लिए कोई प्रेरक है। ये वही लोग हैं जिनके प्रयत्न इस सांसारिक जीवन में व्यर्थ गए और वे सतही विचारों पर प्रसन्न हुए और विचार-विमर्श करने वालों में से न हुए।

और वास्तविकता यह है कि फ़रिश्ते का मनुष्य के दिल के साथ एक गहरा संबंध होता है और शैतानों का भी संबंध होता है। अत: जब अल्लाह किसी नबी या रसूल या मुहद्दस को सुधारक बनाकर अवतरित करने का इरादा करता है तो वह फ़रिश्ते के संबंध को मज़बूती देता है और लोगों की योग्यताओं को सत्य के स्वीकार करने के निकट कर देता है और उनको बुद्धि, विवेक, साहस और कठिनाइयां सहन करने की शक्ति और क़ुरआन की समझ का नूर प्रदान करता है जो उस सुधारक के प्रादुर्भाव से पूर्व उन्हें उपलब्ध नहीं होता। अत: दिमाग साफ हो जाते हैं और बुद्धि मज़बूत हो जाती हैं और साहस बुलंद हो जाते हैं और हर एक ऐसा आभास करता है कि मानो उसे उसकी नींद से जगा दिया गया है। और उसके दिल पर परोक्ष से नूर उतर रहा है और एक उपदेशक उसके अंतर्मन में खड़ा हो गया है। और लोग ऐसे हो जाते हैं कि मानो अल्लाह ने उनके स्वभाव और मिजाज़ को बदल डाला है और उनके दिमाग़ तथा विचारों को तेज़ कर दिया है। अत: जब यह सब लक्षण प्रकट और इकट्ठे हो जाएं तो वह इस बात की अकाट्य दलील होती है कि मुजद्दिद-ए-आज़म प्रकट हो गया है और अवतरित होने वाला नूर उतर चुका है। और इसी की ओर अल्लाह तआला ने सूर: क़द्र में संकेत फ़रमाया है -

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۔ وَ مَآ اَدْرٰكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۔ لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ
خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ؕ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ الرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ
اَمْرٍ ۔ سَلٰمٌ ۛؕ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۔ (अल क़दर - 97/2-6)

(अनुवाद- निश्चय ही हमने उसे क़द्र (नियति) की रात में उतारा है और तुम्हें क्या समझाएं कि क़द्र (नियति) की रात क्या है? क़द्र (नियति) की रात हज़ार महीनों से बेहतर है। बहुत से फ़रिश्ते और पवित्र आत्मा अपने रब की आज्ञा से उसमें उतरते हैं। हर मामले में, शांति है। यह (श्रृंखला) भोर तक जारी रहती है।)

और तू जानता है कि फ़रिश्ते और जिब्राईल केवल सच्चाई के साथ ही उतरते हैं और अल्लाह की शान इससे बुलंद है कि वह उन्हें निरर्थक और बेफायदा भेजे। अत: जिब्राईल के भेजने से यहां किसी नबी या रसूल या मुहद्दस के अवतरण की ओर संकेत है कि यह रूह उस पर डाली जाती है और फ़रिश्तों के भेजने से ऐसे फ़रिश्तों के उतरने की ओर संकेत है जो लोगों को सच्चाई, हिदायत, दृढ़ता और डटे रहने की ओर प्रेरित करते हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया है-

اِذۡ يُوۡحِىۡ رَبُّكَ اِلَى الۡمَلٰٓئِكَةِ اَنِّىۡ مَعَكُمۡ فَثَبِّتُوا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا

(अनुवाद- (याद कर) जब तेरा रब फ़रिश्तों की ओर वह्यी कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूं। अत: तुम उन लोगों को जो ईमान लाए हैं, दृढ़ता प्रदान करो। (अंफाल- 8/13) अर्थात तुम उनके दिलों में उतरो और उनके लिए ईमान, दृढ़ता और डटे रहने को प्रिय बना दो। और जब फ़रिश्ते उतरते हैं तो उनका यही कर्म होता है। अत: सूरत क़द्र में इस ओर संकेत है कि अल्लाह ने इस उम्मत से वादा किया है कि वह उन्हें व्यर्थ नहीं जाने देगा बल्कि जब भी वह गुमराह हो जाएंगे और अंधेरों में गिर जाएंगे तो लैलतुल क़द्र उन पर आएगी और रूहुल कुदुस (जिब्राईल) धरती पर उतरेगा अर्थात अल्लाह उसे अपने बंदों में से जिस पर चाहेगा उतारेगा और उस बंदे को मुजद्दिद बनाकर अवतरित करेगा और जिब्राईल के साथ अन्य फ़रिश्तों को भी उतारेगा जो लोगों के दिलों को सच्चाई और हिदायत की ओर प्रेरित करेंगे। फिर यह सिलसिला क़यामत तक निरंतर चलता रहेगा। अत: तलाश करो तो पा लोगे और खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। और यह ज़माना वह है कि जिस में शारीरिक नेमतों और नई उन्नतियों के द्वार खुल गए हैं। और तुम अपनी सवारियों, अपने वस्त्रों

में और अपनी सभ्यता के विभिन्न प्रकारों में नई-नई नेमतें देख रहे हो और भौतिक विज्ञान, गणित और मनोविज्ञान के बहुत से सूक्ष्म ज्ञान प्रकट हो चुके हैं और हम दुनिया वालों को आधुनिक विज्ञान में इसी प्रकार उन्नति करते पाते हैं कि मानो वे आसमान की तरफ बुलंद हो रहे हैं और ऐसी चीज़ें देख रहे हैं कि जिन से बुद्धि चकित रह जाती हैं। और उल्लेख (उद्धरण) उससे पीछे रह जाते हैं। और हम हर ओर नए आविष्कार और नई कलाएं और अजीब और जटिल कार्य खुले-खुले जादू के समान देखते हैं। और हम इन आविष्कारों का कोई निशान पहले लोगों में नहीं पाते, मानो धरती किसी और धरती से बदल गई है। और जब यह सिद्ध हो गया कि धरती में आधुनिक विज्ञान और नए-नए अध्यात्मज्ञान छुपे हुए हैं और अल्लाह ने सांसारिक ज्ञान के पर्दों को अपनी क़ुदरत से फाड़ दिया है तो फिर तू आसमान के फट जाने पर क्यों आश्चर्य करता है। और मेरे रब ने मुझे इल्हाम किया है और फ़रमाया है कि - اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا अर्थात आसमान और धरती दोनों बंद थे, तो हमने इन दोनों को खोल दिया फिर तू इस भेद को समझ और रब्बुल आलमीन (समस्त ब्रह्मांड के रब) की रहमत से निराश न हो।

और तू देख रहा है कि इस ज़माने के निम्न से निम्न असहाय व्यक्ति को भी वह नेमतें उपलब्ध हैं जो उसके बाप-दादों में से किसी ने बल्कि पहले राजाओं और (हज़रत) सुलेमान ने भी समस्त शानो शोकत के बावजूद नहीं देखी थीं। अत: जब अल्लाह ने अपनी भौतिक नेमतों के साथ अपने बंदों पर उपकार किया है तो तुम कैसे समझते हो कि उसने उन्हें अपनी आध्यात्मिक नेमतों से वंचित रखा होगा। अत: तू इस पर खूब विचार कर जो हमने तुझे विस्तार पूर्वक बताया है और अल्लाह तथा अल्लाह वालों से क्षमा याचना कर यदि तू परहेज़गारों में से है। अत: हे जल्दबाज़ो! सब्र करो यहां तक कि अल्लाह अपना निर्णय कर दे। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम उन उपद्रवों की ओर नहीं देखते जो तुम्हारे बीच बहुत बढ़ गए हैं और अल्लाह मोमिनों को उनके इस हाल पर जिस हाल पर वे अब हैं, छोड़ने वाला नहीं है यहां तक कि वह अपवित्र को पवित्र से अलग कर

दे। अतः तुम ख़ुदा के दिनों के आने से निराश न हो क्योंकि वह सबसे बढ़कर रहम करने वाला है।

और उनका एक ऐतराज़ यह है कि वे कहते हैं कि औलिया दावा नहीं किया करते और न यह कहते हैं कि हम यह हैं और वह हैं बल्कि उनके हालात और उनकी चाल-ढाल स्वयं उनके औलिया होने पर दलालत करती है। इसलिए ऐसा व्यक्ति जो दावा करे वह वलीउल्लाह नहीं होता बल्कि निस्सन्देह झूठों में से होता है।

इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि पहले और बाद में आने वाले इमामों ने विलायत के इज़हार को **तह्दीस-ए-नेमत** (अल्लाह के उपकार की चर्चा करने) के तौर पर जाइज़ क़रार दिया है। और शैख़ (अब्दुल क़ादिर) जीलानी और मुजद्दिद (अहमद) सरहिन्दी की पुस्तकें इससे भरी पड़ी हैं। और अल्लाह तआला ने وَ اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ फ़रमाया है (अर्थात- हर एक नेमत जो ख़ुदा से तुझे मिले उसको लोगों के समक्ष वर्णन कर। (ज़ुहा- 93/12) और इब्ने जरीर ने अपनी व्याख्या में अबू युसरा गाफ़ारी से रिवायत की है कि सहाबा किराम धन्यवाद करने को केवल धन्यवाद के इज़हार की शर्त के साथ ही धन्यवाद करना मानते थे क्योंकि ख़ुदा का आदेश है-

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَ لَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ

(इब्राहीम- 14/8)

(अनुवाद- अगर तुम मेरा धन्यवाद करोगे तो मैं अपनी दी हुई नेमत को और बढ़ाऊंगा और यदि अहसान फ़रामोशी करोगे तो मेरा अज़ाब बहुत कठोर है। और देलमी ने (अपनी किताब) 'फिरदोस' में और अबू नईम ने अपनी किताब 'हिल्यतुल ओलिया' में रिवायत की है कि हज़रत उमर बिन खत्ताब मिंबर पर चढ़े और फ़रमाया कि समस्त प्रशंसाएं अल्लाह को शोभानीय हैं जिसने मुझे ऐसा बनाया कि मुझसे बढ़कर इस समय कोई दूसरा नहीं। इस पर लोगों ने आपसे इस कथन के बारे में पूछा। तो आपने फ़रमाया कि मैंने यह केवल अल्लाह तआला की नेमत के धन्यवाद के तौर पर कहा है और यह जो अल्लाह तआला

ने फ़रमाया है فَلَا تُزَكُّوٓا۟ اَنفُسَكُمْ (अनुवाद- तुम अपने आप को पवित्र मत कहो। (अन्नजम- 53/33) तो स्वयं को पवित्र ठहराने और नेमत का इज़हार के बीच अंतर है, यद्यपि यह दोनों बाहरी रूप से देखने में सामान लगते हैं। तो जब तू किसी विशेषता को अपनी ओर मंसूब करे और स्वयं को कुछ समझने लगे और तू उस स्रष्टा को भूल जाए जिसने तुझ पर उपकार किया तो यह स्वयं को पवित्र ठहराना है। परन्तु जब तू अपने गुणों को अपने रब की ओर मंसूब करे और हर नेमत को उसकी ओर से समझे और गुण को देखते समय स्वयं को न देखे बल्कि हर तरफ अल्लाह की ताकत और शक्ति और उसके उपकार और कृपा देखे और अपने आपको एक ऐसे मुर्दे के समान समझे जो मृतस्नापक (नहलाने वाले) के हाथ में हो (जिसका स्वयं पर कोई वश नहीं चलता) और तू स्वयं की ओर कोई विशेषता मंसूब न करे, तो यह नेमत का इज़हार है। अत: जिन लोगों के दिलों में बीमारी है वह जल्दी से ऐतराज़ करने की ओर भागते हैं और वह शुक्रगुज़ार अवतारों तथा झूठे दिखावा करने वालों के बीच अंतर नहीं करते और इस प्रकार उन दोनों (अर्थात स्वयं को पवित्र ठहराने और नेमत के इज़हार) के एक जैसे होने की वजह से मामला उन पर संदिग्ध हो जाता है। उनके ऐतराज़ों के उत्तर में यह हमारा अंतिम कथन है और अल्लाह हमारे तथा उनके बीच निर्णय करेगा और वह बेहतर निर्णय करने वाला है।

और जान ले कि इसके अतिरिक्त उनके कुछ और सूक्ष्म ऐतराज़ भी हैं बल्कि मारिफ़त का हर बिंदु उनकी नज़र में ऐतराज़ के योग्य है।

अब हम उनके बड़े-बड़े आरोपों के उत्तर से फारिग हो गए हैं। रहे वे छोटे-छोटे और बोदे ऐतराज़ तो यह पुस्तक उनसे पवित्र है और यह पुस्तक अल्लाह की कृपा से, जैसा कि तू उसे गंभीर दृष्टि से पढ़ने के बाद पाएगा, एक पूर्ण तथा संतोषजनक पुस्तक है और हमने इस पुस्तक में अकाट्य, विश्वसनीय और सही-सही दलीलें अल्लाह की किताब (क़ुरआन) तथा उसके रसूल की सुन्नत से सविस्तार वर्णन कर दी हैं और हमने विरोधियों पर हुज्जत पूरी कर दी है। और अल्लाह जानता है कि मैंने उनके ऐतराज़ों के खंडन में अपना प्रतिशोध नहीं

लिया और मैं ऐसा व्यक्ति नहीं कि किसी से इस कारण शत्रुता रखूं कि उसने मेरे साथ शत्रुता की है। और समस्त धरती पर मेरा शत्रु केवल वह है जो अल्लाह और उसके रसूल का शत्रु है और मेरा प्रतिशोध उन्हीं दोनों के लिए है। इसलिए मैं गाली देने वालों को गाली नहीं देता और न ही लानत करने वालों पर लानत भेजता हूं और न ही मैं अपना पवित्र कीमती समय ऐसी व्यर्थ बातों में नष्ट करता हूं और मैं अपना मामला अल्लाह रब्बुल आलमीन के सुपुर्द करता हूं। अत: यदि मेरा रब मुझे असहाय छोड़ दे तो फिर कौन है जो मुझे सम्मान दे सकता है? और अगर वह मुझे सम्मान प्रदान करे तो कौन है जो मुझे सहायता से वंचित कर सकता है? अत: मेरा हर मामला मेरे रब के हाथ में है। यदि उस के दरबार में मेरी कोई हैसियत है तो वह स्वयं मुझे ऐसी ढाल प्रदान करेगा जो बढ़ती जाएगी, अन्यथा वह मेरा मुंह काला करके छोड़ेगा। अत: मैं उसके अतिरिक्त और किसी को नहीं जानता जो मुझे नष्ट करे या मेरा मुक्तिदाता बने और मैं उसकी कृपा का उम्मीदवार हूं और उसकी सहायता का प्रतीक्षक। वह मेरा रब है उसने मुझ पर उपकार किया और मुझ पर अपनी नेमत को पूर्ण किया। वह मेरे दिल के आंतरिक विचारों को खूब जानता है और सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाला है। और मैंने अपने दिल में संकल्प कर रखा है कि मैं उसके द्वार पर ही मरूंगा, विजय हो या पराजय किसी भी अवस्था में उसको नहीं छोडूंगा, यहां तक कि उसकी सहायता मेरे पास आ जाए। अल्लाह के अतिरिक्त और कौन है जो सहायता कर सकता है? और वह सर्वश्रेष्ठ सहायक और सर्वोत्तम मददगार है। मेरी क़ौम ने मुझे कष्ट दिया मुझ पर लानत की और मुझे काफ़िर क़रार दिया और उन्होंने कहा कि वह काफ़िर दज्जाल है। और जिन नामों को वे अपने लिए नापसंद करते हैं उन्होंने मुझे वह नाम दिए हैं और मुझे वह उपाधियां दी हैं जिन को वे अपने लिए पसंद नहीं करते। उन्होंने मेरे ईमान के बारे में बहुत सी बातें कीं और वे हद से बढ़ने वाले थे। अत: मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूं। जो कुछ मेरे दिल में है और जो उनके दिलों में है अल्लाह उसे जानता है, उससे कोई चीज़ छुपी नहीं। क्या अल्लाह समस्त ब्रह्मांड के दिलों

में जो कुछ है उसको नहीं जानता? हे मेरी क़ौम! मैं तुमको अल्लाह की आयतें याद दिलाता हूं-

اِنۡ جَآءَكُمۡ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوۡۤا اَنۡ تُصِيۡبُوۡا قَوۡمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصۡبِحُوۡا عَلٰى مَا فَعَلۡتُمۡ نٰدِمِيۡنَ (अल हुजुरात- 49/7)

अनुवाद - तुम्हारे पास अगर कोई दुष्चरित्र कोई सूचना लाए तो उसकी छानबीन कर लिया करो। ऐसा न हो कि तुम अज्ञानतावश किसी क़ौम को नुकसान पहुंचा बैठो। फिर तुम्हें अपने किए पर लज्जित होना पड़े।

اِنَّمَا الۡمُؤۡمِنُوۡنَ اِخۡوَةٌ فَاَصۡلِحُوۡا بَيۡنَ اَخَوَيۡكُمۡ

(अल हुजुरात- 49/11)

अनुवाद - मोमिन तो भाई भाई ही होते हैं अत: अपने दो भाइयों के बीच सुलह करवाया करो।

وَ اَقۡسِطُوۡا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الۡمُقۡسِطِيۡنَ (अल हुजुरात - 49/10)

अनुवाद- और न्याय करो निस्सन्देह अल्लाह न्याय करने वालों से मोहब्बत करता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا يَسۡخَرۡ قَوۡمٌ مِّنۡ قَوۡمٍ عَسٰۤى اَنۡ يَّكُوۡنُوۡا خَيۡرًا مِّنۡهُمۡ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنۡ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنۡ يَّكُنَّ خَيۡرًا مِّنۡهُنَّ ۚ وَ لَا تَلۡمِزُوۡۤا اَنۡفُسَكُمۡ وَ لَا تَنَابَزُوۡا بِالۡاَلۡقَابِ ؕ بِئۡسَ الِاسۡمُ الۡفُسُوۡقُ بَعۡدَ الۡاِيۡمَانِ ۚ وَ مَنۡ لَّمۡ يَتُبۡ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ۔ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اجۡتَنِبُوۡا كَثِيۡرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعۡضَ الظَّنِّ اِثۡمٌ وَّ لَا تَجَسَّسُوۡا وَ لَا يَغۡتَبۡ بَّعۡضُكُمۡ بَعۡضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمۡ اَنۡ يَّاۡكُلَ لَحۡمَ اَخِيۡهِ مَيۡتًا فَكَرِهۡتُمُوۡهُ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيۡمٌ۔ (अल हुजुरात- 49/12,13)

अनुवाद- हे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम में से कोई क़ौम किसी क़ौम से हंसी ठठ्ठा न करे, संभव है कि वह उनसे बेहतर हो जाएं। और न औरतें औरतों से हंसी ठट्ठा करें हो सकता है कि वह उनसे बेहतर हो जाएं। और अपने लोगों पर दोष मत लगाया करो और एक दूसरे को नाम बिगाड़ कर न पुकारा करो

कि ईमान के बाद कुफ्र (धर्म विमुखता) का दाग लग जाना बहुत बुरी बात है। और जिसने तोबा न की तो यही वह लोग हैं जो अत्याचारी हैं। हे लोगो ईमान लाए हो! कुधारणा से बहुत बचा करो निस्सन्देह कुछ धारणाएं गुनाह होती हैं और बातों को कुरेदने में न लगे रहा करो। और तुम में से कोई किसी दूसरे की पीठ पीछे बुराई न करे। क्या तुम में से कोई यह पसंद करता है कि अपने मुर्दा भाई का मांस खाए। अत: तुम उससे बहुत नफरत करते हो और अल्लाह का संयम धारण करो। निस्सन्देह अल्लाह बहुत तौबा (पश्चाताप) स्वीकार करने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰۤى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا

अनुवाद - और जो तुम पर सलाम भेजे उससे यह न कहा करो कि तू मोमिन नहीं है। (अन्निसा - 4/95)

وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ۔ (अल बक़रह- 2/195)

अनुवाद - और अल्लाह से डरो और जान लो कि निश्चित रूप से अल्लाह संयमियों के साथ है।

وَ لَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَ ادْعُوْهُ خَوْفًا وَّ طَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ۔ وَ هُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ۔ وَ الْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَ الَّذِيْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا۔ (अल आराफ़- 7/57-59)

अनुवाद - और धरती में उसके सुधार के बाद उपद्रव न फैलाओ। और उसे भय तथा आशा के साथ पुकारते रहो। निस्सन्देह अल्लाह की रहमत उपकार करने वालों के निकट रहती है। और वही है जो अपनी रहमत के आगे-आगे हवाओं को शुभ संदेश देते हुए भेजता है, यहां तक कि जब वह बोझल बादल उठा लेती हैं तो हम उसे एक मुर्दा भूमि की ओर हांक ले जाते हैं। फिर उससे हम पानी

उतारते हैं और उस पानी से हर प्रकार के फल उगाते हैं। इसी प्रकार हम मुर्दों को (जीवित करके) निकालते हैं ताकि तुम सीख प्राप्त करो। और पवित्र शहर वह होता है कि उसकी हरियाली उसके रब के आदेश से पवित्र ही निकलती है और जो अपवित्र हो उसमें कुछ नहीं निकलता सिवाए रद्दी (चीज़) के।

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰی وَ دِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّهٖ

(अस्सफ़ - 61/10)

अनुवाद - वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे धर्म के हर विभाग पर पूर्णता विजयी कर दे।

وَ لَوۡ لَا دَفۡعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعۡضَهُمۡ بِبَعۡضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الۡاَرۡضُ وَ لٰکِنَّ اللّٰهَ ذُوۡ فَضۡلٍ عَلَی الۡعٰلَمِیۡنَ ۔ (अल बकरह- 2/252)

अनुवाद- और अगर अल्लाह की ओर से लोगों को एक दूसरे के हाथों बचाने का प्रबंध न किया जाता तो धरती अवश्य उपद्रव से भर जाती। परन्तु अल्लाह समस्त लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है।

اِلَیۡهِ یَصۡعَدُ الۡکَلِمُ الطَّیِّبُ وَ الۡعَمَلُ الصَّالِحُ یَرۡفَعُهٗ ؕ وَ الَّذِیۡنَ یَمۡکُرُوۡنَ السَّیِّاٰتِ لَهُمۡ عَذَابٌ شَدِیۡدٌ ؕ وَ مَکۡرُ اُولٰٓئِکَ هُوَ یَبُوۡرُ۔

(फ़ातिर- 35/11)

अनुवाद- अच्छी बात उसी की ओर बुलंद होती है और उसे सत्कर्म बुलंदी की ओर ले जाता है और वे लोग जो बुरी योजनाएं बनाते हैं उनके लिए सख्त अज़ाब है। और उनका षडयंत्र निश्चित रूप से व्यर्थ जाएगा।

اِنَّ الَّذِیۡنَ یُجَادِلُوۡنَ فِیۡۤ اٰیٰتِ اللّٰهِ بِغَیۡرِ سُلۡطٰنٍ اَتٰىهُمۡ ۙ اِنۡ فِیۡ صُدُوۡرِهِمۡ اِلَّا کِبۡرٌ مَّا هُمۡ بِبَالِغِیۡهِ ۚ فَاسۡتَعِذۡ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیۡعُ الۡبَصِیۡرُ۔ لَخَلۡقُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ اَکۡبَرُ مِنۡ خَلۡقِ النَّاسِ وَ لٰکِنَّ اَکۡثَرَ النَّاسِ لَا یَعۡلَمُوۡنَ۔ وَ مَا یَسۡتَوِی الۡاَعۡمٰی وَ الۡبَصِیۡرُ ۔

अनुवाद- निस्सन्देह वे लोग जो अल्लाह की आयतों के बारे में ऐसे किसी अकाट्य तर्क के बिना झगड़ते हैं जो उनके पास आया हो, उनके दिलों में ऐसी

बड़ाई के अतिरिक्त कुछ नहीं जिसे वह कभी भी पा नहीं सकेंगे। अत: अल्लाह की शरण मांग। निस्सन्देह वही बहुत सुनने वाला और गहरी नज़र रखने वाला है। निस्सन्देह आसमान और धरती की रचना इंसानों की रचना से बढ़कर है परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं और अंधा और सुजाखा समान नहीं हो सकते।

فَفِرُّوۡۤا اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنِّىۡ لَـكُمۡ مِّنۡهُ نَذِيۡرٌ مُّبِيۡنٌ (ज़ारियात- 51/51)

अनुवाद- अत: तेज़ी से अल्लाह की ओर दौड़ो। निस्सन्देह मैं उसकी ओर से तुम्हें हर प्रकार से सचेत करने वाला हूं।

अल्लाह तआला ने मुझे अपनी ओर से विशेष निशान प्रदान किए हैं और उसने मेरे कथन तथा वाक्यों में बरकत रख दी है और मेरी दुआ में बरकत दी है और मेरे दम में और मेरे घर और उसके दरो-दीवार पर नूर उतारे हैं। वह मेरे साथ होता है जहां भी मैं हूं और उसने मुझे भेजा है ताकि विरोधी और शत्रु यह जान लें कि यह नेमतें इस्लाम में पाई जाती हैं और मुसलमानों के अतिरिक्त दूसरों को नहीं दी गईं। और वे यह भी जान लें कि अल्लाह के निकट मुसलमानों का क्या मर्तबा है। अत: अल्लाह की क़सम कि यह बात सही और सच्ची है और जो कोई सच्चे दिल और साफ़ नीयत के साथ मेरा इरादा करेगा और मेरे पास अध्यात्मलाभ का अभिलाषी होकर और सहायता मांगते हुए आएगा तो वह मेरी मिन्नत और दुआ की बरकत से अपना उद्देश्य प्राप्त कर लेगा और हर बात में सफल हो जाएगा, सिवाय उसके जिसके बारे में दुर्भाग्य के जारी होने का कलम चल चुका हो। हे भाई! मैंने तेरे लिए अपने हालात को अत्यंत संक्षेप के साथ वर्णन कर दिया है। अत: तू मेरे इस कथन को गहरी दृष्टि से देख और इस बारे में न्याय से काम ले निस्सन्देह मैं तेरे शुभचिंतकों में से हूं।

अत: तू उससे डर जो सब बड़ों से बड़ा है और वह वास्तविक राजा है जिसके चेहरे के नूर से जो कुछ धरती तथा आकाशों में है, चमक उठा है और उसके तेज से फ़रिश्ते कांपते हैं और उसकी महानता से अर्श थर्राता है। और उसने नेक मोमिनों के लिए ऐसी शाश्वत नेमतें तैयार की हैं जो कभी समाप्त न होंगी और ऐसा जीवन जिसके बाद कोई मृत्यु नहीं। और हे बैतुल हराम (ख़ाना

काबा) के निकट बसने वालो! तुम्हें अल्लाह ने बहुत सी विशेषताओं से विशिष्ट किया है और अपनी ओर से रहमत के तौर पर तुम्हें ऐसा दिल दिया है जो सच्चाई के साथ ढल जाता है। अत: हे सम्माननीय लोगों के समूह! तुम मेरे मामले में विचार करो और यह मामला उन मामलों में से नहीं जिन से लापरवाही बरती जाए। और कोई नहीं जानता कि कब आसमान की ओर से बुलावा आ जाए। और यह जान लो कि ये दिन उपद्रवों के दिन हैं और यह फ़सादों की तरंगों का ज़माना है। धरती पूरे ज़ोर से हिला दी गई है और इस्लाम पर मुसीबतों का एक पहाड़ टूट पड़ा है। इसलिए अल्लाह के वादे को याद करो और तूफान तथा बाढ़ के दिनों से डरो और ऐसे मज़बूत कड़े को पकड़ लो जो टूटने वाला नहीं और कृपालु ख़ुदा की रज़ामंदी के अभिलाषी हो और उसके भय के अतिरिक्त प्रत्येक दूसरे भय को अपने पैरों तले डाल दो। और हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह तुम्हें अपनी ओर से सामर्थ्य दे और अपनी ओर से तुम्हें शक्ति प्रदान करे और अपने दरबार से विश्वास पैदा करने वाला इल्हाम प्रदान करे और तहक़ीक़ में गलती करने और अपना मत स्थापित करने में जल्दबाज़ी तथा कुधारणा से सुरक्षित रखे। और हम दुआ करते हैं कि वह अपने शासन में तुम्हें नबियों, रसूलों, सिद्दीकों, शहीदों और सालेहीन में सम्मिलित करे। हम उत्तर की प्रतीक्षा करेंगे।

और हमारी अन्तिम पुकार यह है कि समस्त प्रशंसाएं अल्लाह को शोभनीय हैं जो समस्त लोकों का पालनहार है।

निष्प्रिह ख़ुदा के उपकारों का मोहताज

लेखक- गुलाम अहमद (अल्लाह उसे अपनी सुरक्षा में रखे और उसकी सहायता और समर्थन करे)

यह पुस्तक रबीउल अव्वल 1311 हिजरी महीना के अंत में क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर, पंजाब, हिंदुस्तान से लिखी गई।

★ ★ ★

इस पुस्तक के लेखक की ओर से गूढ़ क़सीदा (काव्य) जो युग के फसादों तथा रहमान ख़ुदा की राहों की ओर मार्गदर्शन करने वाले एक व्यक्ति की आवश्यकता और नबियों के सरदार, जिन्न एवं इन्सान (छोटे बड़े हर स्तर के लोगों) के गर्व आंहज़रत सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रशंसा में है

دموعی تفیض بذکرِ فتنٍ أنظُرُ
وإنی أری فتنًا کقطرٍ یمطُرُ

उन फ़ित्नों (उपद्रवों) के वर्णन से जिन्हें में देख रहा हूं, मेरे आंसू बह रहे हैं और मैं देख रहा हूं कि उपद्रव उस वर्षा के समान हैं जो बरस रही हो।

تهبّ ریاح عاصفات مبیدةٌ
وقلَّ صلاحُ الناس والغیُّ یکثرُ

तेज़ और विनाशकारी हवाएं चल रही हैं, लोगों की अच्छाई कम हो गई है और पथ भ्रष्टता बढ़ रही है।

وقد زُلزلت أرضُ الهدی زلزالها
وقد کُدّرتْ عین التقی وتُکدَّرُ

और सन्मार्ग की धरती पर भयानक भूकंप आ गया है और संयम का स्रोत गंदा हो गया है और मैला होता जा रहा है।

وما کان صَرْخٌ یَصْعَدَنّ إلی العُلٰی
وما مِن دعاء یُسمَعنَّ و یُنصَرُ

और कोई चीख़ व पुकार नहीं जो बुलंदी (अर्थात आसमान) की ओर चढ़ती हो और न कोई दुआ है जो सुनी जाती और सहायता प्राप्त करती हो।

فلما طغی الفسق المبید بِسَیْلہ
تمنّیتُ لو کان الوباءُ المُتَبِّرُ

जब विनाशकारी पाप अपनी बाढ़ के साथ तेज़ी पर आ गया तो मैंने इच्छा की कि काश प्राणघातक महामारी आ जाए।

فإن هلاك الناس عند أولى النهٰى
أحبُّ وأولى من ضلال يُخسِّرُ

क्योंकि लोगों का मर जाना बुद्धिमानों के निकट घाटे में डालने वाली गुमराही की अपेक्षा अधिक उत्तम है और बेहतर है।

على أجدُرِ الإسلام نزلت حوادثٌ
وذاك بسيّئات تُذاع وتُنشرُ

इस्लाम की चारदीवारियों पर मुसीबतें आ चुकी हैं और यह उन बुराइयों के कारण हैं जो सामान्य होती जा रही हैं और फैलाई जा रही हैं।

وفى كل طرف نارُ فتن تأجّجت
وفى كل ذنب قد تراءى التقعُّرُ

हर ओर फ़ित्नों (उपद्रवों) की आग भड़क रही है और हर गुनाह में गहराई दिखाई दे रही है।

ومن كل جهة كلُّ ذئب ونمرةٍ
يعيث بوثب والعقارب تأبُر

और चारों ओर से हर भेड़िया और चीता आक्रमण के द्वारा तबाही कर रहा है और बिच्छू काट रहे हैं।

وعينُ هدايات الكتاب تكدرتْ
بها العِيْنُ والآرام يمشى ويعبُرُ

और अल्लाह की किताब की हिदायतों का स्रोत धूमिल हो गया है। उस स्रोत में जंगली गाय और हिरण चल फिर रहे हैं।

تراءت غواياتٌ كريح عاصفٍ
وأرخى سدولَ الغيّ ليلٌ مُكدِّرُ

गुमराहियां तेज़ हवा के समान दिखाई दे रही हैं और अंधकार पैदा करने वाली रात ने गुमराही के पर्दे लटका दिए हैं।

وللدين أطلالٌ أراها كلاهف
ودمعى بذكر قصوره يتحدّرُ

और धर्म के केवल खंडहर शेष रह गए हैं जिन्हें मैं निराश व्यक्ति के समान देख रहा हूं और मेरे आंसू उसके किलों की याद में बह रहे हैं।

أرى العصر من نوم البطالة نائماً
و كل جَهول فى الهوى يتبخترُ

मैं ज़माने को झूठी आस्थाओं की नींद में सोया हुआ देख रहा हूं और हर मूर्ख अपनी इच्छाओं में इतरा रहा है।

وليلا كعين الظبى غابت نجومه
ودائً لَشِدَّتُه عن الموت تُخبِرُ

और मैं हिरण की आंख के समान काली रात को देख रहा हूं कि उसके सितारे लुप्त हो गए हैं और उस बीमारी को देख रहा हूं जो अपनी अधिकता के कारण मौत की ख़बर दे रही है।

نسوا نَهْجَ دين الله خبثًا و غفلة
وأفعالهم بغىٌ وفسق ومَيسِرُ

उन्होंने ख़ुदा के धर्म का मार्ग अपवित्रता और लापरवाही से भुला दिया है और उनके काम बग़ावत और छल और जुआ बाज़ी हैं।

وما همُّهم إلا لحظِّ نفوسهم
وما جهدهم إلا لعيشٍ يوفَّرُ

और उनकी समस्त चिंता केवल आत्म संतुष्टि के लिए है और उनके समस्त प्रयत्न केवल सांसारिक वैभव के लिए हैं जो बढ़ता जा रहा है।

وقد ضيّعوا بالجهل لبنًا سائغا
ولم يبق فى الاقداح إلا ماضِرُ

और उन्होंने मूर्खतावश अच्छे मीठे दूध को व्यर्थ कर दिया और प्यालो में केवल खट्टा दूध शेष रह गया है।

وركب المنايا قد دناهم بسيفهم
وهم خيلُ شرٍّ ما دناهم تحسّرُ

और मौतों का काफिला अपनी तलवार के साथ उनके निकट आ गया है और यह लोभ तथा लालच के शहसवार हैं (उस पर) अफसोस उनके निकट भी नहीं फटका।

تصيدُهم الدنيا بعظمة مكرِها
فيا عجبًا منها ومما تمكُرُ

अपने बड़े षड्यंत्र से दुनिया उनका शिकार कर रही है अत: इस दुनिया पर आश्चर्य है और उसके षड्यंत्र पर भी जो वह कर रही है।

تذكِّر إفلاسا وجوعا وفاقة
فتدعو إلى الآثام مما تذكِّرُ

और उन्हें गरीबी और भूख और अकाल याद दिलाती है फिर उन बातों को याद दिला कर उन्हें गुनाहों की ओर प्रेरित करती है।

تريد لتُهلِك في التغافل أهلها
وقد عقرتْ همَمَ اللئام وتعقِرُ

वह चाहती है कि दुनिया वालों को लापरवाही में ही तबाह कर दे और कमीनों की हिम्मतें पस्त हो चुकी हैं और उनके पैर काटे जा रहे हैं।

وألهتْ عن الدين القويم قلوبَهم
فمالوا إلى لمعاتها وتخيّروا

और दुनियादारी ने उनके दिलों को सच्चे धर्म से विमुख कर दिया है। इसलिए वह उस (दुनिया) की चमक-दमक पर लट्टू होकर उसी के हो गए हैं।

تقود إلى نار اللظى وجناتُها
ولمعاتُها تُصبي القلوب وتخترُ

उसके कपोल लपटों वाली आग के समान खींच ले जाते हैं और उसकी चमक-दमक दिलों को आकर्षित करती और धोखा देती है।

وتدعو إليها كلَّ من كان هالكا
فكلٌّ من الاحداث يدنو ويخطِرُ

और प्रत्येक व्यक्ति को जो नष्ट होने वाला हो, अपनी ओर बुलाती है, अत: नौजवानों में से हर एक उस के निकट हो रहा है और झूम रहा है।

تميس كبِكرٍ في نقاب المكائدِ
وتُبدي وميضًا كاذبا وتزوِّرُ

वह (अर्थात दुनिया) कुंवारी के समान षड्यंत्रों के नकाब में मटक कर चलती है और झूठी चमक-दमक प्रकट करती है और धोखा देती है।

ودقّتْ مكائدها فلم يُدْرَ سرُّها
لـما نسجتْها من فنون تكوّرُ

और उसके षड्यंत्र सूक्ष्म हैं अत: उसका भेद मालूम नहीं किया जा सकता इसलिए कि उसने उन का जाल ऐसे बहानों से बुना है जिन्हें वह छुपा रही है।

وتبدو كتُرْسٍ في زمان بكيدها
وفي ساعة أخرى حُسامٌ مشهَّرُ

और कभी तो वह अपने धोखे से ढाल के समान सामने आती है और दूसरे ही पल वह खींची हुई तलवार होती है।

وعين لهـا تصبي الورى فـتّانة
ولقتلِ أهل الفسق كَشْح مُخصَّرُ

और उसकी उपद्रवी आंख सृष्टि को अपनी ओर आकर्षित करती है और पापियों दुराचारियों के वध के लिए वह दुनिया पतली कमर (वाली हसीना) है।

عجبتُ لمنظرِ ذاتِ شيبٍ عجوزةٍ
أنيقٍ لـعين الناظرين وأزهَـرُ

मुझे आश्चर्य है उस कमज़ोर बुढ़िया के दृश्य पर जो देखने वालों की निगाह में सुंदर और चमकदार है।

لزِمتُ اصطبارًا إذ رأيتُ جمالها
فقلتُ إلهي أنت كهفي ومأْزَرُ

मैंने सब्र को अनिवार्य कर लिया जब मैंने उसके सौंदर्य पर सूचना पाई, मैंने कहा- हे मेरे ख़ुदा! तू ही मेरी शरण और ठिकाना है।

فصَيَّرَهـا ربي لنفسي سَرِيَّـةً
كجـاريةٍ تُلقى بطَوْعٍ وتُهجَرُ

अत: मेरे रब ने उसे मेरे लिए लौंडी (गुलाम) के समान बना दिया। ऐसी लौंडी के समान जिससे मिलन और जुदाई स्वयं अपनी इच्छा से की जाती है।

وذلك فضلٌ من كريم ومحسن
ويعطى المهيمن من يشاء ويحجُرُ

और कृपालु तथा उपकारी ख़ुदा की ओर से यह एक अनुकंपा है और निगरान ख़ुदा जिसे चाहता है प्रदान करता है और जिस से चाहता है रोक लेता है।

وقد ضاقت الدنيا على عشّاقها
ويبغونها عشقًا وحبًّا فتُدْبِرُ

और दुनिया अपने आशिकों पर तंग हो गई है। वह उसे इश्क और मुहब्बत से चाहते हैं तो वह पीठ फेर लेती है।

تزاحمت الطلاب حول لحومها
كمثل كلاب والمنايا تسخرُ

उसके अभिलाषी उसके मांस के निकट कुत्तों के समान भीड़ कर रहे हैं और मौतें उन पर हंस रही हैं।

وإنّ هواها رأسُ كلّ خطيئةٍ
فخَفْ حُبَّها يا أيها المتبصّرُ

उसका इश्क हर एक गलती की जड़ है। अत: उसकी मोहब्बत से डर, हे विवेक रखने वाले !

وقد مضغتْ أنيابُها كلَّ طالبٍ
وأنت أَثارتُهم فسوف تُكسَّرُ

निस्सन्देह उसके जबड़ों ने हर अभिलाषी को चबा डाला है। और तू उनका अवशेष है अत: तू भी शीघ्र तोड़ दिया जाएगा।

على كل قلب قد أحاط ظلامها
سوى قلب مسعودٍ حماه الميسِّرُ

हर एक दिल पर उसका अंधकार छाया हुआ है सिवाए सौभाग्यशाली व्यक्ति के दिल के, जिसकी सुरक्षा आसानी पैदा करने वाले ख़ुदा ने की हो।

إذا ما رأيتُ المسلمين كلابَها
ففاضتْ دموع العين والقلبُ يضجَرُ

जब मैंने मुसलमानों को इस संसार के कुत्ते पाया तो आंखों से आंसू बह पड़े इस हाल में कि दिल घबरा रहा था।

على فسقِهم لما اطّلعتُ و كسلِهم
بكيتُ ولم أصبِرْ ولا أتصبّرُ

जब मुझे उनके दुराचार और आलस्य का ज्ञान हुआ तो मैं रो पड़ा और सब्र न कर सका और न सब्र करने की शक्ति रखता हूं।

أكبّوا على الدنيا ومالوا إلى الهوى
وقد حلَّ بيتَ الدين ذئبٌ مدمِّرُ

वे दुनिया पर झुक गए और लोभ तथा लालच की ओर आकर्षित हो गए इस अवस्था में कि धर्म के घर में एक विनाशकारी भेड़िया उतर चुका है।

أرى ظلماتٍ ليتَنى متّ قبلها
وذقتُ كؤوس الموت لولا أُنوَّرُ

मैं अंधकार को देख रहा हूं काश! मैं उनसे पहले मर चुका होता और मैं मौत के प्याले चखता यदि मैं प्रकाशमान न हो रहा होता।

فساد كطوفان مبيد وإننى
أراه كموجِ البحر أو هو أكثَرُ

विनाशकारी तूफान के समान एक उपद्रव उठा है और निस्सन्देह मैं उसे समुद्र की लहर के समान पाता हूं या वह उससे भी बड़ा है।

أرى كلَّ مفتون على الموت مُشرِفًا
و كل ضعيف لا محالة يعثُرُ

मैं देख रहा हूं कि हर उपद्रव में ग्रस्त व्यक्ति मौत के किनारे पर पहुंच चुका है और हर एक कमज़ोर अवश्य ठोकर खाता है।

فأنقضَ ظهرى ضعفُهم ووبالهم
ومِن دون ربى مَن يداوى وينصرُ؟

अत: उनकी कमज़ोरी और मुसीबतों ने मेरी कमर तोड़ दी है और मेरे रब के अतिरिक्त कौन मेरा इलाज और सहायता करेगा?

فيا ربِّ أَصْلِحْ حالَ أُمّةَ سيدى
وعندك هَيِّنٌ عندنا متعسِّرُ

हे मेरे रब! मेरे आक़ा (स्वामी) की उम्मत की हालत सुधार दे और यह तेरे लिए आसान है और हमारे लिए कठिन है।

وليس بِراقٍ قبل أن تأخُذَنْ يدًا
وليس بِساقٍ قبل كأسٍ تُقدِّرُ

और कोई बुलंदी पर नहीं जा सकता पूर्व इसके कि तू उसका हाथ पकड़े और कोई किसी को कुछ पिला नहीं सकता पूर्व उस प्याले के, जो तू मुक़द्दर कर दे।

وقد نُشِرتْ ذرّاتُنا من مصائبٍ
ومِتْنا فلا تذكُرْ ذُنوبًا تنظُرُ

और हमारे कण-कण मुसीबतों के कारण बिखेर दिए गए हैं और हम मर चुके हैं। अत: उन गुनाहों को जो तू देख रहा है, वर्णन न कर।

ولا تُخرِجَنْ سيفًا طويلا لقتلِنا
وتُبْ وَاعْفُوَنْ يا ربِّ قوم صُغِّرُوا

और हमारे वध के लिए लंबी तलवार न निकाल और रहमत के साथ हमारी ओर लौट और क्षमा कर दे, हे उन लोगों के रब! जो अपमानित किए गए।

وإنْ تُهلِكْنا يا ربَّنا بذنوبنا
فنفنى بموت الخزى والخصمُ يَبطَرُ

और हे हमारे रब! यदि तू हमारे पापों के कारण हमें नष्ट करेगा तो हम अपमान की मौत मर जाएंगे और शत्रु गर्व करेगा।

ولا أبرَحُ المضمارَ حتى تعينني
ولا بُدَّ لى أن أُهْلَكَنْ أو أُظفَّرُ

और मैं मैदान से नहीं हटूंगा यहां तक कि तू मेरी सहायता करे और निश्चित है मेरे लिए कि मैं नष्ट हो जाऊं या सफल किया जाऊं।

وإنى أرى أن الذنوب كبيرة
وأعرف معه أن فضلك أكبَرُ

और मैं देख रहा हूं कि पाप बहुत बड़े हैं और उसके साथ ही यह भी जानता हूं कि तेरी अनुकंपा महानतम है।

إلهى أَغِثْنا واسْقِنا واحْمِ عِرْضَنا
بسلطانك الأجلى وإنك أقدَرُ

हे मेरे अल्लाह! हमारी फरियाद सुन और हमें तृप्त कर और अपनी महान शक्ति से हमारे सम्मान की रक्षा कर, निस्सन्देह तू बड़ी क़ुदरत वाला है।

يئِسنا من المخلوق وانقطع الرجا
وجئناك يا مَن يعلَمَنْ ما يُضمَرُ

हम सृष्टि से मायूस हो गए और उम्मीदें टूट गई हैं और हम तेरे पास आए हैं, हे वह हस्ती जो जानती है उस मामले को जो दिलों में छुपाया जाता है।

تعاليتَ يا مَن لا تُحاطُ كمالُهُ
لك الحمد حمدًا ليس يُحصى ويُحصَرُ

हे वह हस्ती जिस की महानता को परिधि में नहीं लिया जा सकता! तेरी शान बुलंद है, तेरी प्रशंसा ऐसी है जिसकी गणना और घेराव नहीं हो सकता।

تَصدَّقْ بألطاف كما أنت أهلُها
وأَدْرِكْ عبادًا لك كما أنت أقدَرُ

अपनी कृपा हमें प्रदान कर जैसा कि तेरी शान के अनुकूल है और अपने बंदों की सहायता कर जैसा कि तू बड़ी क़ुदरत रखने वाला है।

فخُذْ بيدى يا ربِّ فى كل موطنٍ
وأَيِّدْ غريبًا يُلْعَنَنْ ويُكفَّرُ

हे मेरे रब! हर लड़ाई में मेरा हाथ पकड़ और उस असहाय की सहायता कर जिस पर लानत की जा रही है और जिसे काफ़िर ठहराया जा रहा है।

أتيتُك مسكينًا وعونُك أعظَمُ
وجئتُك عطشانًا وبحرُك أَزخَرُ

और मैं असहाय होकर तेरे समक्ष आया हूं और तेरी सहायता सबसे बड़ी है। और मैं प्यासा होकर तेरे पास आया हूं और तेरा समुद्र बहुत उफान पर है।

قد اندرستْ آثارُ دينِ محمدٍ
فأشكو إليك وأنتَ تبنى وتَعمُرُ

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के धर्म के निशान मिट चुके हैं। अत: मैं तेरे समक्ष शिकायत करता हूं (क्योंकि) तू ही बनाता है और बसाता है।

أرى كل يوم فتنةً قد مُدِّدتْ
ومِتْنا وأمواتُ الأعادى بُعْثِروا

मैं प्रतिदिन एक फित्ना (अर्थात उपद्रव) देखता हूं जो फैलाया गया है और हम तो मर गए हैं और शत्रुओं के मुर्दे जी उठे हैं।

وقد أزمعوا أن يزعجوا سبلَ الهدى
وكم من أراذلَ من شقاهم تنَصَّرُوا

और उन्होंने संकल्प कर लिया है कि हिदायत के मार्गों को जड़ से उखाड़ दें और बहुत से कमीने अपने दुर्भाग्य से ईसाई हो गए हैं।

أرى كل محجوب لدنياه باكيا
فمن ذا الذى يبكى لدينٍ يُحقَّرُ

मैं प्रत्येक धर्म विमुख को अपनी दुनियादारी के लिए रोने वाला पाता हूं अत: कौन है वह जो इस धर्म के लिए रोए जिस का अपमान किया जा रहा है।

فيا ناصِرَ الإسلام يا ربَّ أحمدا
أَغِثْنى بتائيدٍ فإنى مُدْخَرُ

हे इस्लाम के सहायक, अहमद के रब! सहायता के साथ मेरी फरियाद सुन मैं तो अपमानित किया गया हूं।

أيا ربّ مَن أعطيتَه كل درجةٍ
وشأنًا برؤيته الورى تتحيرُ

हे उस रसूल के रब जिसे तूने प्रत्येक मर्तबा दिया है और ऐसी शान (प्रदान की है) जिसे देखकर सृष्टि आश्चर्यचकित हो रही है।

وما زلتَ ذا لطف وعطف ورحمةٍ
وما كنتُ محروما وكنتُ أُوقَّرُ

और तू हमेशा प्यार और मेहरबानी और रहमत करने वाला है और मैं कभी भी वंचित नहीं रहा बल्कि सम्मान ही पाता रहा हूं।

فلا تجعَلَنِّي مضغةً لمحاربی
وأنتَ وحیدی کلّ خطأ تَغفِرُ

तू मुझे मेरे शत्रु का कौर (निवाला) न बना देना, तू मेरा इकलौता ख़ुदा है, तू हर एक ग़लती को क्षमा कर देता है।

وأنت المهیمنُ مرجعُ الخَلق کلِّهم
وأنتَ الحفیظ تعیننی وتُعـزِّرُ

और तू निगरान ख़ुदा ही समस्त सृष्टि का केंद्र है और तू ही संरक्षक है। तू मेरी सहायता करता है और मुझे महानता प्रदान करता है।

وما غیرُ بابِ الرّب إلا مذلّةٌ
وما غیرُ نورِ الرب إلا تکَدُّرُ

और रब के द्वार के सिवा तो केवल अपमान ही अपमान है और रब के प्रकाश के अतिरिक्त तो केवल अंधकार ही अंधकार है।

وعُلِّمتُ منك حقائق الدّین والهدی
وتهدی بفضلك من تری وتُنوِّرُ

और मुझे तेरी ओर से धर्म तथा सन्मार्ग की वास्तविकताएं सिखाई गई हैं और तू जिसे योग्य समझता है उसे अपनी कृपा से हिदायत देता है और प्रकाशमान करता है।

إذا ما بدا لی أن علمی غامضٌ
فأیقنتُ أنی عن قریب سأُکفَرُ

जब मुझे ज्ञात हुआ कि मेरा ज्ञान तो बहुत गंभीर है तो मैंने विश्वास कर लिया कि मैं शीघ्र ही काफ़िर ठहराया जाऊंगा।

فسلَّمتُ بعد الاهتداء بفضله
سلامَ الوداع علی الذی یستنکِرُ

अत: मैंने उसकी कृपा से हिदायत पाने के बाद अलविदाई सलाम कह दिया, सलाम उस व्यक्ति को जो मुझे नहीं पहचानता।

وإن الهداية يرجِعَنْ نحو طالبٍ
ومَن غضَّ عينَ رؤيةٍ أين يُبصِرُ؟

और निस्सन्देह हिदायत, हिदायत पाने वाले की ओर लौटती है जिसने अपने देखने की दोनों आंखें बंद कर लीं वह कहां देखेगा?

ووالله لا يشقى الذى هو يطلب
ومَن جدَّ فى تحصيل هدىٍ سيُنصَرُ

और ख़ुदा की क़सम वह व्यक्ति जो हिदायत का अभिलाषी हो बेनसीब नहीं होता और जो व्यक्ति हिदायत पाने का प्रयत्न करता है उसकी सहायता अवश्य की जाती है।

ومن كان أكبر همّه جلب لـذّةٍ
وحظٍّ من الدنيا فكيف يُطهَّرُ

और जिसका बड़ा उद्देश्य आनंद तथा सांसारिक मोह माया की प्राप्ति हो तो वह कैसे पवित्र किया जाएगा।

أَمُكْفِرِ! مهلا بعضَ هذا التحكم
وخَفْ قَهْرَ ربٍّ قال لا تقفُ فاحذروا

हे मुझे काफ़िर ठहराने वाले! इस फैसले को कुछ देर के लिए छोड़ दे और डर उस रब के अज़ाब से जिसने "ला तक्फ़ु"* कहा। अत: तुम लोग भी डरो।

وإن ضياء الدين قد حان وقته
فتعرف شجرتنا بما هى تُثمرُ

और निस्सन्देह धर्म के प्रकाश का समय आ पहुंचा है तू हमारे वृक्ष को उन फलों से पहचान लेगा, जो वह देगा।

---

* **ला तक्फ़ु** से आप अलैहिस्सलाम का अभिप्राय इस आयत से है:

وَ لَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَ الْبَصَرَ وَ الْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا (बनी इस्त्रा ईल- 17/37)

अर्थात- और ऐसी बात पर न अड़ जिसका तुझे ज्ञान नहीं। नि:संदेह कान और आंख और हृदय से प्रत्येक के बारे में पूछा जाएगा। (अनुवादक)

و يا حسراتٍ موبقاتٍ على الذى
يكذّبنى مِن غير علم و يُكْفِرُ

और बहुत सी विनाशकारी हसरतें हैं ऐसे व्यक्ति पर जो बिना ज्ञान के मुझे झुठलाता है और मुझे काफ़िर ठहराता है।

وما جئتُ قومى من ديار بعيدة
وقد عرفونى قبله ثم أنكروا

और मैं अपनी क़ौम के पास दूर के देशों से नहीं आया हालांकि वह तो मुझे पहले से ही जानते थे फिर भी उन्होंने इन्कार कर दिया।

وأعرضَ عنى كلُّ من كان صاحبى
وأُفرِدتُ إفرادَ الذى هو يُقبَرُ

और मुझसे हर उस व्यक्ति ने जो मेरा साथी था, मुंह फेर लिया और मैं उस व्यक्ति के समान अकेला छोड़ दिया गया हूं जो क़ब्र में अकेला डाला जाता है।

تـمنَّيتُ أن يخفى تطاوُل قولهم
وهل يختفى ما فى المجالس يُذكَرُ؟

मैंने चाहा कि उनकी बढ़ बढ़ कर की हुई बातें छुपी रहें परन्तु क्या वह बातें छुपी रह सकती हैं जो सभाओं में की जाएं।

و يعوى عدوى مثل ذئب مِن طوًى
وليس له علم بـما هو أذكرُ

और मेरा शत्रु भेड़िए के समान दुनिया की भूख के मारे चिल्ला रहा है और उसे ज्ञान नहीं है उन बातों का जो मैं वर्णन कर रहा हूं।

وما رُزِقتْ عيناه مِن نيِّر العُلى
فأخلَدَ نحو الارض جهلا و يُنكِرُ

उसकी आंखों को आकाशीय प्रकाश में से कुछ भी प्रदान नहीं किया। अत: वह अपनी नादानी से धरती से जा लगा और इन्कार कर रहा है।

أولئك قوم ضيّعوا أَمْرَ دينهم
وخانوا العهود وزيّنوا ما زوَّروا

ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने धर्म के मामले को व्यर्थ कर दिया और अपने वादों में ख़यानत की और उस चीज़ को जो उन्होंने छल पूर्वक गढ़ी थी, सजाकर प्रस्तुत किया।

و يعلم ربی سرَّ قلبی و سرَّهم
و کلّ خفیّ عنده متحضِرُ

और मेरा रब मेरे दिल के भेद को और उनके भेद को जानता है और प्रत्येक छुपी हुई चीज़ उसके सामने उपस्थित है।

ولو کنتُ مردودَ الملیك لضَرَّنی
عداوۃُ قومٍ کذّبونی و کفّروا

और अगर मैं ख़ुदा के दरबार से धुतकारा हुआ होता तो अवश्य मुझे उन लोगों की शत्रुता हानि पहुंचाती जिन्होंने मुझे झुठलाया और मुझे काफ़िर ठहराया।

وهمّوا بتکفیری وقاموا للعنتی
ولم یعلموا أن المهیمن ینظُرُ

और उन्होंने मुझे काफ़िर ठहराने का संकल्प किया और मुझे लानत करने के लिए खड़े हुए और उन्होंने यह न सोचा कि निस्सन्देह निगरान ख़ुदा सब कुछ देख रहा है।

إذا قیل إنك مرسَلٌ خِلْتُ أننی
دُعِیتُ إلی أمر علی الخَلْق یَعسِرُ

जब कहा गया कि तू रसूल है तो मैंने समझा कि मैं एक ऐसी बात की तरफ बुलाया गया हूं जो लोगों को दुविधा में डालेगी।

و کنتُ علی نور فزاغوا من العَمی
وهل یستوی الاعمی ورجلٌ یَبصُرُ

और मैं तो नूर पर स्थित था और वे अंधेपन से टेढ़े हो गए और क्या अंधा और सुजाखा बराबर हो सकते हैं?

وما دیننا إلا هدایةُ أحمدا
فیالیتَ شعری ما یظن المکفِّرُ

और सिवाए अहमद की हिदायत के हमारा कोई धर्म नहीं है। काश मैं जानता कि वह

बात क्या है जिसे काफ़िर ठहराने वाला धर्म और हिदायत समझ रहा है।

وقد كنتُ أنسى كلَّ جَوْرِ مُعيِّرِى
ولكنه جور كبير مكوَّرُ

और मैं स्वयं पर दोष लगाने वाले का हर अत्याचार भुला देता रहा हूं परन्तु यह तो कई गुना बड़ा अत्याचार है।

و كم من دلائلَ قد كتبتُ لطالبٍ
يفكّر فيها لَوْذَعِيٌّ مُدبِّرُ

और बहुत सी दलीलें हैं जो मैंने सत्याभिलाषी के लिए लिखी हैं, एक विवेकवान विद्वान उनमें विचार से काम लेगा।

ألا أيها المتكبر المتشدّدُ
تريد هوانى والكريمُ يُعزِّرُ

हे अहंकार और अत्याचार करने वाले ! तू मेरा अपमान चाहता है हालांकि कृपालु ख़ुदा मुझे प्रतिष्ठा दे रहा है।

و إذ قلتُ إنى مسلم قلتَ كافر
فأين التُّقى يا أيها المتهوِّرُ

और जब मैंने कहा मैं मुसलमान हूं तूने कहा काफ़िर है, तो वह तक़्वा कहां चला गया, हे दिलेरी करने वाले!

وبعد بيانى أين تذهب منكرًا
أتعلم يا مسكين ما هو مُضْمَرُ

और मेरे बयान के बाद तू इन्कार करता हुआ कहां जाएगा? हे असहाय क्या तू उस बात को जानता है जो छुपी हुई है।

فلا تتجرعْ أيها الضال فى الهوى
بأيديك كأس الموت ما لك تُخطِرُ

हे लोभ लालच में भटके हुए! तू अपने हाथों से मौत का प्याला घूंट-घूंट मत पी, जो तेरे लिए आ रहा है।

وان كنت لا تخشى فقل لست مؤمنا
و يأتى زمان تسئلن و تخبر

और अगर तू डरता नहीं तो (मुझे) कहता रह कि तू मोमिन नहीं और एक समय आएगा कि तुझसे अवश्य पूछा जाएगा और तुझे पता लग जाएगा।

و كلُّ سعيد يعرف الحقَّ قلبُهُ
وأما الشقيّ فيعلَمَنْ حين يخسَرُ

और प्रत्येक नेक का दिल सच्चाई को पहचान लेता है और जो अभागा है तो वह उस समय जानेगा जब वह घाटे में पड़ेगा।

و إنى تركتُ النفس والخَلق والهوى
فلا السبُّ يؤذينى ولا المدحُ يُبطِرُ

और निस्सन्देह मैंने अपने नफ़्स को, सृष्टि को तथा इच्छाओं को छोड़ दिया है। अत: अब न गाली मुझे कष्ट देती है और न प्रशंसा मुझे गर्व दिलाती है।

و كم من عدوٍّ بعدما أكملَ الأذى
أتانى فلم أَصعَرْ وما كنتُ أصعَرُ

और बहुत से शत्रु हैं कि पूरा दुख दे लेने के बाद मेरे पास आए, अत: मैंने बेरुखी न की और न ही मैं पहले बेरुख़ी किया करता था।

أحِنُّ إلى من لا يحِنُّ محبّةً
وأدعو لمن يدعو علىّ ويهذَرُ

मैं तो मोहब्बत के कारण उसकी ओर भी आकर्षित होता हूं जो मेरी ओर आकर्षित नहीं होता और मैं उसके लिए भी दुआ करता हूं जो मुझ पर बद्दुआ करता है और बकवास करता है।

خُذِ الرفقَ إن الرفق رأس المحاسنِ
ويكسِر ربى رأس من يتكبّرُ

तू नरमी को अपना ले क्योंकि नरमी समस्त विशेषताओं की जड़ है और मेरा रब उस व्यक्ति का सर तोड़ देता है जो अहंकार करता है।

عجبتُ لأعمى لا يداوى عيونَه
ومِن كل ذى الأبصار يلوى ويسخَرُ

मैं उस अंधे पर आश्चर्य करता हूं जो अपनी आंखों का इलाज नहीं करता और हर आंखों वाले से मुंह फेरता और हंसी करता है।

أتنسى نجاساتٍ رضيتَ بأكلِها
وتذُمّ ما هو مستطاب وأطهَرُ

क्या तू भूल गया है उन गंदगियों को जिनके खाने पर तू राज़ी हो गया है? और बुरा कह कर रहा है उसको जो अच्छा और बहुत पवित्र है।

تُسَمِّينِ جهلًا يا ابنَ آوى ثعلبًا
وما أنا إلا الليث لو تتفكّرُ

हे गीदड़! तू मूर्खता से मेरा नाम लोमड़ी रखता है हालांकि मैं तो एक शेर हूं अगर तू विचार करे।

تفيض عيون العارفين بقولنا
ولكن غبيٌّ يضحكَنْ ويحقِّرُ

हमारी बातों से अध्यात्मज्ञानियों की आंखों से आंसू बहने लगते हैं परन्तु दुष्ट व्यक्ति हंसता है और तिरस्कार करता है।

تُعيِّرنى ظلمًا و كبرًا ونخوةً
وهيهاتَ، أهلُ الحق كيف يُعيَّرُ

और तू मुझ पर अत्याचार, अहंकार और नफ़रत से दोष लगाता है और यह बात समझ से बाहर है, सच्चे लोगों पर कैसे दोष लगाया जा सकता है?

صبرنا على ظلم الخلائق كلها
وتُبْنا إلى الرب الذى هو أقدَرُ

हमने सारी सृष्टि के अत्याचार पर सब्र किया और उस रब की ओर ध्यान लगाया जो सर्वाधिक सामर्थ्यवान है।

تركْنا القِلى واللهُ كافٍ لصادقٍ
وإن الصدوق بفضله يُتخَيَّرُ

हमने ईर्ष्या और शत्रुता को छोड़ दिया और अल्लाह सच्चों के लिए पर्याप्त है और निस्सन्देह सच्चे उसकी कृपा से स्वीकार होते हैं।

وليس الفتى من يقتل الناسَ سيفُه
ولكنه من يُظلَمَنّ ويصبِرُ

और जवां मर्द वह नहीं जिसकी तलवार लोगों का वध करती है, अपितु जवां मर्द वह है जो पीड़ित होने के बावजूद सब्र करे।

أرى الظلمَ يبقى في الخراطيم وَسْمُه
وأما علامات الأذى فتَغيَّرُ

मैं अत्याचार को ऐसा समझता हूं कि वह अत्याचारियों की नाकों पर निशान छोड़ जाता है परन्तु कष्टों के निशान (पीड़ितों से) मिट जाते हैं।

أَتُكَفِّرُني يا أيها المستعجلُ
وأيّ علاماتٍ ترى إذ تُكفِّرُ

हे जल्दबाज़! क्या तू मुझे काफ़िर ठहराता है। (मेरे अन्दर) तू ऐसी कौन सी बातें पाता है जब काफ़िर ठहराता है।

وإن إمامي سيد الرسل أحمدُ
رضيناه متبوعا وربّي ينظُرُ

निस्सन्देह मेरा पेशवा तो रसूलों का सरदार अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है हमने उसको मार्गदर्शक के तौर पर पसंद कर लिया है और मेरा रब देख रहा है।

ولا شك أن محمدا شمس الهدى
إليه رغِبْنا مؤمنين فنشكُرُ

निस्सन्देह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सन्मार्ग के सूर्य हैं हम उसकी ओर मोमिन होकर प्रेरित हुए। अत: हम धन्यवाद करते हैं।

له درجات فوق كل مدارجٍ
له لمعاتٌ لا يليها تصوُّرُ

आपका मर्तबा समस्त मर्तबों से ऊंचा है आपकी ऐसी चमकारे हैं कि उनकी कल्पना नहीं की जा सकती।

أَبَعْدَ نبیِّ اللّٰہ شیءٌ یـرُوقنی
أبعـدَ رسول اللّٰہ وجـہٌ مُنوَّرُ

क्या अल्लाह के नबी के बाद कोई चीज़ मुझे अच्छी लग सकती है? क्या रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई और प्रकाशमान चेहरा भी है?

عـلیك سلامُ اللّٰہ یا مَرْجَعَ الوری
لکل ظـلامٍ نورُ وجهـك نیِّرُ

हे सृष्टि के केंद्र! तुझ पर अल्लाह का सलाम, हर एक अंधकार के लिए तेरे चेहरे का नूर एक सूर्य है।

ویـحمدك اللّٰہ الوحید وجندُہ
ویُثنی عـلیك الصبحُ إذھو یَجشُـرُ

और अद्वितीय ख़ुदा तेरी प्रशंसा करता है और उसकी सेना (अर्थात फ़रिश्ते) भी। और भोर भी तेरी प्रशंसा करती है जब वह उदय होती है।

مدحتُ إمـامَ الانبیـاء وإنـہ
لارفَعُ مِن مدحی وأعلی وأکبرُ

मैंने नबियों के पेशवा की प्रशंसा की है और वास्तविकता यह है कि वह मेरी प्रशंसा से ऊपर, बुलंद और महान है।

دَعُوا کلَّ فخر للنبی محـمّدٍ
أمامَ جلالةِ شأنہ الشمسُ أحقَرُ

हर गौरव को नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ही लिए रहने दो आपकी बुलंद शान के सामने तो सूरज भी बहुत तुच्छ है।

وصلُّوا علیہ وسلِّموا أیها الوری
وذَرُوا لہ طُرقَ التشاجر تُؤجَروا

और हे समस्त लोगो! उस पर दरूद और सलाम भेजो और उसके लिए झगड़े के रास्तों को छोड़ दो ताकि प्रतिफल पाओ।

وواللّٰہ إنـی قد تبِعتُ محمّدًا
وفی کـل آن مِن سناہ أُنوَّرُ

और ख़ुदा की क़सम निस्सन्देह मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण किया है और हर पल आपके प्रकाश से ही प्रकाशमान हो रहा हूं।

وفَوَّضَنی ربی إلی روضِ فیضه
وإنی به أجنِی الجَنی و أُنَضَّرُ

मुझे मेरे रब ने आपके फ़ैज़ (अध्यात्म लाभ) के बागों के सुपुर्द कर दिया है और निस्सन्देह मैं आपके माध्यम से ही फल चुनता और ताज़ा किया जाता हूं।

ولِدِینه فی جَذْرِ قلبی لوعةٌ
وإن بیانی عن جنانی یُخبِرُ

और आपके धर्म के लिए मेरे दिल की गहराई में एक तड़प है और निस्सन्देह मेरा वर्णन मेरे दिल की हालत की सूचना दे रहा है।

ورثتُ علوم المصطفی فأخذتُها
و کیف أردّ عطاء ربّی و أفجُرُ

मैं मुस्तफ़ा के ज्ञान का वारिस हुआ तो मैंने उनको ले लिया और मैं अपने रब की वादन्यताओं को कैसे रद्द करूं और गुनहगार बन जाऊं।

و کیف وللإسلام قمتُ صبابةً
وأبکی له لیلا نهارا و أضجَرُ

और यह हो कैसे सकता है? हालांकि इस्लाम की सहायता के लिए मैं मोहब्बत से खड़ा हूं और उसी के लिए दिन रात रोता हूं और कुढ़ता हूं।

وعندی دموع قد طلَعْنَ المآقِیا
وعندی صراخٌ مثلُ نارٍ مُسَعَّرُ

और मेरे आंसू आंखों के किनारों से बाहर आ गए और मेरी चीख़-पुकार भड़की हुई अग्नि के समान है।

تضوّعَ إیمانی کمسکٍ خالصٍ
وقلبی من التوحید بیتٌ مُعطَّرُ

मेरा ईमान शुद्ध कस्तूरी के समान महक रहा है और मेरा दिल एकेश्वरवाद के कारण एक सुगंधित घर बना हुआ है।

وفی کل آن یأتینٌ مِن خالـقی
غـذائی نَمیرُ الماء لا یتغیَّرُ

और हर पल मेरे पास मेरे सृष्टा की ओर से मेरा भोजन आ रहा है जो ऐसा शुद्ध पवित्र पानी है जो दूषित नहीं होता।

تضیء الظلامَ معارفی عند منطقی
وقولی بفضل اللّٰہ دُرٌّ مُنوَّرُ

मेरे वार्तालाप के समय मेरा ज्ञान, अंधकार को प्रकाश में परिवर्तित कर देता है और मेरा कथन अल्लाह की कृपा से चमकदार मोती है।

إلی منطـقی یرنو الفهیم تعشقًا
ویُزعِج نطقی کلَّ وهمٍ ویَجذُرُ

मेरी वक्तव्य की ओर प्रत्येक विवेकवान प्रेमपूर्वक दृष्टि जमाए रखता है और मेरी बातें प्रत्येक भ्रम को हिला देती हैं और उसको जड़ से उखाड़ देती हैं।

سنا برقِ إلـهامی ینیـر لیالیا
و کشفی کصبح لیس فیه تکدُّرُ

मेरे इल्हाम की बिजली की चमक रातों को प्रकाशमान कर देती है और मेरा कश्फ (तंद्रावस्था) प्रात:काल के समान (प्रकाशमान है) उसमें कोई मलिनता नहीं।

وإن کلامی مثل سیف قاطـع
وإن بیـانی فی الصخور یؤثِّرُ

मेरा कलाम तलवार की तरह काट देने वाला है और मेरी वर्णनशैली चट्टानों में भी प्रभाव पैदा कर देने वाली है।

حفرتُ جبال النفس من قوة العلی
فصار فـؤادی مثل نهر یُفجَّرُ

मैंने नफ़्स के पहाड़ों को आसमानी शक्ति से खोद डाला है अत: मेरा दिल नहर के समान हो गया है जो खोदकर जारी की जाती है।

وأَدْعِیَتی عند الوَغی تقتُل العدا
فـطوبی لقـلبٍ یتّقیها و یحذَرُ

और मेरी दुआएं लड़ाई के समय शत्रुओं का वध करती हैं। अत: ख़ुशख़बरी है उस दिल के लिए जो उनसे डरे और बचे।

وآذانى قومى بسبٍّ ولعنةٍ
وكم من لسان لا يضاهيه خنجرُ

और मेरी क़ौम ने गालियों तथा लानत के द्वारा मुझे कष्ट दिया है, और बहुत सी ज़बानें ऐसी हैं कि छुरी भी उनकी बराबरी नहीं करती।

إذا ما تحامتنى مشاهير ملّتى
فقلتُ اخْسَأوا إن الخفايا ستَظهَرُ

जब मुझसे मेरी क़ौम के प्रभावशाली लोगों ने मुंह फेर लिया तो मैंने कहा दूर हो जाओ निस्सन्देह छुपी हुई बातें शीघ्र प्रकट हो जाएंगी।

فريق من الإخوان لا ينكرونني
وحزب يكذّب كل قولى ويزجُرُ

भाइयों में से एक समूह तो मेरा इन्कार कर नहीं करता और एक समूह मेरे हर कथन को झुठलाता और झिड़कता है।

وقد زاحموا فى كل أمر أردتُّه
وكلٌّ يخوِّفنى و ربى يُبشِّرُ

और उन्होंने हर काम में जिसका मैंने इरादा किया, रोक डाल दी और हर एक मुझे डराता है हालांकि मेरा रब मुझे ख़ुशख़बरी दे रहा है।

فأقسمتُ بالله الذى جلَّ شأنهُ
على أنه يُخزى عدوى ويَشزِرُ

अत: मैंने उस अल्लाह की क़सम खाई है जिसकी बुलंद शान है, इस बात पर कि वह मेरे शत्रुओं को रुसवा करेगा और उसको क्रोध की नज़र से देखेगा।

وما أنا عن عون المُعين بمُبْعَدٍ
إذا الليل وارانى فنُورٌ يُنوِّرُ

और मैं सहायता करने वाले ख़ुदा के समर्थन से दूर नहीं। जब रात मुझे ढकती है तो एक नूर मुझे प्रकाशमान करता रहता है।

وقد قادنی ربی إلی الرشد والهدیٰ
ووقَّرنی مَن عنده فأُوَقَّرُ

और मेरा मार्गदर्शन करके मेरे रब ने मुझे हिदायत तक पहुंचा दिया है। और उसने मुझे अपनी ओर से सौभाग्य प्रदान किया है अत: मैं सम्मान पा रहा हूं।

وإن کریمی یُطلِق الکفَّ بالندی
ولی مِن عطاء الرب رزقٌ یُوفَّرُ

और मेरा कृपालु ख़ुदा दानशीलता में बहुत बढ़ा हुआ है और मुझे रब की दानशीलता से बहुत हिस्सा मिल रहा है।

ولا زال ممدودا علیَّ ظلالُهُ
ونعماؤه کثرتْ علیَّ وتکثُرُ

मुझ पर उसका साया सर्वदा छाया रहता है और उसकी नेमत मुझ पर बहुत अधिक हो रही है और बढ़ रही है।

أکان لکم عجبًا ببعثِ مجدِّدٍ
هلمَّ انْظُروا فتنَ الزمان وفَکِّروا

क्या एक मुजद्दिद के प्रादुर्भाव से तुम्हें आश्चर्य हो रहा है? आओ इस ज़माने के उपद्रव देखो और सोचो।

أمامك یا مغرورُ فتنٌ محیطة
وأنت تسبّ المؤمنین وتَهجُرُ

हे अहंकारी! तेरे समक्ष घेर लेने वाले उपद्रव मौजूद हैं और तू मोमिनों को गालियां दे रहा है और बकवास कर रहा है।

فهذا علی الإسلام یوم المصائبِ
یُکفَّرُ مثلی والریاضُ حَبَوکَرُ

यह इस्लाम पर मुसीबतों का ज़माना है कि मेरे जैसे को काफ़िर ठहराया जा रहा है हालांकि बाग-बगीचे रेगिस्तान बन रहे हैं।

وللکفر آثار وللدین مثلها
فقُوموا لتفتیش العلامات وانظروا

और कुफ्र की भी कुछ निशानियां हैं और इसी तरह धर्म की भी, अत: इन निशानियों की तलाश के लिए खड़े हो जाओ और विचार करो।

أتحسب أن الله يُخلف وَعْدَهُ
أتنسى المواعيد التى هى أظهَرُ

क्या तू समझता है कि अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध करेगा? क्या तू उन अज़ाब की ख़बरों को भूल रहा है जो कि बहुत ही स्पष्ट हैं।

و يأتيك وعدُ الله من حيث لا ترى
فتعرفه عينٌ تَحِدُّ وتُبصِرُ

और तेरे पास अल्लाह का वादा आ जाएगा, उस ओर से जिसे तू नहीं जानता। अत: उसको तेज़ नज़र पहचान लेगी और देख लेगी।

وقد علِم الاعداء أنى مؤيَّدٌ
ولكنهم من حقدهم قد أنكروا

और शत्रुओं ने जान लिया है कि मैं समर्थन प्राप्त हूं परन्तु उन्होंने अपने द्वेष के कारण इन्कार कर दिया है।

ألا أيها الأخوان بَشُّوا وأَبشِروا
هنيًّا لكم عيدٌ جديد أكبرُ

हे भाइयो! खुश हो जाओ और खुशी मनाओ। मुबारक हो तुम्हारे लिए बहुत बड़ी नई ईद है।

وليس لعَضْبِ الحق فى الدهر كاسرٌ
وما يضعون من الحديد فيُكسَرُ

और सत्य की तलवार को ज़माने में कोई तोड़ने वाला नहीं और जो कुछ वह लोहे से बना रहे हैं वह तोड़ दिया जाएगा।

وهل جائز سبُّ المؤيَّد بعدما
أتتْ آيةُ المولى و ظهَر المُضمَرُ

क्या (ख़ुदा के) समर्थन प्राप्त व्यक्ति को गाली देना उचित है? बाद इसके कि ख़ुदा का निशान आ चुका है और छुपी हुई बात स्पष्ट हो चुकी है।

وفی یدربی کلُّ عزّ وسؤدَدٍ
وعزیزہ مِن کیدکم لا یُحَقَّرُ

और मेरे रब के हाथ में ही प्रत्येक सम्मान और सरदारी है और जो उसका विशेष बंदा है वह तुम्हारे षडयंत्रों से तुच्छ नहीं हो सकता।

فمن ذا یعادینی وربی یحبّنی
ومن ذا یُرادینی وربی مُعزِّرُ

अत: कौन है जो मुझसे शत्रुता रखे जबकि मेरा रब मुझसे प्रेम कर रहा है और कौन है जो मुझ पर पत्थर फेंके जबकि मेरा रब मेरा सहायक है।

لنا کل یوم نصرۃٌ بعد نصرۃ
ویأتی الحبیب مقامَنا ویبشِّرُ

हमें प्रतिदिन सहायता पर सहायता मिल रही है और हमारा दोस्त हमारे पास आता है और ख़ुशख़बरी देता है।

وما أنا ممن یمنع السیفُ قصدَہ
فکیف یخوِّفنی بشتمٍ مُکفِّرُ

और मैं उन लोगों में से नहीं हूं कि तलवार जिसके इरादे को रोक सके। अत: काफ़िर ठहराने वाला किस प्रकार मुझे गालियों से भयभीत कर सकता है।

یسبّ ویعلم أنہ یترک التُّقی
علی مثلہ الوُعَّاظ یبکی المنبرُ

वह गाली देता है हालांकि वह जानता है कि वह संयम के मार्ग को छोड़ रहा है। उस जैसे प्रवचन कर्ता के ऊपर ही मिंबर रोता है।

وما إنْ رأینا وَعْظَہ غیرَ فتنۃٍ
وما زالت الشحناء تنمو وتکثُرُ

और हमने उसके प्रवचन को उपद्रव के सिवा कुछ न पाया और शत्रुता बढ़ती गई और बढ़ रही है।

و کفّرَنی حتی ظنَنَّا أنہ
سیصلَی بحبّ الکفر نارًا یُسعِّرُ

और उसने मुझे काफ़िर ठहराया यहां तक कि हमने अनुमान किया कि वह कुफ्र की मोहब्बत के कारण अवश्य भड़कती आग में डाला जाएगा।

عجبتُ له لا يترکنَّ شروره
وذَكَّرَه مِن كل نصحٍ مُذكِّرُ

मैं हैरान हूं कि वह अपनी शरारतों को नहीं छोड़ रहा हालांकि उसे सलाह देने वाले ने हर प्रकार की सलाह दी है।

ومِن عجبِ الايامِ أنى كافر
بأعينِ رجلٍ حاسدٍ بل أكفَرُ

और यह समय के आश्चर्यचकित करने वाले विषयों में से है कि एक ईर्ष्या करने वाला आदमी की निगाह में मैं काफ़िर हूं, बल्कि सबसे बड़ा काफ़िर हूं।

و كيف أخاف الحاسدين وسبَّهم
ويرحمنى ربى ويؤوى وينصرُ

और मैं ईर्ष्यालुओं तथा उनके गाली देने से किस प्रकार डर सकता हूं जबकि मेरा रब मुझ पर दया कर रहा है और मुझे शरण दे रहा है और सहायता कर रहा है।

أُحِبُّ مصائبَ سبلِ ربى وإنها
لاطيبُ لى مِن كل عيش وأطهَرُ

अपने रब के मार्ग में आने वाली मुसीबतों से मैं प्रेम करता हूं और वह मेरे लिए हर जीवन से अधिक रुचिकर और पवित्र है।

أيا أيها الالْوَى كسَبُعٍ تغيُّظًا
فستعلَمنْ فى أى شكلٍ تُحشَرُ

हे पशुवत क्रोध की अवस्था में अत्यंत शत्रुता करने वाले! तू शीघ्र जान लेगा कि तू किस रूप में उठाया जाएगा।

فلا تقفُ ما لا تعلمَنْ أسراره
و كم من علوم الحق تخفى وتستُرُ

अत: तू उस बात के पीछे न पड़ जिसके भेद तू नहीं जानता जबकि कितने ही ख़ुदाई ज्ञान हैं जो छुपा कर रखे जाते हैं।

وجهلُك أعجبَنى وطولُ امتداده
وإن الفتى بعد الجهالة يشعُرُ

और तेरी नादानी ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया और उसके लंबे समय तक बढ़ जाने ने भी, हालांकि निश्चित रूप से जवांमर्द अज्ञानता के बाद बुद्धि प्राप्त कर लेता है।

أتُقبِرُ حيًّا مثلَ ميتٍ خيانةً
ويعلم ربى كلَّ ما أنت تستُرُ

क्या तू बेईमानी से जीवित सच्चाई को मुर्दे के समान दफन करता है और मेरा रब भली-भांति जानता है हर उस चीज़ को जो तू छुपाता है।

ألامَ فسادُ القلب يا تاركَ الهدى
ألامَ إلى سبل الشقاوة تَسفُرُ

हे सन्मार्ग को छोड़ने वाले! कब तक दिल की खराबी (शेष) रहेगी और तू कब तक दुर्भाग्य के मार्गों की ओर चलता रहेगा?

ووالله إنى مؤمن غير كافر
وأين التُّقى لو كان مثلى يفجُرُ

और ख़ुदा की क़सम! निस्सन्देह मैं मोमिन हूं काफ़िर नहीं। और संयम कहां रहा यदि मेरे जैसे व्यक्ति को दुराचारी ठहराया गया।

فيا سالِكِى سبل الشياطين اتقوا
قديرا عليما واحذَروا وتذكَّرُوا

हे शैतान के मार्ग पर चलने वालो! सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी ख़ुदा से डरो और बचो तथा नसीहत हासिल करो।

وطوبى لإنسان تيقّظَ وانتهى
وخاف يد المولى وسيفًا يُثَعْجِرُ

और खुशी है उस इंसान के लिए जो जाग गया और रुक गया और मौला (ख़ुदा) के हाथ से डरा और उस तलवार से भी जो खून बहाती है।

ووالله إني جئت منه مجدِّدًا
بوقتٍ أضلَّ الناسَ غُولٌ مُسخِّرُ

और ख़ुदा की क़सम! निस्सन्देह मैं उसकी ओर से मुजद्दिद होकर आया हूं ऐसे समय में कि वश में कर लेने वाले देव ने लोगों को गुमराह कर दिया था।

وعلّمني ربي علومَ كتابه
وأُعطِيتُ مما كان يُخفى ويُستَرُ

मुझे मेरे रब ने अपनी किताब के ज्ञान सिखाए और मुझे वह ज्ञान दिया गया जो छुपा हुआ था।

وأسرار قرآنٍ مجيدٍ تبيّنتْ
عليّ ويسّرَ لي عليمٌ مُيسِّرُ

और पवित्र क़ुरआन के भेद मुझ पर प्रकट हो गए। सरलता पैदा करने वाले सर्वज्ञानी ख़ुदा ने मेरे लिए सरलता पैदा कर दी।

كأن العذارى بالوجوه المنيرةِ
خرجنَ من الكهف الذي هو مُقعَرُ

मानो कि कुंवारी औरतें चमकते हुए चेहरों के साथ उस गुफा से जो गहरी थी, निकल पड़ीं।

ألا إن الايام رجعتْ إلى الهدى
هنيًّا لكم بعثي فبَشُّوا وأَبْشِروا

सुन लो ज़माना हिदायत की ओर लौट आया, मुबारक हो तुम्हारे लिए मेरा प्रादुर्भाव। तुम खुश हो जाओ और खुशी मनाओ।

وقد اصطفاني خالقي وأعزَّني
وأيَّدني و اختارني فتدبَّروا

और मेरे स्रष्टा ने मुझे प्रतिष्ठित किया है और मुझे सम्मान दिया और मेरी सहायता की और मुझे चुन लिया। अत: तुम विचार करो।

ووالله ما أمري عليّ بغُمّةٍ
وإني لأعرفُ نورَه لا أُنكِرُ

और अल्लाह की क़सम! मेरा मामला मुझ पर संदिग्ध नहीं और निश्चित रूप से मैं उसके नूर को पहचानता हूं मैं अनभिज्ञ नहीं।

إذا قلَّ دينُ المرء قلَّ اتقاؤُه
ويسعى إلى طرق الشقا و يزوّرُ

जब इंसान की धार्मिकता कम हो जाए तो उसका संयम भी कम हो जाता है और वह दुर्भाग्य के मार्गों की ओर दौड़ने लगता है और धोखे से काम लेता है।

ومَن ظنَّ ظنَّ السَّوء بُخلًا فقد هوى
و كلّ حَسود عند ظنٍّ يُتبَّرُ

और जिसने कंजूसी के कारण कुधारणा की तो वह नीचे गिर गया और बहुत ईर्ष्या करने वाला हर व्यक्ति कुधारणा करने पर नष्ट किया जाता है।

ولا يعلمَنْ أن المنايا قريبةٌ
إذا ما تجيء الوقت فالموت يحضُرُ

और वह नहीं जानता कि मृत्यु तो निकट हैं और जब समय आ जाता है तो मौत उपस्थित हो जाती है।

وهل نافعٌ وِرْدُ التندُّمِ بعدما
دنا وقتُ قارعةٍ و جاء المقَدَّرُ

और क्या पश्चाताप की आवृत्ति लाभ दे सकती है बाद इसके कि मौत का समय निकट हो और तक़दीर आ जाए।

ألا أيها الناس اذكروا وقت موتكم
فلا تُلْهِكم غُولٌ خبيث مخسِّرُ

हे लोगो! सावधान! अपनी मौत के समय को याद करो, अत: तुम्हें दुष्ट हानिकारक देव विमुख न कर दे।

وقد ذابت الصَفْواء مِن بيتِ عمرِكم
وما بقِى إلا جمرةٌ أو أصغَرُ

तुम्हारी आयु रूपी घर का बुनियादी पत्थर तो पिघल चुका है और केवल एक कंकरी शेष रह गई है या उससे भी कम।

وَمِسْحُ الحِمام سيحمِلَنْك على المطا
وأنت بأموال وخيل تفخَرُ

और मौत का तेज़ घोड़ा शीघ्र तुझे अपनी पीठ पर सवार कर लेगा। और तू अपने मालों तथा घोड़ों पर गर्व कर रहा है।

ألا ليس غير الله شيء مُدَوَّمُ
و كلُّ جليسٍ ما خلا اللهَ يهجُرُ

सुनो! अल्लाह के अतिरिक्त कोई चीज़ स्थाई नहीं और प्रत्येक साथी जुदा होने वाला है।

تَذَكَّرْ دماءَ العارفين بسبلهِ
ألم يأن أن تخشى، أأنت محرَّرُ؟

ख़ुदा के मार्ग में अध्यात्म ज्ञानियों के बहने वाले खून को याद कर। क्या अभी समय नहीं आया कि तू भयभीत हो? क्या तू स्वतंत्र है?

وإن المنايا سابحاتٌ قويّةٌ
أثرنَ غبارًا عند حُكمٍ يصدرُ

और निस्सन्देह मौतें तो तेज़ रफ्तार मज़बूत घोड़े हैं जो आदेश पारित होने के समय धूल उड़ाते हैं (अर्थात आदेश पालन हेतु दौड़ पड़ते हैं। अनुवादक)

وآخر دعوانا أن الحمد للذى
هدانا مناهجَ دينِ حزبٍ طُهّروا

और हमारी आखिरी बात यही है कि समस्त प्रशंसा उसी हस्ती के लिए है जिसने पवित्र समूह के धर्म के मार्गों की ओर हमारा मार्गदर्शन किया।

قد تمّ بمنّه و كرمه

ख़ुदा तआला के उपकार तथा कृपा से यह क़सीदा (काव्य) पूर्ण हुआ।

★ ★ ★

पारिभाषिक शब्दावली

अर्श- सिंहासन। वह स्थान जहाँ पर अल्लाह का अधिष्ठान है।

अह्ले किताब- यहूदी और ईसाई जो तौरात नामक ग्रंथ को ईशवाणी मानते हैं।

अज़ाब - अल्लाह की अवज्ञा करने पर मिलने वाला दंड। ईशप्रकोप, कष्ट, विपत्ति।

अलैहिस्सलाम- उनपर अल्लाह की कृपा हो। नबियों, रसूलों और अवतारों के नामों के बाद यह वाक्य कहा जाता है।

आयत- पवित्र क़ुर्आन की पंक्ति अथवा वाक्य।

इब्ने मरियम- मरियम का पुत्र (अर्थात ईसा मसीह अलैहिस्सलाम)

इस्राईल- अल्लाह का वीर या सैनिक। हज़रत याक़ूब अलै. का एक गुणवाचक नाम, जिस के कारण उनके वंशज को बनी इस्राईल (अर्थात इस्राईल की संतान) कहा जाता है। फ़िलिस्तीन का एक भू-भाग जिस में यहूदियों ने अपना राज्य स्थापित करके उस का नाम इस्राईल रखा है।

ईमान- अर्थात विश्वास और स्वीकार करना। जैसे अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करना।

उम्मत- संप्रदाय। किसी नबी या रसूल के अनुयायिओं का समूह उसकी उम्मत कहलाता है।

उम्मती नबी- किसी नबी की शिक्षाओं को आगे फैलाने के लिये उसके अनुयायियों में से किसी का नबी पद प्राप्त करना।

उलमा- इस्लामी धर्मज्ञ।

क़यामत- महाप्रलय। मृत्यु के बाद अल्लाह के समक्ष उपस्थित होने का दिन

कश्फ़- जागृत अवस्था में कोई अदृष्ट विषय देखना। स्वप्न और कश्फ़ में यह अंतर है कि स्वप्न सोते में देखा जाता है और कश्फ़ जागते में देखा जाता है। दिव्य-दर्शन। योगनिद्रा, तन्द्रावस्था।

काफ़िर - सच्चाई का इन्कार करने वाला। इस्लाम धर्म का अस्वीकारी।

क़िब्ला - आमने-सामने। जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। ख़ाना काबा मुसलमानों का क़िब्ला है जिसकी ओर सारे संसार के मुसलमान मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं।

कुफ़्र- सच्चाई का इन्कार, इस्लाम का इन्कार करना।

ख़लीफ़ा- उत्तराधिकारी। अधिनायक। नबी और रसूलों के बाद उनका स्थान लेने वाला और उनके काम को चलाने वाला।

ख़ातम- नबियों की मुहर, सर्वश्रेष्ठ। जब 'ख़ातम' शब्द को बहुवचन की ओर सम्बद्ध किया जाए तो इसके अर्थ उन सब में से श्रेष्ठ के होते हैं। जैसे ख़ातमुल अंबिया (नबियों में सर्वश्रेष्ठ), ख़ातमुल औलिया (वलियों में सर्वश्रेष्ठ)।

ख़िलाफ़त- नबी और रसूल के बाद उनके कामों को आगे चलाने वाली व्यवस्था, जिसका प्रमुख ख़लीफ़ा कहलाता है।

ज़ईफ हदीस- (अर्थात कमज़ोर) वह हदीस जिसके रावी (हदीस बताने वाले) की ईमानदारी के बारे में कि सी को आपत्ति हो या उसकी स्मरण शक्ति बहुत कमज़ोर हो।

जिब्रील- ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।

जिहाद - प्रबल उद्यम करना। स्वयं को सुधारने के लिये या धर्मप्रचार के लिये प्रयत्न करना। सत्यधर्म की रक्षा के लिये प्रतिरक्षात्मक युद्ध करना।

तक़वा - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करना और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखना। संयम, धर्मपरायणता।

ताबयीन- अनुगमन कारी। वे मुसलमान जिन्होंने हज़रत मुहम्मद स० को तो नहीं देखा परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्ल. के साहाबियों को देखा।

तबअ ताबयीन -ताबयीन के अनुगामी। जिन्होंने केवल ताबयीन को देखा।

तौरात - यहूदियों का धर्मग्रंथ।

दज्जाल- झूठा, धोखेबाज, अंत्ययुग में लोगों को धर्मभ्रष्ट कराने के लिए उत्पन्न होने वाला एक समूह।

दुरूद व सलाम -हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए की जाने वाली दुआ।

नबी- लोगों को सन्मार्ग पर लाने के लिए अल्लाह की ओर से आया हुआ व्यक्ति, जिसे अदृष्ट विषयों से अवगत कराया जाता है। अवतार।

नुबुव्वत- नबी बनने की क्रिया। अवतारत्व।

नूर- अध्यात्म प्रकाश, ज्योति।

नेमत - अल्लाह की देन।

पैग़म्बर - अल्लाह का संदेशवाहक, नबी, रसूल।

बनी इस्राईल- इस्राईल की संतान। (इस्राईल शब्द भी देखें)

बैअत- बिक जाना, धर्मगुरु के हाथ पर हाथ रख कर उसका आनुगत्य स्वीकार करना।

मजरूह हदीस-वह जिसमें, हदीस बताने वाले (रावी) के शब्दों और कार्यों पर भरोसा नहीं किया जा सकता है और इसके बारे में जिरह की गई है।

मुश्रिक - शिर्क करने वाला। अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को उपास्य मान कर उसे अल्लाह का समकक्ष ठहराने वाला व्यक्ति।

मुनाफ़िक़- कपटाचारी। वह व्यक्ति जो ईमान लाने का प्रदर्शन तो करे परन्तु दिल

से उसको अस्वीकार करने वाला हो।

मुत्तक़ी - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाला और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखने वाला व्यक्ति, धर्मपरायण।

मुबाहलः- एक दूसरे को शाप देना। इस्लामी धर्मविधान के अनुसार किसी विवादित धार्मिक विषय को अल्लाह पर छोड़ते हुए एक दूसरे को शाप देना कि जो झूठा है उस पर अल्लाह की लानत हो।

मे'राज - आध्यात्मिक उत्थान। अल्लाह की ओर हज़रत मुहम्मद सल्ल. की

अलौकिक यात्रा जो सशरीर नहीं हुई।

मोमिन - अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करने वाला निष्ठावान् व्यक्ति।

मौज़ूअ हदीस- झूठी हदीस, जिसे रावी (हदीस बताने वाले) ने झूठ बोलकर आंहज़रत स०अ० व० की ओर सम्बद्ध कर दिया हो।

याजूज-माजूज-अंत्ययुग में उत्पन्न होने वाली दो महाशक्तियाँ।

रसूल- अल्लाह का भेजा हुआ अवतार, दूत।

रज़ियल्लाहु अन्हु- अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पुरुष सहाबियों के लिए प्रयुक्त होता है। अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ।

रहिमहुल्लाहु- उन पर अल्लाह की कृपा हो। यह वाक्य दिवंगत महापुरुषों के नाम के साथ प्रयुक्त होता है।

रूह- आत्मा।

रूह-उल-क़ुदुस-पवित्रात्मा। ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।

रूह-उल-अमीन-जिब्रील, जो ईशवाणी लाने वाले फ़रिश्ता हैं।

ला'नत - अभिशाप, अमंगल कामना।

वह्यी - अल्लाह की ओर से प्रकाशित होने वाला संदेश, ईशवाणी। ईश्वरीय ग्रन्थों का अवतरण वह्यी के द्वारा होता है। पवित्र क़ुर्आन हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर वह्यी के द्वारा ही उतरा है।

शरीयत- इस्लामी धर्मविधान।

शिर्क- अल्लाह के बदले दूसरे को उपास्य मानना, किसी को अल्लाह का समकक्ष ठहराना।

सलाम - शांति और आशीर्वाद सूचक अभिवादन।

सलीब - सूली, जिस पर लटका कर मृत्युदंड दिया जाता था।

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- उनपर अल्लाह की कृपा और शांति अवतरित हो। हज़रत मुहम्मद स० के नाम के साथ यह वाक्य कहा जाता है।

सहाबी - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के वे अनुगामी जिन्हें आपकी संगति प्राप्त हुई।

सूरः / सूरत- पवित्र क़ुर्आन का अध्याय। पवित्र क़ुर्आन में 114 अध्याय हैं।

हज़रत - श्रद्धेय व्यक्तियों के नाम से पूर्व सम्मानार्थ लगाया जाने वाला शब्द।

हदीस - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के कथन जिन्हें कुछ वर्षों के पश्चात इकट्ठा करके ग्रंथबद्ध किया गया। इन में से छः विश्वसनीय हदीस ग्रंथों को **सहा-ए-सित्ता** कहा जाता है। इनके अतिरिक्त और भी हदीस के ग्रंथ हैं।

हिजरत - देशांतरण। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के मक्का से मदीना जाने की घटना हिजरत के नाम से प्रसिद्ध है।

हिदायत- सन्मार्ग प्राप्ति।

* * *